आत्मोद्धार ।

हिन्दी-ग्रन्थरत्नाकर-सीरीज़ अंक १० ।

आत्मोद्धार ।

(डा० बुकर टी. वाशिंगटनका आत्मचरित ।)

" दैवायत्तं कुले जन्म मदायत्तं तु पौरुषम् । "

—वेणीसंहार ।

अनुवादक—

श्रीयुत पं० लक्ष्मण नारायण गर्दे, काशी ।

प्रकाशक—

हिन्दी-ग्रन्थरत्नाकर कार्यालय,

हीराबाग, गिरगाँव, बम्बई ।

प्रथमावृत्ति } पौष १९७१ । { मूल्य १) पक्की जिल्दका १।)

"स्त्रियाँ, बालक और शूद्र राष्ट्रवृक्षके मूल है। इन सबकी शिक्षा और पालन पोषणकी ओर भारतवर्षमे कोई ध्यान नहीं देता! जो उच्चश्रेणीके लोग है वे बहुत हुआ तो इस राष्ट्र-वृक्षके फल कहे जा सकते है।

वृक्ष पर फल लदे हुए रखनेमे ही सब समय नष्ट करना ठीक नहीं। जडोको देखो और उनमे भरपूर खाद और पानी दो। गरीब लोक, स्त्रियाँ और बालक ही सत्यका झण्डा पीटेगे। यथार्थ राष्ट्रोद्धार राष्ट्रकी गरीब (दुर्बल) जडोंसे ही हुआ करता है।"

(२)

"सब दानोंमें विद्यादान श्रेष्ठ है। यदि किसीको आप एक रोज भोजन देंगे तो दूसरे रोज उसे फिर भूख लगेगी! परन्तु उसीको यदि आप कोई हुनर सिखा देंगे तो सारे जन्मके लिए उसके दानापानीका प्रबन्ध हो जायगा। वह हुनर, कला या विद्या ऐसी होनी चाहिए कि उसका जीवन सफल हो जाय। सभ्य भिक्षुक बने रहनेकी अपेक्षा जूते बनानेकासा कोई रोजगार कर लेना अधिक अच्छा है!"

(३)

"जहाँ उद्योगकी प्रतिष्ठा नहीं वहाँ अवनति और विनाश वास करते हैं! वहाँ कलाकौशलकी भी मट्टी पलीद होती है। पर जहाँ उद्योगकी प्रतिष्ठा होती है वहाँ जीवन (चैतन्य) और ज्ञान वास करते है, वहाँ कलाकौशलकी वृद्धि होती है।

देशके भूखों मरनेवाले नारायणों और मेहनत मजदूरी करनेवाले विष्णुओं-को पूजो! निर्धन हिन्दू विद्यार्थियोंको कलाकौशल प्राप्त करनेके लिए अमेरिका भेजो। वे वहाँसे सीखकर जब भारतवर्षमें आवेंगे तो लोगोंको अपने बल पर खडे होनेकी शिक्षा देंगे और उससे सैकड़ों, नहीं, हजारों रोटीके मोहताजोंकी जानें बच जायँगी।"

(४)

"अपने गाँवकी चमारिनों भंगिनोंको पढानेमे क्या तुम्हें लज्जा आती है या डर [illegible] अगर ऐसा ही है तो धिक्कार है तुम्हारी रीति रस्मों पर और [illegible]मता पर!"

—स्वामी रामतीर्थ।

प्रस्तावना ।

उद्धरेदात्मनात्मानं नात्मानमवसादयेत् ।
आत्मैव ह्यात्मनो बन्धुरात्मैव रिपुरात्मनः ।

—गीता ।

भारतवर्षमें इस आत्मावलंबन और आत्मोद्धारकी अमोघ शिक्षाका प्रचार होनेकी इस समय अत्यन्त आवश्यकता है । नैराश्य और अज्ञानके घोर अन्धकारमें उन्नतिके साधन टटोलनेवाले भारतवर्षको इस समय आत्मावलंबन और आत्मोद्धारकी शिक्षाका कोई ज्वलन्त दृष्टान्त जितना उपयोगी होगा उतना उपयोगी कोई तात्त्विक विवेचन अथवा कोई कपोलकल्पित वर्णन नहीं हो सकता । इस लिए आत्मोद्धारकी प्रत्यक्ष प्रतिमा बुकर टी. वाशिंगटनका उन्हीके शब्दोंमें लिखा हुआ आत्मचरित आज हम अपने ३३ करोड़ भाइयोंको बड़ी प्रीति प्रसन्नता और आशासे भेंट करते हैं ।

इस आत्मोद्धारके मननसे मालूम होगा कि क्योंकर दासत्वके पंकमें धँसी हुई एक निर्द्धन और निःसहाय जाति संसारमें अपना सिर ऊपर उठा सकती है, क्यों कर कोई अन्धकारमें छिपा हुआ अनाथ और अबल मनुष्य यश और पुरुषार्थ लाभ कर सकता है, और क्यों कर कोई जाति कुसंस्कार, वर्णाभिमान और विजाति विद्वेषके अति दुर्गम पर्वतोंको लाँघकर आत्मोद्धारके वैकुंठ धाममें पहुँच सकती है । जब आपको मालूम होगा कि एक टूटीफूटी झोपड़ीमें पैदा हुआ एक गुलाम बालक आज उस टस्केजी-विद्यालयका मुख्य प्रिन्सिपल है जो अमेरिकामें एक आदर्श विद्यालय है और जिसे देखनेके लिए जाना अमेरिकाके प्रेसिडेंट भी अपना कर्तव्य समझते हैं, जब आपको मालूम होगा कि जिस समय गुलामीसे छुटकारा पाने बद नीग्रो जाति ' कर्तव्यविमूढ़ ' हो रही थी और उसे कोई मार्ग नहीं

दिखाई देता था उस समय उसी होनहार बालकने अपनी जातिके मुख्य मुख्य प्रश्नोंको अपने आचरणसे हल कर दिया, जब आपको मालूम होगा कि उसी अदने बालकने नीग्रो जातिके विषयमें गोरे अमेरिकनोंके कुसंस्कार हटाकर अपनी जातिकी प्रतिष्ठा बढ़ाई है, जब आपको मालूम होगा कि उसी असहाय बालकने अपने गुरुकी आज्ञापालनका व्रत निबाह कर अपने रोटीके मोहताज़ भाइयोंके दानापानीका और उनमें धर्म और नीतिके प्रचारका पूरा प्रबन्ध कर दिया है, तब क्या आप लोग भी उन्हीं तत्वो पर अपने देशकी परिस्थितिके अनुसार आत्मोद्धारके लिए कटिबद्ध न होंगे ?

इस समय हमारे देशकी बड़ी ही अनिश्चित अवस्था है। हमारे सामने कितने ही वर्षोंसे राजजाति और प्रजाजाति, हिन्दू और मुसलमान, श्रेष्ठ वर्ण और अन्त्यज जाति, आदिक बड़े बिकट प्रश्न हल करनेके लिए पड़े हुए हैं। इस आत्मोद्धारसे, हमारा विश्वास है कि हम लोगोंको इन प्रश्नोंके सुलझानेमें बड़ी भारी सहायता मिलेगी। महात्मा बुकर टी. वाशिंगटनने अमेरिकामें नीग्रो जाति और अमेरिकन गोरोंकी जातिका प्रश्न सुलझाया है इसलिए उनके चरितसे हमारे देशवासियोंको भी अवश्य शिक्षा प्राप्त होगी। वाशिंगटन अपनी भीतरी अवस्थाको सुधारकर योग्य बननेको ही देशोन्नतिका मूल (First observe and then desire) समझते हैं। हम लोगोंको भी इस समय इसी तत्त्वका अवलंबन करना है। अभीतक हम लोग अपनी शिक्षाप्रणाली निश्चित नहीं कर सके हैं। शिक्षातत्त्वका 'श्रीगणेश' भी हम लोगोंको सीखना है। हमारे जितने आन्दोलन होते हैं वे प्राय. अनिश्चित उद्देश्यसे हुआ करते हैं। आत्मोद्धारसे यह शिक्षा मिलती है कि पहले अपनी आवश्यकताओंको देखो और बालकोंको ऐसी शिक्षा दो कि उन आवश्यकताओंकी पूर्त्ति हो। इसीको स्वाभाविक शिक्षा कहते हैं। यही शिक्षा फलवती होती है। आन्दोलन भी स्वाभाविक होने चाहिए। दूसरोंकी देखादेखी अथवा अपना हौसला मिटानेके लिए कोई आन्दोलन करना या सभा सोसायटी कायम करना बिलकुल अस्वाभाविक और निरर्थक है। देशके अभावोंको जानकर उनकी स्वाभाविक उपायसे पूर्त्ति करना ही आन्दोलनका मूल होना चाहिए। महात्मा वाशिंगटनका व्यक्तिगत और सार्वजनिक जीवन इसी प्रकार स्वाभाविक होनेसे संसारके लिए कल्याणकारी

हुआ है। उस जीवनसे हम लोग शिक्षा ग्रहण करें तो हमारे देशमें भी ऐसे अनेक वाशिंगटन उत्पन्न हो सकते हैं।

महात्मा वाशिंगटनने अपना जीवनचरित आप * ही लिखा है जिससे उनके आचारविचारोंके परिचयके साथ उनके शब्दोंका भी आनन्द मिलता है। अँगरेजीमें उस आत्मचरितका नाम है, 'दासत्वसे उत्थान–Up From Slavery'। हमने इसके मराठी अनुवादसे यह हिन्दी अनुवाद किया है। मराठी अनुवाद 'आत्मोद्धार'के नामसे प्रसिद्ध है और 'मनोरंजन कार्यालय' बम्बईसे प्रकाशित हुआ है। लेखक श्रीयुत नागेश वासुदेव गुणाजी बी. ए. एल एल. बी. ने वाशिंगटन महाशय तथा तत्रस्थ अन्य सज्जनोंसे पत्रव्यवहार करके उनके चरितसंबंधी बहुतसी बातें संग्रह की हैं और इसलिए हमने अपने पाठकोंको उनके परिश्रमोंके परिपक्व फलका ही यह हिन्दी आस्वाद कराना उचित समझा। भूमिका, उपोद्घात और परिशिष्ट भी गुणाजी महाशयके लेखोंके अनुवाद हैं और इन सबके लिए हम उनके अत्यन्त कृतज्ञ हैं। 'मनोरंजन कार्यालय'के स्वामी और सुलेखक श्रीयुत काशीनाथ रघुनाथ मित्रको भी अनेक धन्यवाद हैं जिन्होंने मराठी 'आत्मोद्धार'को प्रकाशित कर उसे हिन्दीमें प्रकाशित करनेका मार्ग विशेष सुगम कर दिया।

जब हम इस पुस्तकको लिखने बैठे तब हमारे सामने यह प्रश्न उपस्थित हुआ कि यह आत्मचरित अपनी ओरसे वाशिंगटनका एक जीवनचरित बना कर लिखा जाय या ज्योंका त्यों ही आप लोगोंकी सेवामें उपस्थित किया जाय। बहुत सोचने विचारने पर हमें आत्मचरित आत्मचरितके ही रूपमें पाठकोंको भेंट करना उचित मालूम हुआ और ऐसा ही किया गया।

अन्तमें हम हिन्दीग्रन्थरत्नाकर–कार्यालयके सुयोग्य संचालक श्रीयुत महाशय

---

* वाशिंगटनसे उनके कई मित्रोंने आग्रह किया कि आप अपना जीवन चरित लिखें; पर इस पर वे यही उत्तर दिया करते थे कि मैंने ऐसा कौनसा कार्य किया है जो अपना जीवन-चरित लिखूँ। अन्तमें जब उनकी कन्या पोर्शियाने उनसे बार बार प्रार्थना की और जब वह उनसे लिखनेके लिए प्रतिदिन आग्रह करने लगी तब उन्होंने अपने परिवारकी जानकारीके लिए यह आत्मचरित लिखा। परन्तु इससे लाभ सबका हुआ है।

आत्मोद्गार–

नाथूरामजी प्रेमीको हार्दिक धन्यवाद देना चाहते हैं जिनकी कृपासे हम इस चरितको लिखनेका सौभाग्य प्राप्त कर सके हैं। पुस्तक बहुत शीघ्रतासे लिखी गई है, इसलिए कापी प्रेसमें भेजनेसे पहले प्रेमीजीको उसमें वारंवार संशोधन करने पड़े हैं और यह कार्य इतनी योग्यताके साथ हुआ है कि यहाँ हमसे यह बात प्रकट किये बिना नहीं रहा जाता कि अनुवादकी उत्तमताका सारा यश प्रेमीजीको है।

अब अपने पाठकोंसे यह प्रार्थना करनी है कि पुस्तकको वे हंसक्षीरन्यायसे पढ़ें और गुणोंको ग्रहण कर दोष मेरे जिम्मे करें। ॐ तत्सद्ब्रह्मार्पणमस्तु।

काशी, पौषकृष्णा सप्तमी संवत् १९७१। — विनीत— **लक्ष्मण नारायण गर्दे।**

भूमिका ।

'न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते ।'

—गीता ।

इस संसारमें ज्ञानके सदृश पवित्र और कोई वस्तु नहीं । जिस देशमें ज्ञान और शिक्षा अच्छे ढंगसे और परमार्थबुद्धिसे दी जाती है, उस देशके ऐश्वर्यमें कभी किसी बातकी कमी नहीं पड़ती । प्राचीन समयमें शिक्षा और ज्ञानदानके कार्यमे भारतवर्ष बहुत ही प्रसिद्ध था । अध्ययन और अध्यापन ब्राह्मणोंका—द्विजमात्रका प्रधान कर्तव्य था और इस पवित्र कर्तव्यके पालनमें ब्राह्मणोंने अपना जीवन अर्पण कर दिया था । विद्यार्थी गुरुगृह अथवा आश्रममें रहकर विद्यार्जन किया करते थे और गुरु उन्हें निःस्वार्थ भावसे और मन लगाकर पढ़ाते थे । ये गुरु बड़े बड़े मुनि होते थे और 'कुलपति' नामसे पुकारे जाते थे । गुरुके परिवार तथा विद्यार्थियोंका सब खर्च राजामहाराजाओं तथा धनवान् वैश्योंके दिये हुए दानोंसे चलता था । बड़े बड़े मुनियोंके आश्रम उस समयके विश्वविद्यालय या विद्यापीठ ही थे । उदाहरणार्थ, यजुर्वेद शतपथ-ब्राह्मण और तदन्तर्गत बृहदारण्यकोपनिषद्से मालूम होता है कि जनकराजाके गुरु महर्षि याज्ञवल्क्यका एक महान् विद्यापीठ था और उसमें अनेक विद्यार्थी पढ़ते थे । इसे संसारका एक बड़ा भारी सौभाग्य ही समझना चाहिए जो अध्ययन अध्यापनका पवित्र कर्तव्य पालन करनेवाले याज्ञवल्क्य जैसे ज्ञानी पुरुष इस पृथ्वीतल पर कभी कभी अवतीर्ण हो जाते हैं । इस समय नये जगत्में—या अमेरिकामें ज्ञानार्जन और ज्ञानदानके कार्यमें याज्ञवल्क्यके समान, बल्कि, उनसे भी कुछ बढ़कर एक महात्मा जीवित हैं । उनका नाम है डाक्टर बुकर टी. वाशिंगटन ।

वाशिंगटन ! वाशिंगटनका नाम लेते ही हमारे हृदयमें बड़ी बड़ी उदार भावनायें लहराने लगती हैं । कुछ पाठक प्रश्न करेंगे कि क्या ये वे ही वाशिंगटन हैं जो बचपनसे सत्यप्रीति, स्वदेशाभिमान, स्वार्थत्याग, निरभिमान आदि गुणोंसे

युक्त थे और जिन्होंने अमेरिका देशकी दासत्वश्रृंखला तोड़ डाली थी । किन्तु जब उन्हें मालूम होगा कि उन वाशिंगटनसे इन वाशिंगटनका कोई संबध नहीं है, ये गोरे नहीं किन्तु काले नाग्रो या हबशी हैं तब संभव है कि वे नाक भौं सिकोड़ने लगें । परन्तु ऐसे पाठकोसे हमारी प्रार्थना है कि वे इतने अधीर न हो जायँ । यदि वे इन वाशिंगटनके चरितको पढ लेंगे तो उन्हें मालूम होगा कि यह चरित भी स्वातन्त्र्यदाता वाशिंगटनके चरितके समान, बल्कि उससे भी अधिक मनोरंजक, सात्विक और बोधप्रद है ।

आत्मचरितका महत्त्व ।

आत्मचरितका महत्त्व दो बातों पर अवलम्बित रहता है,—एक तो उस चरितके नायक पर और दूसरे उस नायकके कामों या पराक्रमों पर । वाशिंगटनके इस आत्मचरितमें उक्त दोनों बातें मौजूद हैं, अर्थात् जैसे महात्मा वाशिंगटन हैं वैसे ही उनके कार्य भी हैं। व्यक्ति और उसके कार्य दोनों ही महत्त्वके हैं । इस कारण यह आत्मचरित बहुत ही उत्तम और अनुकरणीय है । वाशिंगटन एक अदना गुलाम था, परन्तु वह अपनी करणीसे रकसे राव—नरका नारायण बन गया है ! इसमें सन्देह नहीं कि उसकी इस आत्मोन्नतिका वृत्तान्त बहुत ही शिक्षाप्रद होगा ।

आत्मचरितसे शिक्षा ।

डाक्टर वाशिंगटनका जीवनवृत्तान्त अनेक प्रकारसे अद्वितीय है । दासत्वमें तो उनका जन्म हुआ। उन्हें अपने बापदादाओंका कुछ भी हाल मालूम नहीं। ऐसे घोर अन्धकारमें उन्होंने उन्नति आरंभ की और आगे बढते बढते अब वे अपनी जातिके नेता और मानवजातिके कल्याणकर्ता बने हुए हैं ! उनका पुरुषार्थ, उनकी सत्यप्रीति, उनका सादापन, अपनी जाति और देशकी सेवामें उनका अनुराग, अमेरिकाके नीग्रोलोगोंकी आधिभौतिक और नैतिक दशाके सुधारके लिए उनके परिश्रम, उनका स्वार्थत्याग, उनका सुस्वभाव, आदि सब बातोंका चित्ताकर्षक वर्णन इस आत्मचरितमें आगया है । यह आत्मचरित सबके लिए, विशेषत भारत-वासियोंके लिए बहुत ही उपयोगी है । यह बतलायगा कि प्रतिकूल परिस्थितिमें अपने समाज और देशका हित किसतरह किया जासकता है ।

वाशिंगटनका संक्षिप्त चरित ।

वाशिंगटनके जीवन और उनके जीवनके प्रधान कार्योंका वर्णन बहुत थोडेमें

किया जा सकता है। उनका बचपन गुलामीमें बीता । जिस समय गुलाम स्वाधीन हुए उस समय वे बालक थे। बचपनमे भी अपने परिवारकी जीविकाके लिए उन्हें मेहनत मजदूरी करनी पडती थी। उनका सौतेला बाप उन पर प्यार नहीं करता था। उनके बापका यह खयाल था कि यह मेहनत मजदूरी करके कमानेवाला लडका है-इसका समय लिखने पढनेमें नष्ट न होना चाहिए। शिक्षा प्राप्त करनेमें उनकी माता और उनका भाई उनके साथ सहानुभूति रखते थे। शिक्षाके लिए उन्हें अनेक कष्ट और सकट झेलने पडे। यथार्थमें, नीग्रोजातिके उत्तम नेता तैयार करनेके लिए स्थापित हुए हैम्पटन-विद्यालयमें ही उन्हें शिक्षा मिली। हैम्पटनकी पढाई समाप्त होने पर उन्होंने दो तीन वर्ष यहॉ वहॉ पढानमें बिताये, और तब उन्हें टस्केजीमें आकर पाठशाला खोलनेका कार्य सौंपा गया। यहीस उनके जीवनका प्रधान कार्य आरभ हुआ। टस्केजी-विद्यालय जबसे खुला है तबसे उसकी दिनदूनी रातचौगुनी उन्नति हो रही है! वाशिंगटन अब भी उस विद्यालयके मुख्य प्रिन्सिपल हैं। 'नीग्रो कृषक महासभा' और 'नीग्रो राष्ट्रीय उद्यमसभा' भी उन्हाने स्थापित की हैं। इन सब सस्थाओंकी बहुत अच्छी दशा होनेसे दक्षिणके नीग्रो लोग अपना उन्नति बडी शीघ्रतासे कर रहे हैं।

हैम्पटन-विद्यालय।

वाशिंगटनके जीवनक्रमका रहस्य समझनेके लिए हैम्पटन-विद्यालयके विषयमें एक दो बातें बतला देना बहुत ही आवश्यक है। क्योंकि वाशिंगटन उसी विद्यालयके एक विद्यार्थी थे और उन्होंने उसी विद्यालयके सस्थापक जनरल आर्मस्ट्रागका ही अनुकरण किया है। सिविल वार (१८६० से १८६५) समाप्त होने पर काले और गोरे लोगोंक बाच समझौता करनेके लिए सयुक्त राज्यकी सरकारने जनरल आर्मस्ट्रागको नियुक्त किया था। उस समय अर्थात् सन् १८६८ में उन्होंने यह विद्यालय स्थापित किया। जिनके पास खानेको अन्न नहीं, जिनकी कोई परवरिश करनेवाला नहीं, जिन्होंने कोई ऐसा हुनर भी नहीं सीखा जिससे अपना गुजारा कर सकें, और जिनकी अवस्था दिनपरदिन खराब होती जाती है, ऐसे हजारों नीग्रो-परिवारोंको देखकर जनरल आर्मस्ट्रागको बडा दु ख हुआ। स्वतन्त्रताके कारण जो नई सृष्टि बन गई थी उसका सामना करनकी सामर्थ्य इन परिवारोंमें नहीं थी। उनके गुलामाबादकी झोपडियॉ जाती रहीं, गुलामाबाद

उजाड़ हो गये, और उनके लिए कोई मामूली काम भी न रह गया। ऐसे विकट समयमें जनरल आर्मस्ट्रांगने अपनी रोटी कमानेमें भी असमर्थ हुई नीग्रो जातिको ऊपर उठानेका संकल्प किया, और अमेरिकन मिशनरी-सोसायटियोंकी सहायतासे हैम्पटनमें एक शिल्पशाला खोल दी। इसमें आरंभमें केवल दो सहकारी शिक्षक और कुल पंद्रह विद्यार्थी थे। किन्तु अब इस समय (१९१३) उस विद्यालयमें १६०० के ऊपर विद्यार्थी और २०० शिक्षक तथा दूसरे कर्मचारी हैं। संस्थाकी १४० इमारतें और ११०० एकड़ भूमिकी सम्पत्ति है। विद्यालयके कार्यके विषयमें जे. डब्ल्यू. चर्च नामक एक सज्जन लिखते हैं कि "हैम्पटनमें कोई काम अधूरा नहीं होता है। जब इस विद्यालयमें कोई नीग्रो युवक भरती होता है तब वह भली भाँति जानता है कि यहाँ लगातार चार साल परिश्रम करना होगा। निस्सन्देह इस बातकी सब प्रकारसे चेष्टा की जाती है कि इस परिश्रमका भार विद्यार्थियोंको भारी न मालूम हो, बल्कि, वे उसे आनन्दसे झेल लें। इसके साथ ही इस बातकी भी पूरी चेष्टा की जाती है कि विद्यार्थी परिश्रम और पवित्र आचरणका महत्त्व भली भाँति समझ जायँ।" नीग्रो जातिमें आलस्य और अज्ञान ये दो महादुर्गुण वंशपरंपरासे चले आते थे। हैम्पटन-विद्यालयने नीग्रोजातिको इन दुर्गुणोंसे मुक्त करनेका बड़ा प्रयत्न किया है और इस प्रयत्नमे उसने सफलता भी पाई है।

कार्यप्रणाली और सिद्धान्त।

यहाँ यह बतलानेकी कोई आवश्यकता नहीं है कि हैम्पटनने इस कार्यमें किस प्रणाली और किन सिद्धान्तोंका अवलंबन किया है। क्योंकि वाशिंगटनने भी उसीकी प्रणाली और सिद्धान्तोंका अवलंबन किया है और उनका वर्णन आगे आनेवाला है। यहाँ इतना ही बतला देना काफी होगा कि इस संस्थाने पिछड़ी हुई नीग्रो जातिके बालकोंमें जो नवीन गुणोंके बीज बोनेका यत्न किया है उसमें सामाजिक संस्थाओंके मूलभूत सिद्धान्तों और अत्यन्त स्वाभाविक उपायोंका ही अवलंबन किया गया है।

वाशिंगटनकी परिस्थिति।

जिस समय वाशिंगटन टस्केजीमें पाठशाला खोलनेके लिए गये उस समय पाठशालाके लिए कोई भवन नहीं था; पर वहाँ ऐसे युवा और वृद्ध नीग्रो अनेक थे जो शिक्षा प्राप्त करनेके लिए तरस रहे थे। टस्केजीमें गोरोंकी शिक्षाके लिए

कई प्रबन्ध थे; परन्तु उनसे नीग्रोजातिको कोई लाभ न होता था। सन्तोषकी बात केवल यही थी कि वहाँके गोरों और नीग्रोओंमें मेल था, और इसके अतिरिक्त अलबामा राज्यकी प्रबन्धकारिणी सभाने नीग्रो-विद्यालयके लिए वार्षिक दो हज़ार डालर देना स्वीकार कर लिया था। पर इसमें भी यह शर्त थी कि यह रकम सिवा अध्यापकोंको वेतन देनेके और किसी काममें खर्च न की जाय। नीग्रो लोगोंमें उस समय बड़ा उत्साह था और उससे वाशिंगटनने पूरा लाभ उठाया।

नीग्रो लोगोंकी तत्कालीन अवस्था।

जिस देश या समाजमें काम करना होता है उस देश या समाजका रत्ती रत्ती हाल जानना ही सफलताका मूलमंत्र है। इसी लिए वाशिंगटनने स्वयं भ्रमण करके अपना कार्यक्षेत्र देख डाला और अपने भावी विद्यार्थियोंकी दशा अपनी आँखों देख ली। आसपासके गाँव खेड़ोंकी यह दशा थी कि लोग एक ही कोठरीवाली पुरानी झोपड़ीमें रहा करते थे। उनमें स्वच्छता तो नाममात्रके लिए भी न थी। ऐसे गन्दे लोग थे कि रोज़ दाँत साफ़ करना भी न जानते थे। स्नान तो कभी दश पाँच दिनमें एकाध बार कर लिया करते थे! अपनी आवश्यकताओंकी ओर ध्यान न देकर पियानो और घड़ी जैसी विलासवस्तुओंको मोल लिया करते थे। और मजा यह कि इन वस्तुओंका अच्छी तरह उपयोग करना भी वे जानते न थे! ऐसी जमीन बहुत होने पर भी कि जहाँ सब प्रकारके अन्न पैदा हो सकते हैं, वे सिर्फ़ कपासकी ही खेती करने और उसीसे बड़ी ज़िल्लतके साथ अपना गुजारा करते थे। खेतीके नये नये ढंग उन्हें मालूम न थे। घरगिरस्तीका ढंग भी वे नहीं जानते थे। जो लोग थोड़ासा लिख पढ़ लेते थे वे बड़ी बड़ी नौकरियाँ पानेकी चेष्टा करते थे। काहिल और बदचलन लोग बेखटके यह मान लेते थे कि ईश्वरने हमें प्रेरणा की है और फिर धर्मोपदेशका काम प्रारंभ कर दिया करते थे!

प्रारंभ।

यह सब दशा देखकर वाशिंगटनको बड़ी दया आई और उन्होंने मेथाडिस्ट संप्रदायके एक गिरजेके समीप एक झोपड़ीमें पाठशाला खोल दी। इसमें अकेले वाशिंगटन ही अध्यापक थे और पंद्रह बालक तथा पंद्रह बालिकायें

मिलाकर तीस विद्यार्थी थे । इन विद्यार्थियोंको गणितके सिद्धान्त और व्याकरणके नियम कंठ थे; पर इनसे क्या काम लिया जाता है यह किसीको मालूम न था । शारीरिक परिश्रम करना वे अपनी शानके खिलाफ समझते थे ।

वाशिंगटनकी सहधर्मिणियोंका सहधर्म ।

पाठशाला आरंभ होने पर डेड़ महीनेके भीतर ही वाशिंगटनकी सहायताके लिए मिस डेविड्सन आगई । वाशिंगटनकी प्रथम पत्नीका देहान्त होने पर इनका वाशिंगटनसे विवाह हो गया । वाशिंगटनके कुल तीन विवाह हुए, और तीनों सहधर्मिणियोंने विद्यालयकी उन्नति करनेमें वाशिंगटनके हाथ बटाये । यह एक ध्यानमें रखनेकी बात है कि जो नीग्रो जाति बहुत पिछड़ी हुई है उसके पास भी, किसी समय उन्नतिके धुराधारी होनेका अभिमान रखनेवाले भारतवासियोंसे, कहीं अधिक साधन हैं । सामाजिक तथा शिक्षाविषयक बातोंमें उन्होंने जो जो काम उठाये हैं उनमें उनकी स्त्रियाँ भी योग देती हैं । हम लोग इस संयोगसे अबतक वञ्चित हैं । वाशिंगटनको, आगे चलकर अनेक सहायक मिले और उनका विद्यालय इस समय केवल नीग्रो अध्यापक और अध्यापिकाओं द्वारा ही चल रहा है ।

शिक्षाविषयक सिद्धान्त ।

उस समय दक्षिणके राज्योंमें फी सदी ८५ नीग्रो खेती पर ही अपनी जीविका चलाते थे । इस लिए वाशिंगटनने पहला सिद्धान्त यह निश्चित किया कि शिक्षाका ऐसा फल न हो कि विद्यार्थी खेतीसे प्रेम करना छोड़ दें । दूसरी बात यह थी कि प्रत्येक विद्यार्थी कोई न कोई कला या हुनर जान जाय और वह उद्योग, मितव्यय तथा सुव्यवस्थाका प्रेमी बन जाय, अर्थात् उसमें इतनी योग्यता आ जाय कि विद्यालयसे निकलने पर वह सुखसे अपना उदर निर्वाह कर सके । तीसरी बात यह थी कि विद्यार्थियोंको ऐसी शिक्षा मिले कि खेती बारीके काममें वे एक नवीन जीवन डाल दें और जिन लोगोंके साथ उन्हें जीवन व्यतीत करना है उनकी मानसिक, नैतिक और धार्मिक उन्नति भी कर सकें ।

आरंभ कैसे किया गया ?

कोई उद्देश्य निश्चित करना एक बात है, और उस पर अमल करना बिलकुल

दूसरी बात है। आरंभमें, अपने उद्देश्यको कार्यमें परिणत करनेके लिए वाशिंगटनके पास कोई साधन नहीं था। ज़मीनका एक टुकड़ा भी उनके पल्ले नहीं था। परन्तु परमात्माने उन्हें एक मौका दिया और उस मौके पर उन्होंने अपने प्रयत्नमें कोई कसर नहीं की। टस्केजीसे एक मील फासले पर एक पुरानी और उजाड़ जगह बिकनेको हुई। वह जगह खरीदनेके लिए हैम्पटन-विद्यालयके कोषाध्यक्षने वाशिंगटनको कीमतकी आधी रकम (२५० डालर) कर्ज़ दी। उसी जगहकी एक पुरानी कोठरी, अस्तबल और मुर्ग़ीखानेमें पाठशाला आरंभ की गई। विद्यार्थियोंने लाचार होकर वहाँकी मरम्मतका काम किया। खेतीके लिए जगह तैयार करते वक्त भी विद्यार्थी राजी नहीं थे। अभी उन्होंने शारीरिक परिश्रमका महत्त्व नहीं जाना था। पर जब हमारे चरितनायक स्वयं कुदाली लेकर ज़मीन खोदने लगे तब विद्यार्थी भी उनकी मदद करनेके लिए आ पहुँचे। शायद उन विद्यार्थियोंको यह मालूम नहीं था कि एक कमरेमें झाड़ू देकर ही वाशिंगटन हैम्पटन-विद्यालयमें भरती हुए थे और इसीलिए उन्हें परिश्रमके महत्त्वका पाठ उनसे लेना पड़ा।

हम लोगोंकी पंगु अवस्था।

हम लोगोंको यह अमूल्य पाठ (परिश्रमका महत्त्व) अभी लेना ही है। हम लोगोंने न जाने कहाँसे यह समझ रक्खा है कि परिश्रम करना महज़ छोटी जातवालोंका काम है। इसी कारणसे हम लोगोंमेंसे हिलने डोलनेकी सामर्थ्यका लोप हो गया है। बिना नौकरके हमारा काम नहीं चलता। अगर कहीं नौकर न हो तो ऐसा जान पड़ता है कि हम जंगलमें लाकर छोड़ दिये गये हैं—हमारी बड़ी फज़ीहत होती है। हमारे यहाँका एक ऐसी पाठशालामें कि जिसका मुख्य उद्देश्य ही विद्यार्थियोंको स्वावलंबी बनाना था, धोतियाँ धोनेके लिए एक धोबी रक्खा गया था! विद्यार्थी नहानेके लिए नदी पर जाते और नहाकर धोती बिना धोये ही ले आया करते थे। अनुसन्धान करने पर मालूम हुआ कि विद्यार्थियोंके मातापिता और अभिभावक नहीं चाहते थे कि हमारे बालक विद्यालयमें रहते हुए कोई काम करें और इसीलिए यह तमाशा हुआ करता था। वे यही चाहते थे कि हमारे बालकोंके दिमाग़ (मस्तक) तो ज्ञानसे भर दिये जायँ; पर शरीरके और सब अंग, काम कराकर मज़बूत न बनाये जायँ!

वे नहीं जानते थे कि यदि शरीरके और सब पुर्जे दुरुस्त न हुए—मददगार अच्छे न हुए तो अकेला दिमाग़ बेचारा क्या कर सकता है ?

हम लोगोंकी प्राचीन शिक्षाप्रणाली।

प्राचीन समयमें हम लोगोंकी शिक्षाप्रणाली ऐसी नहीं थी । गुरुकुलमें जब विद्यार्थी पढ़ने जाते थे तब हाथमें समिधा (होमकी लकड़ी) लेकर जाया करते थे, और गुरु जो जो काम बतलाते थे उन्हें करनेके लिए तैयार रहते थे । इसी प्रकारके नम्रभावसे राजपुत्र तक—श्रीकृष्णभगवान् तक—विद्याभ्यासके लिए गुरुके समीप जाते थे । छान्दोग्य उपनिषद्में एक कथा आती है कि जब सत्य-काम जाबाल गुरुके आश्रममें पढ़ने गया तब गुरुजीने उसे कुछ गौएँ दीं और कहा कि जबतक इनकी एक हज़ार गौएँ न हो जायँ तबतक जंगलमें ही रहो—मेरे पास न आओ । सत्यकाम कई वर्ष जंगलमें रहा और वहाँ उसने प्रकृतिसे बहुतसी बातें सीखीं । गौओंकी संख्या जब एक सहस्रसे अधिक हो गई तब वायुने वृषभरूप धारण करके उससे कहा कि " अब तुम गुरुके पास जाओ । " गुरुकुलमें आते ही गुरुजी उससे बोले, " बेटा, तू तो अब ब्रह्मज्ञानी प्रतीत होता है, यह ज्ञान तुझे किसने बतलाया ? " सत्यकामने उत्तर दिया, " मुझे यह शिक्षा मनुष्यकोटिसे भिन्न प्राणियोंने दी है । पर, महाराज, अब मुझ पर आप अनुग्रह कीजिए और मुझे शिक्षा देकर पूर्ण कीजिए । " तब गुरुजीने उस पर अनुग्रह करके उसे पूर्ण ज्ञानी बना दिया । परिश्रमकी महत्ता और निसर्ग या प्रकृतिकी शिक्षा, यथार्थ शिक्षाके ये दो मुख्य अंग हैं । इंग्लेंडमें भी इसी ढंगसे शिक्षा दी जाती है । वहाँ बड़े बड़े सरदारों और अमीर उमराओंके बालकोंको केवल अपने ही लिए नहीं, बल्कि दूसरोंके लिए भी विद्यालयमें काम करना पड़ता है । उनके घरोंमें नौकर चाकरोंकी कमी नहीं; पर विद्यालयमें उन्हें अकेले ही आना पड़ता है और छात्रावासमें सबके समान रहना पड़ता है । अमेरिकामें गरीब विद्यार्थियोंको अपनी पढ़ाई और भोजनका खर्च चला सकनेके लिए कुछ छोटे मोटे काम करनेको दे दिये जाते हैं । इन कामोंसे उन्हें जो धन मिलता है उससे वे अपना सब खर्च चला लेते हैं । अस्तु । यहाँ हम लोगोंने कुछ ऐसी दशा उत्पन्न कर ली है कि अमीरोंके लड़के शारीरिक परिश्रम करना नहीं चाहते और साधारण श्रेणीके लोग खेती बारीसे भागते हैं । अब समय आगया है कि

हम लोग यथार्थ शिक्षाकी उचित मीमांसा करके अपने बालकबालिकाओंको पुरुषार्थी बनानेका प्रयत्न करें। वाशिंगटनने जिस समय नीग्रो लोगोंमें शिक्षाप्रचारका प्रयत्न आरंभ किया उस समय जो दोष सुशिक्षित नीग्रोओंमें वर्तमान थे वे ही आज हम सुशिक्षित भारतवासियोंमें भी दिखलाई देते हैं। इस दृष्टिसे हम लोगोंके लिए वाशिंगटनका चरित बहुत ही उपयोगी है।

महान् कार्योंमें आध्यात्मिक सहायता।

वाशिंगटनको पाठशालाके लिए भूमि तो मिल ही चुकी थी। अब उनका दूसरा काम कर्ज़ अदा करना था। इसके लिए उन्होंने स्वयं घूम घूम कर और मेले तमाशे खड़े करके रकम जुटानेका प्रयत्न किया। बड़ी तकलीफ़में उनके दिन कटे–रातको नींद भी हराम हो गई; पर अन्तमें वे सफलमनोरथ हुए। इस कार्यमें उन्हें और उनके सहकारियोंको कुछ ऐसे आध्यात्मिक सिद्धान्तोंका ज्ञान हो गया कि जिनसे वे अपना भावी कार्य करनेमे समर्थ हुए। उच्च और पवित्र कार्योंमें विघ्न होते ही हैं; परन्तु इन विघ्नोंमें परमात्माका यही अभिप्राय मालूम होता है कि जो लोग सज्जन हैं वे श्रद्धा, सहिष्णुता और अध्यवसायकी परीक्षामें उत्तीर्ण होकर अपने उठाये हुए कार्यको पूर्ण करें। जितने अधिक विघ्न होते हैं, कार्यमें उतनी ही अधिक सफलता प्राप्त होती है। क्योंकि विघ्नबाधाओंसे सज्जनोंमें सुवर्णके समान अधिक तेजस्विता, और कार्यक्षमता उत्पन्न होती है। संकटोंसे जूझते हुए यदि कुछ लोग खेत रह जाते हैं तो कोई परवा नहीं; क्योंकि निर्बल मनुष्य ईश्वरका पवित्र कार्य करनेके अधिकारी नहीं। यह सिद्धान्त वाशिंगटनके चरितमें भली भाँति दृग्गोचर होता है। घोर चिन्ताके दिनोंने ही उन्हें यश प्राप्त कराया है। उन्हींसे उन्हें निजसे परमात्मा पर अधिक श्रद्धा करनेकी शिक्षा मिली। परिणाम अथवा कर्मफलकी कोई इच्छा मनमें न रख कर अपना काम किये जाना ही मनुष्यका धर्म है।

'कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।'

—भगवद्गीता।

इस सिद्धान्तको उन्होंने कार्यमें परिणत किया। उन्होंने एक और महत्सिद्धान्त यह जाना कि सारी मनुष्यजातिको–अपने शत्रुओंको भी मित्रके समान प्यार करना चाहिए। उन्होंने इस बातका अनुभव किया कि किसीसे बैर करना

आप ही अपनको नीचे गिराना है । इस लिए जिसे उन्नति करनी है उसका धर्म है कि वह किसीसे बैर न करे। इस उच्च कर्मयोगमें अपना व्यक्तित्व तक भूल जानेवाले महात्मा वाशिंगटनने अपनी निष्काम सेवासे ससारको कृतज्ञ बना लिया है।

विद्यालयकी उन्नतिका मार्ग।

विद्यार्थियोंको यह सिखलाया गया कि बडे दिनोंकी छुट्टियोंमें धर्म-तत्त्वोंको आचरणमें किस प्रकार लाना चाहिए और ईश्वरके लिए अर्थात् दीन दरिद्रोंको सुखी करनके लिए किस प्रकारके काम करना चाहिए। सबसे पहले कृषिकर्म आरभ किया गया, क्योंकि वाशिंगटनका यह विद्यालय क्या था, एक छोटासा उपनिवेश बन गया था, और 'सर्वारम्भास्त-ण्डुला प्रस्थमूला' के न्यायसे सबसे पहल उदरनिर्वाहके लिए अन्न उपन्न करनेकी आवश्यकता थी। सच पूछिए तो टस्केजीके सभी काम और धन्धे स्वाभाविक और उचित मार्गसे जारी किये गय हैं। कुछ काम तो इसीलिए शुरू किये गये हैं कि विद्यालयके अनाथ और निर्धन विद्यार्थी अपनी पढाई और भोजनका खर्च चला सकें। इसके बाद एक विशाल भवन बनवाना निश्चय हुआ। वाशिंगटन पर सभी लोगोंका पूरा विश्वास था और इसलिए एक गोरे व्यापारीने बिना माँगे भवनके लिए जितनी लकडी चाहिए देना स्वीकार कर लिया। पर वाशिंगटनने यह सोचा कि जबतक अपने पास काफी रकम न जमा हो जाय तबतक इससे लकडी ले लेना ठीक नहीं, इसलिए उन्होंने चन्दा उगाहनेका प्रयत्न आरभ किया और मिस डेविडसन चन्देके लिए उत्तर प्रान्तमे भ्रमण करने गई। ऐसे समय जब कि धन प्राप्त करनेके सब उपाय किये जाचुके और कहींसे भी धन मिलनेकी आशा न रही, अकस्मात् एक स्थानसे अपन आप सहायता मिल गई। वाशिंगटनके जीवनमे इस प्रकारकी अनेक घटनायें हुई हैं। इन सबमें परमात्माका 'अघटितघटनापटुत्व' दिखलाई देता है। बोस्टनकी दो उदार महिलायें बराबर उनकी सहायता करती रहीं। भवनके विषयमें विशेष रूपसे स्मरण करनेकी बात यह है कि विद्यार्थियाने स्वय अपने हाथों उसकी नींव खोदी थी। तब तक विद्यार्थियोंका यह खयाल बना हुआ था कि हम लोग यहाँ पढने आते हैं, न कि मजदूरी करने। परन्तु वाशिंगटनने इस शिकायतकी कोई परवा नहीं की। इस प्रकार विद्यार्थियोंको फिर दूसरी बार स्वावलबनकी शिक्षा दी गई।

भारतवासियोंके लिए शिक्षा, परिश्रमकी महत्ता और उससे प्रेम ।

हम लोग न जाने कब यह जानेंगे कि परिश्रमके लिए ही परिश्रमसे प्रेम करना चाहिए! इस समय हमारे समाजमें इतना स्वार्थ और आलस्य घुसा हुआ है कि अगर कोई देखभाल करनेवाला नहीं होता है तो हम लोग कोई भी काम अच्छी तरह नहीं करते हैं ! इसी कारण साम्पत्तिक दृष्टिसे यूरोपियन अथवा अमेरिकन मज़दूरोंकी अपेक्षा भारतीय मजदूरोंका मूल्य बहुत ही कम है । उन देशोंमें मज़दूरी अधिक देनी पड़ती है; पर काम भी अच्छा होता है; और यहाँ मज़दूरी कम लगने पर भी उक्त दुर्गुणोंके कारण अन्तमें वह अधिक ही हो जाती है । यही कारण है कि देशी रजवाड़ोंमें यूरोपियन नौकर और देशी कारखानोंमें यूरोपियन मैनेजर रक्खे जाते हैं । शिक्षासे हम लोग इस दोषको तो समझने लगे हैं; पर हमें यह नहीं सिखलाया गया कि यह दोष कैसे दूर किया जा सकता है । सीखें भी कैसे ? परिश्रमकी महत्ता समझकर उससे प्रेम करना सिखलानेके लिए हमारे देशमें हैम्पटन या टस्केजी-विद्यालय जैसी संस्थायें कहाँ हैं ?

प्रकृतिके अनुकरणमें वाशिंगटनकी दृढता ।

वाशिंगटनके कार्यसे बहुत लोग नाखुश थे; परन्तु किसीकी परवा न करके उन्होंने प्रकृतिका ही अनुकरण किया । वे जानते थे कि आरंभमें भूलें होंगी; परन्तु उन्हें यह भी मालूम था कि इन्हीं भूलोंसे अनुभव और ज्ञान भी प्राप्त होगा । टस्केजीमें जब ईंटोंका कारखाना जारी किया गया उस समय वाशिंगटनको उस विषयमें कुछ भी जानकारी न थी । उन्होंने तीन बार प्रयत्न किया और तीनों बार उनका काम बिगड़ गया । चौथे बारके लिए उनके पास पैसे ही न रहे ! अन्तमें अपनी घड़ी रेहन रखकर उन्होंने फिर पजावा लगाया और इस बार उन्हें कामयाबी हासिल हुई । इस काममें उनकी घड़ी चली गई; पर यह देखिए कि उससे उनको कितनी बड़ी शिक्षा प्राप्त हुई ! अब वही ईंटोंका कारखाना इतनी तरक्की पर है कि एक मौसिममें विद्यार्थियोंने बारह लाख ऐसी बढ़ियाँ ईंटें तैयार कीं जो किसी भी बाज़ारमें कट जातीं ! यह एक ऐसी बढ़ियाँ घटना है जो हिन्दीकी दूसरी या तीसरी पुस्तकमें ' फिर कोशिश करो ' इस शीर्ष-

कके साथ छप जानी चाहिए। सन् १९०१ में टस्केजीमें ४० भवन थे जिनमेंसे ३६ केवल विद्यार्थियों द्वारा बने हुए थे। इस समय संयुक्त राज्यके दक्षिण प्रान्तमें ऐसे अनेक विद्यार्थी फैले हुए हैं जो भवन बनानेमें कुशल और शिल्पशास्त्रमें प्रवीण हैं। टस्केजीके विद्यार्थी और अध्यापक बिना किसकी सहायताके अथवा बाहरसे कोई भी मसाला लिये बिना स्वयं चाहे जैसा भवन तैयार कर सकते हैं। नींव खोदनेके कामसे लेकर भवन तैयार होने पर उसमें बिजलीकी रोशनी लगानेतकके सब काम वे अपने हाथों कर लेते हैं। इसी प्रकार विद्यालय तथा उसकी कृषिशाखाके लिए जिन जिन चीजोंकी आवश्यकता होती है वे सब विद्यार्थियों द्वारा ही तैयार होती हैं और ऐसी कुछ चीजे बाजारमें बिकनेके लिए भी भेजी जाती हैं। इस प्रकार धीरे धीरे और स्वाभाविक क्रमसे विद्यालयकी उन्नति हुई है। इस समय इस विद्यालयमें चालीस प्रकारके व्यवसाय सिखलाये जाते हैं।

धनसंग्रह कैसे हुआ?

यों तो सभी संस्थाओंमें धनकी आवश्यकता होती है; परन्तु जब कोई विद्यालय चलाना होता है तब उसके लिए सबसे पहले धनकी ही चिन्ता आ घेरती है। अब देखिए कि वाशिंगटनने इसके लिए क्या क्या उपाय किये। घोर निराशा होने पर अकस्मात मिली हुई सहायताका विषय ऊपर लिख ही चुके हैं। जनरल आर्मस्ट्रांगके अधीन एक विद्यालय था ही और उस विद्यालयके लिए भी धनकी बड़ी भारी आवश्यकता थी; तो भी जनरल महाशय वाशिंगटनको अपने साथ उत्तर प्रान्तमें ले गये और वहाँ उन्हें बड़े बड़े लोगोंसे मिलाकर उन्होंने टस्केजी-विद्यालयको धन दिलानेमें बड़ी सहायता की। क्या इस देशमें भी कोई संस्था दूसरी संस्थाकी इस प्रकारसे सहायता करती है? क्या इस प्रकारकी स्वावलंबी संस्थायें यहाँ भी वर्तमान हैं? दूसरी ध्यान देने योग्य बात यह है कि जनरल आर्मस्ट्राग या हैम्पटन-विद्यालयने वाशिंगटन या टस्केजी-विद्यालयको केवल मार्ग दिखला दिया था; पर उस मार्ग पर चल कर अपना उद्देश्य पूरा करनेका काम वाशिंगटनने ही किया। स्वावलंबी पुरुषोंको इतनी ही सहायता आवश्यक होती है और इतनी ही उन्हें दी जानी चाहिए। भगवद्गीतामें जो तीन प्रकारके दान बतलाये गये हैं उनमेंसे,

अमेरिकन लोग प्रायः सात्विक दान किया करते हैं। कभी कभी गुप्त दान भी दिये जाते हैं; पर वहाँ बिना देश, काल और पात्रकी परीक्षा किये कोई भी दाता दान नहीं देता। इस प्रकारके समझदार और सात्विक दाताओंके कारण ही वाशिंगटनको धन संग्रह करनेमें विशेष कष्ट नहीं उठाने पड़े। संस्थायें सुप्रसिद्धि और सर्वप्रियता कैसे सम्पादन कर सकती हैं इसके लिए वाशिंगटनने अपने अनुभवसे कुछ सिद्धान्त स्थिर किये हैं जो नीचे दिये जाते हैं:—

(१) सर्वसाधारणको और सब प्रकारकी संस्थाओंको अपने कार्यकी खबर कर दो परन्तु यह दीनतासे नहीं, गौरवके साथ करो। अपने कार्यके विषयमें जो कुछ बतलाना हो वह एक तरतीबके साथ पर साफ़ साफ़ बतलाओ।

(२) परिणामके विषयमें निश्चिन्त रहो।

(३) संस्थाकी भीतरी कार्यवाही जितनी ही स्वच्छ, पवित्र और उपयुक्त होगी उतनी ही लोग उसकी सहायता करेंगे।

(४) जिस तरह धनवानोंके पास जाते हो उसी प्रकार निर्धनोंके पास भी सहायता माँगनेके लिए जाना चाहिए। सच्ची सहानुभूति और सहृदयता प्रकट करनेवाले सैकड़ों लोगोंकी छोटी छोटी रकमोंसे ही बड़े बड़े परोपकारके कार्य हुआ करते हैं।

(५) धन संग्रह करते समय धन देनेवालोंसे सहानुभूति और सत्परामर्श भी प्राप्त करनेकी चेष्टा करते रहना चाहिए।

इन सिद्धान्तोंकी सत्यताके कितने ही प्रमाण इस पुस्तकके बारहवें परिच्छेदमें आ गये हैं। उन्हें ध्यानपूर्वक पढ़नेसे परोपकारमें ही जीवन व्यतीत करनेवाले पाठकोंको अनेक लाभ होंगे।

नीग्रो लोगोंकी राजकीय परिस्थितिके विषयमें विचार न करनेका कारण।

अपनी जातिकी राजकीय परिस्थितिके विषयमें वाशिंगटनने बड़ी बुद्धिमानी और चालाकीसे भरी हुई बातें कही हैं। परन्तु वाशिंगटनने अपने जातिभाइयोंकी साम्पत्तिक और शिक्षासम्बन्धी उन्नतिके लिए ही अपना जीवन अर्पण कर दिया है; इसलिए, चलिए हम राजकीय बातोंका विचार छोड़कर फिर विद्यालयकी ओर चलें।

विद्यालयकी उन्नति।

सन् १८८१ में अर्थात् विद्यालयके आरंभिक कालमें सौ एकड़ जमीन, तीन भवन, एक अध्यापक और कुल तीस विद्यार्थी थे। अब (१९१२ में) १०६ भवन, २३५० एकड़ जमीन, १५०० चौपाये, और गाड़ी, सग्गड़ तथा खेतीके औजार वगैरह सब असबाब मिलाकर १२,९५,२१३.१७५ डालरकी सम्पत्ति है। विद्यालयकी सारी मिलकियत, स्थायी फण्डको मिलाकर ३४१६,८६१.२८ डालरकी है। विद्यालयके अध्यापकों और अन्य कर्मचारियोंकी संख्या १८० के ऊपर है; और रजिष्टरमें १६४५ विद्यार्थियोंके नाम दर्ज हैं जिनमें १०६७ बालक और ५७८ बालिकायें हैं। ये विद्यार्थी ३४ राज्यों और प्रदेशोंसे तथा १९ विदेशोंसे आये हुए हैं। २३५० एकड़ जमीनमेंसे १००० एकड़में खेती होती है। विद्यालयके चौपायोंके लिए जितने चारेकी आवश्यकता होती है उसे विद्यालयका कृषिविभाग ही उत्पन्न कर लेता है। इस विभागके विद्यार्थियोंको खेतीके औजार, खेतीकी नवीन पद्धति और साधारण कृषिकर्मकी अच्छी शिक्षा दी जाती है।

विद्यालयमें मानसिक और साहित्यिक शिक्षाके साथ साथ ४० व्यवसायोंका सप्रयोग ज्ञान कराया जाता है। कृषि और कृषिसबंधी दूसरे कार्यों पर बहुत अधिक ज़ोर दिया जाता है। प्रत्येक व्यवसाय या धन्धा इस तरह सिखला दिया जाता है कि विद्यालयसे निकलते ही विद्यार्थियोंको काम मिल जानेमे कोई कठिनाई नहीं पड़ती। विद्यार्थी इतने तैयार हो जाते हैं कि वे और लोगोंको साहित्य और व्यवसायकी शिक्षा अच्छी तरह दे सकते हैं। जिन विद्यार्थियोंमें मानसिक शिक्षा प्राप्त करनेकी सामर्थ्य नहीं होती उन्हें रातकी पाठशालामें पढ़ाया जाता है। वे दिनभर काम धन्धा करते हैं और आगे पढ़नेके लिए धन जमा कर रखते हैं। इस विषयमें बालक और बालिकायें दोनोंके लिए एकसा ही प्रबन्ध किया गया है।

विद्यालय एक समाज या संस्था है।

हैम्पटन-विद्यालयकी रिपोर्टके निम्नलिखित वाक्य टस्केजी-विद्यालय पर भी भली भाँति घटते हैं।-" विद्यालय एक बड़ा समाज या संस्था है। वह अपने सब अभावोंकी पूर्ति स्वयं करता है, और उसके नानाविध औद्योगिक तथा कृषिसंबंधी प्रयत्नोके कारण और लोगोंसे उसका संबंध हो जाता है। विद्यार्थियोंके छात्रावास, शयनागार, भजनमन्दिर, भंडारगृह, कारखाने, प्रयोग-

शाला, खेत, विद्यालय भवन आदि सामानोंसे पाठशाला एक बडी सस्था या बसती मालूम होती है, और यहाँ विद्यार्थी अनेक वस्तुयें तैयार करते हैं,-खेत जोतते हैं, रसोई बनाते हैं, भजन करते हैं, खेलते और आराम करते हैं । इस सस्थाके संचालकोंके सामने सदा यही एक प्रश्न उपस्थित रहता है कि विद्यार्थियोंको काम करते हुए किस प्रकार शिक्षा दी जाय और उनकी दिनचर्या तथा कार्य-कलापसे किस प्रकार उनकी मानसिक और नैतिक उन्नति की जाय । "

विद्यालय एक तरहका साँचा है ।

विद्यालयमें दो प्रकारके विद्यार्थी होते हैं — १ शिल्पशाखामें प्रवेश करनेकी तैयारी करनेवाले, और २ शिल्पशिक्षा समाप्त करके साहित्यका अध्ययन करनेवाले । गरीब विद्यार्थियोंको दिनमें शिल्पशिक्षाके लिए काम करना पडता है और रातको साहित्यका अभ्यास करना पडता है । ऐसा प्रबन्ध होनेसे उन्हे शिल्पशिक्षाके लिए बहुत समय मिलता है । इन दोनो प्रकारकी शिक्षाओंसे विद्यार्थियोंमें नैतिक गुणोकी वृद्धि होता है उनके स्वभावम विशेष दृढता आती है और वे अधिक कार्यक्षम होते हैं । शिक्षा देनेमें ये चार उद्देश्य सामने रहते हैं — १ समाजको जिन वस्तुओकी आवश्यकता है उन वस्तुओंको विद्यार्थी तैयार कर सके, २ विद्यालयके ग्रेज्युएटोंमें इतनी कुशलता, योग्यता और नीतिमत्ता हो कि वे पुरुषार्थके साथ सुखसे अपना उदर निर्वाह कर सकें, ३ विद्यार्थी परिश्रमकी महत्ताको भली भाँति जान जायँ और परिश्रमके लिए ही परिश्रमसे प्रेम करना सीखे और ४ उन विद्यार्थियोंमें देशसेवा करनेकी इच्छा उत्पन्न हो । इस प्रकार विद्यालय एक तरहका साँचा है जिसमेंसे कच्चे विद्यार्थी सुसस्कृत गृहस्थ होकर बाहर निकलते हैं ।

परिश्रमकी शिक्षामे सुगमता ।

विद्यार्थियोंको परिश्रमके लिए ही परिश्रमसे प्रेम करना सिखलानेको आरम्भमे जो प्रयत्न किये गये थे उनका उल्लेख ऊपर आ ही चुका है, परन्तु अब तो वहाँ परिश्रम करना परपराकी एक रीति ही हो गई है । जो नये विद्यार्थी भरती होने आते हैं वे देखते हैं कि सैकडों विद्यार्थी बडे आनन्दसे खतों पर और कारखानोमे शारीरिक परिश्रम कर रहे हैं और यह देखकर वे भी काममें भिड जाते हैं । इस प्रकार पुराने विद्यार्थियोसे नये विद्यार्थी आप ही परिश्रमकी दीक्षा ग्रहण कर लेते हैं । इसका परिणाम समाज पर भी होता है और इससे जातिकी उन्नतिमें बडी सहायता होती है ।

विद्यालयके विशेष कार्य ।

शिल्पशिक्षा और कृषिशिक्षाके साथ साथ व्यापारी ढंग—व्यवहारचातुर्य भी सिखलाया जाता है । विद्यालयमें शिल्पशिक्षाकी अनेक शाखायें होनेसे इस प्रकारकी शिक्षा देनेके लिए बहुत सुभीते हैं । उत्तम अध्यापक भी निर्माण किये जाते हैं । इस कामके लिए खास तौर पर छोटे बचोंका एक बड़ा क्लास रक्खा गया है । बाहरी लोगोंको भी इस विद्यालयके कार्य करनेका ढंग सिखलानेके लिए छुट्टियोंके दिनोंमें एक विशेष क्लास खोल दिया जाता है जिससे अनेक अध्यापक और प्रौढ विद्यार्थी लाभ उठाते हैं ।

परिणाम ।

विद्यालयकी शिक्षाका बड़ाभारी और टिकाऊ परिणाम यह हुआ है कि इस विद्यालयके ग्रेज्युएटोंकी रहनसहन, घरगिरस्तीका ढंग, उद्यमप्रियता और स्वच्छता देखकर समाजके सब प्रकारके लोग उनका अनुकरण कर बहुत सुखी और सभ्य बनते जाते हैं। इस विद्यालयके ग्रेज्युएट (स्त्रियाँ और पुरुष दोनों) उत्तर प्रान्तकी बड़ी बड़ी तनख्वाहें और आरामकी नौकरियोंको छोड़कर अपने समाजकी सेवाके लिए मामूली वेतन पर दक्षिण प्रान्तमें ही रहते हैं । इससे उनका स्वार्थत्याग प्रकट होता है ।

आत्मविश्वासका एक दृष्टान्त ।

जब वाशिंगटन यूरोपमें थे तब उनके पुत्र बेकर वाशिंगटनने उनके पास जो पत्र भेजा था उससे इस बातका पता लगता है कि विद्यालयके विद्यार्थियोंमें कहाँतक आत्मविश्वास उत्पन्न किया जाता है । बेकरने वाशिंगटनको लिखा था—"पूज्य पिताजी ! आप यहाँसे चलते समय मुझसे कह गये थे कि मैं दिनमें छः घंटे अपने काममें लगा रहूँ और शेषसमयमें चाहे जो करूँ; परन्तु मुझे अपना काम इतना पसन्द है कि मैं दिनभर इसी काममें लगा रहना चाहता हूँ । मैं जब दूसरे विद्यालयमें पढ़ने जाऊँगा तब वहाँका खर्च चलानेके लिए धनकी ज़रूरत होगी । सो उसके लिए मैं अभीसे धन इकट्ठा कर रखता हूँ ।"

अपने ही पुरुषार्थसे संसारमें प्रसिद्ध होनेवाले मातापिताकी सन्तान यदि अपनी ही कमाईके भरोसे विद्या लाभ करे तो कोई आश्चर्यकी बात नहीं ! क्या हम भी अपने धनी और निर्धन देशवासियोंमें ऐसा ओज और उत्साह उत्पन्न

कर सकते हैं ? हमारे देशके विद्यार्थियोंको चाहिए कि वे बेकरके इस दृष्टान्तको सदैव अपने सामने रक्खें ।

रचना और प्रबन्ध ।

अब चलिए इस विद्यालयकी रचना और प्रबन्धको देखें । विद्यालयकी सारी मिलकियत पंचोंकी एक कमेटीके अधिकारमें है । पंच वे ही लोग हैं जो नीग्रो जातिके प्रतिनिधि माने जाते हैं और जिन्होंने विद्यालयकी सहायता करनेमें कोई बात उठा नहीं रक्खी है । इन्हीं पंचों द्वारा मिलकियतका सारा प्रबन्ध होता है । विद्यालयकी जितनी शाखायें हैं उतने ही उनके प्रधान या मुख्य अधिकारी हैं और इन प्रधानोंकी एक प्रबन्धकारिणी सभा है जिसके सप्ताहमें दो बार अधिवेशन होते हैं । इसी सभाद्वारा विद्यालयके नियमादि बनते हैं । आयव्ययका विचार करनेवाली एक अलग कमेटी है जिसमें छः सदस्य या मेम्बर रहते हैं । इसका अधिवेशन सप्ताहमे एक बार होता है और इस अधिवेशनमें साप्ताहिक खर्च मंजूर किया जाता है । इसके अतिरिक्त महीनेमें एक बार अथवा आवश्यकता पड़ने पर अनेक बार, सब शिक्षकोंकी साधारण सभा हुआ करती है । इस सभामें शिक्षक शिक्षासंबंधी अनुभवों और अभावोंकी चर्चा करते हैं । इससे शिक्षासंबंधी कार्यमें दिनोंदिन उन्नति होती जाती है । इन सबके अतिरिक्त विद्यालयके भिन्न भिन्न विभागोंकी भिन्न भिन्न सभायें भी हैं जिनके अधिवेशन सदा ही हुआ करते हैं ।

वाशिंगटनकी कार्यपद्धति ।

पर टस्केजी-विद्यालयकी जान अगर पूछिए तो वाशिंगटन ही हैं । इन्हें विद्यालयमें काम करना पड़ता है और विद्यालयकी सहायताके लिए बाहर घूमना भी पड़ता है । वाशिंगटन कहीं भी रहें उन्हें विद्यालयकी दैनिक रिपोर्ट मिला करती है । उनके चतुर सेक्रेटरी और अन्य कर्मचारी उनकी सहायताके लिए तत्पर रहते हैं । उनकी पत्नी भी विद्यालयके कार्यमें उनकी यथेष्ट सहायता करती हैं । विद्यालयके दोष ढूँढ़ निकालनेके लिए वाशिंगटन सदा ही बहुत उत्सुक रहते हैं । वे बड़े स्नेहके साथ विद्यार्थियोंसे बातें करते हैं और बातों ही बातोंमें विद्यालयके संबंधमें उनकी सम्मतियाँ लेकर दोष मालूम कर लेते हैं । पूर्ण और निर्दोष उन्नतिके लिए यह ढंग बहुत ही उपयोगी है । दोष मालूम हो जानेसे उन्हें दूर करनेका प्रयत्न किया

जा सकता है। यदि आँख मूँद कर काम करते गये और दोष बिलकुल देख न पड़े तो सारा काम ही बिगड़ जानेका डर रहता है। जिस विद्यालयका यह उद्देश्य है कि विद्यार्थी विद्यालाभ कर अपने समाजकी सेवा करें और संभव हुआ तो उसकी उन्नति भी करें, उस विद्यालयको समाजकी अत्यन्त आवश्यकताओंके अनुरूप अपने शिक्षाक्रममें हेरफेर करना ही पड़ेगा और इस प्रकारका हेरफेर करना ही यथार्थमें शिक्षा देना है। शिक्षाहीसे प्रपंच और परमार्थके पुरुषार्थ प्राप्त होते हैं, शिक्षाहीसे अपने कर्त्तव्याकर्त्तव्यका विचार सूझता है और शिक्षासे ही अपने समाजकी यथायोग्य सेवा करते बनती है। टस्केजी-विद्यालयके विद्यार्थी और अध्यापक दोनों ही विद्यालयको अपना समझते हैं और विद्यालयके धार्मिक तथा परमार्थिक कार्योंमें वाशिंगटनकी तनमनधनसे सहायता करते हैं। अपना सर्वस्व विद्यालयकी सेवामें अर्पण कर देनेवाले वाशिंगटनको खेल या मनोरंजनके लिए कभी समय नहीं मिलता! वाशिंगटन पहले अपने नित्य कर्मसे निपट लेते हैं और तब किसी नये काममें हाथ लगाते हैं। कामके बोझसे दबना वे नहीं जानते, कामहीको अपने काबूमें कर लेते हैं। काम यदि अपने अधीन हो जाता है तो उससे मनकी प्रसन्नता बढ़ती और आत्मिक बल प्राप्त होता है। कर्मयोगकी इस पद्धतिसे शरीरमें फुर्ती आती है, मनका उत्साह बढ़ता है और आत्मा सन्तुष्ट होता है। तब कृत्रिम ओषधियोकी कोई आवश्यकता नहीं रहती। अन्तरात्मा ही तो कल्पतरु है; उससे क्या नहीं मिल सकता?

दूसरे सामाजिक कार्य।

टस्केजी-विद्यालयके साथ ही साथ दो संस्थाये और चलती हैं-१ नीग्रो कृषक महासभा, और २ नीग्रो राष्ट्रीय उद्यम सभा। इन दोनोका उद्देश्य यही है कि नीग्रो जातिकी साम्पत्तिक, मानसिक और नैतिक उन्नति हो। इन दो महासभाओंकी कितनी ही शाखाये फैल गई हैं जिनसे बनिज-ब्योपार और कृषिकर्मकी बराबर उन्नति होती जा रही है। वाशिंगटनने यह समझ लिया है कि संसार उत्तम वस्तुओकी कदर करता है—उन वस्तुओंको पैदा करने वालोंका रूपरंग नहीं देखता। एक खेतमें साधारणतः जितना अनाज पैदा होता है उससे चौगुना अनाज पैदा करनेवाला मनुष्य अवश्य ही संसारका सम्मान भाजन होगा। उसी प्रकारसे जिसने चित्रकला या और किसी कलामें निपुणता प्राप्त कर ली है संसारमें उसकी प्रतिष्ठा हुए बिना न रहेगी। इस लिए

इस जीवनसंग्राममें यह आवश्यक है कि प्रत्येक जातिके लोग अपनी शक्तिभर समाजके काममें आनेकी चेष्टा करें। समाज तभी उनका आदर करेगा। यदि किसी पिछड़ी हुई जातिमें शिक्षाका प्रचार हो ले और उसकी नैतिक तथा भौतिक उन्नति हो जाय तो फिर उसे राजकीय अधिकार मिलना कोई बड़ी बात नहीं है।

हिन्दुओंके आक्षेप।

यहाँ तक वाशिंगटन और उनके कार्योंका वर्णन हुआ। अब यह विचार करना चाहिए कि हम लोग यहाँ अपने समाजमें वाशिंगटनके ढंगसे कोई काम कर सकते हैं या नहीं। कुछ लोग इस विषयमें यह आक्षेप करेंगे कि, "हम हिन्दुओंकी सभ्यता अत्यन्त प्राचीन है। नीग्रो लोग तो अभी अभी अज्ञानके अन्धकारसे बाहर आये हैं और अभी उन्हें तो प्रपंचकी छोटी छोटी बातें तक सीखनी हैं। हम लोगोंकी अवस्था बिलकुल भिन्न है। वाशिंगटन और उनके जैसे हैम्पटनी विचारके लोग शिल्पशिक्षाको ही सब कुछ माने बैठे हैं; परन्तु जिस जातिमें प्रचंड बुद्धिसम्पन्न पुरुष उत्पन्न हो सकते हैं उस जातिके लिए इस शिक्षासे काम न चलेगा। यहाँ तो मानसिक शिक्षाकी ही प्रधानता होनी चाहिए।"

आक्षेपोंका विचार।

यह सच है कि किसी समय हमारी जाति बहुत ही उन्नत थी, परन्तु अब हमारी उन्नति रुकी हुई है। यदि हम लोग फिर ऊपर उठना चाहे तो हमें पहले उन्नतिके मूलतत्त्वोंका विचार करना चाहिए। यदि यह प्रमाणित हो जाय कि उन्हीं तत्त्वों पर नीग्रो जाति अपनी उन्नति कर रही है तो क्या कारण है कि हम लोग भी उसी मार्ग पर न चलें? सत्यको स्वीकार करना सत्यान्वेषियोंका धर्म है। पहले हमें इस बातका विचार करना चाहिए कि नीग्रो लोग क्या कर रहे हैं। वे लोग इस समय यह चेष्टा कर रहे हैं कि नीग्रो जातिमें पुरुषार्थी स्त्रीपुरुष उत्पन्न हों, उनका प्रत्येक कार्य धर्म और ईश्वरभावसे प्रेरित हो, उनमें उच्च प्रकारकी नीतिमत्ता हो, उनका आचरण अत्यन्त शुद्ध हो, वे पुरुषार्थके साथ अपना जीवन निर्वाह करें, आत्मविश्वासके साथ अपने समाजकी सेवा करें, अपने मातापिताओं तथा सरकारके आज्ञापालक हों, उनमें चातुर्य, दक्षता, आत्मसंयम, सहिष्णुता आदि गुणोंका उत्तम विकास हो और वे परिश्रमके लिए ही परिश्रम करना सीखें। भला बतलाइए तो कि ये गुण किस समाजके लिए

आवश्यक नहीं हैं ? इन गुणोंका समुदाय ही सनातन सत्य है और इस सत्यका सर्वत्र सम्मान है। इन गुणोंकी प्राप्तिके लिए वाशिंगटनने निसर्ग (प्रकृति) का ही अनुकरण किया है। उन्होंने विद्यालय क्या स्थापन किया है अपने अभावोंकी स्वयं पूर्त्ति करनेवाला एक समाज ही खड़ा कर दिया है। आरंभमें उन्हें बड़ी बड़ी कठिनाइयाँ उठानी पड़ीं; पर अब सब काम घड़ीके काँटोंकी तरह बराबर हो रहे हैं। इस विद्यालयने समाजकी शकल बदल दी है। यदि भारतवर्ष-के किसी विद्यालयका कोई विद्यार्थी जंगलमें ले जाकर छोड़ दिया जाय तो वह भूख प्यासके मारे मर जाय; परन्तु उसी स्थान पर टस्केजी या हेम्पटनका विद्यार्थी छोड़ दिया जाय तो वह वहाँ राबिन्सन क्रूसोकी तरह एक नई बस्ती कायम कर देगा! हमारे देशमें सारा दारोमदार मानसिक शिक्षा पर ही रहता है; परन्तु हाथपैर और नाककान ही अगर ढीले पड़ गये हों तो मन बेचारा दौड़ लगाकर क्या करेगा? शरीरके सारे ही अंगोंका विकास होना चाहिए। इतने दिनों बाद अब कहीं यहाँ वालों-को इस सिद्धान्तका पता लगा है और अब किसी किसी विद्यालयमें हाथकाम (Manual Training) की शिक्षा आरंभ की गई है। पर यथार्थ शिक्षा मकानमें नहीं बल्कि मैदानहीमें मिलती है और इसी लिए खेतो पर काम करने-वाले और इमारतें बनानेवाले बालक हाथकाम या शिल्पकी कक्षाओंमें शिक्षा पाये हुए विद्यार्थियोसे कहीं बढ़कर पुरुषार्थी होते हैं। भारतवर्षकी आबादीके मुकाबलेमे हमारे बुद्धिमान् या लिखे पढ़े लोगोंकी संख्या बहुत ही थोड़ी है। किसानों और कारीगरोंकी संख्या ही विशेष है। सैकड़ा ८० आदमी तो कोरे किसान ही हैं। इनकी शिक्षाका क्या प्रबन्ध किया गया है? जिन्हें हम लिखे पढ़े या बुद्धिमान कहते हैं उनकी ही क्या दशा है? उन्होंने तो क्लर्कीकी ही शिक्षा पाई है। इस शिक्षासे क्या सारी जाति उन्नत हो जायगी? हम तो यह कहते हैं कि हैम्पटन अथवा टस्केजीकेसे विद्यालय इस देशमें स्थान स्थान पर स्थापित हो जाएँ और उनमे उच्च प्रकारकी मानसिक शिक्षाका भी प्रबन्ध हो। देहातोंमें रहकर देहातियोंकी दशा सुधारनेवाले उत्साही और स्वार्थत्यागी ग्रेज्युएट इस देशमें कहाँ है? हमने माना कि ऐसे उत्साही और स्वार्थत्यागी ग्रेज्युएट मिल जायँगे, तो भी यह पूछना है कि क्या इन ग्रेज्युएटोंमें इतनी योग्यता है कि वे किसानोंकी दशा सुधार सकें? हम लोगोंको तो देहातोंमें और शहरोंके कारीगरोंमें ही काम करना

है। इन लोगोंके लड़कोंको हमारे ग्रेज्युएट नहीं सिखला सकते। यही तो मुश्किल है। उच्चशिक्षाके विषयमें यहाँ विचार करनेकी अवश्यकता नहीं; शिक्षाविभागके अधिकारी उसमें उचित हेरफेर कर ही रहे हैं; परन्तु आरंभिक शिक्षामें–हाई स्कूलोंमें कुछ भी आवश्यक हेरफेर होता नहीं दीखता। समाजकी आवश्यकता ही तो शिक्षाकी कसौटी है। आजकल स्कूलोंमें जो शिक्षा दी जाती है उससे हमारे समाजका कुछ भी काम नहीं निकलता। आरंभिक शिक्षाक्रममें एक भी ऐसी शिक्षा नहीं दी जाती जिससे विद्यार्थी अपने बल पर खड़ा हो या अपने समाजकी कुछ सेवा कर सके। यदि आप लोगोंको उत्तम अध्यापकों, उपदेशकों, शिल्पियों और कृषकोंकी आवश्यकता है तो उनके लिए उनके कामोंमें निपुण करनेवाले विद्यालय स्थापित कीजिए। यहाँ हैम्पटन और टस्केजी विद्यालयकी कार्यपद्धति शुरू कर देनेकी कितनी आवश्यकता है सो सब पाठकोंको मालूम ही होगया होगा। भारतसन्तानोंको शिक्षादान देनेकी जिन स्त्री पुरुषों पर जिम्मेदारी है उन्हें हैम्पटन और टस्केजी-विद्यालयकी कार्यपद्धति और उनके सिद्धान्तोंको, यहाँकी अवश्यकताओंके अनुरूप उचित हेरफेरके साथ, सदा अपने सामने रखना चाहिए।

तीव्र बुद्धिसम्पन्न पुरुषोंकी संख्या बहुत ही थोड़ी हुआ करती है। ऐसे पुरुषोंको उनकी उन्नतिके उपाय भी नहीं बतलाने पड़ते। हर्बर्ट स्पेन्सरने विश्व-विद्यालयमें जाकर कब पढ़ा था? कोई यह नहीं कहता कि विद्यार्थियोंको उच्च शिक्षा न दी जानी चाहिए। जो उच्च शिक्षा पानेके अधिकारी हों, वे अवश्य उद्योग करें–उन्हें कोई नहीं रोकता; परन्तु आजकलकी तरह ऐरे गैरे लोग भी उसमें दखल न दिया करें तो अच्छा हो।

हमें क्या करना चाहिए?

क्या हम लोग भी अपने देशमें हैम्पटन या टस्केजीके समान विद्यालय स्थापित नहीं कर सकते? आरंभमें कठिनाइयाँ उठानी पड़ेंगी इसमें सन्देह नहीं। स्वयं वाशिंगटन और उनके गुरु जनरल आर्मस्ट्रांगको भी बड़ी बड़ी कठिनाइयोंसे सामना करना पड़ा था। परन्तु दृढ़निश्चयी मनुष्योंके मार्गसे पर्वतप्राय कठिनाइयाँ भी हट जाती हैं! भारतवर्षमें दयालु अँगरेज-सरकारकी छत्रछायामें शिक्षाप्रचारके लिए हम लोगोंको अनेक सुवि-

थायें मिल सकती हैं। स्वयं सरकार भी विद्यादानका बहुत कुछ प्रयत्न कर रही है। यदि हमारे विद्वान् भाई इस कार्यमें योग दें तो शिक्षा-प्रचारके कार्यमें बड़ी भारी सहायता होगी। इसमें कोई सन्देह नहीं कि इस कार्यमें उन्हें अपना जीवन अर्पण कर देना होगा। टस्केजी-विद्यालयके समान ही काम आरंभ किया जाय और उसके साथ शिल्पसबंधी और मानसिक शिक्षा भी देनेका प्रबन्ध हो। काम धीरे धीरे करना ही अच्छा होता है। हाँ, एक साथ ही बहुत बड़ी रकम जमा हो गई और काम करनेवाले भी मिल गये तो बात दूसरी है। खेतीसे आरंभ हो और खेतीके साथ बढई और लुहारका भी काम सिखलाया जाय। कारखाना एकदम बढ़ा देना ठीक नहीं। पहले सीनापिरोना और कातना बुनना आदि छोटे छोटे काम हाथमें लिये जायें और फिर ईटोंका या और कोई ऐसा ही कारखाना शुरू कर दिया जाय। कामका पूरा ढंग एकाएक नहीं बँध सकता, क्योंकि जहाँ जैसी परिस्थिति हो वहाँ वैसा ढंग स्वीकार करना पड़ेगा। परन्तु खेतीका काम सभी जगह शुरू किया जा सकता है। पढ़ाई और भोजनका खर्चका प्रबन्ध हैम्पटनकासा होना चाहिए। विद्यालयका खर्च चलानेके लिए पहले तो अपने आसपास ही और फिर दूरदूरतक घूम कर चन्दा उगाहनेका काम करना चाहिए। सबसे पहले योग्य अध्यापक मिलनेकी कठिनाई है, परन्तु ढूँढने पर ऐसे अध्यापक मिल जायँगे। विद्यालयके सचालक यदि स्वय विद्यालयके भिन्न भिन्न विभागोंको न चला सकें तो कोई परवा नहीं, पर उन्हें कमसे कम चलानेका ढंग अवश्य मालूम हो।

उक्त प्रयत्नका परिणाम।

समाजपर इस शिक्षाका बहुत ही अच्छा परिणाम होगा। इस विद्यालयसे जो विद्यार्थी बाहर निकलेंगे वे आजकलकी तरह रट्टू तोते न होंगे, उन्हें इस बातका ज्ञान रहेगा कि समाजको किस प्रकार मिलाना होता है और कैसे उसका साथ देना होता है। तात्पर्य, ऐसे विद्यालयसे निकले हुए विद्यार्थी समाजके वास्तविक नेता होंगे।

स्त्रीशिक्षा।

स्त्रीशिक्षाके विषयमें हम लोगोंकी विचारपद्धति उनसे भिन्न होगी, क्योंकि हमारी

परिस्थिति उनकी परिस्थितिसे भिन्न है । स्त्रियोंके लिए हम लोगोंको अलग पाठ-शालायें खोलनी होंगी और उनमें इस प्रकारकी शिक्षा देनी होगी कि हमारी बहने आदर्शमातायें बन सकें । हेम्पटन और टस्केजीके समान उन्हें भी गृहव्यवस्था, पाकशास्त्र, शिशुपालन आदिकी शिक्षा दी जानी चाहिए । यहाँ पुरुषोंके बराबर स्त्रियोंको भी शिल्पशिक्षा देनेकी आवश्यकता नहीं । जो स्त्रियाँ आजन्म कुमारिका व्रत धारण करें अथवा जो विधवा हों उन्हें कुछ शिल्पशिक्षा अवश्य मिलनी चाहिए, और इस समयकी आवश्यकतासे तो यही उचित मालूम होता है कि उन्हें अध्यापिका और दाईका कार्य विशेषतासे सिखलाया जाय ।

धार्मिक शिक्षण ।

हिन्दू बालक बालिकाओंको धार्मिक शिक्षाकी कितनी आवश्यकता है सो किसीसे छिपा नहीं है । परन्तु धार्मिक शिक्षा केवल बातूनी न हो, बल्कि उससे आचरण शुद्ध होना चाहिए । धार्मिक शिक्षासे तो सब प्रकारकी उन्नति होनी चाहिए । बाहरी आडंबर या विधिविशेषकी प्रधानता बिलकुल न रहे । विद्यालयके संचालक जो आचार बतला देंगे उनके अनुसार विद्यालयमें सब किसीका आचरण होना चाहिए, क्योंकि सभी आचार एक ही तत्त्वकी प्राप्ति कराते हैं । असल बात तो यह है कि स्वयं अध्यापकोंको धर्मके वास्तविक धर्मके अनुकूल अपना आचरण बनाना चाहिए । दूसरे सम्प्रदायोंके या मतोंके विषयमें सहिष्णुता होनी चाहिए । विद्यालयमें सभी मत और पन्थके लोग होंगे, इसलिए औपचारिक बातोंमें सबको अपने अपने सम्प्रदायके आचार माननेकी स्वतन्त्रता रहे, परन्तु जिन मुख्य तत्त्वोंके विषयमें सब धर्मसम्प्रदायोंकी एक राय है उन तत्त्वोंके आचरणमें सबके लिए एक ही नियम होना चाहिए । ऐहिक शिक्षामें जो लोग तैयार हुए हैं उनके लिए यह बात जितनी कठिन मालूम होती है वास्तवमें उतनी नहीं है । जो कुछ कठिनता इसमें दिखाई देती है वह कार्य आरंभ होते ही नष्ट हो जायगी ।

अन्तिम प्रार्थना ।

शिक्षादानसे देशसेवा करनेका प्रण करनेवालोंके मनमें ऊपरके तत्त्व और सिद्धान्त जितने ही बैठ जायँगे उतना ही डाक्टर बुकर टी. वाशिंगटनके चरित और कार्यावलीका पाठकोंको परिचय करा देनेका प्रयत्न सफल होगा ।

आत्मोद्धार-

हमारे देशके सर्व साधारण जनोंमें अज्ञान फैल रहा है और उन्हें शिक्षित करनेकी बड़ी आवश्यकता है। ब्रह्मचारियों और सन्यासियोंसे हमारी हाथ जोड़कर प्रार्थना है कि आप अपनी मुक्तिका विचार तो करते ही हैं; पर अब अपने अनजान भाइयोंको भी ऊपर उठानेका विचार करें। क्या हमारे त्यागी ब्रह्मचारी और सन्यासी प्राचीन ऋषिमुनियोंकी तरह इस प्रश्नका विचार करेंगे? क्या फिर एक बार इस देशमें शिक्षा और ज्ञानका सर्वत्र प्रचार होगा? अब हम लोगोंके सामने यही प्रश्न है कि हम लोग अपने देशको पहलेकी तरह अथवा उससे अधिक वैभवशाली करेंगे, या दिन दिन अवनतिके पंकमें ही धँसते जायँगे? इसमें सन्देह नहीं कि प्राचीन गौरव-गरिमाकी बड़ी बड़ी बातें बहुत सुहावनी होती हैं; पर उन बातोंको सुनकर यदि हममें समाजकी उन्नतिके लिए फिर उद्योग करनेकी प्रेरणा नहीं हो तो उनका होना न होना बराबर है। भारतवर्षमें आध्यात्मिक स्वार्थत्यागकी कमी नहीं है; पर वही स्वार्थत्याग जब कर्मयोगके मार्गसे प्रवाहित होने लग जायगा तब भारतके भविष्यके विषयमें किसीको भी निराश होनेका कारण नहीं। काम शुरू हो गया है। स्वतंत्र विश्वविद्यालयका प्रयत्न हो रहा है; उसके बड़े बड़े उद्देश्य हैं। यह ठीक है; परन्तु हम लोगोंको भी छोटे छोटे कामोंसे अपना प्रयत्न आरंभ कर देना चाहिए। स्थान स्थान पर ज्ञानदीप प्रज्वालित कर लोगोंको इस योग्य बना देना चाहिए कि वे भावी विश्वविद्यालयके ज्ञानतेजसे तेजस्वी हों। देहातोंमें और छोटे छोटे कसबोंमें शिक्षादानके प्रयत्न आरंभ कर देनेका यही समय है।

अन्तमें उस सच्चिदानन्द परमात्मासे प्रार्थना है कि अज्ञानदास्यसे अपनी सन्तानोंको मुक्त करनेके प्रयत्नमें भारतवासी सफलमनोरथ हों, और वाशिंगटन आर्मस्ट्रांग जैसे नररत्न तथा वाशिंगटनकी माता, उनकी तीनों सहधर्मिणियाँ, मिस मेरी मैकी, मिसेस रफनर जैसे रमणीरत्न इस रत्नगर्भा भारतवसुन्धरा पर भी अवतीर्ण हों।

डाक्टर बुकर टी. वाशिंगटन ।

उपोद्घात।

गुलामीका संक्षिप्त परिचय।

* " If slavery is not wrong, nothing is wrong ! "

—*Abraham Lincon.*

सत्रहवी शताब्दिके आरम्भमें यूरोपियन लोग यूरोपके भिन्न भिन्न भागोंसे अमेरिकामें आकर बसने लगे। उस समय अमेरिका बिलकुल जंगली प्रदेश था, इस लिए जंगलोंको साफ़ करने तथा अन्य कामोंके लिए मज़दूरोंकी बड़ी आवश्यकता प्रतीत होने लगी। अमेरिकामें बहुतसी ज़मीन पाकर, यूरोपसे आये हुए लोग, वहाँके ज़मींदार बन गये, पर मज़दूरोंके बिना उनका काम रुक गया। इस मौके पर पोर्तुगीजोंने अपना हाथ गरम करनेके लिए आफ्रिकाके नीग्रो या हबशियोंको जहाज़ों पर लाद लाद करके लाना और उन्हें अमेरिकामें बेचना आरंभ किया। आगे चलकर यह व्यापार धीरे धीरे अँगरेज़ोंके हाथ आ गया। हरसाल हज़ारों निरपराध मनुष्य भेड़-बकरियोंकी तरह बिकने लगे! नई दुनियामें या अमेरिकामें भावी विपत्तिका बीज इसी समय बोया गया।

सन् १७६५ के लगभग अँगरेज़ोंसे कुछ करोंके मामलेमें अमेरिकन औपनिवेशिकोंका मन-मोटाव हो गया और आगे चलकर यह झगड़ा इतना बढ़ा कि दोनोंमें भयंकर युद्ध छिड़नेके लक्षण दिखाई देने लगे। एडमंड बर्क और लार्ड चेथम (विलीयम पिट) ने बहुत कोशिश की कि युद्ध न हो; पर कोई नतीजा न हुआ और अन्तमें युद्ध छिड़ ही गया। आठ वर्ष 'तू तू, मैं मैं' में बीते और आखिर सन् १७७५ में

* अगर गुलामी पाप नहीं है तो पाप फिर कुछ है ही नहीं।

—अब्राहम लिंकन।

युद्धका 'मारू बाजा' भी बज उठा। एक ही वर्ष बाद अर्थात् १७७६ में फिलाडेल्फियाकी कांग्रेसने स्वतंत्रताका घोषणापत्र (The Declaration of independence) प्रकाशित कर दिया। इसके पश्चात् सात आठ वर्ष तक दोनोंमें घोर युद्ध हुआ और सन् १७८३ में वरसेलिसकी सन्धिके अनुसार अमेरिकाके तेरह राज्य स्वाधीन हो गये।

इस प्रकार अनेक क्लेशोंको सहकर, धन और रक्तको न्योछावर कर अमेरिकनोंने यह साबित कर दिया कि 'प्रत्येक मनुष्य ईश्वरके न्यायसे स्वतंत्र है।' इससे संसारमें बड़ा भारी आन्दोलन मच गया। परन्तु एक बातमें अमेरिकनोंने बड़ी भूल की। प्रत्येक मनुष्यकी स्वतंत्रताका सिद्धान्त वे केवल गोरोंके लिए ही मानने लगे! नीग्रो या हबशियोंको वे मनुष्य नहीं समझते थे और उन्हें स्वतंत्रता देनेसे भी इनकार करते थे! प्रायः सभी गोरे अमेरिकन नीग्रो लोगोंको अपनी सम्पत्ति समझते थे और काम भी उनसे इसी समझके अनुसार लेते थे! सुनते हैं कि अमेरिकाके पहले प्रेसिडेंट जार्ज वाशिंगटनके पास भी कुछ गुलाम थे!

अँगरेज़ोंको धीरे धीरे गुलामीमें बड़ा अन्याय दीखने लगा और वे इस अन्यायसे मुक्त होनेकी चेष्टा करने लगे। गुलामीका व्यापार रानी एलिज़ाबेथके शासनकालमें आरंभ हुआ था। तीसरे जार्जके शासनकालके आरंभमें वह बहुत ही बढ़ गया था। कहते हैं कि उस समय अँगरेज़ी जहाज़ोंके द्वारा हरसाल पचास पचास हज़ार हबशी गुलाम बनाकर लाये जाते थे! धीरे धीरे लोगोंके कानोंतक ये बातें पहुँचने लगी कि ये हबशी आफ्रिकामें किस तरह पकड़े जाते हैं, जहाज़ोंमें किसतरह भेड़-बकरियोंकी नाई भरे जाते हैं, उन पर कैसे कैसे अत्याचार किये जाते हैं और एटलांटिक-महासागरसे वेस्ट इंडीज़ और अमेरिकामें लाये जाकर वे किस तरह बेचे जाते हे। इन बातोंका सुनकर लोगोंके रोंगटे खड़े हो जाते थे।

गुलामी बन्द करनेके लिए विलियम विलबर फोर्स नामक एक स [illegible]-नने बड़ा उद्योग किया। इस संबंधमें उन्होंने सन् १७८८ में

पार्लियामेंटके सामने एक सूचना भी उपस्थित की, पर गुलामोका व्यापार करनेवालोके विरोधसे वह सूचना स्वीकृत न हुई। किन्तु इससे विलबर फोर्स निराश न हुए, वे अपने उद्योगमें बराबर लगे रहे। सन् १८०६ मे मि० फाक्सके प्रस्ताव करने पर गुलामोका व्यापार तो बन्द हो गया, पर उस समय अँगरजी राज्यमें आठ लाख गुलाम बाकी रह गये। अन्तमे सन् १८३२ मे पालियामेटने एक नियम बना कर सारे गुलामोंको स्वतत्र कर दिया और इस तरह मि० विलबर फोर्सके प्रयत्नोकी सफलता हुई। इस काममे उन्होने लगातार ४५ वर्ष परिश्रम किया और अन्तमे गलामोकी स्वाधीनताका नियम बन जाने पर, अर्थात् अपने जीवनका महत्कार्य कर चुकने पर, चाथे ही रोज—७५ वर्षकी अवस्थामे—मि० विलबरफोर्स परलोक सिधार गये! अगरेजी राज्यमे गुलामी न रहने देनेका प्राय सारा यश इन्हींको है।

चलिए, अब अमेरिकाके गुलामोका इतिहास देखे। सबसे पहले टामस पेन नामक एक उदारचरित महात्मान ८ मार्च सन् १७७५ के दिन गुलामीके विरुद्ध अपना एक लेख प्रकाशित किया। इसके महीने, सवा महीने बाद, ता० १२ एप्रिल सन् १७७५ के दिन गुलामी मेटनेका उद्योग करनेवाली पहली सभा स्थापित हुई। इसके बाद टामस पेन तथा अन्य कई सज्जनोंके उद्योगसे ता० २ नवबर सन् १७७९ के रोज पेन्सिलवानिया राज्यमे—जहाँ कि छ हजार गुलाम थे—गुलामीको नाजायज बतलानेवाला कायदा पास हो गया। इसके बाद सन् १८८३ मे, अमेरिकाके स्वाधीन हो जाने पर जार्ज वाशिंगटन, टामस जेफरसन और अलेकजाडर हैमिल्टन आदि सज्जनोंने अमेरिकाकी जो स्वतत्र शासन-प्रणाली निश्चित की, उसकी मुख्य बातें ये थी —सब मनुष्य समान और स्वतत्र है, सबके समान अधिकार है कोई किसीका अधिकार नही छीन सकता। परतु जबतक अमेरिकामे गुलामीकी प्रथा बनी रही तबतक इन सिद्धान्तोका पूर्णरूपसे पालन नही हुआ।

*उत्तरके राज्योंने तो गुलामीको अन्याय समझकर गुलामोंको स्वतंत्र कर दिया; परन्तु दक्षिणके राज्योंने अपने गुलामोंको नहीं छोड़ा। इतना ही नहीं वे यह भी कहने लगे कि यदि हम लोगोंको गुलाम रखनेका अधिकार न दिया जायगा तो हम लोग यूनियन राज्यमें ही सम्मिलत न होंगे। समय बड़ा बिकट था; देशमें एकता बनाये रखनेकी बड़ी आवश्यकता थी; इस लिए दाक्षिणी राज्यों पर गुलाम छोड़ देनेके लिए, बहुत जोर नहीं दिया जा सकता था। उत्तरके राज्य यह सोचकर चुप रह गये कि कुछ समय बाद दक्षिणी राज्य आप ही अपना अन्याय समझ कर गुलामोंको छोड़ देंगे। उत्तर प्रान्तके राज्योंमें शीत अधिक पड़ता था; इस लिए उन्हें खेती वगैरहके कामोंके लिए गुलामोंसे भी अधिक योग्य मजदूरोंकी आवश्यकता थी और इसी लिए गुलामोंकी स्वाधीनतासे उनकी कोई हानि न हुई। परन्तु दक्षिणी राज्योंकी दशा इससे बिलकुल विपरीत थी। वहाँ गरमी अधिक पड़ती थी और इस लिए विना गुलामोंकी मददके खेतीका काम अच्छा नहीं हो सकता था। खेतों पर दोपहरकी झुलसाती हुई धूपमें एक ओवर-सियरके हाथ नीचे सैकड़ों नीग्रो गुलाम लगातार पसीना बहाया करते थे और गोरे मालिक अपनी हवेलियोंमें आरामसे पड़े रहते थे। यही कारण था कि दक्षिणी लोग गुलामीकी प्रथा बन्द करनेके विरुद्ध थे। सन् १८०५ में डामिगो प्रदेशके गुलामोंको बहुत ही कष्ट दिये गये। उस समय टामस पेनने प्रेसिडेंट जेफरसनके पास कई प्रार्थनापत्र और चिट्ठियाँ भेजीं; पर उससे कोई विशेष लाभ नहीं हुआ। सन् १८०९ में टामस पेनका देहान्त हो गया। कहते हैं कि उनकी उत्तरक्रियाके समय अपनी जातिकी ओरसे कृतज्ञता प्रकट करनेके लिए, दो नीग्रो उपस्थित हुए थे।

* अमेरिकाके नकशे पर इलिनाइस राज्यके नीचे एक आड़ी रेखा खींचने पर संयुक्त राज्यके जो दो टुकड़े हो जाते हैं उनमेसे ऊपरके हिस्सेमें गुलामी नहीं थी और नीचेके हिस्सेमें अर्थात् दक्षिणमें थी। उत्तरके लोग गुलामीके विरुद्ध थे और दक्षिणके लोग पक्षमें थे।

ईश्वरके राज्यमें सत्य कभी दबा नहीं रह सकता; अन्तमें उसकी जय होती ही है ! गुलामीको मेट देनेकी चेष्टा करनेवाले टामस पेनका तो देहान्त हो गया, पर उसी वर्ष गुलामीको सदाके लिए ज़मीनके अन्दर गाड़ देनेवाले महात्मा अब्राहम लिंकनका जन्म हुआ। एक बड़े ही दरिद्र घरमें इनका जन्म हुआ था। जब अब्राहम कुछ बड़े हुए तब उनकी योग्यता, सावधानता और पुरुषार्थ देखकर ओफट नामके एक व्यापारीने उन्हें अपना सहकारी बनाकर स्प्रिंगफील्डसे न्यूआरलीन्समें अपनी दूकान पर बुलवा लिया। न्यूआरलीन्स पहुँच कर अब्राहमने गुलामीका भयंकर दृश्य देखा। वहाँ गुलामोंका एक बड़ा भारी बाज़ार लगा करता था। अब्राहमने वहीं पहले पहल अपनी आँखों देखा कि झुंडके झुंड गुलाम बेड़ियाँ पहनाकर एक कतारमें खड़े किये जाते हैं और कोड़ोंकी मार मारकर उनकी पीठसे रक्तके फव्वारे उड़ाये जाते हैं ! और लोगोंको तो यह दृश्य देखनेकी आदत पड़ गई थी, इस लिए उन पर कुछ असर न होता था; पर अब्राहमके हृदयमें इससे बड़ी भारी चोट लगी। उस समय या उसके बाद भी मुँहसे एक शब्द भी उन्होंने इस विषयका नहीं निकाला; पर वे मन ही मन चिन्ता करते रहे। उस समय उनका अन्तःकरण पिघल गया और उनकी छातीमें गुलामीका काँटा चुभ गया जो गुलामीका सत्यानाश होने तक वहाँसे न निकला। गुलामी मेट देनेका उन्होंने संकल्प किया और ईश्वरकी कृपासे वह संकल्प पूरा भी हुआ !

सन् १८३० के लगभग विलियम लायड गैरिसन नामक एक सुप्रसिद्ध सज्जनने सेंटलुई नगरसे 'स्वातंत्र्यदाता (Liberator)' नामका एक समाचारपत्र निकलना आरंभ किया। उसका उद्देश्य गुलामीके अन्यायोंको सर्वसाधारण पर प्रकट करना था। परन्तु एक दिन कुछ गुंडोंने उसके आफिसमें घुसकर गैरिसन तथा कुछ नौकरों पर आक्रमण किया और उनमेंसे कुछको तो मार ही डाला !

इस प्रकारकी, बल्कि, इससे भी अधिक भयकर घटनायें मिसेस एच बी स्टो नामकी एक विदुषीने देखीं और सुनी। उनका हृदय बहुत दयालु और कोमल था। गुलामो पर जो अत्याचार होते थे उन्हे वे सह न सकती थी, परन्तु वे बहुत दिना तक यह सोच कर चुप रही कि ज्यों ज्यों लोगोंमे सुधार और ज्ञानका प्रचार होगा त्यो त्यो यह अन्याय कम होता जायगा, और अन्तमे बिलकुल मिट जायगा। किन्तु जब सन् १८५० में, भागे हुए गुलामोका गिरफ्तार करके ले आनेका कानून बनानेकी चेष्टा होने लगी, धर्मकी ध्वजा उडानेवाले पादरी लोग भी लोगाको उपदेश देने लगे कि मालिकके अत्याचारास दुखी होकर भागे हए गुलामोको पकडवा देना धर्म हे, और उत्तरी राज्याके बडे बड दयालु और प्रतिष्ठित लोग भी गुलामोको पकडवा दनेके बारेमे धर्मशास्त्रोंके वचन सग्रह करने लगे, तब उस मनस्विनी महिलाको बहुत ही आश्चर्य और दु ख हुआ। अब उनसे चुप न रहा गया। उन्होन गुलामीका असली रूप प्रकट करनक लिए अपनी देखी और सनी हुइ बातोंक आधार पर 'टाम चाचाकी झोपडी (Uncle Tom s cal in)' नामक एक बहत ही सुन्दर ग्रन्थ लिखा। गुलामोका दिनभर खेता पर किस प्रकार जी-तोड परिश्रम करना पडता था, जरा सी भल होने पर भी आवरसियर लोग कैसी निष्ठुरताके साथ चाबुकासे मार कर उनसे काम लेते थे, यदि वह ओवरसियर नीग्रो ही हुआ ता वह भी ' जातका बरी जात के न्यायसे अपने भाइयोको कितना दु ख देता था, गतको भरपेट भोजन न देकर किस प्रकार एक छोटीसी झोपडीमें गुलाम लोग ठूँस दिये जाते थे, पति-पत्नी, भाई-बहन और मा-बेटेको धनके लालचसे जुदा जुदा मालिकोंको हाथ बेचकर उनकी कैसी दुर्दशा की जाती थी, युवती स्त्रियोंको नानाप्रकारके कष्ट देकर किस प्रकार उनका सतीत्व नष्ट किया जाता था, असह्य दु खसे दुखी होकर भागे हुए गुलामोके पीछे इनामके लालचसे किस प्रकार शिकारी कुत्ते और बदमाश लाग छोडे जाते थे, हाथ पैर जजीरोसे बॉधकर बाजारमें बेचनके लिए ले जाते समय

उन्हें किस बेरहमीसे मारा जाता था; और इन सब अन्यायोंका, पादरी लोग बाइबलके आधारसे कैसे समर्थन करते थे, इत्यादि हृदयविदारक शरीरके रोंगटे खड़े करनेवाले और अन्तःकरणको पिघलादेनेवाले दृश्योंका सत्य और यथार्थ वर्णन इस ग्रन्थमें किया गया है। इस ग्रन्थने हजारों अमेरिकन लोगोंके पाषाण-हृदयोंमें दयाका सोता बहा दिया और गुलामीका विरोध चारों ओर फैला दिया। गुलामीके अन्यायों और उसके असली रूपको जो लोग देखना चाहें वे इस ग्रन्थको अवश्य पढ़ें।

इस आन्दोलनका यह परिणाम हुआ कि देशमें दो प्रबल दल तैयार हो गये। एक दलका कहना था कि गुलामोंको छोड़ देना चाहिए और दूसरा दल कहता था कि उन्हें स्वाधीन कर देना ठीक नहीं, वे वर्तमान दशामें ही सुखी हैं। ये दोनों दल आपसमें बहुत दिनों तक झगड़ते रहे। सन् १८५६ के बाद अमेरिकाकी दशा और भी नाजुक हो चली। उस समय देश पर आनेवाली विपद्को दूर करनेमें समर्थ एक महापुरुष प्रेसिडेंट चुना गया। ये वे ही अब्राहम लिंकन थे जिनका उल्लेख पहले किया जा चुका है।

अमेरिकन लोगोंको अपने पूर्वसंचित पापोंको धो डालनेकी बड़ी आवश्यकता थी। सन् १८६० में गुलामोंको स्वतंत्रता देनेके लिए तथा अन्य कारणोंसे दक्षिण और उत्तरके राज्योंमें युद्ध (Civil war) छिड़ गया जो चार पाँच वर्षों तक ज़ारी रहा। महात्मा लिंकनने इस बातकी प्राणपणसे चेष्टा की कि बिना युद्ध किये ही यह झगड़ा निपट जाय और युद्धसे अमेरिकाके दो टुकड़े न हों; परन्तु बिना युद्धके झगड़ा निपटनेकी कोई सूरत ही न दिखाई दी! तब सन् १८६१ में प्रेसिडेंट लिंकनने युद्धके लिए ५ लाख स्वयंसैनिकोंकी सेना चाही।* दक्षिणके राज्योंने बलवेका झंडा खड़ा कर दिया। सन् १८६२ के अप्रेल मासमें

* अमेरिकामें स्थायी सेना (Standing army) नहीं रक्खी जाती। देश पर जब कोई विपद् आती है तब प्रेसिडेंट सर्व साधारणसे स्वयंसैनिक माँगते हैं और उस समय जो लड़नेमें समर्थ होते हैं वे देशके झंडेके नीचे आ खड़े होते हैं।

गुलामी बन्द करनेका कायदा बना दिया गया। आरंभमें बलवाइयोंने एक दो लड़ाईयाँ जीतीं और इससे उत्साहित होकर वे राजधानी वाशिंगटन पर चढ़ जानेका विचार करने लगे। तब प्रेसिडेंट लिंकनने और भी सैन्य संग्रह करके विद्रोहियोंको दबानेका प्रयत्न किया। युलिसीस एस. ग्रेंट नामक एक चतुर सेनापतिके मिलने पर युद्धका रंग पलटा और बलवाइयोंका बल घटने लगा। निदान सितंबर सन् १८६२ में प्रेसिडेंट लिंकनने घोषित कर दिया कि, "आगामी वर्षप्रतिपदासे (१ जनवरी १८६३ से) गुलामी सदाके लिए मिट जायगी।" उसी वर्ष दिसंबरकी ३ री तारीखको उन्होंने यह भी घोषित किया कि "विपक्षके जो लोग हथियार रख देंगे और कानूनके पाबन्द होकर देशकी रक्षा करनेका वचन देंगे उनके अपराध क्षमा किये जायँगे।" युद्ध हो रहा था, तो भी १८६३ की १ ली जनवरीको दास्यविमोचनका घोषणापत्र प्रकाशित किया गया। इस समय बलवाइयोंका जोर घट गया था, तो भी लड़ाई जारी थी। इसी समय प्रेसिडेंट लिंकनका शासनकाल पूरा हो गया। परन्तु सन् १८६५ के मार्च महीनेमें वे फिर प्रेसिडेंट चुन लिये गये। ९ वी अप्रेलको बलवाइयोंके सेनापति जनरल लीने प्रेसिडेंट लिंकनकी रण ली और बलवेका अन्त हो गया। युद्धमें दोनों दलके लाखे ादमी काम आये, और करोड़ों रुपयोंकी आहुति हो गई, तब कहीं गुल मीका अन्त हुआ! इसतरह कोई तीस चालीस लाख मनुष्योंको स्वतंत्र मिली। सब लोग महात्मा लिंकनका यश गान लगे। स्वाधीन हुए निग्र लोग तो उन्हें साक्षात् ईश्वर ही मानने लगे!

इस तरह देशका संकट निवारण करके और अनेक महत्त्वपूर्ण कार्योंका सम्पादन करके प्रेसिडेंट लिंकन जिस समय दोनों दलोंमें मेल करानेका प्रयत्न कर रहे थ उसी समय १४ अप्रेलको फोर्ड थिएटरमें एक हत्यारन गोली मारकर उनका अन्त कर दिया। इस प्रकार इस काममें महात्मा लिंकनका भी बलिदान हो गया!

आत्मोद्धार।

पहला परिच्छेद।

दासानुदास।

मैं एक नीग्रो जातिका गुलाम था। वर्जीनियाके फ्रैंकलिन परगनेमें रहनेवाले एक गुलाम-खान्दानमें मैं पैदा हुआ। कब और किस खास जगह पर, सो मुझे याद नहीं; पर इतना याद आता है कि हेलसफोर्डकी सड़क पर डाकघरके पास ही कहीं मेरा जन्मस्थान है। मैं यह जिक्र १८५८ या ५९ का कर रहा हूँ। जन्मका महीना या तारीख स्मरण नहीं। हाँ, बचपनकी कुछ बातें याद आती हैं—वह खेत ० : काम करता था और वे झोपड़ियाँ मेरी आँखोंके सामने आजाती।

मैं बड़ी ही ज़िल्लत (दुर्दशा) में पला हूँ। मेरे मालिक तो खै और मालिकोंसे नेक और दयालु थे; पर आख़िर गुलामी ही तो थी। १४+१६ वर्गफुटकी एक कोठरीमें मैं पैदा हुआ। वहीं अपनी मा, भाई और बहिनके साथ रहा करता था। बड़ी कठिनाईसे दिन कटते थे। कुछ दिनों बाद अमेरिकनोंमें गृह-विवाद उठा और उसमें गुलामजातिको स्वाधीनता मिली। तबसे हम लोग स्वाधीन हुए।

मुझे अपने पुरखाओंका कुछ भी हाल मालूम नहीं; क्योंकि वह समय ही ऐसा था जब गुलामोंको अपने इतिहासकी जरूरत ही न जान

पडती थी । हाँ, लोगोंकी बातें सुन कर मैने यह अटकल लगाया था कि हम लोग आफ्रिकाके रहनेवाले है । जो लोग वहाँसे हमें ले आये उन्होंने राहमें जहाजों पर हम लोगोको अनेक कष्ट दिय । मेरे बाप कौन थे सो भी मुझे मालूम नही । उनका नाम तक मुझे नही बतलाया गया । यह तो मै अटकलसे जान गया हूँ कि वे एक श्वताङ्ग थे और उन्होने मेरी मा पर मुग्ध हो उसे खरीद लिया था । तबस वे मेरे और मेरी माके कर्ता धर्ता विधाता हुए । वे पासहीकी बसतीमे रहते थे । खैर, वे कोई हों, उन्होंने मेरे लिए कुछ भी नही किया था । पर मै उन्हे दोष नहीं लगाता, क्योकि ऐसे पिता उस गुलामीके युगमे एक दा नही, सैकडों हजारो थे ।

हम लोगोंकी झोपडीमे खाली हमीं लोग नहो रहत थ । उसम बसतीके सब गुलामोकी रसोई भी बनती थी । रसोई बनानेका काम मेरी माके सुपुर्द था । घर बडा पुराना और गन्दा था । दीवारोमे कई सूराख हो गये थे जिनमेसे रोशनी आती थी और शीतकालमे ठढी ठढी हवा भी । झोपडीक दरवाज बहुत छोटे थे और उनमे कई दरारें पड गई थीं । झोपडीके एक कानमें एक बडा भारी सूराख था जिसमसे बिल्लियॉ आया जाया करती थी । सिविल वार (युद्ध) शुरू हानेसे पहले वर्जीनियाकी हरक हवेली और झोपडीमें ऐसा ही एक न एक ' बिडाल-बिल ' रहा करता था । हम लोगोके यहॉ तो ऐसे छ सात सूराख थे । खैर, आगे चलिए। फर्श मिट्टीका था । जाडेके दिनोमें उसके बीचवाले गड्ढेमे शकरकद्का गोदाम रहा करता था । इस गोदामको मै कभी न भूलूँगा । धरने उठानमे वहाँ मुझे बहुधा दो चार शकरकद मिल जाया करते थे और उन्हे भून कर मै बड चावसे खाया करता था । रसोईका पूरा सरंजाम न था । खुल चूल्होपर रसोई पकानी पडती थी और जैसे जाडेके दिनोमे सर्दीके मारे बदन ठिठुर जाता था वैसे ही गरमीके दिनोमें आगके तापसे जी छटपटा जाता था ।

मेरे बचपनके जीवनमें और दूसरे गुलामोंके जीवनमें कुछ भेद न था। मेरी मा मुझको या मेरे भाईबहिनको दिनमें तो देखने सुननेका समय पाती ही न थी; रातको सब काम कर चुकनेके बाद और सबेरे सरकारी काममें हाथ लगानेसे पहले वह हम लोगोंके लिए समय निकालती थी। उस समयकी मुझे याद आती है। जब, मेरी मा दोपहर रात बीतने पर हम लोगोंको जगा कर मुर्गीका मांस खिला दिया करती थी। वह कहाँसे लाती थी सो मुझे कुछ मालूम नहीं; हो सकता है कि मालिककी पशुशालासे ले आती हो। आप लोग इस कामको चोरी कहेंगे, मैं भी, अगर अब कोई ऐसा काम करे तो चोरी ही कहूँगा; पर जिस वक्तका हाल मैं कह रहा हूँ उस वक्तको और उन कारणोंको देखते हुए इसे कोई चोरी साबित नहीं कर सकता। गुलामीमें तो ऐसा ही हुआ करता है। स्वाधीनताकी जबतक घोषणा नहीं हुई थी तबतक, मुझे याद नहीं आता कि हम लोग एक दिन भी कभी बिछौने पर लेटे हों। हम तीनों भाई बहिन मैले कुचैले चिथड़ों पर रात काटते थे।

आज कल कुछ लोग मेरे बचपनके खेल कूदकी बातें सुनना चाहते हैं। पर खेलकूद किस चिड़ियाका नाम है यह भी मुझे बचपनमें मालूम नहीं हुआ। जबसे होशमें हुआ तबसे अबतक काम ही काम करते बीता है। पर मैं समझता हूँ कि अगर बचपनमें मैं खेलने पाता तो इस वक्त बहुत कुछ काम कर सकता। अस्तु; मेरा समय विशेष करके आँगनमें झाड़ू देना, पानी भरना और उसे खेत पर पहुँचाना, सप्ताहमें एक बार चक्कीमें पिसानेके लिए अनाज ले जाना,—आदि कामोंमें ही बीतता था। इस अनाज ढोनेके कामसे तो मेरी नस नस ढीली हो जाती थी। चक्की वहाँसे तीन मील पर थी और अनाजके थैले घोड़े पर लाद कर ले जाना पड़ता था। यदि राहमें किसी एक तर-

फ़का वजन ज्यादा होकर थैले खिसक पड़ते तो मेरी नानी मर जाती और मैं भी उनके साथ धम्मसे नीचे गिर पड़ता। मैं अकेला तो इस लायक था नहीं कि उन्हें उठा कर फिर घोड़ेकी पीठ पर लाद देता। लाचार नीचे बैठ कर रोने लगता। निदान जब कोई मुसाफिर आ-निकलता तब उसकी मददसे उन्हें उठा कर राह तै करता था। ऐसी ऐसी मुसीबतोंसे कभी कभी घर आनेमें बहुत अबेर हो जाती थी। राहमें बड़े घने जङ्गल पड़ते थे। उन जंगलोंमें, मैंने सुना था कि नौकरी छोड़ कर भागे हुए फौजी गोरे छिपे रहते हैं और अकेला पाने पर नीग्रो लड़कोंके कान काट लेते हैं! और अबेर करके घर आनेसे लात जूता और गालियाँ मिलती थीं।

गुलामीमें मैंने स्कूली तालीम (शिक्षा) कुछ भी नहीं पाई। हाँ, मैं अपने मालिककी लड़कीका पोथी-पत्रा लेकर स्कूलके फाटक तक कई बार गया हूँ। वहाँ लड़के लड़कियोंको पढ़ाईमें मगन देखकर मेरे मनमें तरह तरहकी उमंगें उठती थी और दिल चाहता था कि मैं भी इसी तरह लिखना पढ़ना सीख लूँ। मुझे इसीमें स्वर्गसुख मालूम होता था!

मुझे बहुत दिनोंतक यह बात मालूम भी नहीं थी कि हम लोग खरीदे हुए गुलाम हैं और न मुझे यही मालूम था कि हम लोगोंकी स्वाधीनताके लिए देशभरमें आन्दोलन हो रहा है। एक दिन सबेरे जागकर देखता हूँ कि मेरी मा हम लोगोंके सामने, घुटने टेककर भगवान्से प्रार्थना कर रही है,–"हे दीनबन्धो! सेनापति लिंकन और उसके सिपाहियोंकी जय हो। हे भगवन्! हे पतितपावन! हम लोगोंको इस गुलामीसे छुड़ाओ। हे दीनानाथ! हम दीनोंका उद्धार करो।" मेरे जातिबन्धुओंको काला अक्षर भैंस बराबर था; तो भी उन्हें अपनी हालत बखूबी मालूम थी और उस दासत्वपंकसे उठानेके लिए जो

आन्दोलन हो रहे थे उनका भी रत्ती रत्ती हाल उन्हें मालूम था। जबसे गैरिसन, लैबजॉय तथा अन्यान्य सज्जनोंने गुलामोंको स्वतंत्र करनेका बीड़ा उठाया तबसे दाक्षिणके गुलाम उनके आन्दोलनकी बातें कानमें तेल डाल कर सुना करते थे। जब सिविल वार शुरू हुआ तब मैं बहुत छोटा था। पर अपनी मासे तथा और लोगोंसे उसकी बातें सुना करता था। गुलामोंकी बसतीमें ऐसा एक भी गुलाम न था जिसे आजादी या स्वतंत्रताकी लड़ाईका हाल पेश्तरसे न मालूम हुआ हो। गुलामोंके लिए कोई भी बात हो जाती तो उसकी खबर बिजलीकी तेज़ीसे कानों कानों सब लोगोंमें फैल जाती थी।

हम लोग रेल-स्टेशनसे दूर थे। कोई समाचारपत्र भी हम लोगोंके पास न आता था। आसपास कोई बड़ा शहर भी न था। ऐसी हालतमें, जब लिंकन संयुक्त राज्यकी प्रेसिडेंटीके लिए उम्मेदवार हुए, हमारी बसतीके गुलामोंको इस विषयकी बड़ी पेचीली बातोंका भी पूरा पूरा ज्ञान था। उत्तर और दाक्षिणमें युद्ध छिड़ जाने पर हम लोग बखूबी जान गये थे कि युद्धका प्रधान कारण हम लोगोंकी गुलामी ही है। मेरे जातिभाइयोंको विश्वास हो गया था कि अगर उत्तरवाले जीत गये तो हम लोगोंकी बेड़ी टूट जायँगीं। उत्तरकी हरेक जीत और दाक्षिणकी हरेक हारकी ओर हम लोगोंकी आँखें लगी हुई थीं। युद्धके सब समाचार हम लोगोंको मालूम हो जाते थे। कभी कभी तो गोरे मालिकों-से पहले ही नीग्रो गुलाम उन्हें जान लेते थे। इसका कारण यह था कि नीग्रो चपरासी ही डाकघरसे गोरे मालिकोंकी चिट्ठियाँ ले आया करता था। डाकघर बसतीसे करीब ३ मील फासिले पर था और सप्ताहमें एक या दो बार चिट्ठियाँ आया करती थीं। डाक आनेपर बहुतसे गोरे डाकघरमें जमा होते थे और वहाँ ताजे़ समाचारोंकी चर्चा किया करते थे। नीग्रो चपरासी उनकी बातोंसे खबरें छान लेता और

राहमें जो गुलाम भाई उसे मिलते उन्हें, बतला देता था। इस तरह युद्धकी खबरें मालिकसे पहले गुलामोंको मालूम हो जाती थीं।

मेरे बचपनमें या जवानीमें ऐसा एक भी दिन मुझे याद नहीं आता जब परिवारके सब लोग एकत्र भोजन करने बैठे हों, या ईश्वरकी प्रार्थना करते हों, या हम सभोंने सन्तोषके साथ भोजन ही किया हो। वर्जीनियाके गाँवोंमें और अन्यत्र भी जैसे गूँगे जानवर चरते फिरते हैं, और जहाँ जो मिल जाता है, खा लेते हैं, वैसा ही हम लोगोंके भी खाने पीनेका ढंग था। कभी एकाध रोटीका टुकड़ा मिल गया तो कभी कच्चे गोश्तका, कभी एकाध बार दूध नसीब हुआ तो दूसरी बार कुछ आलूही खाके रह गये! मेज़ या काँटा चम्मच तो कुछ था नहीं—कुछ लोग मेजके बजाय अपने घुटनोंपर टीनकी थाली रख कर खाया करते थे!

मैं जब बड़ा हुआ तब मालिकोंके भोजनके समय मुझे पंखा झलकर मक्खियोंको हटाना पड़ता था। गोरे लोग प्रायः युद्ध और गुलामोंकी स्वाधीनता पर ही चर्चा किया करते थे। और मैं इन बातोंको बड़े चावसे सुना करता था। एक बार मैंने अपने मालिकोंको 'जिञ्जर केक' नामक पक्वान्न खाते देखा। देखते ही मेरे मुँहसे लार टपक पड़ी और मैंने अपने मनमें ठान लिया कि स्वाधीन होने पर ऐसा माल भर-पेट ज़रूर खाऊँगा।

जब लड़ाई बढ़ चली तब गोरोंको खाना मिलना मुश्किल हो गया। उन्हें चाय, काफ़ी, चीनी और तरह तरहकी चीजें खानेकी आदत पड़ी हुई थी और ये आती थीं दूर देशसे। लड़ाई छिड़ने पर इनका आना रुक गया। गोरे बड़ी विपदमें पड़े। गुलामोंको इतनी तकलीफ़ नहीं हुई, उन्हें सिर्फ़ एक रोटीका टुकड़ा और सूअरका गोश्त मिलने-से काम था जो वहीं गाँवमें मिल जाता था। दूसरेका मुँह ताकने-

की जरूरत न थी। पर गोरे मालिकोकी दुर्दशा देखी नहीं जाती थी। उन्हें चायके लिए चीनी न मिलनेसे मैले गुडसे ही काम निकालना पडता था। बादको यह गुड भी मिलना दुश्वार हो गया। तब वे बिना मीठा डाले चाय पीने लगे। अन्तको जब असल चाय भी नसीब न हुई तब वे लोग फरूही या भुना हुआ चिउडा या ऐसे ही किसी अन्नका चूर्ण लेकर काम चलाने लगे।

मैने जिन्दगीमे पहले पहल जो जूता पहना वह काठका था। उसके ऊपरी भागमें कुछ चमडा जरूर लगा था। पर वह बहुत ही खुरदरा था। उसक पहननेसे पॉवोमें बडी तकलीफ होती थी, लेकिन यह काठका जूता भी गनीमत समझिए। गुलामीमें जो कुरता पहिनना पडता था उसकी याद आनेसे अब भी रोंगटे खडे हो आते है। मै समझता हूँ, दॉत पकड कर उखाड डालनेसे, या नागफनीके कॉटे बदनमे चुभनेसे जो तकलीफ होती है उससे कम तकलीफ इस कुरतेके पहननेमे न थी। वर्जीनियाके गुलामोको खूब मोटे खुरदरे टाटका कुरता पहननेको मिलता था। नये कोरे कुरतेमे टाटके उठे हुए इतने कॉटे रहते थे कि उनसे बडी ही वेदना होती थी। मेरा बदन मुलायम था—उस कुरतेको पहनना मेरे लिए बडी भारी मुसीबत थी। पर किया क्या जाता? पहनना हुआ तो उसी टाटके कुरतेको पहनो, नही तो, नगे रहो। मै कहता हूँ कि अगर पहनना न-पहनना भी मेरी मर्जी पर छोड दिया जाता तो काई बात नही थी, मै नगा रहना ही पसन्द करता! पर यह भी मेरे हाथमें न था। नगे रहनेकी तो मनाई थी। मेरा बडा भाई जॉन मुझ पर रहम खा जाता और नया कुरता खुद कुछ दिन स्वय पहनकर मुलायम होने पर मुझे पहननेको देता था। मेरे बचपनकी जिन्दगी इन्ही कपडोमें बीती है।

इन बातोंसे आप लोग सोचेंगे कि गुलाम अपने गोरे मालिकोंसे बडा

वैर रखते होंगे । इसमें कोई सन्देह नहीं कि हमारे मालिक हम लोगोंको गुलाम बनाये रखना चाहते थे और इसी लिए वे उत्तरवालोंसे लड़ रहे थे । परन्तु हम लोगोंमें और जहाँ जहाँ गुलामोंसे अच्छा सुलूक किया गया है, यह वैरभाव बिलकुल न था । हम लोग जानते थे कि अगर इन लोगोंकी जीत रही तो हम लोगोंको गुलामी ही करनी पड़ेगी; तो भी हम लोगोंने कभी उनसे वैर नहीं किया । हम लोग उनके सुखसे सुखी और दुःखसे दुखी रहते थे । हम लोगोंके हृदयमें उनके लिए बड़ी सहानुभृति थी । लड़ाईमें मेरा जवान मालिक मार्स बिली मारा गया और उसके घरके दो आदमी घायल हुए । जब यह खबर हम लोगोंने सुनी तब, उसके घरवालोंको जो दुःख हुआ उसका कहना ही क्या है, पर हम लोगोंको भी कुछ कम दुःख नहीं हुआ । हम लोगोंमेंसे कुछने उसकी सेवा शुश्रूषा की थी और कुछ उसके लँगोटिया यार थे । इस लिए उसकी मृत्युसे हम लोगोंको जो दुःख हुआ वह केवल दिखौआ न था । जब घायल जवान घर लाये गये तब हम लोग जी जानसे उनकी सेवा टहल करने लगे । कितनोंने रात रात जागकर उनकी सेवा की । यह स्नेह और यह दिली दर्द हम लोगोंकी उदार और सरल प्रकृतिका ही फल था । जब हमारे मालिक रणभूमिमें जाते तब गुलाम ही उनके गृह और परिवारकी रक्षा करते थे । मालिकके घर रातको सो रहनेके लिए जिस किसीका चुनाव होता वह समझता कि यह मेरा अहो भाग्य है । यदि कोई दुष्ट, युवती अथवा वृद्धा स्त्रियोंको कष्ट देने आ जाता तो बिना गुलामोंको मारे उसकी राह साफ़ न होती थी । क्या गुलामीमें और क्या आज़ादीमें, मेरे भाइयों-ने कभी विश्वासघात नहीं किया । कमसे कम ऐसे उदाहरण बहुत ही विरले मिलेंगे । इसके विपरीत घायल, असहाय, अनाथ मालिकों और उनके बालबच्चोंकी हरतरहसे मदद करनेवाले गुलामोंके दृष्टान्त

अनेक हैं। उनकी इज्ज़त और हुर्मत, जान और मालकी, जब काम पड़ा है, इन्होंने रक्षा की है। जिनके पास धन नहीं था, उन्हें धन दिया है। गोरे लड़कोंको तालीम दिलानेके लिए गाँठके पैसे खुले हाथ खर्च किये हैं। एक साहूकारका लड़का शराबखोरीसे बिलकुल तबाह हो गया था। उसकी तबाही इन्होंने हर तरहसे दूर की। इतना ही नहीं; गुलामीके दिनोंमें इन्होंने अपने मालिकोंसे जो वादे किये थे, उन्हें भी पूरा करके छोड़ा। एक उदाहरण मुझे याद आता है। वह गुलाम मुझे ओविओ शहरमें मिला था। उसने गुलामीके दिनोंमें अपने मालिकसे वादा किया था कि हर साल अमुक रकम अदा करके मैं स्वाधीन हो जाऊँगा। यह कहनेकी आवश्यकता नहीं कि स्वाधीनताकी घोषणा होने पर यह गुलाम भी स्वाधीन हो चुका, अब उसे गुलामीका वादा पूरा करनेकी ज़रूरत ही क्या थी? पर उसने वादेके अनुसार मालिकको कौड़ी कौड़ी सूदतक चुका दिया! मैंने उससे कहा कि "जब तुम स्वाधीन हो चुके तब फिर ऐसा करनेकी क्या ज़रूरत थी?" इस पर उसने जवाब दिया कि "कानूनके अनुसार तो कोई ज़रूरत नहीं थी; पर मैंने अपने मालिकसे **वादा** किया था और उसे पूरा करना मेरा **धर्म** था। अबतक मैंने ऐसा कोई वादा नहीं किया जिसे पूरा न किया हो।" उसका मन गवाही देता था कि वह अपने वचनको जबतक पूरा न करेगा तबतक, वह स्वाधीनताका आनन्द न ले सकेगा।

आप कहेंगे, तो क्या नीग्रो लोग स्वाधीनता नहीं चाहते थे? क्या गुलामीकी जंजीरसे उनका इतना नेह हो गया था? नहीं, ऐसा नामर्द आदमी मैंने एक भी न देखा।

जो बदनसीब आदमी या जाति गुलामीकी बेड़ियोंमें जकड़ गई है उस पर, मुझे रहम आता है। पर अपनी जातिकी गुलामीके विषयमें मैंने दक्षिणी गोरोंसे बैर रखना बहुत दिनोंसे छोड़ दिया है। गुलामी

जो चल पड़ी वह, किसी खास समाजने नहीं चलाई। बहुत अरसे तक तो सरकार ही इसका समर्थन करती रही थी। रेपब्लिककी सामाजिक और आर्थिक दशासे यह दासता जकड़ गई थी, इस लिए इसको एकाएक अलग कर देनेका काम देशके लिए कुछ सहज न था। और कुसंस्कार तथा जातिद्वेषको अलग रख कर यदि हम असली हालत पर विचार करते हैं तो यह स्वीकार करना पड़ता है कि यद्यपि गुलामी सुनीति और दयालुताकी हत्या करनेवाली है; तो भी इस देशमें रहनेवाले करोड़ों नीग्रो संसारके किसी भी देशके उतने लोगोंसे अधिक बुद्धिमान्, नीतिमान्, होनहार और धार्मिक हैं। यह बात सही हैं कि हर साल सैकड़ों नीग्रो, जो या जिनके पूर्वज इस देशमें गुलामी करते थे, अब अपनी जन्मभूमिके लोगोंको अज्ञानकी खाईसे ऊपर उठानेके लिए उपदेशक बन कर आफ्रिका लौट रहे हैं; पर मेरे कहनेका मतलब यह नहीं है कि गुलामीकी प्रथा अच्छी है। कभी नहीं, मैं उसे ज़रा भी पसन्द नहीं करता। हम लोग खूब अच्छी तरहसे जानते हैं कि यहाँ गुलामीका जो रिवाज़ चला वह कुछ हमारी भलाईके लिए नहीं था। असल बात यह थी कि हम लोगोंको गुलामीमें सड़ाकर इस देशवाले मालामाल होना चाहते थे। पर ईश्वर कीचड़से भी कैसे कमल पैदा करता है यह दिखलानेके लिए मैंने ये बातें कहीं। जब मुझसे लोग पूछते हैं, ‘ तुम इस महागरीबी, कुसंस्कार और अज्ञानराशिमें रहकर अपनी जातिके भविष्यकी क्योंकर आशा रखते हो ? ’ तब मैं गुलामीकी जंजीरमें बंधी हुई नीग्रो जाति और उसके उद्धारकी याद दिलाता हूँ और कहता हूँ कि ईश्वर हमारे साथ है।

जबसे मैं कुछ समझने बूझने लगा हूँ तबसे, मैं जानता हूँ कि गुलामीमें मेरे भाइयोंके साथ जैसी निठुरता की गई वैसे उसके खट्टे फल गोरोंको भी चखने पड़े हैं। गुलामोंका काम था, मिहनत करना और

गोरोंका, मौज उड़ाना। इसका फल यह हुआ कि गोरोंसे आत्मविश्वास और कर्तव्य जाता रहा। मेरे मालिकके कई लड़के और लड़कियाँ थीं। पर उनमेंसे एकने भी कोई ऐसा काम या धन्धा नहीं सीखा जिससे कुछ आमदनी हो। लड़कियोंको इतना भी नहीं आता था कि वे रसोई बना लें, या कुछ लिख पढ़ सकें, अथवा घरका ही सब प्रबन्ध करें। यह सब काम गुलाम करते थे। बसतीके बाग बगीचोंके सुधारमें गुलामोंका कोई हिस्सा नहीं था; और वे अज्ञानी थे इसलिए यह समझनेका उनके लिए और कोई साधन ही न था कि अपने काम व्यवस्थित पद्धतिसे और अच्छीतरह क्योंकर किये जा सकते हैं। इसका फल यह हुआ कि बाग-बगीचोंकी देख भाल ठीक ठीक न होती थी। चहारदीवारें बिलकुल बेमरम्मत थीं, दरवाजोंके कब्जे ढीले पड़ गये थे, खिड़कियोंके कपाट फट गये थे। चारों ओर जमीन गीली हो रही थी और घरके आँगनमें भी घास और बरसाती पौधे उग आये थे। बसतीमें अन्नकी कमी नहीं थी—गुलाम—मालिक दोनोंको भरपूर अन्न मिलता था; पर इन्तजाम कुछ भी नहीं। इससे फिज़ूल खर्च तो बहुत होता था पर भोजनमें न शोभा थी और न आनन्द। स्वाधीनता मिलने पर गुलाम और मालिक दोनों एक ही लिया-कतके हुए। हाँ, हैसियत गोरोंकी बढ़ी थी; क्योंकि उन्हें किताबी इल्मके अलावे ज़मीन पर मालकियत भी हासिल थी। पर और सब बातों-में दोनों ही बराबर हुए। गोरे मालिक और उनके लड़के अपने बल पर कोई व्यवसाय कर नहीं सकते थे और शारीरिक परिश्रम करना तो अपनी शानके खिलाफ समझते थे। गुलाम, अलबत्ता कुछ हुनर रखते थे और मिहनतसे उनकी शानमें भी कसर न आती थी। हाँ, कुछ लोग मिहनतसे ज़रूर भागते थे।

अन्तको युद्ध समाप्त होने पर स्वाधीनताका सुदिन उदय हुआ। हम सब गुलामोंके लिए यह महापर्वके समान अत्यन्त पवित्र दिन

था। इस दिनकी, हम लोग बाट जोह रहे थे । कई महीनोंसे सारे देशमें इसका भैविष्य गूँज रहा था। युद्धसे घर लौट जानेवाले सिपाहियोंको हम लोग बार बार देखा करते थे । हम लोगोंकी बसतीसे, पलटनके सिपाही, कोई छुट्टी लेकर और कोई किसी हलिसे, अक्सर गुज़रते थे । कानों कानों युद्धकी छोटी मोटी सब खबरें चारों ओर फैल गई थीं । उत्तरवालोंकी चढ़ाईके भयसे हमारे गोरे मालिकोंने चाँदी और अन्य कीमती वस्तुयें जमीनमें गाड़ रक्खी थीं और वहाँ गुलामोंको पहरे पर रखा था ! गड़ेहुए धनको यदि हाथ लगानेका साहस कोई करता तो उसके प्राणों पर ही बीतती । उत्तरपक्षके सिपाहियोंको हम लोग दानापानी, कपड़े लत्ते और जो कुछ ज़रूरत होती थी दे डालते थे; पर उन चीज़ोंको कभी हाथ भी न लगाने देते थे कि जो हमारे मालिकोंने हमें सौंप दी थीं। ज्यों ज्यों वह स्वाधीनताका दिन निकट आने लगा त्यों त्यों हम लोगोंके यहाँ गाने बजानेकी धूम मचने लगी। प्रायः हम लोग स्वाधीनताके भजन गाया करते थे। इन भजनोंको हम लोगोंने इससे पहले भी कई बार गाया था; पर उस वक्त हमारे बड़े बूढ़े बतलाते थे कि यह स्वाधीनता यहाँकी नहीं, ईश्वरके घरकी है। अब उन्होंने स्वाँग उठा कर फेंक दिया और उसका असल मतलब ज़ाहिर किया। अब लोग खुल्लम खुल्ला कहने लगे कि अपनी ऐहिक स्वाधीनता देखनेके लिए ही हम लोग अब तक जीते हैं। उस स्मरणीय दिनके एक रोज़ पहले हम लोगोंको बतलाया गया कि कल सबेरे मालिकके घर पर कोई अनहोनी बातें होनेवाली है। रातको किसीको भी नींद नहीं आई। सबके चेहरों पर आश्चर्य और आनन्द झलकता था। दूसरे दिन बड़े सबेरे सबको आज्ञा हुई कि वे मालिकके घर पर जमा हों। मैं अपनी मा, भाई, बहन और अन्य दासोंके साथ वहाँ गया। देखा, मालिकके घरके लोग छत पर एकत्र हुए हैं। वहाँ-

से वे हम लोगोंको देखते थे और हम लोग भी उन्हें देख सकते थे। चेहरों पर बैर नहीं, उदासी छाई हुई थी। वे हम लोगोंका साथ छूटनेसे दुखी थे—आमदनीकी उन्हें इतनी फ़िक्र नहीं थी। उस प्रातःकालका स्मरण होनेसे वह स्वाधीनताका व्याख्यान याद आता है। एक विदेशी पुरुषने—शायद यह संयुक्त राज्यका कोई अधिकारी था—एक छोटीसी वक्तृता दी और एक लंबा काग़ज़—शायद यही स्वाधीनताका घोषणापत्र था—पढ़ सुनाया। फिर हम लोगोंको बतलाया गया कि तुम लोग स्वाधीन हुए, अब चाहे जहाँ जा सकते हो और जो चाहो कर सकते हो। मेरी माता मेरे पास खड़ी थी। उसने झुककर अपने बच्चोंको चूम लिया और उसके गालोंपरसे प्रेमाश्रुओंकी धारा बहने लगी। उसने सब बातें समझा दीं और कहा कि इसी दिनके लिए मैं प्रतिदिन ईश्वरसे प्रार्थना किया करती थी और मुझे यह आशा नहीं थी कि यह सुदिन देखनेके लिए मैं जीती रहूँगी।

स्वाधीनताका घोषणापत्र सुन कर गुलामोंके आनन्दका पारावार न रहा। पर उनके मनमें गोरे मालिकोंसे कोई बैरभाव न था। उलटे उन्हें उन पर रहम आया। स्वाधीनताका समाचार सुन कर उन्हें जो अपार आनन्द हुआ वह बहुत देर तक टिकने न पाया। वे लोग अपनी झोपड़ियोंमें गये तब उनके चेहरों पर चिन्ता झलकने लगी। स्वाधीनताकी जिम्मेदारीने उन्हें आ घेरा। वे इस सोचमें पड़े कि, स्वाधीन तो हुए, पर अब करना क्या चाहिए? अपने और अपने परिवारका गुज़ारा कैसे हो? दस पंदरह वर्षका कोई बालक घोर जंगलमें आकर सामने जिस विपद्को देखता है वही विपद् हम लोगों पर आ पड़ी। घर-बार, रोजगार—हाल, बच्चोंकी परवरिश, उनकी तालीम, नागरिकोंके कर्त्तव्य, गिरजाघरोंकी स्थापना आदि बातें एकके बाद एक सामने आने लगीं। झोपड़ियोंमें लड़कोंका खेलना कूदना बन्द हो गया

और उदासी छा गई। कुछ लोगोको तो यह स्वाधीनताका बोझ अन्दाजसे भी भारी मालूम हुआ। गुलामोंमें बहुतसे ७०।८० वर्षके बूढे थे। उनके जीवनका उत्तम अंश तो बीत ही चुका था। रहनेको कोई घर मिल जाना तो कठिन नही था, पर उन्हें कमा खानेमे बडा सन्देह था। इसलिए स्वाधीनताने उनके सामने एक बडा पेचीला मामला पेश कर दिया। अपने पुराने मालिक और उनके परिवारसे उनका बडा स्नेह हो गया था। इस स्नेहको तोडना ही उन्हे बहुत अखरने लगा। कुछ लोगोंने गुलामी करते करते पचास पचास साठ साठ वर्ष बिताये थे, ऐसे लोग अपने मालिक्से कब नाता तोड सकते थे? उन्हें तो अपने मालिकके घरका रास्ता ही मालूम था। बूढे गुलाम धीरे धीरे एक एक करके अपने मालिकोंके यहाँ जा जाकर उन्हींसे इस बातकी सलाह लेने लगे कि अब क्या करना चाहिए।

दूसरा परिच्छेद ।

शैशव ।

स्वतंत्रता मिलनेपर बसतीके सब गुलामोंकी यह राय हुई कि अब दो बातें करनी चाहिए;—

१. हम लोगोंको अब अपना अपना नाम बदल डालना चाहिए ।

२. हम लोग स्वाधीन हुए सही, पर एक बार इसकी जाँच कर लेनी चाहिए और इस लिए यह ज़रूरी है कि हम कुछ दिनों तक अपनी पुरानी जगह छोड़ दें ।

इन दो बातों पर हम सबकी राय एक हुई और करीब करीब सारे दाक्षिणके गुलामोंकी यही राय थी ।

गुलामीके दिनोंमें हम लोग अपने नामोंके साथ अपने मालिकका नाम भी लिया करते थे या यों कहिए कि मालिकका नाम हम लोगोंका उपनाम या 'अल्ल' हुआ करता था । अब न जाने क्यों, सब लोगोंने यह सोचा कि यह अल्ल उड़ा देना चाहिए । बहुतसे लोगोंने ऐसा किया भी और एक नया उपनाम धारण कर लिया । गुलामीके दिनोंमें हम लोग एकहरे नामसे ही पुकारे जाते थे; जैसे जान, सुसान इत्यादि । कभी कभी गोरे मालिकके नामके साथ भी पुकारे जाते थे, पर वह भी इस तरह कि किसी स्वाधीन मनुष्यको कभी अच्छा न लगे—जान हचर या हचरका जान । पर अगर जान या सुसान किसी गोरेका नाम हुआ तो सिर्फ़ जान या सुसान कहना बेइज्जती समझी जाती थी । इस लिए हम लोगोंने अपने नामोंको और सुडौल बना लिया; जैसे जानका हुआ जान एस् लिंकन अथवा सुसानका जान एस् सुसान ।

उपनामके पहले जो एस् आया है उसका, कुछ मतलब नहीं — काले लोगोंने उसे यों ही अल्लके तौर पर धारण कर लिया है ।

जैसा कि ऊपर कहा गया है, स्वाधीनताकी जॉचके लिए बहुत लोगोंने पुरानी बसती कुछ दिनोंके लिए छोड़ दी । कुछ काल-पश्चात् बूढ़े गुलामोंमेंसे बहुतेरे फिर अपने पुराने स्थानों पर आ गए और अपने पुराने मालिकोंसे लिखापढ़ी करके फिर उसी बसतीमें रहने लगे । मेरी माका पति याने मेरे भाई जानका बाप और मेरा सौतेला बाप किसी दूसरे मालिकका गुलाम था । वह हम लोगोंकी बसतीमें कभी एकाध बार आ जाता था । मुझे जहॉतक स्मरण है, वह बड़े दिनोंकी छुट्टियोंमें आया करता था । जब सिविल वार शुरू हुआ तब, वह संयुक्त सैन्यके पीछे पीछे कुछ काल चलकर वेस्ट वर्जीनिया-की नई रियासतमें भाग आया । स्वाधीनताकी घोषणा होने पर उसने मेरी माको वेस्ट वर्जीनियाके कनावा वैलीमें आ जानेके लिए कह-ला भेजा । उस समय वर्जीनियासे वेस्ट वर्जीनियामें जाना ज़रा टेढ़ी खीर थी—राहमें कितने ही पहाड़ थे और रास्ता बड़ा बीहड़ था । जो कुछ कपड़े लत्ते और असबाब हम लोगोंके पास था वह सब तो एक गाड़ीमें भर दिया गया; पर लड़कोंको पैदल ही सैकड़ों मील सफ़र करनी पड़ी ! अबतक, मेरा ख्याल है कि हम लोगोंकी बसतीसे कोई भी इतनी दूर नही गया था । इस लिए यह लंबी सफ़र हमलोगोंके जीवनमें एक बड़ी भारी घटना थी । चलते वक्त हम लोगोंको बड़ा दुःख हुआ; क्योंकि इतने दिन जिन लोगोंका साथ था उन्हें छोड़ना पड़ा । हम लोग बसती छोड़ कर गये सही, पर अपने गोरे मालिक-को कभी न भूले । जबतक वे जीते थे तबतक बराबर उनके घरवालोंसे चिट्टीपत्री किया करते थे और उसके बाद भी जान पहचान बनी रही । हम लोग कई सप्ताह सफ़र करते रहे और मार्गमें ही ईंधन जला-

कर रसोई बना लेते थे। एक रोज़की याद आती है कि सफ़र करते हुए हम लोगोंने लकड़ीका एक पुराना झोपड़ा देखा; वह निर्जन था। मेरी माने उसीके अन्दर रसोईके लिए चूल्हा तैयार किया। यह विचार था कि खा पी करके रातको वहीं आराम करेंगे, और फिर सबेरे चल पड़ेंगे। मा चूल्हा बालने बैठ गई; हम लोग ज़रा दूर थे। इतनेहीमें ऊपर चिमनीसे कोई डेढ़ गज़का एक लंबा साँप नीचे आ गिरा और फूत्कार करता हुआ सरपट भागा। यह देख कर हम लोग घबराये और फौरन वहाँसे चल पड़े। इस तरह बचते बचाते हम लोग माल्डन नामके गाँवमें आ पहुँचे। यह गाँव चार्लस्टनसे, जो इस रियासतकी राजधानी है, पाँच मील पर है।

उस समय वेस्ट वर्जीनियाके उस हिस्सेमें नमककी खानें खोदी जाती थीं और यह माल्डन गाँव नमककी भट्टियोंसे चौतर्फा घिरा हुआ था। मेरे सौतेले बापको इन्ही भट्टियोंमेंसे एक भट्टी पर काम मिल गया था और उसने हम लोगोंके रहनेके लिए एक कोठरी ले रक्खी थी। हम लोगोंका यह नया घर पुराने घरसे किसी कदर अच्छा नहीं था। एक बातमें तो वह और भी बुरा था। पुराना घर अच्छा तो नहीं था; पर इतना ज़रूर था कि वहाँ स्वच्छ वायु मिलती थी। और यहाँ यह हाल था कि चारों तरफ़ आदमियोंसे ठसाठस भरी हुई झोपड़ियाँ थीं और बीचमें हम लोग। सफ़ाईका भी कोई बन्दोबस्त न था—इतना कूड़ा-करकट और मैला-सैला जमा होता था कि नाक दबाते दबाते नाकमें दम आ जाता। हम लोगोंके पड़ोसमें कुछ काले लोग भी थे और कंगाल, अपढ़ गोरे भी थे। शराबखोरी, जुआचोरी, बातबतंगड़, लड़ाई झगड़े और नीच ब्योहार अकसर देखनेमें आते थे। आसपास जितने लोग रहते थे, बल्कि यह कहना चाहिए कि उस बसतीके प्रायः सभी लोग उन नमककी खानोंसे कोई न कोई ताल्लुक रखते ही

थे। मैं अभी बच्चोंमें ही गिना जाता था, तो भी मेरे बापने मुझे और मेरे भाईको नमककी भट्टीमें काम करने भेज दिया। बड़े सबेरे चार बजे मुझे काम पर डँट जाना पड़ता था।

नमककी खानमें काम करते समय मैं पुस्तकी विद्याकी एक बात सीखा। नमक भरनेवाले जब पीपोंमें नमक भर चुकते तब उन पर एक खास नंबर डाल दिया जाता था। मेरे सौतेले बापके हिस्से अठारह-का अंक आया था। रोज़ जब काम खतम हो जाता तब, एक अफ़सर आकर सबके पीपों पर उनके नंबर (जिसका जो नंबर हुआ) डाल दिया करता था। अपने बापके पीपों पर अठारहका अंक बराबर देखते देखते मैं उसे पहचानने लगा। और कोई अक्षर या अंक मुझे नहीं आता था; पर अठारह (18) लिखना मैं सीख गया था।

जबसे मैंने होश संभाले हैं तबसे मेरी यह इच्छा रही कि किसी तरह लिखना पढ़ना सीख जाऊं। बचपनमें ही मैंने यह निश्चय किया था कि और चाहे कुछ भी मुझसे न बन पड़े, पर इतना तो कमसे कम जरूर करूँगा कि छोटी मोटी किताबें और समाचारपत्र पढ़नेके योग्य हो जाऊँगा। जब वेस्ट वर्जीनियामें आकर हम लोग रहने लगे और किसी कदर गुजारेका भी प्रबन्ध हो गया तब, मैंने मासे कहा कि "मुझे कहींसे एक पुस्तक ला दे।" वह वेब्स्टरकी 'ब्ल्यू-ब्लैक-स्पेलिंगबुक' नामकी एक किताब ले आई। इसमें 'Aa, Ba, Ca, Da,' (आ, बा, का, डा,) इत्यादि अर्थरहित (बेमतलब) शब्द थे। यह पुस्तक वह कहाँसे और कैसे ले आई सो मुझे मालूम नहीं। बिलकुल पहली किताब यही मेरे हाथ लगी और मैं झटपट इसे पढ़ जानेकी कोशिश करने लगा। मैंने किसीके मुँह सुना था कि सबसे पहले वर्णमाला सीखनी पड़ती है। इस लिए अपनी बुद्धिके अनुसार मैं वर्णमाला सीखनेका प्रयत्न करने लगा। कोई

सिखानेवाला तो था नहीं; क्योंकि मेरे आसपास जितने मेरे भाई लोग थे वे ' लिख लोढ़ा पढ़ पत्थर ' ही थे और गोरे, जो लिखे पढ़े थे उनके पास फटकने तकका मुझे साहस न होता था । खैर, किसी तरहसे हो मैं एक दो सप्ताहोंमें वर्णमाला सीख गया । मेरी माने मुझे इस काममें बड़ी मदद दी; क्यों कि वह चाहती थी कि मैं लिख पढ़ जाऊँ, यद्यपि वह स्वयं कुछ लिख पढ़ नहीं सकती थी । वह बड़ी चतुर थी और इसलिए हर मौके पर उसने हम लोगोंकी हरतरहसे रक्षा की । सचमुच, अगर मैंने इस ज़िन्दगीमें कोई अच्छा काम किया है तो, वह अपनी माकी ही बदौलत ।

जब मैं शिक्षा प्राप्त करनेका प्रयत्न कर रहा था, उस समय एक काले याने मेरी जातके ही एक लड़केसे मेरी जान पहचान हो गई । इसने आविओमें शिक्षा पाई थी और अब यह माल्डनमें आ गया था । जब मेरे और भाइयोंको यह खबर लगी कि यह लिखा पढ़ा भी है तब उन्होंने एक समाचारपत्र मँगवाया और शामको सब लोग उसे घेर कर उससे वह पत्र पढ़वाने लगे । स्त्री-पुरुष सब उस लड़केसे प्रसन्न थे । मुझे तो यह पड़ी थी कि कब मैं इसके बराबर लिखँ पढ़ जाऊँ ! मैं बिलकुल अधीर हो उठा था । मेरा यह ख्याल हो गया कि इस लड़केके बराबर कोई सुखी नहीं और वैसा ही सुखी बननेकी मेरी कोशिश जारी थी ।

अब हमारे जातभाई भी शिक्षाका महत्त्व समझने लगे और इस बातका प्रयत्न करने लगे कि काले लड़कोंके लिए भी एक पाठशाला बन जाय । इस पर बड़ा आन्दोलन हुआ; क्योंकि वर्जीनियामें नीग्रो लड़कोंकी पाठशाला एक बिलकुल नई बात थी । बड़ा बिकट प्रश्न यह था कि शिक्षक कहाँसे लाया जाय । वही एक लड़का था जिसे लोग लिखा पढ़ा समझते थे; पर वह लड़का ही था, इस लिए उसे शिक्षक बनाने-

की बात जहाँकी तहाँ ही रह गई । इसी बीच ओविओसे एक नीग्रो नवयुवक आ पहुँचा । यह पहले सिपहगीरी करता था पर और सिपा हियोंकी तरह अनपढा न था। लोगोंको जब मालूम हुआ कि यह अच्छा लिखा पढा आदमी है तब उन्होंने उसे अपनी पहली पाठशालाका पहला शिक्षक नियत कर दिया । अब तक नीग्रो बालकोंके लिए मुफ्ती पाठशालायें खुली नही थी ओर इस लिए इस शिक्षकक साथ यह ते हुआ था कि सब लोग मिलकर चन्दस इस महीन महीने कुछ रुपये दे और भोजनके लिए बारी बारीस एक एक दिन बुलावे । इसस शिक्षकको भी बडा सुभीता था, क्यो कि जिस राज जिसके यहा शिक्षक जीमन जाते वह उस राज अपन यहाँ बडी तेयारी करता था । मुझ स्मरण है कि जब हम लोगोंकी बारी आती तब म शिक्षकक आनकी बाट जोहता हुआ बैठा रहता था आर जब तक व न आत मुझे कल नही पडती थी ।

किसी जातिकी उन्नतिक विषयम विचार करत हुए यह एक बडे ही महत्त्वका प्रश्न मालम हाता है क सब लाग–सारी जाति–पढ नेके लिए पाठशालामें भरती हो । शिक्षाक लिए मर जातभाइयान जो उत्साह प्रकट किया वह निस्सन्देह अपृव था । म ता यह कहता हूँ कि जिन लागोन स्वय अपनी आखा नही दखा व उसका अन्दाज भी न कर सकेग । सो पचास लडक नही, सारी जाति पाठशालामे भरती हाकर पढने लगा । क्या बूढ आर क्या बालक, सभी बडे उत्साहसे पढत थ । शिक्षक भी मिलन लग ओर दिनकी कौन कह, रातको भी, पाठशालाये ठसाठस भर जान लगी । हम लागोम जा वृद्ध थ उनमे भी यह आकाक्षा पेदा हुई कि इस लोक-की यात्रा समाप्त करनेसे पहल लिख पढकर बाइबल (इजील) पढने योग्य हो जावे ! साठ साठ सत्तर सत्तर वर्षकी बूढी स्त्रियाँ ओर

पुरुष नाइट-स्कूलोंमें आकर पढने लगे ! स्वाधीनताकी घोषणा होनेके पश्चात् रविवारकी पाठशालाये खुलने लगी, और इन पाठशालाओंमें जो खास किताब पढाई जाती थी वह 'स्पेलिंग बुक' याने हिज्जोकी किताब थी। रातकी और रविवारकी पाठशालाओंमें इतनी रेलपेल हुआ करती थी कि बहुतोंको निराश होकर लौट जाना पडता था।

कनावा वैलीमें पाठशाला स्थापित हुई, पर मेरी आशा पर पानी फिर गया। मै कुछ महीनो तक नमककी भट्टीमें काम करता था। इससे मेरे बापकी आमदनी बढती थी, इसलिए कमाना छोड पढने जानेसे उसने मुझे रोक दिया। मुझ ऐसा दुःख हुआ कि कह नही सकता। जब पाठशालासे लौटते हुए लडकोको देखता तो मेरी छाती फटने लगती थी। पर मै करता ही क्या? स्पलिंगबुक पर खूब कसके मिहनत करने लगा।

मेरी निराशासे माको भी बडा दुःख हुआ। उससे जहाँ तक बन पडता वह मुझे दिलासा देती और मेरी शिक्षाके लिए किसी न किस फिक्रमे रहा करती थी। कुछ दिनोंके बाद ऐसा प्रबन्ध हो गया कि मै दिन भर मजदूरी कर चुकने पर रातको शिक्षकसे पाठ (सबक) लेने लगा। रातके पाठ इतने अच्छे होते कि दिनमें पढनेवाले लडकोसे मे जियादा सीख गया। इस अनुभवसे रातकी पाठशाला कितना काम करती है, यह मे खूब जान गया, और इस कारण आगे चलकर टस्केजी और हैम्पटनके नाइट-स्कूलामे मे बराबर पढा करता था। पर इस समय लडकईसे हो या और किसी कारणसे हो, मुझे दिनके स्कूलमे ही जाकर पढनेकी लगी थी, और इसकी कोशिश भी मैने ऐसी की कि एक भी मौका हाथसे न जाने दिया। अन्तमें मेरी इच्छा पूर्ण हुई, और कुछ महीनोंके लिए मुझे दिनकी पाठशालामे पढनेकी इजाजत मिल गई।

बड़े सबेरे उठकर भट्टी पर नौ बजेतक काम करता, और दो पहरको पाठशालासे छुट्टी मिलने पर काम पर आ जाता और फिर दो घंटे भट्टीका काम करता था।

भट्टीसे पाठशाला कुछ फासले पर थी। पाठशाला नौ बजे खुल जाती थी और मैं नौ बजेतक भट्टी पर ही रहता था। इससे पाठशालामे पहुँ-चनेसे पहले ही वहाँ पढाई शुरू हो जाती थी। यह असुबिधा दूर करने-के लिए मैंने एक ऐसा काम किया जिसके लिए लोग मुझे दोष लगा-वेंगे, पर जो कुछ हुआ उसे बिना कहे मुझसे रहा नही जाता। सच बातका बडा बल है। बात छिपानेसे शायद ही कभी किसीको लाभ होता होगा। भट्टीके आफिसमे एक घडी थी। इसी घडीके हिसाबसे सैकडों नही, इससे भी जियादा लोग अपना अपना काम शुरू और बन्द करते थे। मैने यह सोचा कि ८॥ वाली सुई अगर मै ९ पर हटा दूँ तो मै समय पर स्कूलमे जा सकूँगा। बस मै रोज सबेरे ऐसा ही करने लगा। धीरे धीरे मेनेजरको इस बातका सन्देह हुआ कि कोई लडका घडीमे हाथ लगाता है। जब ऐसा सन्देह हुआ तब उन्होने घडी वहाँसे हटा कर एक सन्दूकमे रख दी और उसमे ताला लगा दिया। खैर, मैने यह काम सिर्फ इसलिए किया था कि मै वक्त पर स्कूलमे पहुँच सकूँ—इसलिए नही कि औरे लोगोंको इससे कुछ असु-बिधा हो।

पहले पहल जब मे पाठशालामे जाने लगा तब दो अडचने मेरे सामने आइं। एक तो यह कि सब लडके सादी या खडी टोपी पहन कर पाठशालामे आते थे और मेरे पास तो टोपी ही नही थी। जबतक मैं स्कूलमें नहीं गया था तबतक, मुझे टोपीकी जरूरत ही नजर न आई। पर अब और लडकोंकी पोशाक देख कर मै भी बेचैन हो गया। अपनी मासे कहा, पर जैसी टोपियाँ उस वक्त नीग्रो लोग पह-नते थे वैसी टोपी खरीदनेके लिए उसके पास दाम नही थे। पर उस

वक्त उसने दिलासा देकर मुझे सन्तुष्ट कर दिया। कुछ दिनों बाद उसने एक खुरदरे कपड़ेके दो टुकडोंको जोड़ कर एक टोपी सीं दी। इस तरह मुझे सबसे पहली टोपी मिली और उस पर मुझे बड़ा फ़क्र (अभिमान) हुआ!

इस टोपीके मामलेमें मेरी माने मुझे जो एक बात सिखला दी उसे मैं कभी न भूला; और जहाँ तक मुझसे बन पड़ा है उसे दूसरोंको भी सिखलानेकी चेष्टा की है। जब जब इस घटनाका स्मरण आता है तब तब मुझे इस बातका बड़ा अभिमान होता है कि जो चीज़ हमारे पास नहीं है उसे साफ़ साफ़ 'नहीं' कह देने और बतला देनेकी दृढ़ता मेरी मामें थी। बहुतसे लोगोंके पास उस वक्तके फैशनकी टोपियाँ खरीदनेके लिए दाम नहीं थे; पर कर्ज़ करके उन्होंने उन टोपियोंको खरीदा था। पर मेरी माने जिस चीज़को खरीदनेके लिए उसके पास दाम नहीं थे उसके लिए कभी कर्ज़ नहीं किया। इसके बाद मैंने कई बार सादी और खड़ी टोपियाँ खरीदीं; परन्तु जो अभिमान मुझे माताकी दी हुई उस दो टुकड़ोंकी टोपी पर है वह और किसी टोपी पर नहीं। मेरे जिन जिन साथियोंने फैशनवाली टोपी पहनी, और घरकी बनी हुई टोपी पहनने पर मेरी हँसी उड़ाई उनमेंसे बहुतेरोंको आगे चलकर जेलकी हवा खानी पड़ी, और मुझे अब बड़े दुःखसे कहना पड़ता है कि उनमेंसे बहुतेरोंको किसी भी तरहकी टोपी खरीदनेकी शक्ति नहीं रह गई है।

दूसरी अड़चन नामके बारेमें थी। बचपनसे लोग मुझे 'बुकर' कहकर पुकारते थे। पाठशालामें मैं जबतक भरती नहीं हुआ था तबतक, मुझे और एक नाम धारण करनेकी आवश्यकता भी न जान पड़ी थी। किन्तु जब पाठशालामें हाजिरी हुई और मैंने सुना कि किसीके दो नाम हैं और किसी किसीके तीन तीन तब मैं सोचने लगा कि मेरा तो एक ही नाम है और जब मास्तर साहब मुझसे

मेरे दो नाम पूछेंगे तब मै क्या जबाब दूँगा। आखिर जब नाम लिखानेका वक्त आया तब मुझे एक तदबीर सूझी और मेरा विश्वास हो गया कि यह मौका मै अवश्य मार लूँगा । जब मास्टर साहबने पूछा कि तुम्हारा नाम क्या है, तो मेने शान्तचित्तसे उत्तर दिया– ‘ बुकर वाशिंगटन ’। मानो इसी नामसे लोग मुझे हमशा पुकारते हों । और आगे मेरा यही नाम प्रसिद्ध हुआ । कुछ दिनो बाद मुझे यह भी मालूम हुआ कि मेरी माने मेरा नाम ‘ बुकर टेलीफेरो रक्खा था । यह दूसरा नाम अबतक क्यो गुम रहा सो मुझे मालूम नही । पर जैसे ही मुझे खबर लगी कि मेरा दूसरा नाम टलीफरो है, वैसे ही, मै उसे चलाने लगा और इस तरह मेरा पूरा नाम ‘ बुकर टलीफरो वाशिगग्न ’ हुआ । मै समझता हूँ कि एसे इने गिने ही लोग हागे जिन्हे मेरी तरह अपना नाम आप रखनेका सौभाग्य प्राप्त हुआ हा ।

कई बार मरे मनमे यह विचार उठा हे कि अगर मे किसी बडे खान्दानमे पैदा हाता ता बडी बहार आती, पर अगर सचमुच ही कही मे किसी अमीरका लडका होता ता अपन पुरुषार्थका भूलकर मै शाही ठाठके दलदलमे ही धॅस जाता । कुछ वर्ष पहले मेन यह निश्चय किया कि मे किसी बड घरानका अभिमान नही कर सका ता क्या हुआ ?–मे स्वय कुछ एसे सत्कार्य करूँगा जिन पर मर लडके फक्र करें और, और भी बडे काम करनेके लिए उत्साहित हो ।

नीग्रो लोगोक विषयमे किसीको बिना समझ बूझ एकाएक अपनी गय खिलाफ न कर लना चाहिए । नीग्रो लागोको जिन मुसीबतों, नाउम्मेदियों ओर तरह तरहकी मोहमायाओसे सामना करना पडता है उन्हे वे ही जानते है–और लोगोको उसका अन्दाज भी नही । जब कोई गोरा किसी कामको उठा लेना है तब, यह मान लिया जाता है कि वह जरूर कामयाब होगा । पर नीग्रोकी दशा इसके बिलकुल विप-

रीत है । अगर कोई नीग्रो-बच्चा किसी काममें कामयाब होता है तो लोग दाँतो उँगली दबाते है और कहते है कि इसने यह काम कैसे कर लिया ? तात्पर्य यह है कि नीग्रो जाति ही बदनाम है ।

किसी व्यक्ति या जातिकी उन्नतिमे कुलीनता भी बडी सहायक होती है । नीग्रो लोगोसे और कुलीनतासे अब तक कोई सरोकार न था । नीग्रो लोगोको अपना इतिहास मालूम नही—उनके बापदादा कौन थे, उन्होंने क्या पुरुषार्थ किया इत्यादि बाते, उन्होने अपने कानोंसे कभी सुनी तक नही । ऐसी हालतमे यह कैसे सभव हे कि गोरोंकी तरह उन्हें भी अपने कुलका अभिमान हो । बहुतसे लोग इस बातको भल जाते है ओर नीग्रो युवकोकी चालचलन पर दृष्टि रखकर उनकी और गारोकी उन्नतिका मुकाबला किया करते है । अब मेरा ही उदाहरण लीजिए । मेरी नानी या दादी कौन थी, मै नही जानता । मर चचा मामा, फुआ, फूफी, चचेरे भाई और चचेरी बहनें थी, पर वे सब इस वक्त कहाँ हे ओर क्या करते है इसकी, मुझे खबर तक नही है । नीग्रो लोगोका तो यह हाल है । गोरोकी हालत इससे कही अच्छी है । जीवनमे अगर नाकामयाबी हुई तो उन्हे इस बातका डर रहता है कि ऐसा हानसे कुलकीर्त्तिमे कलकका टीका लग जायगा, और अकेली यही एक बात उन्हें बुरे कर्मोके करनेसे बारबार बचाती है । अपने कुलका इतिहास कसे कैसे सत्कार्योंसे भरा हुआ है और ऐसे अच्छे कुलमे हमने जन्म पाया है, ये विचार प्रयत्नशील पुरुषोंके मार्गकी बाधायें दूर करनेमे बडी मदद देते है ।

दिनका बहुत थोडा समय मै स्कूलमे दे सकता था ओर मेरी हाजिरी भी वक्त पर न होने पाती थी । कुछ ही दिनों बाद मेरा दिनका स्कूल जाना बन्द हो गया, और सारा समय फिर काम करनेमे बीतने लगा । मै फिर नाइट (रात) स्कूलमे भरती हुआ। सच पूछिए तो दिनमे काम कर

चुकने पर रातकी पढ़ाईसे ही मुझे जो कुछ शिक्षा प्राप्त हुई सो हुई। मैंने बहुत कोशिश की कि कोई अच्छे मास्टर मिलें; पर अच्छे मास्टरका मिलना बड़ा ही मुश्किल था। कभी कभी तो यहाँ तक नौबत आई है कि रातको पढ़ानेवाले कोई मास्टर मिले भी, तो उनके इल्मकी पहुँच मेरे ही जितनी देख, मुझे ऐसी नाउम्मेदी हुआ करती थी कि कुछ कह नहीं सकता। कई बार मुझे रातका सबक सुनानेके लिए मीलों दौड़ जाना पड़ता था। पर मुझे अध्यवसायमें दृढ़ विश्वास था। बीसों बार मुझे ऐसी निराशा और उदासी हुई कि जिसकी हद नहीं; पर मैंने कभी अपने इस निश्चयको टलने न दिया कि चाहे कुछ भी हो, मैं शिक्षा अवश्य प्राप्त करूँगा।

जब हम लोग वेस्ट वर्जीनियामें आये तब बड़ी ही गरीबीमें दिन बिताते थे। पर इस हालतमें भी मेरी माने एक अनाथ बालकको अपने यहाँ रख लिया। ठीक वही मसल हुई कि "आप मियां माँगते द्वार खड़े दरवेश!" आगे चल कर हम लोगोंने इसका नाम जेम्स बी. वाशिंगटन रक्खा। जबसे हमारे यहाँ वह आया तबसे परिवारका ही एक आदमी होकर रहने लगा।

कुछ दिन नमककी भट्टी पर काम करनेके बाद मुझे एक कोयलेकी खानमें काम करना पड़ा। उस खानसे कलके लिए कोयला जुटाया जाता था। खानमें काम करनेसे मैं बहुत डरता था। इस कामसे तन्दुरुस्ती बिलकुल खराब हो जाती है। दिन भर काम करते करते इतना मैल बदन पर जम जाता था कि वह सहजमें साफ़ न हो सकता था। इसके सिवाय खानसे कोयले खोदे जानेका स्थान एक मील दूर था—सुरंगके अंधेरेमें एक मील चलने पर तो कोयलेसे भेंट होती थी। वहाँ कोयलेकी कई गुफायें थीं जिनको पहचानना बड़ा कठिन था। इसलिए अँधेरेमें बहुत भटकना पड़ता था। राह अकसर

भूल जाती थी और तब मेरी छाती धडधडाने लगती और कही चिराग भी गुल हो गया और मेरे पास दियासलाई भी न हुई तो मेरे देवता ही कूच कर जाते। जब तक कोई आदमी चिराग लेकर वहाँ न आता तबतक उस अधेरी भूलभुलैयासे मेरा छुटकारा न होने पाता था। मौत तो हर दम सिर पर सवार रहती थी। कभी कभी कोयलेकी चट्टान धँस जानेसे बहुतोकी जान जाती थी। कभी सुरगकी बारूद समयके पहले ही भभक उठनेसे बहुतेरे लोग बेमौत मर जाते थे।

उन दिनों अच्छे अच्छे होनहार बालक खानो पर काम करनेके लिए भेज दिये जाते थे, पर उनकी शिक्षाका कोई प्रबन्ध न किया जाता था और प्राय इसका ऐसा बुरा परिणाम होता था कि जो लडके बचपन-से ही खानोंका काम करते थे वे खानोका ही काम करने लायक रह जाते थे—न उनके शरीरकी कभी उन्नति होती और न मनकी ही। वे खानके ही आदी हो जाते ओर उनकी सारी जिन्दगी इसी काममें बीतती थी।

उस समय ओर उसके बाद युवा होन पर म प्राय गोरे लडकोंकी मनोवृत्तियो और महत्त्वाकाक्षाओका मन ही-मन समझनेकी कोशिश किया करता था और देखता था कि उनकी उन्नतिके लिए कोई कार्य-क्षेत्र रुका नही है ओर वे जो चाहे बिचार सकत है जो चाहें कर सकते हैं। वे काग्रेसके सभासद हो सकते थ, किसी प्रदेशके गवर्नर हो सकते थे, बिशप (मुख्य पादरी) हो सकते थ और सयुक्तराज्यके कर्ता धर्ता भी हो सकते थे। और यह सब उनके जन्म और वर्णकी बदौलत था। इनसे मै ईर्ष्या किया करता था और सोचता था कि अगर मै भी इनकी तरह एक गोरा लडका होता तो बहुत अच्छा होता। उस हालतमें मै क्या क्या करता, बिलकुल नीचेसे आरभ कर किस तरह सबसे ऊँचे स्थान पर पहुँच जाता इन बातोंको मै अक्सर सोचा करता था।

पर जैसे जैसे मेरी उम्र बढती गई वैसे वैसे गोरे लडकोकी तरह होनेकी इच्छा कम होने लगी। मै अब जानने लगा कि किसी मनुष्यके यशका मूल्य इस बातसे नही कूता जा सकता कि उसन अपने जीवनमे कौनसा पद प्राप्त कर लिया है, किन्तु यश प्राप्त करनेके मार्गमें उसने कितनी विघ्नबाधाओंसे लडझगडकर उन्हें पददलित कर डाला हे इसीसे उसके यशका मूल्य ठहराया जा सकता है । अर्थात् जिसने अपनी जिन्दगीमे जितनी ही अधिक विघ्नबाधाओंस डट कर सामना किया हो उसे उतना ही अधिक पुरुषार्थी समझना चाहिए । इस दृष्टिसे विचार करने पर मेरा यह निश्चय होता है कि एक नीग्रो होना ही ससार यात्राम विजय पानेके लिए सबसे अच्छा स्थान ह । नीग्रो जाति किसीका प्यारी नही, इस लिए जीवनके आरभसे ही विघ्नबाधाओका हटानेका काम नीग्रो बालक पर आ पडता है अर्थात् उसकी विजययात्रा जन्मस ही आरभ होती है । नीग्रो युवाओको विख्यात होनेक लिए गोरे युवकोंसे बहुत अधिक प्रयत्न करने पडते है इसमें सन्देह नही पर इस कठिन और असाधारण विकट मार्गसे जानवाले नीग्रो युवाओमें जो आत्मबल आत्मविश्वास और योग्यता आ जाती ह वह सुगमतासे अपने गौर वर्णकी बदौलत ही बडप्पन पानवालामे कदापि नही आ सकती और इस लिए नीग्रो होना भी एक बडा भारी लाभ हे ।

चाहे जिस दृष्टिसे देखा जाय, दूसरी किसी भी उच्च जातिका मनुष्य होनेकी अपेक्षा जिस जातिम मै पैदा हुआ हूँ उसी जातिका मै एक मनुष्य रहूँ, अब मुझे यही इष्ट जान पडता है । मुझे यह सुन कर बडा दु ख हुआ है कि एक विशिष्ट जातिक कुछ लोगोंने राष्ट्रीय अधिकारका दावा किया है । इन लोगो पर मुझे बडी दया आती है, क्योकि उच्च जाति या वर्ण होनेसे क्या होता हे ? जब तक योग्यता न हो तब तक, उन्नति हो ही नही सकती, और मेरा यह विश्वास है कि किसीका वर्ण चाहे कैसा ही

हो, अत्यन्त हीन जातिमें भी क्यो न पैदा हुआ हो वह अपनी योग्यतासे अवश्य आगे निकल जायगा। योग्यता और श्रेष्ठता—फिर वह किसी रगके चमडेमें हो—अन्तमे पहचानी जाती है और उसीका बोलबाला होता है। यह सनातन नियम है और सारे ससारमे इसका अमल होता है। अत्याचारसे इस समय जो जातियॉ पीडित है, अन्तमे उनकी विजय होगी। इस सनातन सिद्धान्त पर भरोसा करके उन्हे धीरताके साथ अपना बल और योग्यता बढानेकी चेष्टा करनी चाहिए। मै यह इस लिए नही कहता कि आप लोग मेरी ओर देख, बल्कि मै चाहता हूँ कि मुझे जिस जातिमे पैदा होने पर फख्र (गर्व) है उस जातिकी ओर आप जरा ध्यान दे।

तीसरा परिच्छेद ।

शिक्षाके लिए प्रयत्न ।

एक रोज मै कोयलेकी खानमे काम कर रहा था और थोडी दूर पर दो मजदूर कुछ बातचीत कर रहे थे । उससे मुझे पता लगा कि काले नीग्रो लोगोंके लिए एक बडा भारी स्कूल खुलनेवाला है । एक छोटीसी पाठशाला तो हमारे गॉवमे भी थी, पर एक बडा स्कूल या कालेज खुलनेका समाचार यह पहला ही सुना गया ।

कोयलेकी खानमे ये बाते हो रही थी, अर्थात् उन मजदूरोको यह मालूम नही था कि उनकी बाते एक तीसरा आदमी भी सुन रहा है । अँधेरेमें किसका दिखाई दे ? मै और भी पास आ गया और उनकी बातें सुनने लगा । मैने एकको दूसरेसे यह कहते हुए सुना कि स्कूल स्थापित हो चुका है और यही नही, बल्कि चतुर विद्यार्थी कुछ काम करके अपने उदरनिर्वाहका भी प्रबन्ध कर सकते है और इसके साथ उन्हें कोई धन्धा भी सिखाया जानेवाला है ।

वे उस स्कूलकी ज्यो ज्यो कैफियत बयान करने लगे त्यो त्यों, मेरी यह धारणा होती चली कि अगर संसारमे कोई महत्त्वका स्थान है तो वह स्कूल ही है ! उस स्कूलका नाम भी मैने सुना और मन-ही-मन कहा कि हैम्पटन नार्मल एण्ड एग्रिकल्चरल इन्स्टिट्यूट (यह स्कूलका नाम था) मे जो आनन्द है वह स्वर्गके सुखको भी मात करता है ! मै अभी यह नही जानता था कि यह स्कूल कहाँ है, यहॉसे कितनी दूर है, और वहॉ कैसे कोई जा सकता है, तो भी मैने तुरत वहॉ जाना ठान लिया । एक हैम्पटनकी धुन ही मुझ पर सवार हो गई । रात दिन मै वहीके स्वप्न देखने लगा ।

कुछ महीने और मैं खानमें काम करता रहा। इसी बीच मैंने सुना कि नमककी भट्टी और कोयलेकी खानके मालिक जनरल लेविस रफनरके यहाँ (घर पर) एक जगह खाली हुई है। जनरल रफनरकी पत्नी उत्तर अमेरिकाके वरमाँट स्थानकी रहनेवाली थीं और उनका नाम वायोला रफनर था। उनके बारेमें यह बात मशहूर थी कि वे अपने मातहतके लड़कोंसे बड़ा कड़ा ब्योहार रखती हैं। यह कड़ाई देखकर दो तीन महीनेसे ज़ियादा कोई नौकर वहाँ टिकता न था। सब लोग इसी एक सबबसे उनकी नौकरी छोड़ दिया करते थे। मैंने सोचा कि कोयलेकी खानमें काम करनेसे तो वहाँ काम करना कुछ आसान ज़रूर होगा; इसलिए उनके यहाँ नौकरी करना मैंने ठान लिया; और मेरी माने भी उस जगहके लिए मेरी तरफसे कोशिश की। मैं पांच डॉलर * मासिक वेतन पर वहाँ नियत किया गया।

रफ़नर बीबीकी कड़ाईके बारेमें मैं इतना सुन चुका था कि उन्हें मिलते मुझे डर लगता था; और जब मैं उनके सामने आया तब तो मेरी देहमें कँपकँपी ही भर गई। तो भी कुछ सप्ताह काम कर चुकने पर उनका मुझे अच्छी तरह परिचय हो गया। सबसे पहले मैंने यह जाना कि हरेक चीज़ साफ़ और सुथरी रखनी चाहिए और सब काम ठिकानेसे और ढंगके साथ होने चाहिए; उसी तरह हर काम ईमान और सफ़ाईके साथ होना चाहिए; तब तो वे प्रसन्न रहती हैं, और नहीं तो, उनका दिमाग़ बिगड़ जाता है। वे चाहती थीं कि कोई बेगारी या टालमटोल न करे, घरकी चीज़ें बे-करीने रक्खी न हों; तात्पर्य, सचाई और सफ़ाईको वे बहुत पसन्द करती थी। और उनकी यह पसन्दगी कुछ बुरी न थी।

हैम्पटनको जानेसे पहले, मैंने कबतक रफनर बीबीके यहाँ काम

* एक डॉलर=तीन रुपये।

किया सो मुझे ठीक याद नही, तो भी मै समझता हूँ कि साल डेढ़ साल मैने उनके साथ बिताया होगा। यह तो मै कई बार कह चुका हूँ और फिर भी कहता हूँ कि रफनर बीबीके यहाँ मैने जो तालीम पाई वह जिन्दगी भर मेरे काम आई। अब भी अगर मै कही कागजके टुकडोको फैले हुए देखता हूँ तो झट बटोर लेता हूँ, आँगनमे कूडा करकट देखता हूँ ता चट उसे साफ करता हूँ, छडदीवारके छड अगर निकल पडे हा तो फौरन उन्हें जहाँके तहाँ लगा देता हूँ। गन्दी जगहोको मै देख नही सकता, बे-बटनका कोट मुझे अच्छा नही लगता, किसीके कपडे पर अगर तेलके धब्बे पडे हुए दखता हूँ तो मरा जी मचलाता है और मे लोगोको य बात मोके मोके पर बतला भी देता हूँ।

शुरू शुरूमे मे रफनर बीबीसे डरता था, पर वह समय भी जल्दी आ गया जब, मे उन्हे अपना एक परम हितू समझने लगा। जब उन्हे भी मुझ पर विश्वास हो गया तब, वे मुझे बहुत प्यार करने लगी। जाडेके मौसिममे उन्हाने मुझे एक घटे भर स्कूलम जाकर पढनेकी इजाजत दे दी। पर मैने जियादातर रातहीका पढा। पढानेके लिए कुछ रुपये खर्च करनेसे कोई न कोई मास्टर मिल जाते थे। रफनर बीबी मुझे शिक्षा पानके लिए बराबर उत्साहित करती थी। उनके यहाँ रहत हुए ही मेन अपनी पहली लाइब्रेरी जुटाना शुरू किया। एक लकडीका सन्दूक मुझे मिल गया, उसके एक तरफका हिस्सा मैने काट डाला और उसीकी चिप्पियाँ बना कर उस सन्दूकमें लगा दी। अब जो कोई पुस्तक मुझे मिलती उस मै इसीमे रखने लगा, और इसीको मै अपनी लाइब्रेरी कहा करता था।

इस तरह पर रफनर बीबीके यहाँ बडे आनन्दसे दिन कटते थे। तो भी हैम्पटन जानेकी धुन अब भी सवार थी। हैम्पटन किस तरफ है और वहाँ जानेमे कितना खर्च लगेगा सो भी मुझे मालूम नही था। पर

१८७२ की बरसातमें मैंने वहाँ जानेकी चेष्टा की। इस कार्यमें सिवा मेरी माताके, और किसीकी भी मेरे साथ सहानुभूति न थी। मेरी माको भी थोड़ी देरके लिए मेरा यह प्रयत्न मृगजलका पीछा करना ही जान पड़ा। वह कुछ दुखित भी हुई; पर कोई न कोई सूरत निकाल कर मैंने उससे जानेकी आज्ञा ले ली। अबतक मैंने जो कुछ कमाई की थी उसमेंसे कुछ ही डालर मेरे पास रह गये थे, बाकी सब मेरे बापने और परिवारके और लोगोंने खर्च कर डाले थे। अब मुझे कपड़े खरीदने थे; राहका खर्च चलाना था; और पास तो कुछ ही रुपये थे। मेरे भाई जानने भर सक मेरी मदत की; पर वह कोई बड़ी भारी मदद नहीं थी। एक तो उसे खानमें बहुत वेतन मिलता नहीं था, और जो कुछ मिलता था, वह घरमें खर्च हो जाता था।

मैं जब हैम्पटन जानेकी तैयारी करने लगा तब बूढ़े नीग्रो लोगोंने बड़ी ममता दिखाई और ऐसा प्यार किया कि मैं गद्गद हो गया। इन लोगोंकी जवानी गुलामीमें बीती थी; इन्हें यह आशा नहीं थी कि हमारी जातिका कोई होनहार युवक छात्रालयमें पढ़नेके लिए जायगा। इन बूढ़े लोगोंमेंसे किसीने मुझे निकल (ढाई आने), किसीने पाव डालर (बारह आने) और किसीने रूमाल भेंट किया।

निदान वह दिन भी उदय हुआ और मैंने हैम्पटनके लिए प्रस्थान किया। जितने कपड़े मिल गये उतने एक थैलेमें भर लिये। इन दिनों मेरी माकी तबियत एकाएक खराब हो चली थी और वह दिनोंदिन कमजोर होती जाती थी। मुझे इस बातकी आशा न रही कि मैं उससे फिर मिल सकूँगा और इस कारण इस मातृवियोगसे मुझे दुःसह दुःख हुआ; परन्तु उसने बड़ी धीरतासे इस प्रसंगको झेल लिया। उन दिनों वेस्ट वर्जीनियासे ईस्ट वर्जीनिया तक बराबर रेलगाड़ीका रास्ता नहीं था। कुछ दूर रेलगाड़ी थी और बाकी सफ़र डाककी शिकरमसे तै करनी पड़ती थी।

मालडनसे हैम्पटन अनुमान ५०० मील है। घरसे रवाना हुए अभी बहुत देर नहीं हुई थी। इतनेमें मुझे यह मालूम हुआ कि मेरे पास हैम्पटन तकका काफ़ी किराया नहीं है। राहमें जो एक घटना हो गई उसे तो मैं कभी न भूलूँगा। एक दिन दो पहरके वक्त एक पुरानी शिकरममें सवार हो मैं एक पहाड़ी रास्तेसे जा रहा था। शाम होते ही वह गाड़ी एक मामूली होटलके पास ठहर गई। उस गाड़ीमें, मेरे सिवाय और सब मुसाफ़िर गोरे थे। मैंने समझा कि शिकरमके मुसाफिरोंके लिए ही यह होटल बना है। चमड़ेके रंगसे कितना उलट फेर हो जाता है, इसका मैंने विचार नहीं किया था। और सब मुसाफ़िरोंके टिकनेका जब प्रबन्ध हो गया और भोजनकी भी तैयारी हुई तब, मैं चुपकेसे वहाँके मैनेजरके पास गया। भोजन या आरामके ख़ातिर एक पैसा भी मेरे पास नहीं था जो, मैं दे सकता। पर किसी न किसी सूरतसे मैं मैनेजरको खुश करना चाहता था। बात यह थी कि इस मौसिममें वर्जीनियाके पहाड़ोंपर बड़ी ठंड पड़ती है, और इस लिए रातको ठंडसे बचने और आरामके लिए कोई ठिकाना मिलना ज़रूरी था। मैनेजरने मुझे देखकर ही–बिना कुछ पूछताँछ किए ही कोरा जवाब सुना दिया कि 'जाओ, तुम्हारे लिए यहाँ जगह नहीं है!" अपने शरीरके रंगका मतलब समझनेका मेरे लिए यह पहला ही मौका था! इधर उधर टहल कर मैंने बदनमें कुछ गरमी पैदा की, और किसी तरह वह रात बिताई। हैम्पटन जानेकी धुनमें मुझे उस होटलवालेसे बैर करनेका या असंतुष्ट होनेका वक्त ही न मिला।

कुछ राह पैदल चला और कुछ गाड़ीवानकी दयासे गाड़ी पर सवार हो चला; और इस तरह बहुत दिनों बाद वर्जीनियाके रिचमंड शहरमें आ पहुँचा। यहाँसे अब हैम्पटन ८२ मील था। आधी रात-का वक्त था; मार्गके परिश्रमसे शरीरकी नस नस ढीली हो गई थी; भूखकी ज्वाला पेटमें धधक रही थी; और ऐसे समय रिचमंड नगरमें

चौथा परिच्छेद ।

असहायोंकी सहायता ।

हैम्पटनमें साल भर खूब पढ़ाई हुई। इसके बाद ही एक नई मुश्किलीसे सामना पड़ा। छुट्टीका समय आया और सब विद्यार्थी अपने अपने घर जानेकी तैयारी करने लगे। छुट्टियोंमें प्रायः सभी विद्यार्थी अपने घर चले जाते थे; वहाँ कोई रहने नहीं पाता था। किसी कारणवश कुछ विद्यार्थी न जा सकते तो उन्हें विद्यालयके अधिकारियोंसे वहाँ रहनेकी इजाज़त लेनी पड़ती थी जो बड़ी कठिनाईसे मिलती थी। जब सब लोग तैयारी करने लगे तब, मैं भी घर जानेके लिए तरसने लगा। पर मेरे पास क्या घर और क्या बाहर, कहीं जानेके लिए दाम ही न थे।

आखिर एक तदबीर सूझी। मुझे कहींसे एक पुराना कोट मिल गया। मुझे वह बड़ा कीमती मालूम होता था। राहखर्चके लिए मैं उसे बेचनेके लिए तैयार हुआ। मेरी प्रकृतिमें कुछ अभिमान भी था—अभिमान क्या था, लड़कई थी और इसलिए मैं अपने सहपाठियोंसे अपने खर्चकी तंगी सदा छिपाये रहता था—मैंने कभी उनपर यह बात ज़ाहिर न होने दी कि कहीं सैर करने जानेके लिए मेरे पास खर्च नहीं है। हैम्पटन गाँवके कुछ लोगोंको मैंने बतलाया कि मुझे एक कोट बेचना है। बड़ी मुश्किलसे एक काला मनुष्य कोट देखनेके लिए मेरे स्थान पर आनेको तैयार हुआ। इससे मुझे कुछ अशा बँध गई। दूसरे दिन सबेरे ठीक समय पर वह आ पहुँचा। उसने एक बार कोटको अच्छी तरह देखा और पूछा, ‘ बतलाओ, कितनेमें दोगे ? ’ इसपर मैंने जवाब दिया कि ‘ इसकी कीमत तीन डालरसे क्या कम होगी। ’ कोट उसे जँचा

और मैने समझा कि कीमत भी उसे वाजिब मालूम हुई है। पर वह था बड़ा धूर्त, उसने कहा,–' अच्छा, यह कोट मै ले लेता हूँ और नकद ५ सेंट (ढाई आने) भी दिये देता हूँ, बाकी दाम पीछे दे दूँगा ! ' उस वक्त मेरे दिलका जो हाल हुआ उसका अन्दाज करना कुछ कठिन नहीं है।

इस तरह जब मै निराश हुआ तब बाहर जाकर कुछ कमा लेनेकी आशा भी मैने छोड दी। मे बहुत चाहता था कि किसी ऐसी जगह जाऊँ जहाँ काम करके अपने लिए कपडे और जरूरी चीजें खरीद लाऊँ। सब लाग अपने अपने घर चले गये और इससे मुझे और भी अधिक दु ख हुआ।

हेम्पटन गॉव और उसके आसपास मैन कामके लिए बहुत तलाश की। अन्तमें फारेट्स मनरोके एक हाटलमे, काम मिल गया। मजदूरी जो मिलती थी उससे भोजन-खर्च चलता था, बचत बहुत ही थोडी होती थी। शामसुबह भोजनके वक्त मुझे वहॉ हाजिर रहना पडता था और बीचका समय पढन लिखनेमें बीतता था। इस प्रकार गरमीकी छुट्टियामे मैने अपनी अवस्था बहुत कुछ सुधार ली।

प्रथम वर्ष जब समाप्त हुआ तब, मेरी तरफ विद्यालयके सोलह डालर निकलते थे। काम करके मै यह रकम अदा न कर सका। मेरी यह इच्छा थी कि गरमीकी छुट्टियोम मजदूरी करके यह ऋण दे डालूँ। कर्जका बोझ मुझे बेइज्जती मालूम होती थी और इस हालतमें मै अपना मुँह किसीको दिखलाना न चाहता था। मैने बडी किफायतसे अपना खर्च चलाया। अपने कपडे अपने हाथो धोये, और जरूरी कपडे पहनना भी मैने त्याग दिया। इतना करके भी मै छुट्टियोके अन्तमें १६ डालर जमा न कर सका।

होटलमें एक दिन मुझे एक मेजके नीचे दस डालरका एक कोरा करकराता नोट मिल गया। मुझे बडा हर्ष हुआ। उस जगह पर मेरी

मालकियत नहीं थी; इसलिए मैंने वह नोट अपने मालिकको दिखलाना उचित समझा। देखकर वह भी बड़ा प्रसन्न हुआ और उसने मुझसे कहा, 'यह जगह अपनी है और इसलिए इसे रख लेनेका अपना हक़ है।' उसने नोट रख लिया। मुझे यह कहनेमें कोई संकोच नहीं कि इससे एक बार मेरे हृदय पर फिर चोट लगी। यह मैं न कहूँगा कि मैं निराश हो गया–मेरी हिम्मत टूट गई; क्योंकि इससे पहले मैंने जो कुछ साधनेका–सिद्ध करनेका निश्चय किया था उसके विषयमें मैं कभी हिम्मत नहीं हारा था। हरेक काम मैंने इसी भरोसे पर शुरू किया है कि मैं अवश्य सफल मनोरथ हूँगा। बहुतसे नाकामयाब लोग जब कभी अपनी नाकामयाबीका (असफलताका) सबब बतलाते थे तब बिना बीचमें दखल दिये मुझसे रहा न जाता था। जिस पुरुषके मुँहसे मैं कामयाबी हासिल करनेके उपाय सुनता था उस पर मेरी श्रद्धा बैठ जाती थी। उस वक्त मुझ पर जो मुसीबत थी उसका सामना करनेके लिए मैं तैयार हुआ। सप्ताहके अन्तमें मैं हैम्पटन-विद्यालयके खजांची, जनरल जे. एफ. बी. मार्शलके पास गया और उन्हें मैंने अपनी रामहानी सुनाई। उन्होंने मुझसे कहा, 'कोई हर्ज नहीं, जब तुम्हारे पास उतनी रकम आजाय तब दे देना; घबरानेकी कोई बात नहीं है। मुझे तुम्हारे ऊपर विश्वास है।' इन शब्दोंको सुनकर मुझे बहुत संतोष हुआ। दूसरे साल भी मैं दरवानका काम करता रहा।

हैम्पटनके विद्यालयमें मैंने पढ़ा सही; पर विद्यालयमें जो कुछ मैंने सीखा वह, वहाँ जो शिक्षा और अनुभव मैंने प्राप्त किया उसका, एक अंश मात्र था। वहांके शिक्षकोंका स्वार्थत्याग देखकर मेरे हृदय पर बड़ा ही अच्छा परिणाम हुआ। उस समय मेरी समझमें यह नहीं आता था कि दूसरोंके लिए इस प्रकार त्याग करनेसे ये लोग क्योंकर सुखी होते हैं। पर दूसरा साल समाप्त होनेसे पहले ही मुझे यह अनुभव होने लगा कि जो लोग दूसरोंके लिए अपना शरीर घिसते हैं वे ही सबसे

अधिक सुखी हुआ करते हैं। तभीसे मैं इस शिक्षाको स्मरण रखनेकी चेष्टा कर रहा हूँ।

हैम्पटनमें उत्तम जानवर आर मुर्गे पैदा करनेकी पद्धतिका बारबार निरीक्षण करके मैंने एक नया पाठ सीख लिया। जिस किसीको इनकी परवरिशका नया ढंग देखनेका अवसर मिला है वह मामूली चौपायोंके रखनेसे कभी सन्तुष्ट न होगा।

दूसरे वर्षमें मैंने एक और शिक्षा पाई। बाइबलका उपयोग और महत्ता मैं समझने लगा। यह शिक्षा मुझे पार्टलैंडकी मिस नार्थली लार्ड नाम्नी एक अध्यापिकासे मिली। इससे पहले मैं बाइबलकी कोई परवा नहीं करता था। पर अब तो सिर्फ अपनी आत्मिक उन्नतिके लिए नहीं बल्कि साहित्यकी दृष्टिसे भी मैं उसे पढ़ने लगा। उसका अब मुझ पर ऐसा दृढ़ संस्कार हो गया है कि मैं रोज सबेरे उसके एकाध अध्यायका पाठ कर लेता हूँ तब दूसरा काम देखता हूँ।

मुझे यदि व्याख्यान देना कुछ आ गया है तो, यह भी मिस लार्डही-की कृपा है। जब उन्हें यह मालूम हुआ कि व्याख्यान देनेकी तरफ मेरा झुकाव है तभीसे वे मुझे इस विषयकी एक एक बात बतलाने लगीं। उन्होंने ही मुझे खास तोर पर शिक्षा दी कि व्याख्यान देते समय किस प्रकार श्वासोच्छ्वास करना चाहिए, वाक्यमें कहाँ जोर देना चाहिए और स्पष्ट उच्चारण कैसे करना होता है, इत्यादि। मैं यह तो चाहता था कि लोगोंके सामने व्याख्यान देने लगूँ, परन्तु इसके लिए मुझे ऐसी हवस न थी कि बुरा भला जैसा बने वैसा ही बकने लगूँ। सचमुच लोगोंके सामने ऐसे व्याख्यान देना कि जिनसे कोई लाभ नहीं, बड़ा ही बुरा और भद्दा काम है। परन्तु बचपनसे मेरी यही इच्छा रही है कि संसारकी उन्नतिमें मैं भी हाथ बटाऊँ, और इस कार्यके लिए मैं लोगोंके सामने कुछ कह सकूँ।

हैम्पटनकी वादविवाद सभा (Debating Society) से मुझे बडी प्रसन्नता होती थी। इस सभाके अधिवेशन प्रति शनिवारको सध्या समय हुआ करते थे, और जबतक मै हैम्पटनमे था, बराबर इस सभामे जाया करता था। मे सिर्फ इसी सभाके अधिवेशनोंमे उपस्थित नही रहता था, बल्कि एक और सभाके स्थापित करनेमे भी मै कारणीभूत हुआ था। शामका भोजन होने पर हम सब विद्यार्थियोंको २० मिनिटकी छुट्टी मिलती थी और यह समय गपशपमे ही बीता करता था। इसलिए वादविवाद और वक्तृत्वमे योग्यता प्राप्त करनेके हेतु हम लोगोंमेंसे बीस विद्यार्थियोने एक सभा सगठित की। इस प्रकार बीस मिनिटका उपयोग करनेसे हम लोगोंको जो लाभ हुआ वह बहुत ही कमें लोगोंको हुआ होगा।

दूसरे वर्षके अन्तमे मेरी माने और मेरे भाई जानने कुछ रुपये भेज दिये थे, और एक शिक्षकने भी कुछ सहायता कर दी थी जिससे मे छुट्टियोमे अपने घर माल्डन जा सका। घर पहुँच कर मैने देखा कि नमककी भट्टियाँ बन्द है और खानवाले मजदूराने हडताल डालकर कोयलेकी खाने भी बन्द कर दी है। मने यह मालम कर लिया कि जब मजदूरोंके पास दो तीन महीनोंके वेतनकी रकम जमा हो जाती है, तब ऐसी हडताल हो जाया करता है। हडताल पडनेपर उन्हे अपनी अपनी बचतका रुपया खर्च करना पडता था और जब सब रुपये खतम हो जाते थे तब उन्हें उसी मजदूरी पर फिर वही काम करना पडता था, या किसी दूरकी खानपर काम करनेके लिए पैसे खर्च करके जाना पडता था। दोनो हालतोमे हडतालका फल खट्टा ही होता था। मै यह जानता था कि हडतालसे पहले खानके मजदूरोका बहुतसा रुपया बक्में जमा रहता था, पर जबसे मजदूरोका पक्ष लेकर आन्दोलन मचानेवालोने उन्हे अपने अधीन कर लिया तबसे, बडी किफायत शारीसे रहनेवाले लोग भी अपनी बचतसे हाथ धोने लगे।

मैं दो वर्ष बाद घर आया था; मुझमें बहुत कुछ सुधार भी हो गया था, यह देख कर मेरी माताको और परिवारके सभी लोगोंको बड़ा हर्ष हुआ। मेरे वापिस आनेसे नीग्रो मात्रको, विशेषतः बूढ़ोंको जो आनन्द हुआ वह अपूर्व था। मुझे घर घर जा कर लोगोंसे मिलना पड़ा, उनके यहाँ भोजन करना पड़ा और हैम्पटनके अनुभवकी कहानी सुनानी पड़ी। इसके अतिरिक्त गिरजाघरमें, रविवारकी पाठशालामें, और कई अन्य स्थानोंमें मुझे व्याख्यान भी देने पड़े। पर जिस चीज़की तलाशमें मैं था वह न मिली—कोई ऐसा काम न मिला जिससे मैं कुछ कमा लेता। हड़तालके कारण कोई काम ही न था। हैम्पटन वापिस आनेके लिए मुझे राहखर्चकी जरूरत थी; पर छुट्टीका पहला एक महीना तो दौड़धूपहीमें बीत गया।

इसी महीनेके अन्तमें मैं कामकी तलाशमें मकानसे बहुत दूर एक स्थान पर गया; परन्तु वहाँ भी कोई काम न मिला और रातके वक्त मैं घर लौटनेके लिए लाचार हुआ। जब मकान डेढ़ दो मीलके फासले पर रह गया और चलते चलते मैं इतना थक गया कि आगे एक कदम चलनेकी भी मुझमें शक्ति नहीं रही तब पासहीके एक मकानमें, जो बिलकुल बेमरम्मत पड़ा था, रात काटनेकी गरज़से घुस गया। सबेरे कोई तीन बजे मेरा भाई जान वहाँ आया और उसने मुझे जगा कर हलकी आवाज़से कहा, 'कल रातको माका देहान्त हो गया!'

इस दुःसमाचारने मेरे हृदय पर गहरी चोट पहुँचाई—मुझे बड़ा ही दुःख हुआ। कुछ वर्षोंसे मेरी मा बीमार थी सही; पर जिस रोज़ मैं उससे बिदा होकर इधर कामकी तलाशमें चला आया उस रोज़ मैं यह नहीं जानता था कि मैं अब इसे जीती न देख सकूँगा। मेरी यह इच्छा सदा ही रहा करती थी कि अन्त समयमें मैं उसकी सेवा शुश्रूषा करूँगा। हैम्पटनमें मैं बड़े परिश्रमसे पढ़ता था और यह सोचता था कि खूब मिहनतसे पढ़कर मैं अपनी अवस्था सुधारूँगा और अपनी

माको सुखी करूँगा। उसने कई बार कहा भी था कि मेरे लड़के अच्छा लिख पढ़कर खूब तरक्की करें और मैं उन्हें अच्छी अवस्थामें देखनेके लिए जीती रहूँ।

मेरी माके मरनेपर कुछ ही दिनोंमें हमारे छोटे घरमें बड़ा कुप्रबन्ध हो गया। मेरी बहिन आमन्दाने अपनी शक्ति भर सब कुछ किया; पर आखिर वह लड़की ही थी; घर सँभाल न सकी और मेरे सौतेले बापके पास इतना धन न था कि वह कोई नौकरिनी रख लेता। हम लोगोंको कभी तो अच्छा भोजन मिल जाता और कभी बिलकुल ही न मिलता था। प्रायः हम लोग एक कटोरीमें ' टोमेटो ' और कुछ पतले बिस्कुट, इतना ही भोजन पाने लगे। कपड़ोंकी भी यही दुर्दशा हुई। सब बात ही बिगड़ गई। जिन्दगीमें सबसे अधिक दुःखदायी अवसर मेरे लिए यही था।

मेरी मदद करनेवाली रफनर बीबी मुझे अकसर अपने यहाँ प्रेमसे बुलाती थीं। इस मुसीबतमें भी उन्होंने मेरी कई तरहसे मदद की। छुट्टी समाप्त होनेसे पहले उन्होंने मुझे एक काम दिया। इसी वक्त मेरे घरसे कुछ दूर एक खान पर भी मुझे काम मिला जिससे मेरे पास कुछ रकम हो गई।

एक बार मुझे यह भी आशंका हुई थी कि अब मैं शायद हैम्पटन न जा सकूँगा। परन्तु वहाँ लौट जानेकी इच्छा इतनी प्रबल हो उठी कि उसके सामने सब विघ्नोंको तुच्छ समझकर मैं प्रयत्न करने लगा। जाड़ेके लिए मुझे कुछ कपड़ोंकी ज़रूरत थी। पर यह ज़रूरत रफ़ा न हुई। मेरे भाई जानने मुझे कुछ कपड़े ला दिये सही, पर वे काफ़ी न थे। न धन था, न कपड़े ही थे; पर एक बातसे मैं सुखी था। हैम्पटन जानेके लिए राहखर्च मेरे पास काफ़ी था। मुझे इस बातका तो पूरा भरोसा था कि जहाँ एक बार मैं वहाँ पहुँचा, तहाँ फिर दरवानका काम करके गुज़ारा कर लूँगा।

हैम्पटन-विद्यालय खुलनेसे तीन सप्ताह पहले मुझे मिस मेरी मैकीका एक पत्र मिला । उसे पढकर मुझे बडा हर्ष हुआ । उस पत्रमें उन्होने लिखा था कि मै तुमसे भवनको साफ सुथरा करने और सब चीजें करीनेसे रखनेके काममे मदद लेना चाहती हूँ इसलिए विद्यालय खुलनेसे दो हफ्ते पहले ही यहाँ आ जाओ । बस, मेरा काम हो गया । खजानेमे अपने नाम कुछ रकम जमा करा सकनेका यह अच्छा अवसर हाथ लगा । मैने हैम्पटनके लिए उसी समय प्रस्थान कर दिया ।

इन दो सप्ताहोमे मैने जो कुछ सीखा उसे मै कभी न भलूँगा । मिस मैकी उत्तर प्रान्तके एक प्रगत ओर नामवर कुलमे उत्पन्न हुई थी तथापि व मर साथ खिडकियोको साफ करती झाड देती, बिस्तरोका साफ रखती और कोई ऐसा काम नही था जिससे व किनारा कसती हो । खिडकियोके ऊपरके झरोख जबतक बिलकुल साफ न होत तबतक व सन्तुष्ट न होती थी । यह काम वे हरसाल छुट्टियोमे किया करती थी ।

उस समय मे उनक कार्यका महत्त्व न समझता था । मै नही सोच सकता था कि उनके जेसी लिखी पढी प्रभाववाली ओर कुलीन स्त्री एक अभागी जातिकी उन्नतिमें सहायता पहुँचानेके लिए इस प्रकार सेवाके कार्य क्यो करती है ओर इसम इतना आनन्द क्यों मानती है । परन्तु आग मे परिश्रमस इतना प्यार करने लगा कि किसी ऐसी पाठशालासे कि जहाँ लडकोको परिश्रमकी महत्ता न सिखलाई न जाती हो एक पल भी मेरी पटती नही थी ।

हैम्पटनके अन्तिम वर्षमे दरवानका काम कर चुकनेक बाद मुझे जो कुछ समय मिलता था उसका प्रत्येक मिनिट मै लिखन पढनेमें बिताता था । मेन यह निश्चय किया था कि परीक्षामे मेरा नबर बहुत ऊपर आवे, और उपाधिदान-समारभमें मेरा नाम माननीयोकी (Honour roll)

सूचीमें लिखा जाय। मेरा यह निश्चय सफल हुआ। १८७५ के जून मासमें मेरी हैम्पटनकी पढाई समाप्त हुई। हैम्पटनमें रहनेसे मुझे दो बडे भारी लाभ हुए –

(१) मेरे सौभाग्यसे जनरल एस सी आर्मस्ट्राग जेसे अद्वितीय, उदार, सच्छील और परोपकारी महात्माके साथ मेरा समागम रहा।

(२) हैम्पटनमे ही पहले पहल मुझे यह ज्ञान हुआ कि यथार्थ शिक्षासे मनुष्य कितनी उन्नति कर लेता है। हैम्पटन जानेसे पहले शिक्षाके विषयमे मेरा भी उतना ही ज्ञान था जितना कि साधारण लोगोंका। मै समझता था कि एसी जिन्दगी, कि जिसमें शारीरिक परिश्रम करनेकी आवश्यक्ता नही, ओर बडे आनन्दस–आरामस–दिन कग्ते हे, शिक्षा कहाती है। हम्पटनमे जाकर मन सीखा कि परिश्रम करना न लज्जाका काम है ओर न निन्दाका हमे उससे प्रेम करना चाहिए। परिश्रम करनेसे धन मिलता हे, इसीलिए नही, बल्कि ससारको जिस बातकी जरूरत हे उसे करनेकी योग्यता हममे भी हे इस प्रकारका जो आत्म-विश्वास हे उसके लिए, स्वतत्रताके लिए और परिश्रमके लिए ही परिश्रमसे प्रेम करना मेने हैम्पटनमें सीखा। उसी विद्यालयमें मेने पहले पहल उस आनन्दका अनुभव किया जो परोपकारम जीवन दे देनसे मिलता है। ओर यह बात भी मैने उसी विद्यालयमे सीखी कि दूसरोको उपयोगी और सुखी बनानेम जो लोग हद कर देते हे वे ही सबसे अधिक भाग्यशाली है।

मेरी पढाई समाप्त हुई उस समय, मेरे पास कुछ नही था। रुपयेकी जरूरत थी। उस मौके पर कानेक्टिकटके होटलमें मैने ओर विद्यार्थियोके साथ खिदमदगारकी नौकरी कर ली। यह होटल गरमीके दिनोंमे खुला करती थी। कानेक्टिकट तक जानेके लिए मैने किसी तरह कुछ प्रबन्ध कर लिया था। होटलमें जा कर मुझे मालूम हुआ कि मै खिदमदगारीका काम बिलकुल नही जानता,

फिर भी वहाँका मुख्य खिदमदगार मुझसे बडा खुश हुआ और उसने मुझे चार पॉच बड़े आदमियोके मेजका प्रबन्ध सौप दिया। परन्तु जब भोजन करनवालोंने देखा कि मै बिलकुल नौसिखुआ हूँ –मुझे कुछ भी नही आता है तब तो उन्होने मेरी खूब ही हँसी उडानी शुरू की–उन्होंने इतना तग किया कि मुझ वहाँसे नौ दो ग्यारह होना पडा और उन बेचारोंका भी भोजनके लिए हाथपर हाथ धरके बैठ रहना पडा। इसका परिणाम यह हुआ कि खिदमदगारी ता मुझसे छीन ली गई, और परासी थालियाँ उठाने रखनेका काम मरे जिम्म किया गया।

पर मेरा तो यह निश्चय हो गया था कि किसी न किसी तरहसे खिद मदगारका काम सीख लगा, ओर कुछ ही सप्ताहाम मने वह काम सीख भी लिया। इससे फिर मझे खिदमदगारीका काम मिला। इसक बाद, मुझे इसी भोजनालयम महमानक नाते कइ बार ठहरनका अवसर प्राप्त हुआ है!

होटलका मोसिम बीत चकन पर म माल्डनमे अपन घर आया। यहाँ आते ही मे नीग्रो लागोकी पाठशालामे शिक्षक नियत हुआ। मेरे जीवा नके सुखसमयका यह पहला अवसर था। मुझ इस बातस बडी प्रसन्नता हुई कि अब मुझे अपन गॉवकी उन्नति करनेका अच्छा मौका मिल गया। मे पहलेसे ही यह जानता था कि इस गॉवके युवकोको पुस्तकसम्बन्धी ज्ञानके अलाव और भी बहतसी बातोंकी आवश्यकता हे। मै सबेरे आठबजे अपना काम शुरू करता था ओर रातको दस दस बजेतक बैठा रहता था तो भी काम खतम न होता था। रोजकी पढाईके सिवाय मेने लड़कोंको बाल सॅवारना, बदन साफ रखना, कपडे धोना, इत्यादि बातें भी सिखलाई। ब्रशसे रगडकर दॉत साफ करना और स्नान करना, इन दो बातोंकी ओर मैंने उनका ध्यान विशेष करके दिलाया। पढाईके दिनोंमें मने बडी बारीकीसे ब्रशका काम–करतब देखा है और मुझे इस बातका विश्वास हुआ है कि यह भी उन्नतिके प्रधान साधनोमेंसे एक है।

इस गाँवमें अनेक लोग ऐसे थे जो दिन भर काम करते थे और पढनेके लिए तरसते थे। इनके लिए मैंने नाइट स्कूल (रातका स्कूल) खोला। शुरूसे ही इस स्कूलमे उतनी ही भीड होने लगी जितनी कि दिनकी पाठशालामे होती थी। विद्यार्थियोमे सभी उम्रके स्त्री पुरुष थे। ५०।६० वर्षके बूढे भी थे। ये लोग पढनेके लिए जैसी जी जानसे चेष्टा करते थे उसे देखकर हृदय पिघल जाता था।

रातका स्कूल और दिनका स्कूल चलाकर ही मै स्वस्थ न हुआ। मैंने एक वाचनालय (लाइब्रेरी) और एक वादविवाद सभा भी स्थापित की। इसके सिवाय सडे स्कूलोम (रविवारकी पाठशालाओमे) भी मै पढाया करता था। दोपहरको माल्डनके स्कूलमें और रातको, माल्डनसे तीन मील दूर एक स्कूल था वहाँ, पढाया करता था। कई लडकोको मै घर पर भी पढाता था इसलिए कि व माल्डन स्कूलमे दाखिल कराने लायक हो जायँ। वेतनका बिचार किय बिना जिस किसीको विद्यालाभ करनेकी इच्छा होती थी उसीको, मै पढा दिया करता था। किसी असहायकी सहायता करनेका अवसर आते ही मुझे बडा हर्ष होता था। पब्लिक फडसे मुझ थोडासा वतन मिलता था।

हैम्पटनमे पढते समय मेरे भाई जानने अपनी शक्तिभर मेरी मदद की। यही नही, किन्तु परिवारका खर्च चलानेके लिए उसने अपना सब समय कोयलेकी खान पर बिता दिया। मुझे मदद करनेके लिए उसने जान बूझकर अपने लिखने पढनेकी तरफ ध्यान न दिया। अब मुझे बडी इच्छा हुई कि हैम्पटनमे दाखिल करानेके लिए उसकी सहायता करूँ और फिर वहाँका खर्च चलानेके लिए अपनी कमाईमेसे कुछ बचत किया करूँ। इन दोनो बातोंमें मुझे कामयाबी हुई। तीन सालमे मेरे बडे भाईने हैम्पटनकी पढाई खतम की और अब वह टस्केजीकी शिल्पव्यवसाय-शाखाका मुख्य मेनेजर है। वह जब हैम्पटनसे

लौट आया तब हम दोनोंने अपना धन और श्रम इकट्ठा करके अपने दत्तक भाई जेम्सको हैम्पटनमे भेज दिया और वह भी अब टस्केजीमें पोस्ट-मास्टर है। १८७७ अर्थात् मेरे माल्डनवासका दूसरा वर्ष भी मैने पहले वर्षकी तरह बिताया।

जब हम लोगोका घर माल्डनमे था तब 'कु क्लक्स क्लान-Ku Klux Klan' नामकी एक सभाका बडा जोर था। यह सभा गोरोंकी थी और इसकी शाखाये भी अनेक थी। इसका उद्देश्य था, काले लोगोंके व्योहारोंकी देखभाल करना और राजनीतिक क्षेत्रमे उन्हे आगे न बढने देना। 'पट्रोलर्स–Patrollers' लोगोंके बारेमें मै सुन चुका था। इन कु-क्लक्सवालोंके भी वैसे ही थोक रहते थे। बिना पासके एक बस्तीसे दूसरी बसतीमे जाने न देना, बिना पासके और बिना किसी गोरेके उपस्थित हुए कोई सभा न होने देना इत्यादि बातोमे गुलामोंके कार्योका निरीक्षण करनेवाले लोग पट्रोलर्स कहे जात थे।

पट्रोलर्सकी तरह 'कु-क्लक्स-क्लान' का भाग काम प्राय रातको ही हुआ करता था। पर पट्रोलर्ससे य लोग शैतानी ज्यादा करते थे। इनका असल मतलब यह था कि नीग्रो लोगोकी राजनीतिक उच्च अभिलाषा नष्ट हो जानी चाहिए। पर ये इतनेसे ही सन्तुष्ट नही होना चाहते थे। ये हमारे गिरजाघरों और स्कूलोको भी जला डालते थे और बहुतसे निरपराधी मनष्योंको बडा दु ख देते थे। इनके जमानेमें न जाने कितने काले लोग कालके ग्रास बन गये!

इन लोगोंकी इस कार्रवाईसे मेरा खून खौलता था। एक बार माल्डनमें कालों और गोरोंके बीच जो मुठभेड हुई थी उसे मैने देखी है। दोनो तरफ अनुमान एकएक सो जवान थे। दोनो तरफके लोग जखमी हुए। मेरी मददगारिन रफनर बीबीके पतिको तो बडी गहरी चोट आई। जनरल रफनरने काले लोगोको बचानेकी चेष्टा की और इसी अपराधके कारण

जमीन पर पटके जा कर उनपर ऐसी बेदम मार पड़ी कि फिर वे चंगे ही न हुए। दो जातियोंके बीचकी इस लड़ाईको देखकर मेरा मन यह गवाही देने लगा कि इस देशमें मेरी जातिवालोंको कोई आशा नहीं है। मैं समझता हूँ कि कु-क्लक्सका समय नवसंगठन-कालमें अतिशय काले धब्बेके समान है।

कु-क्लक्स-क्लानके समयके बाद जो कुछ अच्छी बातें हुई हैं उनकी तरफ ध्यान दिलानेके लिए ही मैंने दक्षिण अमेरिकाके इतिहासके इस उद्वेगजनक अंशका विषय यहाँ छेड़ा। आज दक्षिण अमेरिकामें वैसे लोग नहीं हैं, और पहले थे इस बातको भी लोग भूल गये हैं। दक्षिण अमेरिकामें अब बहुत ही थोड़े स्थान ऐसे है जहाँ इन लोगोंकी सभायें चल सकें।

पाँचवाँ परिच्छेद ।

नवसंगठन काल ।

सन् १८६७ से १८७८ के बीचके समयको नवसंगठन कालकी संज्ञा दी जा सकती है । मैंने हैम्पटनमें विद्यार्थीके नाते और वेस्ट-वर्जीनियामें शिक्षकके नाते जो समय व्यतीत किया वह इसी नवसंगठन कालके अन्दर आ जाता है। इस कालमें काले लोग ग्रीक-लैटिन भाषाओंको पढ़ने और नौकरी करनेकी धुनमें थे ।

जिन लोगोंने कई पीढ़ी गुलामी की और उससे भी पहले जो कई पीढ़ीतक निरे जङ्गली ही थे वे शिक्षाका ठीक ठीक अर्थ नहीं समझ सकते । दक्षिण प्रान्तके प्रत्येक स्थानमें सब उम्र और हैसियतके लोग— इनमें ६०।७० वर्षके बूढ़े भी थे—दिनकी और रातकी पाठशालाओंमें भीड़ कर देते थे । उस समय लोगोंमें शिक्षा प्राप्त करनेकी महदाकांक्षा अत्यन्त प्रशंसनीय और उत्साहवर्धक थी, परन्तु सर्व साधारणका यह खयाल था कि थोड़ासा लिख पढ़ लेनेसे ही संसारके सब क्लेशों और आपदाओंसे छुटकारा मिल जायगा और बिना हाथ पैर हिलाये मजेमें ज़िन्दगी कट जायगी । अगर कही उसने ग्रीक और लैटिन पढ़ ली तो फिर क्या पूछना है, जो कुछ बात और इज्ज़त है वह उसीकी है— वह देवता समझा जाने लगेगा । मुझे स्वयं इस बातका अनुभव है कि पहले पहल जब एक काले आदमीको, जो ग्रीक–लैटिन कुछ कुछ जानता था, मैंने देखा तो मैं भी उसके जैसा बन जानेकी इच्छा करने लगा था, क्योंकि मैं समझता था कि बस, इससे बड़ा आदमी और कोई है ही नहीं ।

यों तो हमारे लिखे पढ़े अनेक लोग शिक्षक या उपदेशका काम **करते थे, और उनमें** सदाचारी और लोकहितके चाहनेवाले स्त्री-पुरुष भी थे, तो भी बहुतसे लोग ऐसे थे जो मज़ेमें गुज़ारा करनेके लिए ही इस कामको करते थे। कई एक शिक्षक तो अपना नाम लिख लेनेके अतिरिक्त कुछ जानते ही न थे। ऐसे एक महात्मा मेरे पड़ोसमें नौकरी ढूँढ़ते ढूँढ़ते आ गये थे। वहाँ यह प्रश्न उठा कि "पृथ्वी गोल है या चिपटी?" होनहार शिक्षक महाशयसे पूछा गया कि, "आप लड़कोंको क्या बतलावेंगे?" उन्होंने जवाब दिया— "आप लोगोंकी बहुसम्मति जिधर होगी मैं वही सिखला दूँगा—पृथ्वी गोल है, यह भी सिखलानेको मैं तैयार हूँ और यह भी सिखला सकता हूँ कि पृथ्वी चिपटी है!"

यह तो शिक्षकोंकी अवस्था थी। अब धर्मका उपदेश करनेवालोंका भी हाल सुनिए। इनकी दशा तो और भी गई बीती थी। ऐसे निरक्षर-भट्टाचार्य और कुसंस्कारपूर्ण दुराचारी लोग शायद और किसी विभागमें नही मिलते। योग्यता हो या न हो, वे मानते यही थे कि "हमें ईश्वरने उपदेश करनेका आदेश भेजा है।" धर्मप्रचार करनेका आदेश जिस तिसको मिलने लगा! दो तीन दिन भी स्कूलमें जाकर नहीं पढ़ा कि धर्मगुरुका कार्य करने लगे। 'आदेश' मिलनेका ढंग भी बड़ा विचित्र था। गिरजाघरमें लोग इकट्ठे हुए हैं और ऐसे समय एक आदमी मेज़के ऊपर धड़ामसे गिर पड़ता है। बहुत देरतक कुछ बोलता नही, चालता नही—एकदम सुन्न! - इसीसे चारों ओर यह खबर फैल जाती कि अमुक मनुष्यको 'आदेश' हुआ है। हरेक नीग्रो-गाँवमें ऐसी घटनायें सप्ताहमें दो चार बार हो जाया करती थी। अगर एक बारमें वह धर्मगुरु बननेको तैयार न हो सका तो वह फिर गिरता था या गिराया जाता था। इस तरह दो तीन बार गिरने पड़नेसे उसे 'आदेश' मानना

ही पड़ता था। मुझे बड़ा भय था कि कहीं यह बला मुझ पर न आ जाय; क्योंकि मैं भी पढ़नेवालोंमेंसे एक था। पर मुझ पर ईश्वरकी कृपा थी जो इस मुसीबतसे मैं बचा रहा!

धर्मगुरुओंकी संख्या दिन दूनी रात चौगुनी बढ़ने लगी। एक गिर-जाघरके बाबत तो मुझे याद है कि उसमें कुल लोग शरीक थे २००, और उनमें धर्मगुरु थे २०। पर अब इन धर्मगुरुओंका बहुत कुछ चरित्रसुधार हो रहा है और मैं समझता हूँ कि २०–२५ वर्षोंमें उनमेंसे नालायकोंकी संख्या बहुत कुछ कम हो जायगी। अब आदे-शकी लीला पहलेकी तरह नहीं हुआ करती और रोज़गार करनेकी तरफ़ भी लोग झुकते जाते हैं। धर्मगुरुओंकी अपेक्षा शिक्षकोंका चरित्र अधिक सुधरा हुआ है।

नवसंगठन कालमें नीग्रो लोगोंकी दशा एक नन्हें बालककीसी थी। वह जैसे अपनी माके ही भरोसे रहता है वैसे ही हर बातमें ये लोग संयुक्त सरकारका (Federal Govt) मुँह ताकते थे। ऐसा होना स्वाभाविक भी था। क्योंकि संयुक्त सरकारने उन्हें स्वाधीनता दी थी, और सारा राष्ट्र नीग्रो लोगोंके परिश्रमोंसे दो शताब्दियोंतक बल्कि इससे भी अधिक, बराबर लाभ उठाता रहा था। जब सरकारने हमें स्वाधी-नता दे दी तो, उसका यह कर्त्तव्य होता है कि वह अपनी प्रजाओंको कर्तव्यशील नागरिक बनानेके लिए सर्वसाधारणमें शिक्षाका यथोचित प्रबन्ध कर दे। मैं यह समझता था कि रियासतोंने शिक्षाके लिए जो कुछ किया सो किया पर इसके साथ ही, मुख्य सरकारको उसका पूरा सार्वत्रिक प्रबन्ध कर देना चाहिए था। ऐसा न करना मेरी सम-झमें बड़ा भारी पाप था।

किसीका दोष ढूँढ़ निकालना और यह बतलाना कि क्या किया जाना उचित था, बहुत आसान है। पर उस समयकी हालत देखनेसे

पता लगता है कि सरकारने जो कुछ किया वही उचित था। पर मुझे यह कहना ही पडता है कि अगर कोई ऐसा रास्ता निकाल दिया जाता कि अमुक श्रेणीतक शिक्षा अथवा अमुक रकम तककी हैसियत होने पर अथवा दोनों ही होने पर वाट देनेका अधिकार मिल सकता है और काली तथा गोरी दोनो जातियो पर वोट-सबधी नियमका ईमान और सचाईसे अमल किया जाता तो इसमे सरकारकी विशेष बुद्धिमानी समझी जाती।

नवसगठन कालमे मेरी उम्र कुछ अधिक नही थी—पचीसी ही पार कर रहा था, पर मै यह समझता था कि बडी गलतियाँ हो रही है, किन्तु जैसी हालत इस वक्त है वह अधिक दिन न रहने पायगी। मेरी यह धारणा थी कि सगठन पालिसी मेरी जातिके लिए ठीक नही है। उसकी उठान ही ऐसी नीव पर की गई है जो अस्वाभाविक है और जिसमे बडे दावपेच है। मैने देखा कि हम लोगोंको अपढ और अजान बतला कर गोरे लोगोंका बडी बडी नौकरियाँ दी जाती है। उत्तर अमेरिकाके कुछ लोगोंको यह सूझी थी कि दक्षिणमे गोरे लोगोंका जो मरतबा है उससे बडा मरतबा नीग्रो लोगोंको दिलाना चाहिए, अर्थात् उनसे बडे ओहदो पर इन्हे नौकरी मिलनी चाहिए। ऐसा करके वे दक्षिणवालोंको नीचा दिखाना चाहते थे। पर मुझे तो इसमें नीग्रो लोगोकी ही हानि देख पडी। इसके सिवाय राजनीतिक आन्दोलन में फँसकर मेरे भाइयोंने अपने समीपके व्यवसायमे पक्के बनना और कुछ कमा खाना छोड दिया। वास्तवमे देखा जाय तो यह उनका मुख्य काम होना चाहिए था।

राजनीतिक कार्योके मोहने मुझे ऐसा घेरा था कि मै उसके जालमें फँस जाता। पर मै समझता था कि कर्मेन्द्रिय, ज्ञानेन्द्रिय और अन्त -करण अथवा, शरीर, मस्तक और हृदय (Hand head and hoart) की

यथेष्ट शिक्षा पर उन्नतिकी नीव दृढ़ करनेसे मैं अपनी जातिका विशेष और यथार्थ कल्याण कर सकूँगा, और इसी विचारने उस जालमें फँसनेसे मुझे बचाया । कुछ नीग्रो लोग रियासतकी व्यवस्थापक सभाके सदस्य होते थे, कुछ लोगोंको बड़ी अफ़सरी हासिल थी, पर उन्हें एक अक्षर भी पढ़ना नही आता था, और उनका चरित्र भी बहुत निर्बल था। दक्षिण अमेरिकाके एक शहरके रास्तेमें चलते हुए मैंने सुना कि कुछ मज़दूर किसीको पुकार रहे हैं । ये लोग ईंटोंकी एक दुखंडी इमारतपर काम कर रहे थे और वहींसे किसी गवर्नरको पुकार कर कह रहे थे कि, 'जल्दी करो, और ईंटें ले आओ।' मैने कई बार ये शब्द सुने कि 'गवर्नर, जल्दी करो! गवर्नर, जल्दी करो!' जिन गवर्नर महाराजकी इतनी इज्जत थी उनका पता लगाना मैंने ज़रूरी समझा। पता लगानेसे मालूम हुआ कि वह एक काला आदमी था और एक बार वह अपनी रियासतका लेफ्टनेंट गवर्नर हुआ था ।

इससे यह न समझना चाहिए कि सभी काले अधिकारी ऐसे ही थे । उनमें भूतपूर्व सिनेटर बी. के. ब्रुस, गवर्नर पिकबॅक, तथा और भी कई सज्जन बड़े ही योग्य और उपयोगी पुरुष थे। सभी लोग बेइमान नहीं समझे जाते थे; उनमेंसे कुछ लोग जार्जियाके भूतपूर्व गवर्नर बुलक साहब जैसे उदार और परोपकारी भी थे ।

अब यह कहनेकी अवश्यकता ही न रही कि अपढ़ और नवसिखुए काले लोगोंने ऐसी ऐसी गलतियाँ कीं कि जिनकी हद नहीं; परन्तु मेरी समझमें और लोग भी उस हालतमें ऐसी ही गलतियाँ करते । दक्षिण प्रान्तके बहुतेरे गोरे लोगोंका यह खयाल है कि अब अगर नीग्रो लोगोंको कुछ राजनीतिक अधिकार दिये जायँगे तो फिर वैसा ही बखेड़ा खड़ा होगा जैसा कि नवसंगठन कालमें हुआ था। परन्तु मुझे तो ऐसा भय बिलकुल नहीं है।

शुरूके पैंतीस वर्षोंमें जो बात नहीं थी वह अब हुई है—नीग्रो जवान अब अधिक बुद्धिमान् और शक्तिमान् हुआ है और वह इस बातको समझने लगा है कि दाक्षिणके गोरेको नाराज़ करनेसे हमारा काम न बनेगा। दिनोंदिन मेरी यह धारणा दृढ़ होती जाती है कि काले और गोरे दोनोंके लिए वोटका समान अधिकार और निर्वाचनका एक ही मार्ग होना चाहिए जिसमें आजकलकी तरह टालमटोल और दुटप्पी ब्योहारके लिए जगह ही न हो—ऐसा होगा तभी नीग्रो जातिके राजनीतिक प्रश्नोंका निबटेरा होगा। दाक्षिणमें रहकर, वहाँका हाल अपनी आँखों देखकर मुझे यह विश्वास हो गया है कि इसके विपरीत उपायका अवलंबन करना नीग्रो लोगोंसे, गोरोंसे और संयुक्त राज्यकी सब रियासतोंसे अन्याय करना है—यह गुलामीसे कुछ कम पाप नहीं है और इस पापका बदला हमें किसी न किसी समय देना ही पड़ेगा।

माल्डनमें मैं दो वर्षतक शिक्षकका काम करता रहा। वहाँ रहते हुए मैंने अपने दो भाइयोंके सिवाय और भी कितने ही स्त्री-पुरुषोंको हैम्पटन-विद्यालयमें भरती करा दिया और फिर १८७८ के शरदृतुमें मैंने कोलंबियाके वाशिंगटन नामक स्थानमें जाकर अभ्यास—अध्ययन करना ठाना। वहाँ मैं आठ महीने रहा। वहाँके अभ्याससे भी मुझे बड़ा लाभ हुआ और कुछ अच्छे पुरुषोंसे समागम भी हुआ। वहाँके विद्यालयमें शिल्प-शिक्षाका कोई प्रबन्ध नहीं था; और इससे मुझे दो तरहके नमूने देखनेका अच्छा मौका मिला। हैम्पटनके विद्यालयमें सिर्फ़ शिल्पशिक्षा ही दी जाती थी। उसे मैं देख चुका था और उसका परिणाम भी समझ चुका था। अब वाशिंगटनकी अशिल्पशिक्षासे वहाँकी शिल्पशिक्षाका मुकाबला कर सकता था। वाशिंगटनके विद्यालयमें पढ़नेवाले कुछ पैसेवाले थे। उनकी पोशाक भी अच्छी हुआ करती थी; यही नहीं बल्कि बिलकुल ताज़ा फ़ैशनसे ही वे रहा करते थे। यहाँके कुछ विद्यार्थी अधिक बुद्धि-

मान् होते थे । हैम्पटनका तो यह नियम था कि विद्यार्थीकी पढाईका खर्च विद्यालयके अधिकारी ही दिलाते थे। पर उन्हे भोजन, वस्त्र, पुस्तक और घरके किरायेका प्रबन्ध खुद करना पडता था। इसका खर्च कुछ तो वे अपने कामसे कटा देते ये और कुछ नकद भी दते थे । वाशिंगटनके विद्यार्थियोंकी अवस्था इससे निराली थी। इन्हे भोजनादिके खर्चकी तो चिन्ता ही नहीं थी, रहा प्राइवेट खर्च, सो वह भी कही न कहीस मिल जाता था। हैम्पटनमें उन्हे मिहनत करके कमाना पडता था और इससे उनके चरित्रगठनमे बडी मदद हाती थी । वाशिंगटनके विद्यार्थी अपने बल पर खडे हाना बहत कम जानत ये। बाहरी भडभुलयामे ही वे फँसे रहते थे। तात्पर्य मैने यह दखा कि हैम्पटनके विद्यार्थी अपनी शिक्षा बडी सुदृढ नीव पर आरभ करते थे आर यहाँके विद्यार्थियोंमे वह बात नही थी। यहाके विद्यार्थियोंकी पढाई समाप्त हाने पर उन्हे लेटिन और ग्रीक भाषाका ज्ञान अधिक हाता था पर जीविकानिर्वाह और व्यवहारका ज्ञान कम हाता था। हैम्पटनके विद्यार्थी पढाई समाप्त करके देहातोंमें जाकर बडे शाकसे अपनी जातिके लोगोके लिए काम करते थे। यहाँक विद्यार्थियोंका आरामतलबीकी आदत पड जाती थी और इसलिए वे परिश्रमस भागत थे। हाटलमें खिदमतगारी करना या पलमानकारमे* पोटर हाना ही उनक जीवनकी इतिकर्तव्यता हो जाती थी।

मै जब वाशिंगटनमे पढता था तब, दक्षिणसे आये हुए काले लोगोंसे यह शहर ठसाठस भर गया था। बहुतसे लोग तो इसी गरजसे आये थे कि वाशिंगटनमें जाकर जरा मजा माज उडावे । कुछ लोगोंको कुछ सरकारी काम मिल गय थे, और बहुतसे लोग नौकरीकी तलाशमें आये थे । बहुतसे काले लोग–इनमे बहुतेरे बडे होशियार और बुद्धिमान् थे–अमेरिकाकी पार्लियामेंट—House of Represen-

* अमरिकामें यह एक तरहकी गाडी हाती है जिसमें सानेका सुभीता रहता है।

tatives—में सदस्य थे, और आनरेबल बी के ब्रूस नामके सज्जन सीनेटमें थे। इन सब कारणोंसे काले लोगोंके लिए वाशिंगटन शहर बडा ही मनोहर और प्रिय हुआ था। इसके सिवाय, वे यह भी जानते थे कि कोलंबिया प्रदेशमें कानूनकी सुनाई होती है। वाशिंगटनके काले लोगोंकी सार्वजनिक पाठशालाये अन्य स्थानोकी पाठशालाओसे बहुत अच्छी होती थी। यहाँ मैने अपने जातिभाइयोंकी दशाका भली भाँति निरीक्षण किया। उनमे कई तो बडे लायक आदमी थे, ता भी बहुतेरोका दिखौआपन देखकर मुझे बडी चिन्ता हुइ। कितन ही काले नवयुवक ऐसे थे कि जिनकी आमदनी सप्ताहमे चार डालरसे अधिक नही, पर व रविवारके दिन ऐसा शाही खर्च किया करत थे माना इनक पास रुपयाकी कमी नही–पेन्सिलबनियाकी सडक पर गाडीम बेठ इधर उधर टहलनेमे दो चार डालर खर्च करना इनके लिए मामूली बात थी। सरकारसे ७५ या १०० डालर मासिक वेतन पानेवाले और हर महीने कर्जका बाझ बढानेवाले कितने ही युवकोको मैन अपनी आँखो देखा। मैने ऐसे भी लोगोको देखा है कि जो पहले प्रतिनिधि सभा याने पार्लियामेंटमे प्रतिनिधि बनकर बैठते थे, और अब बिल्कुल निकम्म कगाल रोटीक मुँहताज हो रहे है। कितने ही लोग छोटी छोटी बाताके लिए भी सरकारका मुँह ताकते थे। इस तरहके लोगोंमे अपनी हालत बदलनेकी इच्छा बहुत कम थी और जो थी भी, उसे पूर्ण करना वे सरकार पर ही छोडे बैठे थे। उस समय और उसके बाद भी, कई बार मैने सूचित किया कि ऐसे लोगोको किसी न किसी तरह यहाँसे उठाकर देहातोम छोड देना चाहिए और वहाँकी सुदृढ तथा विश्वस्त भूमाताके अक पर ही इनकी 'रोपाई' होनी चाहिए। सारे विजयी राष्ट्रों ओर लोगोने यहीसे अपनी उन्नतिको आरभ किया है। आरभमे तो यह उन्नतिका मार्ग बडा बिकट और लबा पल्ला मालूम होगा, पर यही सच्चा और सीधा मार्ग है।

वाशिंगटनमें मैंने कुछ लड़कियोंको देखा । उनकी मातायें कपड़े धोनेका काम करती थीं । उन लड़कियोंने भी यह काम उसी पुरानी लकीर पर सीख लिया था । बादको ये लड़कियाँ स्कूलोंमें जाने लगीं और वहाँ सात आठ वर्ष रहीं । पढ़ाई समाप्त होने पर उन्हें कीमती पोशाकों, कीमती टोपियों और कीमती जूतोंकी ज़रूरत पड़ने लगी । तात्पर्य, उनकी आवश्यकतायें बढ़ीं; पर उन्हें रफ़ा करनेकी लियाक़त न आई ! सात आठ वर्ष पढ़ने लिखनेमें बीतनेसे अब अपना पुराना रोज़गार करनेमें उनकी तबियत न लगती थी, उस रोज़गारसे भी उन्होंने हाथ धोये । परिणाम यह हुआ कि उनमेंसे कितनी ही लड़कियाँ तबाह हो गईं । लड़कियोंको अगर मानसिक शिक्षाके साथ (मेरी समझमें भाषा, या गणित, इनमेंसे किसी एक विषयका ज्ञान करा देना चाहिए जिसमें मन सुदृढ़ और सुसंस्कृत हो,) धोबीके व्यवसायकी आधुनिक शिक्षा या ऐसा ही कोई दूसरा काम सिखलाया जाता तो मैं समझता हूँ कि बड़ा लाभ हुआ होता ।

छठा परिच्छेद ।

कृष्णवर्ण और ताम्रवर्ण जाति ।

जब मै वाशिंगटनमे रहता था उस समय, इस बातका बडा आन्दोलन हो रहा था कि वेस्ट वर्जीनियाकी राजधानी वीलिंगसे हटा कर किसी मध्यवर्ती स्थानमें लाई जानी चाहिए। इस आन्दोलनका यह परिणाम हुआ कि सरकारने तीन शहर चुने और यह घोषित किया कि इनमेंसे जिस शहरके लिए अधिक सम्मति होगी वही राजधानी की जायगी। इन शहरोंमे मेरे गॉव माल्डनके समीप लगभग पाँच मीलके फासले पर चार्लस्टन नामक स्थान पडता था। वाशिंगटन विद्यालयकी मेरी पढाई समाप्त होनेके समय चार्लस्टनके गोरोकी पचायतसे मुझे इस लिए निमत्रण आया कि मै वहाँ जाकर चार्लस्टनकी तरफसे उद्योग करूँ। मुझे इस निमन्त्रणसे आश्चर्य और आनन्द दोनो हुए। मैने निमन्त्रण स्वीकार किया और रियासतके कई हिस्सोमे बराबर मै तीन महीने तक व्यारयानोकी झडी लगाये रहा। चार्लस्टनको इस काममें कामयाबी हुई और इस समय वही सरकारकी असल राजधानी है।

इस आन्दोलनमे मेरा व्यारयान कुछ मशहूर हो गया और इस लिए बहुतेरोंने चाहा कि मै राजनीतिक कार्योमे किसी तरह योग देने लगूं। पर मै इससे दूर ही रहना चाहता था क्योकि मुझे इस बातका पूरा विश्वास था कि मै और किसी भी कामसे अपनी जातिकी इससे अधिक सेवा कर सकूँगा। उस समय मुझे अपने लोगोके लिए शिक्षा, व्यवसाय और जायदादका कोई आधार निर्माण करनेकी वडी आवश्यकता मालूम होती थी, और इस लिए राजकीय अधिकार प्राप्त करनेके बदले उक्त त्रिपुटी या तीन बातोके लिए प्रयत्न करनेमें विशेष लाभ था। अगर

मेरी बात पूछिए तो राजनीतिक क्षेत्रमें मुझे कामयाबी अवश्य होती; परन्तु यह कामयाबी एक तरहकी ख़ुदगरजी (स्वार्थपरता) ही थी, और अगर मैं इसीके पीछे पड़ जाता तो अपने समाजकी उन्नतिमें हाथ बँटानेके कर्तव्यसे विमुख हो जाता।

नीग्रो-समाजकी इस उन्नतिके समयमें, स्कूल और कालेजोंमें जानेवाले बहुतेरे विद्यार्थी आगे चल कर बड़े बड़े वकील या प्रतिनिधि-सभाके सदस्य बनना चाहते थे और बहुतसी स्त्रियाँ वादनकलाकी अध्यापिका बनना चाहती थीं; परन्तु मेरा विचार कुछ और ही था। मैंने निश्चय किया था कि पहले अच्छे वकील, योग्य प्रतिनिधि और गायनवादन कलाके उत्तम अध्यापक निर्माण करनेकी भूमिका तैयार करनी चाहिए।

गुलामीके दिनोंमें एक बूढ़े नीग्रोको सरंगी सीखनेकी बड़ी इच्छा हुई और उसने एक तरुण संगीत-मास्टरसे प्रार्थना की, परन्तु मास्टरको यह विश्वास नहीं होता था कि यह बूढ़ा सरंगी सीख जायगा। इस लिए उसने उसे नाउम्मेद करनेकी गरज़से कहा, " जेक चचा, मैं आपको सरंगी तो सिखला दूँगा; पर पहले सबक़के लिए मैं आपसे तीन, दूसरेके लिए दो और तीसरेके लिए सिर्फ पाव डालर लूँगा। " जेक चचा बोले, " ठीक है, मुझे मंजूर है; पर पहले मुझे आप अख़ीरका सबक़ ही दीजिए। " इस वक्त भी लोगोंकी ऐसी ही परिस्थिति हो रही थी।

रियासतकी राजधानी बदलने पर मुझे एक और आमन्त्रण मिला, और उससे मुझे बहुत ही आश्चर्य और आनन्द हुआ। जनरल आर्मस्ट्रांगने इस अर्थका एक पत्र भेजा कि हैम्पटनमें आगामी उपाधिदान सभारंभके समय ग्रेजुएट हुए विद्यार्थियोंको तुम कुछ उपदेश दो। मैंने कभी स्वप्नमें भी इस बहुमानकी कल्पना नहीं की थी। मैंने अपनी शक्तिभर चिन्तापूर्वक एक स्पीच तैयार की। इस स्पीचके लिए मैंने 'The force that wins' अर्थात् ' यशस्वी शक्ति ' यह विषय चुना था।

छ वर्ष पहले मै जिस रास्तेसे हेम्पटनके विद्यालयमे विद्यार्थीके नाते भरती होनेके लिए गया था, इस बार स्पीच देनेके लिए भी मै उसी रास्तेसे गया, पर इस बार मै रेलगाडीमे सवार था । मेरी पहली सफरमे और इस सफरमे कितना अन्तर है ! पॉच वर्षकी अवधिमे शायद् ही किसी मनुष्यकी अवस्थाम इतना परिवर्तन हुआ होगा ।

हैम्पटनमे शिक्षक और विद्यार्थी, दोनोने ही शुद्ध अन्त करणसे मेरा स्वागत किया । वहा मेन देखा कि विद्यालयने पहलेसे कही अधिक उन्नति की है और नीग्रो लोगोंकी हालत सुधारने और जरूरतोंको रफा करनेमे उसकी उपयोगिता दिनोदिन बढ रही है, शिक्षाप्रणालीमे भी बहुत कुछ सुधार हो रहा है । हैम्पटन-विद्यालय किसी नमूनकी नकल नही था, बल्कि उसमे नीग्रा लोगोकी अवस्था सुधारने और उनकी आवश्यकताओकी पूर्ति करनेक विचारसे ही जनरल आर्मस्ट्रागके उदार नतृत्वमे सुधारका प्रत्येक कार्य हुआ करता था । अपढ लोगोंमे शिक्षाप्रचार तथा अन्य परोपकारक कार्य करते समय शिक्षित लोग प्राय पुरानी लकीर ही पीटते जाते है । व इस बातको भूल जाते है कि हमे किन लागोमे काम करना है, उनकी क्या क्या आवश्यकतायें है, और उनकी शिक्षाका ध्येय क्या होना चाहिए । इन बातोको भूल कर वे एक ही शिक्षाप्रणालीके सॉचेमे नये पुराने विद्यार्थियोको ढालते जाते है, परन्तु हैम्पटनमे यह बात न थी ।

उपाधिदानसमारभके समय मैंने जो व्याख्यान दिया उससे लोग बहुत प्रसन्न हुए और बहुतोंने अपनी प्रसन्नता प्रकट करके मुझे खूब ही उत्साहित किया । मे शीघ्र ही वेस्ट वर्जीनियामें अपने गॉवको वापिस चला आया, और फिर पाठशालामे पढानेका विचार करने लगा । इसी बीच अर्थात् १८७९ में एकाएक मुझे जनरल आर्मट्रागका पत्र फिर मिला । उन्होंने इस पत्रमें शिक्षकका काम करने और रही सही पढाई पूरी

करनेके लिए चले आनेको लिखा था। वेस्ट वर्जीनियामें शिक्षकका काम करते समय मैंने अपने दो भाइयोंके अतिरिक्त और चार युवकोंको हैम्पटन-विद्यालयमें भरती करानेके लिए बड़ी तैयारी की थी। इसका फल यह हुआ कि जब ये विद्यार्थी हैम्पटन पहुँचे तो उनकी योग्यता देखकर शिक्षक इतने प्रसन्न हुए कि उनको उन्होंने एकदम ऊपरके दर्जेमें भरती कर लिया। मैं समझता हूँ कि यही देखकर हैम्पटनके विद्यालयमें मुझे शिक्षकका काम करनेके लिए बुलाया था।

मैंने जिन विद्यार्थियोंको हैम्पटन भेजा उनमेंसे एकका नाम है डाक्टर सेमुएल ई. कर्टने। ये इस समय बोस्टन शहरके बड़े डाक्टरोंमें गिने जाते हैं और वहाँके स्कूल-बोर्डके मेंबर भी हैं।

इस समय जनरल आर्मस्ट्रांगने इंडियन लोगोंको पहले पहल शिक्षा देनेका प्रयोग करना आरंभ किया था। उस समय बहुत कम लोगोंको यह आशा थी कि इंडियन लोग भी लिख पढ़कर कुछ काम लायक हो जायँगे। जनरल आर्मस्ट्रांगके मनमें यह समाई कि यह प्रयोग विशाल परिमाण पर और ढंगके साथ करना चाहिए। पश्चिम प्रान्तके जंगलोंमेंसे वे जंगली और बिलकुल अपढ़ ऐसे एक सौसे भी ज्यादा इंडियन ले आये; उनमें बहुतेरे युवा भी थे। जनरल आर्मस्ट्रांग चाहते थे कि मैं उन सब इंडियनोंका पितृवत् पालक बनूँ–अर्थात् एक ही मकानमें उनके साथ रहकर उनकी शिक्षा, चालढाल और रहनसहनकी देखभाल किया करूँ। इस कार्यमें मोहकता अवश्य थी, पर वेस्ट वर्जीनियाके कार्यमे मैं इतना मगन हो गया था कि उसे छोड़ देना मेरे लिए बड़े भारी कष्टका कारण था; पर मैंने दिलको मज़बूत करके उस कामको छोड़ ही दिया; क्योंकि जनरल आर्मस्ट्रांगकी आज्ञाको मैं टाल नहीं सकता था।

हैम्पटन जाने पर मैं ७५ इंडियन विद्यार्थियोंके साथ एक मकानमें रहने लगा । मैं ही अकेला एक ऐसा आदमी था जो उनकी जातिके बाहर था । शुरू-शुरूमें मुझे बड़ा सन्देह था कि इस कार्यमें मैं कैसे कामयाब हो सकूँगा। मैं भली भाँति जानता था कि इंडियनोंके दिमाग हम लोगोंसे बहुत ऊँचे हैं । वे अपनेको गोरोंसे भी बड़े मानते थे—इसीसे अन्दाज़ किया जा सकता है कि गुलामीको महत्पाप समझनेवाले इंडियन गुलामीमें पले हुए नीग्रो लोगोंको क्या समझते होंगे । गुलामीके दिनोंमें इंडियन लोगोंके भी बहुतसे गुलाम थे । इन सब बातोंके सिवाय सब लोगोंको यह विश्वास हो गया था कि इंडियन लोगोंको पढ़ाने और सुधारनेकी चेष्टा कभी फलवती नहीं हो सकती । यह सब होते हुए भी मैंने यह प्रण कर लिया कि मैं दिल लगाकर, सावधानीके साथ काम करूँगा और सफलता प्राप्त किये बिना न रहूँगा । कुछ ही दिनोंमें इन इंडियनोंको मेरा विश्वास हो गया—वे मुझसे प्रेम करने लगे और मुझे आदरकी दृष्टिसे देखने लगे । इंडियनोंके विषयमें और लोग चाहे जो कहें; परन्तु मेरा अनुभव तो यह है कि और मनुष्योंके समान वे भी मनुष्य हैं; उनके साथ अच्छा बर्ताव करनेसे वे प्रसन्न रहते हैं और बुरा बर्ताव करनेसे नाराज़ होते हैं । जब उन्हें मेरा परिचय हो गया तब, वे मुझे सुखी करनेका प्रयत्न भी करने लगे । पर उन्हें अपने लंबे बालोंसे, कंबल ओढ़नेसे और तंबाकू पीनेसे इतनी प्रीति थी कि वे इन बातोंको छोड़ना पसन्द नहीं करते थे; और ऐसे ही कारणोंसे गोरे लोग उन्हें असभ्य और जंगली समझते थे ।

अँगरेजी भाषा सीखनेमें इंडियन बहुत पिछड़ जाते थे सही; पर और और विषयोंमें तथा कलाकौशल सीखनेमें काले नीग्रो और लाल इंडियन विद्यार्थियोंमें कोई बड़ा भारी अन्तर न था । मैं इस बातसे

बहुत प्रसन्न रहता था कि काले विद्यार्थी हर तरहसे इंडियनोंकी सहायता करते थे। अवश्य ही कुछ काले विद्यार्थी चाहते थे कि हैम्पटन-विद्यालयमें इंडियन भरती न किये जायँ; पर सौभाग्यसे उनकी संख्या बहुत थोड़ी थी। नीग्रो विद्यार्थियोंकी यह सदासे ही इच्छा थी कि इंडियन भी अँगरेजी बोलना सीख जायँ और उनकी रहन सहन तथा आदतें सभ्य लोगोंकीसी हो जायँ। इसलिए जब कभी कभी उनके शिक्षक इंडियनोंको अपने साथ लेने या अपने कमरेमें ही टिकानेके लिए कहते तो वे बड़े प्रेमसे इंडियनोंका स्वागत करते थे।

मुझे इस बातका आश्चर्य होता है कि इस प्रकारका स्वागत करनेवाली एक भी ऐसी गोरी संस्था नहीं है जहाँ अन्य जातिके सौसे अधिक विद्यार्थियोंका प्रवेश हो। गोरोंको यह सिखापन देनेकी मुझे कई बार इच्छा हुई है कि दूसरोंकी तरक्की करनेमें हम लोग जितनी ही मदद करेंगे उतनी ही हमारी तरक्की होगी, और जितनी ही कोई जाति बदकिस्मत (अभागिनी) और असभ्य होगी, उसकी उतनी ही मदद करके हम अपने आपको ही ऊपर उठावेंगे।

यहाँ पर मुझे आनेरबल फ्रेडरिक डगलसके कथनका स्मरण हो आता है। एक बार पेन्सिलवनियाकी रियासतमें मि० डगलस भ्रमण करने गये थे और दूसरे मुसाफिरोंकी तरह इन्होंने भी टिकट कटाया था; पर बदनका रंग काला होनेसे इन्हें मालगाड़ीमें बैठना पड़ा। कुछ गोरे मुसाफिरोंने यह देखा और मि० डगलससे अपनी सहानुभूति प्रकट करनेके लिए उनके पास जा कर कहा–" मि० डगलस, हम लोगोंको इस बातका बड़ा दुःख है कि आपका ऐसा अपमान हुआ। " महाशय डगलसने बैठे बैठे ही ज़रा गर्दन तान कर कहा–" अजी! वे फ्रेडरिक डगलसका अपमान नहीं कर सकते! मेरी आत्माका अपमान

करनेकी ताकत किसी मनुष्यमें नहीं है। इस बर्तावसे मेरा अपमान नहीं हुआ, बल्कि मेरे साथ जो ऐसा बर्ताव कर रहे हैं उन्हींका अपमान हो रहा है। ”

हमारे देशके एक हिस्सेमें यह कायदा है कि काले और गोरे लोग गाड़ियोंके अलग अलग डब्बोंमें बैठें। इस हिस्सेमें मुझे एक ऐसा उदाहरण मिला जिससे यह मालूम हो जाता है कि काला रंग कहाँ आरंभ होता है और सफ़ेद कहाँ खतम होता है इस बातका समझना कितना कठिन है।

हम लोगोंमें एक बड़ा प्रसिद्ध नीग्रो था। पर वह था इतना गोरा कि बड़े बड़े पहचाननेवाले उसे काला नहीं कह सकते थे। एक बार यह कालोंके डब्बेमें बैठ कर सफ़र कर रहा था। गाड़ीका कंडक्टर जब उसके पास आया तब उसे देखते ही चकरा गया। अगर यह नीग्रो ही है तो इसे गोरोंके डब्बेमें भेजनेकी ज़रूरत नहीं; पर अगर यह गोरा है तो इससे यह पूछना कि “ क्या तुम नीग्रो हो ? ” इसका अपमान करना है। कंडक्टरने उसकी तरफ़ ख़ूब बारीकीसे देखा—उसके बाल, आँखें, नाक और हाथ वगैरह सब कुछ देखा; पर वह कुछ निश्चय न कर सका। आखिर उसने यह उलझन सुलझानेके लिए, ज़रा झुक कर उस आदमीके पैरोंकी तरफ़ देखा। इस पर मैंने मन-ही-मन कहा, “अब फ़ैसला हो गया ! ” और सचमुच ऐसा ही हुआ; उसने समझ लिया कि यह नीग्रो ही है और उसे वहीं बैठा रहने दिया। हमारी जातिमेंसे एक आदमी कम नहीं हुआ, इसलिए मैंने कंडक्टरका अन्तःकरणसे आभार माना !

मैं अपने अनुभवसे यह बात कहता हूँ कि किसी सच्चे सभ्य पुरुषकी पहचान ऐसे वक्त करनी चाहिए जब उसे अपनेसे नीचे दर्जेके लोगोंके साथ मिलनेका अवसर मिले। दक्षिण प्रान्तके कोई पुराने सज्जन जब अपने पुराने गुलामोंसे या उनकी सन्ततिसे मिलते हैं

देखिए कि वे किस ढंगसे मिलते हैं; तब मेरे उक्त कथ-नकी यथार्थता प्रकट हो जायगी । मेरे कथनका तात्पर्य जार्ज वाशिंगटनके विषयमें कही गई एक बातसे विशेष स्पष्ट होता है । रास्तेमें जार्ज वाशिंगटनको देखकर एक नीग्रोने शिष्टाचारसे अपनी टोपी ऊपर उठाई । जार्ज वाशिंगटनने भी इसके उत्तरमें अपनी टोपी उठाई । इस पर उनके कई गोरे मित्रोंने उनसे कहा, " आप इतने बड़े आदमी होकर एक अदने काले आदमीके सामने टोपी उठाते हैं, यह ठीक नहीं है । " इस पर जार्ज वाशिंगटनने जबाब दिया-" क्या आप समझते हैं कि मैं किसी काले आदमीको अपनेसे बढ़कर विनयशील बन जाने दूँगा ? "

जिस समय मैं हैम्पटनमें इंडियन युवाओंकी निगरानी करता था, मेरे देखनेमें एक दो अवसर ऐसे आये जिनसे अमेरिकाके वर्णभेदकी विचित्रताका पता लग जाता है । एक इंडियन लड़का बीमार हुआ । उसे मुझे वाशिंगटन ले जाना पड़ा, और वह अपने पश्चिमाञ्चलके अरण्यप्रदेशमें वापिस पहुँचा दिया जाय इसके लिए उसे उस प्रदेशके सेक्रेटरीके हवाले करके उससे रसीद लेनी पड़ी । उस समय मुझे संसारकी रीतिनीतिसे विशेष परिचय नहीं था । मैं वाशिंगटनको जा रहा था । रास्तेमें स्टीमरमें, भोजनकी घंटी बजी । और सब लोग भोजन करनेके लिए चले गये; पर मैं नहीं गया-सबके निपटनेकी राह देखता रहा । जब सब मुसाफिर भोजन कर चुके तब मैं उस लड़केके साथ भोजनगृहमें गया । पर वहाँका एक आदमी मुझसे बड़ी शिष्टताके साथ बोला-"उस लड़केको तो भोजन मिलेगा पर आपको नहीं । " उस लड़केका और मेरा रंग एकहीसा था; पर न जाने उस आदमीने हम दोनोंकी जाति कैसे पह-चान ली । इस काममें वह बड़ा चतुर था इसमें सन्देह नहीं । हैम्पटन-विद्यालयके अधिकारियोंने मुझसे कह दिया था कि वाशिंगटन

पहुँचकर तुम अमुक होटलमें ठहरना। उस होटलमें पैर रखते ही एक क्लर्कने मुझे स्पष्ट शब्दोंमें कह दिया कि उस इंडियनको तो यहाँ जगह मिल जायगी पर तुम्हारे लिए कोई प्रबन्ध न हो सकेगा।

इसके बाद, इसी तरहका एक और उदाहरण देखनेमें आया। एक बार मैं एक गाँवमें गया था। उस समय वहाँ इतनी खलबली मच रही थी कि नव्वाबीका अमल होनेमें थोड़ी ही कसर थी। इस खलबलीका कारण भी मजेदार था। एक काले रंगका आदमी वहाँके होटलमें आ टिका था। वह मरक्कोका रहनेवाला था और अपने सुभीतेके लिए अँगरेज़ी भाषा बोलता था। एक नीग्रो आदमी गोरोंके होटलमें आके ठहरे और अँगरेजी बोले! यह उस गाँवके गोरोंसे न सहा गया; पर पीछे जब यह मालूम हुआ कि वह अमेरिकन नीग्रो नहीं है तब लोगोंको शान्ति हुई। उस मनुष्यको भी यह शिक्षा मिल गई कि अब यहाँ अँगरेज़ी बोलनेका काम नहीं।

इंडियन विद्यार्थियोंके साथ एक वर्ष बिता चुकने पर मुझे हैम्पटनमें एक और मौका मिला। पिछली बातोंको सोचनेसे यही कहना पड़ता है कि आगे चल कर टस्केजीमें योग्यतापूर्वक काम करनेके लिए जिस तैयारीकी आवश्यकता थी वह हासिल करनेके लिए ही ईश्वरने मानो यह अवसर दिया। बहुतसे स्त्री-पुरुषोंको विद्या प्राप्त करनेकी बड़ी अभिलाषा थी; पर उनमें भोजन-वस्त्र और पुस्तकोंका खर्च जुटानेकी सामर्थ्य न थी। जनरल आर्मस्ट्रांगको यह बात मालूम थी और इसलिए वे चाहते थे कि हैम्पटन-विद्यालयके साथ ही एक नाइट स्कूल खोला जाय और उसमें बुद्धिवान् और होनहार स्त्री-पुरुषोंकी पढ़ाईका प्रबन्ध हो—दिनमें ये लोग दस घंटे काम किया करें और रातको दो घंटे स्कूलमें पढ़ें। इन लोगोंको मेहनताना इतना दिया जाना ते हुआ कि उसमेंसे भोजनखर्चके बाद कुछ बचत हो जाय, जो स्कूलके खज़ा-

नेमें जमा की जाय, और एक दो वर्ष नाइटस्कूलमे पढकर जब ये दिनकी पाठशालामे भरती किये जायँ, यह बचत उनके भोजन-खर्चके लिए दी जाय। यह एक ऐसी योजना थी कि जिससे, विद्यार्थियोको हर तरहसे, अर्थात् शिक्षा, पुस्तकों, चरित्रबल और व्यवसायकी दृष्टिसे लाभ ही लाभ था।

जनरल आर्मस्ट्रागने यह नाइट स्कूल मुझ सौप दिया और मैने भी उसे खुशीसे लिया। शुरू-शुरूमें ऐसे बारह स्त्री-पुरुष भरती हुए जिन्हें पढनेकी बडी उत्कठा थी आर जो शरीरसे सुदृढ भी थ। दिनको पुरुष आरेसे लकडी चीरनेका और स्त्रियाँ कपड धोनेका काम करती थी। दोनों काम कुछ आसान नही ये पर मुझे इन विद्यार्थियोने जितना प्रसन्न किया उतना और किसीन भी नही किया ' ये अच्छे छात्र थे आर इन्होने अपने कामोको भली भाति सीखा। लिखने पढ-नेसे इनको इतना स्नेह हो गया था कि नीद लेनेकी घटी बजनेसे वे लाचार होकर अपना बस्ता बाधते थे, और कभी कभी तो सोनेका समय हो जाने पर भी पढत रहत थ।

इन लोगोने दिनमे जी-ताड मिहनत करने और रातको पढनेमे एसा अपूर्व उत्साह दिखाया कि मैने इन लोगोका नाम ही ' The Plucky Class-अनूठा दर्जा रख दिया। यह नाम तुरन्त फैल गया। नाइट स्कूलमें जो विद्यार्थी कुछ दिन रह कर अपनी कुछ करामत दिखलाता था उसे मै इस प्रकारका सरटिफिकेट देता था —

" जेम्स स्मिथको सरटिफिकेट दिया जाता है कि यह हैम्पटन-विद्यालयके अनूठे दर्जेका विद्यार्थी है, यह परिश्रमपूर्वक विद्याप्राप्तिके कार्यमे कभी विचलित नही हुआ—बराबर टिका रहा है। "

विद्यार्थी इस सरटिफिकेटकी बडी कदर करने लगे, और इससे नाइट स्कूलका यश दिनोदिन बढने लगा। कुछ ही सप्ताहोंमें नाइटस्कूलके

विद्यार्थियोंकी संख्या २५ हो गई। इन विद्यार्थियोंने पढ़नेके बाद अपनी अच्छी उन्नति की। प्रायः सभी इस समय दक्षिण प्रान्तमें अच्छे अच्छे ओहदोंपर काम कर रहे है। हैम्पटन-विद्यालयका नाइट स्कूल जब शुरू हुआ तब उसमें सिर्फ १२ विद्यार्थी थे; पर अब उसमें तीन चार सौ छात्र पढ़ते हैं; और हैम्पटन-विद्यालयमें नाइट स्कूल एक बड़े महत्त्वकी संस्था गिनी जाती है !

सातवाँ परिच्छेद।

टस्केजीमें आरम्भके दिन।

हैम्पटनमें जब मेरे जिम्मे नाइट स्कूल और इंडियन विद्यार्थियोंकी देख भाल थी तब मैं वहाँके शिक्षकोंसे कुछ पढ़ता भी रहता था। मेरे उन शिक्षकोंमें जनरल आर्मस्ट्रांगके बादके (आजकलके) प्रिन्सिपल रे. डाक्टर एच. बी. फ्रिसेल् भी एक थे।

सन् १८८१ के मई मासमें, अर्थात् नाइट स्कूलका काम शुरू होनेके एक वर्ष बाद मुझे अकस्मात् अपने जीवनके मुख्य कार्यको शुरू करनेका अवसर प्राप्त हुआ। एक दिन रातको, नित्य प्रार्थना समाप्त होनेके पश्चात् जनरल आर्मस्ट्रांगने यह बात छेड़ी कि अलबामा रियासतके टस्केजी नामक छोटेसे ग्राममें काले लोगोंके लिए एक नार्मलस्कूल खुलनेवाला है; मुझसे अलबामाके कुछ सज्जनोंने किसी ऐसे मनुष्यकी सिफ़ारिश करनेके लिए लिखा है जो इस पाठशालाको चला सके। उन लोगोंने शायद यह समझ रक्खा था कि इस कामके लायक कोई काला आदमी न मिलेगा, और इसलिए उन्होंने जनरल आर्मस्ट्रांगसे किसी गोरे मनुष्यकी सिफारिश चाही थी। दूसरे दिन जनरल आर्मस्ट्रांगने मुझे अपने दफ्तरमें बुलाकर पूछा—" अलबामाके विद्यालयका काम कर लोगे ? " मैंने बड़े हर्षके साथ उत्तर दिया कि " कोशिश करना मेरे हाथ है। " तब जनरल आर्मस्ट्रांगने उन सज्जनोंको चिट्ठी लिखी कि " कोई गोरा आदमी मिलना तो मुश्किल है; पर यदि आप लोग किसी काले आदमीको पसंद करें तो मैं एक आदमीका नाम बतलाऊँगा। " यह लिख कर उन्होंने मेरा नाम भी लिख दिया।

कई दिन बीत गये; पर इस चिट्ठीका कोई जवाब ही न आया। कुछ काल पश्चात् एक दिन, जब कि प्रार्थनामन्दिरमें हम लोग एकत्र

हुए थे, एक सिपाही जनरल आर्मस्ट्रागके पास एक तार ले आया। प्रार्थना हो चुकने पर उन्होंने वह तार सबको पढ सुनाया। उसमें लिखा था–"बुकर टी वाशिगटनका रखना हमें स्वीकृत है, आप उन्हें शीघ्र भेजिए।"

विद्यार्थियो और शिक्षकोको बडा आनन्द हुआ, और उन्होंने मुझे हृदयसे बधाई दी। मै भी टस्केजी जानेको तुरत तैयार हो गया। पहले मै वेस्ट वर्जीनियामे अपने घर गया। वहाँ कुछ दिन रह कर फिर मै टस्केजीको रवाना हुआ। टस्केजी एक छोटासा गॉव था। उसकी आ-बादी दो हजार थी और उनम आधे लोग काले थे। यह आधा हिस्सा दक्षिण प्रान्तके कृष्ण कटिबन्धमे (Black Belt) गिना जाता था। टस्केजी जिस प्रदेशमे बसा था वहाँ कालो और गोरोंकी सख्या, तीन काले और एक गोरा, इस हिसाबसे थी। पडोसके कुछ प्रदेशमें कालोंकी सख्या इससे भी अधिक अर्थात ६ काले और एक १ गोरा, इस हिसाबसे थी।

कृष्ण कटिबन्ध क्या चीज है ? इस विषयमे मुझसे कई बार कई लोगोने प्रश्न किये हे। पहले ता इस शब्दसे देशकी काली भूमि ही समझी जाती थी। दक्षिण अमेरिकाम काली ओर उपजाऊ भूमि बहुत है। वहाँ गुलामोको ले जाकर गोरे मालिक उनसे खूब लाभ उठाते थे। धीरे धीरे वहाँ गुलामोकी बहत बडी आबादी हो गई। जब युद्ध शुरू हुआ तब यही शब्द राजनीतिक अर्थमे लिया जाने लगा, अर्थात् जिस प्रदेशमे गोरासे कालोकी सख्या अधिक है उस प्रदेशका ही कृष्ण कटिबन्ध नाम पड गया।

जब तक मै टस्केजीमे पहुँचा नही था तब तक, यही सोचता था कि पाठशालाके लिए मकान और जिन जिन चीजोंकी जरूरत होती है वे सब चीजे जुट गई हागी पर वहाँ जाकर देखा तो पाठशालाके लिए

न तो कोई मकान था, और न कोई सामान ही। यह देखकर मै कुछ निराश हो गया। परन्तु ऐसे लोगोकी वहाँ कमी न थी जो सचमुच ही ज्ञानके प्यासे और इस कार्यसे हार्दिक सहानुभूति रखनेवाले थे। इससे मुझे बहुत कुछ ढाढस मिला।

पाठशालाके लिए टस्केजी बडी अच्छी जगह थी। यह गॉव नीग्रो लोगोंकी बसतीके बीचम था और यहाँ एकान्तका भी बडा सुख था। रेलवेकी मुख्य सडकसे यह पॉच मीलके फासले पर था। रेलवेकी दूसरी एक छोटीसी शाखा गॉवतक आ गई थी। गुलामीके दिनोमे और उसके बाद भी यह स्थान गोरे लोगोकी शिक्षाका केन्द्र रहा है। इससे बडा काम हुआ, क्योकि मैने देखा है कि विद्या और विनय, दोनोंमे—यहॉके गोरे सबसे बढकर है। काले लोग अपढ जरूर थे, पर उन्होंने और शहरोके निम्नश्रेणीके लोगोमे फैली हुई बुराइयोसे अपने शरीरोको नही बिगाड रक्खा था। दोनो जातिके लोगोका परस्पर व्यवहार बहुत अच्छा था। उदाहरणार्थ, उस गावमे लोहेकी जो सबसे बडी दूकान थी उसे एक काले और गोरे आदमीने मिलकर खोला था, उसमें दोनोका बराबर हिस्सा था और दोनो ही उसका कामकाज देखते थे। जबतक उनमेसे एकका देहान्त नही हुआ तबतक, यह साझेकी दूकान बराबर चलती रही।

मेरे टस्केजी आनेके एक वर्ष पहले, टस्केजीके कुछ सज्जनाने हैम्प-टन–विद्यालयका कार्य देखकर अपने गॉवमे भी एक आदर्श विद्यालय खोलना चाहा और इसके लिए उन्होने अपने यहॉके प्रतिनिधियोंके द्वारा सरकारसे सहायताकी प्रार्थना की। सरकारने यह प्रार्थना स्वीकार की और इस कामम दो हजार डालर खर्च करनेकी मजूरी दे दी, पर मैने यहॉ आकर देखा कि यह रकम तो शिक्षकोके वेतनमे ही खर्च हो जायगी, मकान और सरजामके लिये कुछ बचेगा ही नही। इस

दशामें मैं निराश हुआ। पर काले लोगोंको बड़ी ख़ुशी हुई—यह सुनकर बड़ा हर्ष हुआ कि अब यहाँ एक स्कूल खुलनेवाला है, और वे अपनी शक्तिभर मेरी सहायता करनेके लिए तैयार हो गये।

अब मेरा पहला काम यह हुआ कि पाठशालाके लिए कोई स्थान तलाश करूँ। ढूँढ़ते ढूँढ़ते कालोंके 'मेथाडिस्ट' चर्चके पास एक जगह मिली। एक पुराना बेमरम्मत मकान था; इसमें पाठशाला हो सकती थी; और वह चर्च (गिरजाघर) सभाभवनके काममें आ सकता था। गिरजाघर और मकान दोनों ही अतिशय जीर्ण थे। मुझे याद आता है कि जब कभी पानी बरसता था तब पुराने विद्यार्थियोंमेंसे एकाध लड़का अपना पाठ छोड़कर मेरे पास आकर मेरे सिर पर छाता पकड़े रहता था और इस हालतमें मैं विद्यार्थियोंके पाठ सुनता था। कई बार तो ऐसा हुआ है कि मैं भोजन करने बैठा हूँ और पानी बरसने लगा है। ऐसे समय मेरी स्त्री मुझ पर छाताकी छाया किये खड़ी रहती थीं। इससे आप लोग समझ जायँगे कि स्कूलके मकानकी हालत कितनी खराब थी।

अलबामाके काले लोग राजनीतिक बातोंमें बहुत योग दिया करते थे और चाहते थे कि मैं भी उनके पक्षमें जा मिलूँ। राजनीतिक कामोंमें वे दूसरोंका अधिक विश्वास नहीं करते थे। लोग अकसर मेरी चर्चा किया करते थे; क्योंकि उन्हें यह मालूम नहीं था कि मेरे क्या विचार हैं। उन लोगोंने मेरे विचारोंको जाननेके लिए मेरे पास एक आदमी प्रतिनिधि बना कर भेजा था। वह आकर मुझसे कहने लगा, "हम लोग चाहते हैं कि आप भी हम लोगोंके पक्षमें ही अपनी सम्मति दिया करें। हमें समाचारपत्र पढ़ना तो इतना नहीं आता; पर यह मालूम है कि अपना मत कैसे देना चाहिए। और हम चाहते हैं कि आप भी हम लोगोंके समान मत दिया करें। हम लोग पहले यह खूब अच्छी तरहसे देख लेते हैं कि गोरा क्या कहता है—किस ओर अपनी

सम्मति देता है । जब हम जान लेते हैं कि गोरेने अमुक ओरसे सम्मति दी है तब हम लोग ठीक उससे उलटी अपनी सम्मति दे देते है ! तब हम समझते हैं कि हमने उचित मम्माति दी । " नीग्रो लोगोंकी उस समय यह दशा थी । पर अब मुझे यह कहते हर्ष होता है कि गोरेके विरुद्ध सम्माति देना, फिर उसमें लाभ हो या नुकसान, यह जो पुरानी रीति थी वह अब दिनोंदिन मिट रही है और अब मेरे भाई यह जानने लगे है कि राय ऐसी देनी चाहिए जिससे दोनों जातियोंका लाभ हो ।

यह मै कह चुका हूँ कि १८८१ के जून मासमें मै टस्केजीमें आया । पाठशालाके लिए जगह ढूँढ़ने, देहातके लोगोंकी रहन सहन देखने, और जिन लोगोंको मै चाहता था कि स्कूलमें आवें उन लोगोंमें, पाठशालाकी चर्चा फैलानेमें ही मैंने पहला महीना बिताया । एक खच्चर और एक गाड़ीके साथ मैंने देहातोंमें भ्रमण किया । मै काले लोगोंके साथ भोजन करता और उन्हीकी झोपड़ियोंमें रहता था । इस तरह मैंने उनके खेत, उनकी पाठशालायें और उनके गिरजाघर देखे । किसीको मेरे आनेकी सूचना पहलेसे नही मिलती थी, इससे मुझे उनकी असली हालत देखनेको मिल जाती थी ।

गाँवोंमें प्राय. सभी लोग एक ही कोठरीमें सोया करते थे और कभी कभी मेहमानोंकी भी उसी कोठरीमें खातिर की जाती थी । मैं सोनेके लिए प्रायः कही बाहर चला जाता था, और कभी कभी सबके सो जाने पर सोता था । फर्श पर या किसीके बिछौने पर एक तरफ मुझे सोनेको स्थान दिया जाता था । हाथ पैर धोनेके लिए शायद ही किसी झोपड़ीमें कोई प्रबन्ध रहता हो, पर झोपड़ीके बाहर आँगनमें अवश्य ही वे कुछ न कुछ प्रबन्ध कर देते थे ।

सूअरका मांस और बाजरेकी रोटी, यही सबका मामूली खाना था ।

वहाँकी देहातमें घूमते हुए मुझे कई बार ऐसे मोके मिले हैं जब मैंने बाजरेकी रोटी, खाली पानीमें उबाले हुए मटरके साथ खाई है। वहाँके लोग तो सिवा मांस और रोटीके कुछ खाना जानते ही न थे। वे मांस और बाजरेका आटा गाँवकी बड़ी दूकानसे लाते थे। तरकारी लगानेका विचार भी उनके मनमें कभी न आया। जहाँ देखिए, कपासकी खेती हो रही है, यहाँतक कि कहीं कहीं झोपड़ियोंके दरवाजों तक कपासके पौधे लगे हुए नजर आते थे।

इन झोपड़ियोंमें मैंने अकसर सीनेकी कलें, घड़ियाँ, या हारमोनियम बाजे देखे हैं। सात सात डालर कीमत देकर कोई सीनेकी कल और बारह चौदह डालर खर्च कर कोई घड़ी खरीद लेना या किस्तबन्दी पर ले लेना इन लोगोंके लिए एक मामूली बात थी। एक बार मैं एक आदमीके यहाँ भोजन करने गया। घरके चार आदमी और मैं, पाँच आदमी भोजनके लिए मेज़के पास बैठे। पर खानेको सबके लिए एक ही काँटा था! इस लिए मुझे बहुत देरतक चुपचाप बैठ रहना पड़ा। इसी घरमें सामनेके एक कोनेमें हारमोनियमकी एक पेटी रक्खी हुई थी। उसके बारेमें घरके लोगोंने कहा कि इसकी कीमत ६० डालर है और हम लोग किस्त बाँधकर इसका मूल्य दे रहे हैं। एक काँटा और ६० डालरका बाजा! बहुतेरी जगहोंमें सीनेकी कलसे कोई काम भी नहीं लिया जाता था, और घड़ियाँ इतनी रद्दी होती थीं कि ठीक समय भी न देती थीं। यदि कुछ घड़ियाँ अच्छी भी हुईं तो क्या?—उन्हें देखकर समय जाननेवाला ही कौन था? १० में ९ आदमी भी घड़ी देखकर यह न बतला सकते थे कि कितने बजे हैं। बाजेका भी यही हाल था—धूल खाता हुआ पड़ा रहता था।

जहाँ मैं भोजन करने गया था वहाँ, मेज़ वगैरहका प्रबन्ध ख़ास मेरी ख़ातिरके लिए किया गया था। प्रायः सभी घरोंमें भोजनकी यह कैफ़ि—

यत थी कि सबेरे सोकर उठनेके बाद गृहिणी तवे पर एकाध मांसका टुकड़ा, और एक बरतनमें सना हुआ आटा रख देती थी। ये दोनों बरतन ज़रा आग पर रख देनेसे ही सबेरेका भोजन तैयार हो जाता था। घरका मालिक हाथमें मांस और रोटी लिए खाता चबाता हुआ अपने खेत पर जाता, फिर गृहिणी एक कोनेमें बैठ कर खा पी लेती, और बाल बच्चे खेलते कूदते हुए अपनी रोटी और मांस खा लिया करते। बस, यही इन लोगोंकी खाने पीनेकी व्यवस्था थी।

सबेरेका नाश्ता कर चुकने पर घरके सब लोग घरके प्रबन्धकी कोई चिन्ता न करके कपासके खेत पर चले जाते थे। छोटे छोटे बच्चोंको भी खेतोंपर जुत जाना पड़ता था, और नन्हे बालक कपासकी किसी कतारके एक तरफ़ पड़े रहते थे। जब उस कतारकी चुनाई हो चुकती तब उनकी मातायें उन्हें दूध पिलाती थीं। सबेरेकी तरह ही दो-पहर और शामका भी भोजन होता था।

शनिवार और रविवारको छोड़कर प्रायः सर्वदा ही इनका एक ही कार्य-क्रम रहता था। शनिवारको सब लोग आधा दिन या सारा दिन शहरमें बिताते थे। बहुत करके वे बाज़ार करने या आवश्यक वस्तुयें खरीदने-की ग़रज़से शहर जाते थे। यद्यपि परिवारमें जितनी चीज़ें आवश्यक होती थीं वे सब १०।१५ मिनिटमें ही कोई एक आदमी खरीद ला सकता था, पर परिवारके सभी लोग सौदा खरीदनेके लिए बाहर निकलते और शहरकी सड़कों पर इधर उधर घूमनेमें सारा दिन बिताते थे; और स्त्रियाँ भी कहीं तमाखू पीती या सुँघनी सूँघती हुई बैठ रहती थीं। रविवारके दिन सभामें आना होता था। इन लोगोंमें ऐसे तो इने गिने ही लोग थे जिनके खेत रहन न रक्खे गये हों अथवा जो किसीके कर्ज़दार न हों-नहीं तो, प्रायः सभी काले किसान ऋणसे दबे रहते थे। प्रादेशिक सरकार प्रत्येक गाँवमें पाठशालाभवन नहीं बना सकती थी; इसलिए

बहुतेरी पाठशालायें गिरजाघरोंमें या लकड़ीकी झोपड़ियोंमें होती थीं। मुझे अपनी यात्रामें अकसर यह देखनेका अवसर मिला है कि जाड़ेके दिनोंमें पाठशालाका मकान गरम रखनेका कोई उपाय नहीं किया गया है, और इसलिए आँगनमें आग सुलगाकर शिक्षक और छात्र बाहर आकर ताप रहे हैं। देहातकी पाठशालाओंके शिक्षक पढ़ानेके काममें निरे मूर्ख थे; उनका आचरण भी शुद्ध न होता था। तीन, चार या पाँच महीने पाठशाला जारी रहती थी। पाठशालामें सिवाय एक मोटे खुरदरे तख़्तेके और कोई सामान नहीं रहता था। मुझे एक बारकी याद आती है कि मैं एक पुरानी काठकी झोपड़ीकी पाठशालामें गया था। वहाँ मैंने देखा कि पाँच विद्यार्थी एक ही पुस्तकसे पाठ ले रहे हैं। पुस्तक बेंच पर बैठे हुए पहले दो विद्यार्थियोंके बीचमें थी; इनके पीछे दो विद्यार्थी खड़े खड़े इनके कन्धोंपरसे झुककर पुस्तक देख रहे थे; और इन चारोंके कन्धोंपरसे झुककर देखनेवाला एक छोटा विद्यार्थी और खड़ा था!

जो हाल इन पाठशालाओं और शिक्षकोंका था, वही हाल गिरजाघरों और उनके पादरियोंका या उपदेशकोंका भी समझिए।

मेरी यात्रामें मुझे कई अजीब लोगोंके दर्शन हुए। गँवारोंके सोचने विचारनेका ढंग कैसा होता है यह जाननेके लिए मैं यहाँ एक उदाहरण दिये देता हूँ। एक साठ वर्षके काले नीग्रोसे मैंने कहा कि "मुझे अपना इतिहास सुना जाओ।" उसने कहा–" मैं वर्जीनियामें पैदा हुआ, और १८४५ के सालमें अलबामामें मैं बिका।" मैंने उससे पूछा,–" तुम्हारे साथ और कितने लोग बिके?" इसपर उसने यह उत्तर दिया कि, "हम लोग पाँच जनें थे–मैं, मेरा भाई और तीन खच्चर।"

टस्केजीके आसपासके गाँवोंमें यात्रा करते समय मैंने जो कुछ देखा था ऊपर उसीका वर्णन किया है। पर इसके साथ ही मैं यह भी सूचित कर देता हूँ कि उस समय मैंने ऐसे लोग और ऐसी संस्थायें भी देखीं

थीं जिनके विषयमे ऊपरका वर्णन कदापि नही घट सकता। टस्केजीके और अन्यान्य संस्थाओंके कार्योंसे जो सुधार हमारे समाजमें हुए हैं उनकी ओर, ध्यान दिलानेके लिए–यह जाननेका सुभीता कर देनेके लिए कि पहले क्या हाल था और अब इन संस्थाओके प्रयत्नसे क्या हो गया है–मैने अपनी यात्रामे जो कुछ देखा उसे यहॉ स्पष्ट बतला दिया ह ।

आठवाँ परिच्छेद ।

अस्तबल और मुर्गीखानेमे पाठशाला ।

अलबामा प्रदेशके दहातोमे घूम कर मेने जो कुछ देखा उससे मेरी ऑखे खुल गई ओर मेन जाना कि मुझ पर इस वक्त कितनी बडी जिम्मेदारी है । काम करनेवाला मे अकेला था, और इन लोगोको अज्ञानसे उठाना कोई साधारण काम नहीं था । मरे मनकी बडी विचित्र अवस्था हुई । मुझे यह विश्वास न होता था कि मे इस कार्यको कर सकूँगा । मेरा मन यहॉतक चलबिचल हुआ कि इस काममें हाथ डालना उचित है या नही, इसका भी मुझे सन्देह होने लगा । अस्तु ।

नीग्रो लोगोके गॉवामें एक मास बिताकर मने इन लोगोकी असली हालत दखी और दखकर इतना ता खूब समझ लिया कि उस वक्त अमेरिकामे जो शिक्षाप्रणाली प्रचलित थी उसस यहॉ काम न चलेगा—कुछ ओर भी करना हागा । हेम्पटन विद्यालयकी शिक्षाप्रणालीका ठीक ठीक महत्त्व इसी समय मरी समझम आया । अलबामाके नीग्रो लोगोंके लडकोको एकट्ठा करके उन्हे पुस्तकसम्बन्धी शिक्षा या किताबी तालीम देना तो मेरे खयालम, उनके समयको वृथा नष्ट करना ही था । इस समय मेरे सामने नीग्रो जातिक समग्र जीवनकी तेयारीका प्रश्न हल करनेके लिए आ पडा ।

टस्केजीके रईसोंकी सलाहसे १८८१ की ४ थी जुलाईको गिरजाघरमें और उसके पासके एक बेमरम्मत मकानमे मैने स्कूल खोलना निश्चय किया । काले और गोरे दोनो ही बडे उत्साहसे स्कूल खुलनेकी बाट जोह रहे थे । इसमे सन्देह नही कि टस्केजीके आसपास ऐसे भी

बहुतसे लोग थे जो स्कूल खोलनेके विरोधी थे। उन्हें यह सन्देह था कि स्कूलसे काले लोगोंको कोई लाभ न होगा। बहुतेरोंका तो यह कहना था कि इससे आपसमें झगडा-फसाद पैदा हो जायगा। कुछ लोगोंकी बुद्धिमे यह आया कि नीग्रो लोग जितना ही लिख पढ लेंगे उतनी ही उनकी आर्थिक दुर्गति होगी, क्योंकि शिक्षित होने पर नीग्रो लोग खेती-बारीका काम छोड देंगे, और घरू काम करनेके लिए हमे मजदूर भी न मिलेंगे।

इस नये स्कलसे गोरोको यह डर था कि नीग्रो लोग लिख पढ करके सिर पर ऊँची टोपी दिया करगे, नकली सोनेके चश्मे लगायेंगे, हाथमें बढिया छडी लिया करेंगे, हाथोमे चमडेके हाथमोजे पहनेंगे, तरह तरहके भडकदार बूट पहनेगे, मतलब यह कि सभी काम अपनी बुद्धिसे किया करेंगे। वे लाग शिक्षाका मतलब ही यही समझते थे और इस लिए यदि उन्होने नीग्रो लोगोकी शिक्षामे इन्ही बातोको देख पाया तो कोई आश्चर्य नही।

स्कूल खोलनेमे जो जो विघ्नबाधाये उपस्थित हुई उनको हटानेमे टस्के-जीके कई सज्जन मेरी बराबर सहायता करते रहे और आगे भी उनसे मुझे बराबर सहायता मिलती रही। दो सज्जनोंसे तो मै सदा ही सलाह लिया करता था और उन्हीकी देखरेखमे सब काम किया करता था। यह तो कभी हुआ ही नही कि मै उनसे कोई बात पूछने गया और उन्होने 'नाही' कर दी। मुझे जो कुछ कामयाबी इस काममें हुई उसे मै इन्ही दो महाशयोकी बदौलत समझता हूँ। ये दो पुरुष वहाँके आद-र्शस्वरूप थे। इनमेसे एक तो गोरे साहब हे, जो पहले गुलामोंका व्यव-साय किया करत थे। इनका नाम है मि० जार्ज डब्ल्यू कैबेल। दूसरे सज्जन काले है। ये पहले गुलाम थे। इनका नाम मि० लेबिस एडम्स है। इन्ही दो सज्जनोने जनरल आर्मस्ट्रागको शिक्षक भेजनेके लिए चिट्ठी लिखी थी।

मि० कैम्बेल एक व्यापारी और कोठीवाल हैं। शिक्षाके बारेमें उन्हें बहुत थोड़ा अनुभव है। मि०एडम्स शिल्पी (कारीगर) है । इन्होंने गुलामीके दिनोंमें जूता सीना, ज़ीन वगैरह बनाना, और टिनकी जोड़ाई करना आदि काम सीख लिये थे । स्कूलमें इन्होंने एक दिन भी पैर नही रक्खा, फिर भी इतना इन्होंने कर लिया है कि कुछ लिख-पढ़ लेते हैं। मैंने टस्केजीमे आकर स्कूलका जो ढाँचा डाला था—जो योजना की थी, उसे इन्होंने शुरूसे देखा । इन्हें वह पसन्द भी हुई और इस लिए हर काममें इन्होंने मुझे साथ दिया । जब जब स्कूलके लिए धनकी जरूरत हुई है और हम लोग मि० कैबेलके पास गये हैं तब तब उन्होंने हमारी खुले दिलसे सहायता की है । स्कूलके प्रबन्ध और सुधारके कामोंमें सिवा इन दो सज्जनोंके, और किसीसे सलाह लेनेकी जरूरत मैने न समझी ।

मि० एडम्समें बड़ा मानसिक बल था । मै समझता हूँ कि गुलामीके दिनोमें इन्हें जो ऊपर बतलाये हुए तीन कामो पर हाथ जमानेकी शिक्षा मिली थी उमीका यह फल है । आज भी, अगर दक्षिण प्रान्तमें जाकर किसी शहरमे मुख्य और विश्वासपात्र नीग्रो लोगोंका अनुसन्धान किया जाय तो फ़ी दस आदमियोंमें पाँच मनुष्य अवश्य ऐसे मिलेंगे जिन्होंने गुलामीके दिनोमें कोई न कोई हुनर–शिल्प अच्छी तरह सीखा होगा । अर्थात् अच्छी तरह हुनर या कारीगरी आदि परिश्रमके काम सीखे हुए लोग ही प्रायः मानसिकबलशाली और विश्वासपात्र होते है ।

जिस दिन स्कूल खुला उसी दिन सबेरे तीस छात्र भरती किये गये । उस वक्त पढ़ानेवाला मै अकेला ही था । इन तीस छात्रोंमें १५ स्त्रियाँ थी । प्रायः सभी छात्र मेकन प्रदेशसे आये हुए थे । टस्केजी इसी प्रदेशका मुख्य स्थान था । उक्त ३० छात्रोंके अतिरिक्त और भी बहुतसे छात्र भरती होना चाहते थे, पर यह निश्चय हो चुका था कि

केवल ऐसे छात्र भरती किये जायँगे जिनकी उम्र १५ वर्षसे अधिक हो और जो कुछ शिक्षा भी पहलेसे पा चुके हों। इन तीस छात्रोंमें बहुतेरे ऐसे थे जिन्होंने इससे पहले पब्लिक-स्कूलोंमें मुदर्रिसी या अध्यापकी भी की थी। चालीस चालीस साल उम्रके भी कुछ विद्यार्थी थे। अध्यापकोंके साथ उनके कई एक शिष्य भी आ गये थे। और यह तमाशा देखनेमें आया कि प्रवेशपरीक्षामें शिष्य ही शिक्षकोंसे बढ़कर निकले, इसलिए वे शिक्षकोंसे ऊपरके दर्जेमें भरती किये गये! इन शिष्य-शिक्षकोंको विद्यालाभके उद्देश्य और उपायके बारेमें बहुत कम ज्ञान था। बड़ी बड़ी पुस्तकें पढ़ने और बड़े बड़े शब्दोंको काममें लानेका भी इन्हें बड़ा शौक था। इनमेंसे बहुतेरे इस बातका भी अभिमान रखते थे कि हमने अमुक अमुक ग्रन्थोंका अध्ययन किया है और अमुक विषयोंमें पारदर्शिता प्राप्त की है। आपसमें जब इस तरहकी बातें ये लोग करते तो सुनकर मुझे हँसी आती थी। कुछ छात्रोंने लैटिन भाषाका अभ्यास किया था। दो एक छात्र ग्रीकभाषा भी जानते थे, इसलिए वे अपनेको औरोंसे बहुत श्रेष्ठ समझते थे।

सचमुच ही मैंने अपनी एक महीनेकी यात्रामें एक बड़ी ही खराब बात देखी; वह यह कि हाई-स्कूलमें पढ़ा हुआ एक विद्यार्थी अपनी झोपड़ीमें बैठा हुआ था। उसके कपड़ों पर तेलके धब्बे लगे हुए थे, आस-पास इतनी गन्दगी थी कि जी मचला जाय, आँगनमें और बागमें बेहिसाब घास बढ़ी जा रही थी, और आप फ्रेंच भाषाका व्याकरण पढ़नेमें मगन हो रहे थे!

शुरू शुरूमें जो विद्यार्थी आये उन्हें व्याकरण और गणितकी लंबी लंबी और कठिन परिभाषायें कंठ करनेका बड़ा शौक था; पर कंठ किये हुए इन नियमोंको काममें लानेकी बात कभी उनके ध्यानमें भी न आई। उन्होंने सूद, मितीकाटा, स्टाक आदिके नियम तोतेकी तरह रट डाले थे;

पर यह नही जानते थे कि बैकसे क्या काम लिया जाता है । विद्यार्थियोंके नाम रजिस्टरमे लिख लेते समय मैने यह देखा कि हरेकके नामके साथ एक या दो अक्षर भी हुआ करते हे, जैसे जान जे जेम्स । अगर यह पूछा जाता कि इस ' जे'का क्या मतलब है तो यही जवाब मिलता कि यह भी उपनामका (अल्लका) एक हिस्सा है । बहुतेरे शिक्षार्थी इसलिए पढना चाहते थे कि आगे चलकर वे शिक्षक हो जायँगे ता बहुतसा धन कमा लेगे ।

पर इन बातोसे यह न समझिए कि स्कूलके छात्र बिल्कुल निकम्मे थे । इन विद्यार्थी ओर विद्यार्थिनियाम पढनकी ओर जेसी प्रवृत्ति और जैसा उत्साह था वेसा तो मन कही देखा ही नही । कोई बात जब उन्हे समझाई जाती थी ता वे उसे पूरा ध्यान दे कर समझते थे । मैने निश्चय किया कि उन्हे जा कुछ पुस्तकसबन्धी विद्या सिखलाई जाय उसकी जड उनमे पहले पक्की जमा दी जाय तब आगे पढाया जाय और जो कुछ सिखलाया जाय वह अधूरा ही न छोडा जाय । जिन विषयोके ज्ञानकी डीग वे लोग हॉका करत थ मेन देखा कि उन विषयोका उन्हें बहुत ही थोटा परिचय है । हमारी नई विद्यार्थिनियॉ नकशे पर सहाराकी मरुभूमि दिखला सकती थी चीनकी राजधानी भी ढूँढ निकाल सकती थी, पर भोजनकी मेज पर कॉटा आर चम्मच कहॉ रक्खा जाता है, या रोटी आर मास कहॉ परोसना चाहिए इतना भी न जानती थी !

एक विद्यार्थी धनमल व्याज सूद मितीकाटके हिसाब लगानेमे बडी माथापच्ची किया करता था । आखिर मुझ उसस कहना ही पडा कि पहले तुम पहाडा अच्छी तरहसे याद कर लो तब आगे बढो !

विद्यार्थियोकी सख्या दिनादिन बढती जाती थी, यहॉ तक कि पहले ही मासके अन्तमे ५० विद्यार्थी हो गये । कई विद्यार्थियोका यह कहना था कि ' हम लागोको यहा बहुत थाडे दिन रहना है, इस

लिए हमें ऊपरके दर्जेमें भरती कर लीजिए और संभव हो तो पहले ही सालमें डिप्लोमा दिला दीजिए !”

कोई डेढ़ महीने बाद स्कूलको एक उत्तम व्यक्तिके अध्यापनका सौभाग्य प्राप्त हुआ। इनका नाम मिस आलिविया ए. डेविड्सन था। आगे चलकर ये ही आलिविया मेरी सहधर्मिणी हुईं। मिस डेविड्सनने आविओ रियासतमें जन्म पाया था, और उसी रियासतके पब्लिक स्कूलमें उन्होंने आरंभिक शिक्षा भी पाई थी। जब वे कुछ सयानी हुईं तब उन्होंने सुना कि दक्षिण प्रान्तमें शिक्षकोंकी बड़ी आवश्यकता है। तभीसे वे बाहर जानेकी चिन्ता करने लगीं। निदान एक अच्छा योग पा करके वे मिसिसिपी रियासतमें आकर अध्यापनका कार्य करने लगीं। इसके बाद मेंफिस रियासतमें पढ़ाती रहीं। मिसिसिपीमें जब वे पढ़ाती थीं तब उनके एक विद्यार्थीको माता निकल आई थी। उस वक्त लोग इतने घबरा गये कि उस बेचारे लड़केकी सेवाटहल करनेके लिए भी कोई न रहा। मिस डेविड्सनने अपना स्कूल बन्द कर दिया, और जब तक वह लड़का बिलकुल चंगा न हो गया तब तक वे रात दिन उसीकी सेवाशुश्रूषा करने लगीं। छुट्टियोंमें वे अपने घर आ गईं और ऐसे वक्त मेंफिसमें ‘ यलो फिवर ’ नामक संक्रामक ज्वर फैलने लगा। जब मि० डेविड्सनको इसकी खबर मिली तो वे संक्रामक रोगके रोगियोंकी शुश्रूषा करनेको तैयार हो गईं और यद्यपि उन्होंने कभी इस रोगके रोगियोंकी परिचर्या नहीं की थी–इस रोगका नाम भी न सुना था तो भी मेंफिसके शेरीफको तार दे दिया कि “ मैं दाईका काम करनेके लिए तैयार हूँ।”

दक्षिण प्रान्तमें मिस डेविड्सनको जो कुछ अनुभव प्राप्त हुआ उससे उनकी भी यह धारणा हो गई थी कि केवल पुस्तकी-विद्याके अतिरिक्त कुछ और भी, लोगोंके लिए आवश्यक है। हैम्पटनकी शिक्षापद्धतिके

विषयमें उन्होंने सुना था और उन्होंने यह विचार भी कर रक्खा था कि दक्षिण प्रान्तमें मैं तभी कुछ कार्य कर सकूँगी जब हैम्पटन-विद्यालयमें जाकर पूरा अभ्यास करूँ। संयोगवश बोस्टनकी मिसेस मेरी हेमेनवे नामकी एक कुलीन महिलाने इनकी असाधारण बुद्धिमत्ता देख उदारता-पूर्वक इनकी सहायता की जिससे ये हैम्पटन-विद्यालयकी पढ़ाई पूरी कर सकीं। इसी प्रकार फ्रामिंगहमके 'मेसेच्युसेट्स नार्मल स्कूल'में पढ़ने और वहाँकी दो सालकी पढ़ाई समाप्त करनेका भी इन्हें मौका मिला।

मिस डेविड्सनका रंग गोरा है; पर गोरे रंगमें उन्होंने मौका मिल-ने पर भी कभी अपना नीग्रोपन छिपाना नहीं चाहा। जिस वक्त ये फ्रामिंगहम जा रही थीं, इनके एक परिचित व्यक्तिने इन्हें सलाह दी कि "अगर मेसेच्युसेट्स स्कूलमें आप अपनी जाति छुपा दें तो आपका बड़ा काम होगा। यह आप आसानीसे कर भी सकती हैं; क्योंकि आपका रंग खासा गोरा है और कोई आपको देखकर नीग्रो नहीं कह सकता।" इस पर इन्होंने फ़ौरन जबाब दिया—"किसी कामके लिए अथवा कैसी ही मुसीबत आने पर भी मैं कभी अपनी जातिके विषयमें किसीको धोखा न दूँगी।"

फ्रामिंगहमकी पढ़ाई समाप्त करके मिस डेविड्सन टस्केजीमें आईं। वे अपने साथ उत्तम शिक्षापद्धति, असाधारण नीतिमत्ता, और असीम स्वार्थत्याग भी लेती आईं। टस्केजीके विद्यालयने जो कामयाबी पाई है उसकी नींव देनेमें जितनी सहायता मिस आलिविया ए. डेविड्सनने की है उतनी और किसीने भी नहीं की।

मैं और मिस डेविड्सन दोनों शुरूसे ही स्कूलके भविष्यका विचार करने लगे। विद्यार्थी पुस्तकी विद्या चटपट ग्रहण कर अपने मनका विकाश करने लगे; परन्तु उनका जीवन सुदृढ़ नींव पर संगठित करनेके लिए यह आवश्यक था कि पुस्तकी विद्याके अतिरिक्त भी कुछ किया

जाय । छात्रोंमें ऐसे विद्यार्थी बहुत थे जिन्हें घरपर अपने शरीरकी रक्षा और उन्नतिक विषयमे कुछ भी सिखलाया नहीं गया था । टस्केजीके छात्रावास छात्रोके निजी घरोसे अच्छी हालतमे न थे । उन्हे मुँह हाथ धोना, नहाना, कपडे साफ रखना इत्यादि बाते भी सिखलानी आवश्यक जान पडी । क्या खाना चाहिए, किस तरह खाना चाहिए, और कमरोको कैसे साफ रखना चाहिए यह भी सिखलानेकी आवश्यकता थी । इन सब बाताको छाड उन्ह किसी व्यवसायकी अमली तालीमके साथ साथ उद्यम, मितव्यय आर किफायतशारीकी ऐसी आदते लगा देनी थी जिनस उन्हें आग चलकर जीविकाक लिए कभी किसीके सामने हाथ न पसारना पड । कवल पस्तकी विद्या इनके बदले हम उन्हें सब बातोका यथार्थ ज्ञान दना चाहते थ ।

हमारे विद्यालयम आनेवाले छात्र प्राय एसी जगहोस (देहातासे) आते थे जहाँ जीविकाका एक मात्र साधन खती ही था । गल्फ स्टेटके फी सैकडा ८४ लाग खती पर बसर करत थ । इस लिए हम लोगोका शिक्षा देनेमे इस बातपर ध्यान दना पडता था कि हमारी शिक्षासे एसा न हो कि हमारे छात्र खतीस भाग कर शहरमे रहनकी लालचमे आजायें । हम लोग चाहत थे कि हमारे छात्र इस याग्य हा जायें कि व शिक्षक बन कर अपने गाँवाम वापिस जा खतीकी उन्नति कर ओर अपने भाइयोकी बौद्धिक नेतिक तथा धामिक बातामे–विचारामं नवीन जीवन और नया जाश डालन लगे ।

परन्तु यह सब कैसे हा ? हमार पास ता काफी जगह भी न थी । वही पुराना मकान आर गिरिजाघर नीग्रा लागाकी कृपासे मिल गया था । पर उससे क्या होता ? विद्यार्थियाकी सख्या दिनादिन बढती जाती थी । जेसे जेस नय नय विद्यार्थी आते थे आर हम लाग भी गाँव-देहातोम घम कर लोगाकी हालत देखते थे, हमको यह पता लगता था

कि जिन लोगोंके उद्धारके लिए हम इन छात्रोंको शिक्षित करानेकी चेष्टा कर रहे हैं, उनकी ज़रूरतें बहुत हैं और हम लोग उनमेंसे एकाध ही रफ़ा कर सके हैं ।

गाँवोंसे आये हुए विद्यार्थियोंसे बातचीत कर हम लोगोंने यह मालूम किया कि उनमेंसे बहुतेरे इस लिए शिक्षार्थी हुए थे कि हाथसे काम न न करना पड़े; मेहनत करनेको वे नीच काम समझते थे ।

धीरे धीरे इसी टूटे-फूटे मकानमें तीन महीने बीत गये । इसके बाद पता लगा कि टस्केजीसे अनुमान डेढ़ मील फ़ासले पर एक ज़मीन बिकाऊ है । गुलामीके दिनोंमें यहाँ गुलामाबाद था । वह मकान जिसमें गुलामोंका मालिक रहता था, जल-बलकर ख़ाक हो चुका था । ख़ैर, हम लोग वह ज़मीन देखने गये; देखकर यह विश्वास हो गया कि स्कूलके लिए इससे अच्छी जगह जल्द न मिलेगी ।

पर यह जगह हम लोग लें तो कैसे लें? इसका दाम तो बहुत थोड़ा अर्थात् सिर्फ़ पाँच सौ डालर था । पर हमारे लिए एक डालर भी बहुत था । अगर यह कहिए कि किसीसे कर्ज़ लेते तो हमारे जैसे अजनबीको दे कौन ? जगहके मालिकने यहाँ तक मंजूर कर लिया था कि आधी रकम नक़द दीजिए, और आधी एक सालके अन्दर देनेसे भी काम चल जायगा । ज़मीनके मुकाबलेमें ५०० डालर कीमत बहुत थोड़ी थी; पर जिसके पास कुछ है ही नहीं उसके लिए तो ज़्यादा ही कहनी चाहिए ।

आखिर बहुत सोच समझकर मैंने हैम्पटन-विद्यालयके खजांची जनरल जे. एफ. बी. मार्शल साहबको एक पत्र लिखा । उसमें मैंने सब हाल लिख दिया और खास अपनी जिम्मेदारी पर ढाई सौ डालर उधार देनेकी प्रार्थना की । कुछ ही दिनोंमें उनका जवाब आया । उसमें लिखा था–" हैम्पटन-विद्यालयका धन किसीको कर्ज़ या उधार

देनेका मुझे अधिकार नहीं, पर मै अपनी बचतमसे बडी खुशीके साथ आपको यह रकम दगा ।

इस प्रकार एकाएक इस धनके मिल जानसे मझे बडा आश्चर्य हुआ, और आनन्द भी हुआ । अबतक एक साथ सौ डालर कभी मेरे हाथ नही आये थे, इसलिए यह जनरल माशल्स उधार मागी हइ रकम मने बहत बडी जान पडी । रकम अदा करनकी जिम्मदारी भी मुझ ही पर होनेसे मेरा चित्त अस्थिरसा हो उठा ।

स्कूलका नये स्थान पर ले जानेम मैने बडी फरता की । जिस वक्त यह जगह खरीदी गइ उस वक्त वहा चार कोठरिया था—एक भाज नघर, एक पुराना रसोइघर एक अस्तबल और एक पराना मर्गीखाना । इन कोठरियोंका कामम लाने लायक बनानक लिए एक दो सप्ताहसे आधिक समय नही लगा अस्तबल साफ सथरा कर वहा सबक सना-नेका कमरा बना और फिर मर्गीखाना भ इसी तरह कामम लाया गया।

एक दिनकी याद आती ह कि सबेर मैन अपने पासके एक नीग्रो मददगारस कहा कि अब हमारा स्कूल इस कदर बढ चला हे कि मुर्गीखाना भी काममे लाना पडगा उसकी सफाई करनम तुम्हारी मदद होनी चाहिए । इसपर उस बडा ताज्जुब हुआ ओर उसने पूछा, "आप कहते क्या ह ? क्या आप दिन दहाडे सबके सामने मुर्गीखाना साफ करंग ?" नीग्रो समाजम लोकनिन्दाका इतना भय था !

यह नई जगह स्कूलके काम लायक बनानेमे हम लोगोंन ही शुरूसे अखीर तक सब काम किये—कुलियोका जरूरत न हुई । दोपहरको स्कूलसे छुट्टी होने पर विद्यार्थियोन स्वय यह काम किया । कमर तेयार हो चुकने पर, मेरा यह विचार था कि कुछ जमीन साफ करके रख दनी चाहिए ताकि उसम कुछ बोया जा सके । यह तो मने ताड

लिया कि मेरा यह विचार हमारे युवा विद्यार्थियोको पसन्द न हुआ। जमीन साफ करना और शिक्षा इन दोनोंके बीचका सम्बन्ध समझना उनका काम न था। इन विद्यार्थियोमें बहुतेरे शिक्षक भी थे। उन्होने यह सोचा कि अगर हम लोगोने झाड़ू देकर जमीन ही साफ की तो हमारी इज्जत ही क्या रह गई ? इसका जबाब देना फिजूल था इस लिए मै खुद रोज स्कूल बन्द होने पर कुदारी लेकर मैदानमे जाने लगा। जब उन्होने मुझे मिट्टी खोदते हुए देखा तो उन्हे आश्चर्य हुआ। उन्होने जान लिया कि मै काम करनेमे न किसीसे डरता हूँ ओर न किसीसे लजाता हूँ। यह देखकर वे लोग भी बडे उत्साहसे मेरी मदद करने लगे। रोज दोपहरके वक्त काम करके हम लोगोने २० एकड जमीन साफ करके—कमा करके रख दी और उसमें बीज बो दिया।

इधर मिस डेविड्सन जमीनका कर्ज अदा करनेके लिए रुपया इकट्ठा करनेकी फिक्र मे थी। पहली कोशिश उनकी यह थी कि उन्होने एक मेला खडा कर दिया ओर फिर घर घर जा कर इस मेलेमे बिकने लायक केक, मुर्गी, रोटी, पक्कान्न आदि चीजोंका, सहायताके रूपमें देनेके लिए लोगोंसे प्रार्थना की और लोगोने भी हरतरहसे सहायता करनेका वादा किया। काले नीग्रो लोग तो अपनी शक्तिभर सब कुछ देते ही थे, पर मुझे यहाँ यह बतलाना है कि कभी ऐसा भी मौका नही आया कि मिस डेविड्सनने किसी गोरेसे मददकी प्रार्थना की हो और उस गोरेने उनकी मदद न की हो। इस प्रकार गोरे परिवारोने भी नाना प्रकारसे स्कूलके साथ अपनी सहानुभूति प्रकट की।

कई बार ऐसे मेले किये गये, और उनसे कुछ रकम भी जमा हुई। दोनो जातिके लोगोसे नकद रुपये वसूल करनेकी कोशिश भी की गई, और जिन जिन सज्जनोसे प्रार्थना की गई उन सब ही लोगोंने

कुछ न कुछ दान दिया । जिन बूढे नीग्रो लोगोंने अपना यौवन गुलामीमें बिताया था उनके दानकी प्रशसा आनिर्वचनीय है । उन्होंने जो दान दिया, वह अपने हृदयसे काट कर दिया, इसमे सन्देह नही । वे कभी कुछ सेन्ट देते, कभी अपनी चादर दे डालते और कभी कभी तो अपने खेतसे ऊख काटकर ला देते ! इस तरह धन इकट्ठा किया जा रहा था, इसी समय एक नीग्रो वृद्धा मुझसे मिलने आई । उससे चला नही जाता था । डडेके सहारे चलती हुई वह किसी तरह मेरे कमरेमे आई । उसके शरीर पर कपड नही, कपडोकी धज्जियॉ थी, पर बिलकुल साफ थी । उसने मुझसे कहा, "वाशिगटन, ईश्वर जानता है, मेरी उम्रका अच्छा अश तो गुलामीम बीत गया । उसे यह भी मालूम है कि मे कगाल ओर मरख हूँ । पर मे यह जानती हूँ कि मिस डेविड्सन और तुम दोनो क्या कर रहे हो । तुम दोनों हमारी जातिमे उत्तम स्त्रियॉ ओर पुरुष उत्पन्न करनेका प्रयत्न कर रहे हो । मेरे पास धन नही, पर मेरे पास ये छ अडे हे मै चाहती हूँ इन्हें तुम लो और लडके लडकियाका पढानम इनका उपयाग करा । "

टस्केजीमे स्कूल खुला तबसे अबतक मुझे उस स्कूलके लिए कितने ही दान लेनेका अवसर मिला है परन्त इस वृद्धाके दानसे मेरे अन्त -करणमे करुणाका जैसा कुछ भाव उठा उसका अनुभव फिर कभी न हुआ ।

नवाँ परिच्छेद ।

घोर चिन्ताके दिन ।

अलबामा रियासतमे आकर रहने पर बडे दिनोमें मुझे वहाँके लोगोकी रहन सहनका वास्तविक परिचय पानेके लिए और भी अधिक अच्छा अवसर मिला। बडे दिनोका जलसा आरभ होनेसे एक रोज पहले ही शहरके बालक दल बाँधकर, घरघर घूमकर, बडे दिनोका उपहार माँगते फिरते थे। उस दिन दो बजे रातसे शामके पाँच बजेतकके बीचमे कमसे कम पचास टोलियाँ हमारे यहाँ उपहार माँगने आई होगी। दक्षिण प्रान्तके इस भागमे अब भी यह रिवाज चला जाता है।

गुलामीके दिनोमे, प्राय सभी दक्षिणी रियासतोमे बडे दिनोके अवसर पर काले लोगोको पूरे एक सप्ताहकी छुट्टी मिला करती थी। इस छुट्टीभर सभी स्त्रीपुरुष शराबके नशेमे चूर रहते थे। बडे दिनका त्योहार आरभ होनेसे एक रोज पहले ही इन लोगो पर दिवालीका रग चढ जाता था और उसी दिनसे ये लोग सब काम धन्धा छोडकर मारे खुशीके मतवाले हो जाते थ, यहाँ तक कि बडे दिनोंमें एक भी काला आदमी किसी तरहका काम करनेके लिए राजी न होता था। जो लोग वर्ष भरमें कभी शराबको छूते तक न थे वे भी इन दिनो बोतल पर बोतल बेखटके चढा जाते थे। लोग मस्त हो कर आनन्द करते थे और खूब शिकार खेलते थे । इस तरह बडे दिनोंकी पवित्रताको लोग एकदम भूलसे गये थे।

पहले वर्षके बडे दिनोंमें मै टस्केजीके बाहर एक बडा गाँव देखने गया।

ऐसे पवित्र और आनन्द देनेवाले त्योहारमे इन कगाल और गवॉर भाइयोंको मौजके सामान जुटाते हुए देखकर मुझे दया आती थी। एक झोपडीमे जाकर देखा कि पॉच लड्के थोडेसे पटाके आपसमें बॉट रहे थे। एक दूसरी झोपडीमे ६–७ आदमी थे जिनके पास पॉच आने मूल्यकी अदरककी चपातियॉ थी। एक परिवारम थोडेसे गन्ने ही थे। एक स्थान पर एक पादरी महाशय अपनी स्त्रीके साथ बैठे शराब चढा रहे थे। एक जगह नास्तिक रगीन कार्डोको ही लोग बडे कुतूहलस देख रहे थ। एक जगह एक नया तमचा खरीदा गया था। उत्सवकी और कोई खास बात नही दिखाई दी इसके सिवाय कि सब लोग काम-धाम छोडकर अपनी अपनी झोपडीमे स्वर्ग देखा करत या इधर उधर व्यर्थ घूमा करते थ। रातके वक्त वे एक तरहका जगली नाच नाचते थे और शराब पीकर पिस्तौल और दूसरे हथियार लेकर दगा फसाद किया करते थे।

इसी समय मुझ एक बूढा नीग्रो उपदेशक मिला। उसने बाबा आदमका किस्सा कह कर मझ यह समझाना चाहा कि परमेश्वर उद्योगसे अप्रसन्न होता ह और इस लिए उद्योग करना बडा भारी पाप है। इसी लिए यह बढा जहॉ तक होता, कामसे भागता था। बडे दिनोमे कामके पापसे बचे रहनेके कारण यह बहुत ही प्रसन्न मालूम होता था।

हम लोगोने अपने स्कूलके लडकोको बडे दिनोंका महत्त्व और उन्हें मनानेकी रीति समझानेका बहुत प्रयत्न किया। इसका परिणाम भी विद्यार्थियो पर अच्छा हुआ और मै यह भी कह सकता हूँ कि जहॉ जहॉ हमारे ग्रेज्युएट विद्यार्थी है वहॉ वहॉ उन्होने इस बडे दिनोके त्योहार पर एक नई रोशनी डाल दी है।

अब बडे दिनोमें हमारे विद्यार्थी वह आनन्द मनाते है जिससे

अनाथ और अभागे लोग मदद पाकर सन्तुष्ट होते है। एक बार हमारे विद्यार्थियोंने अपनी यह छुट्टी एक पचहत्तर वर्षकी बुढियाके लिए एक झोपडी बनादेनेमे खर्च कर दी! एक दूसरे अवसर पर मैने गिरजेमें कहा था कि एक अनाथ विद्यार्थी कोट न होनेके कारण जाडेसे बहुत कष्ट पा रहा है। दूसरे ही दिन मेरे पास उस विद्यार्थीके लिए दो कोट आ गये!

मे कह ही चुका हूँ कि टस्केजी और आसपासके गोरे लोग इस स्कूलकी मदद किया चाहते थे। मै भी सदा इस बातकी चेष्टा किया करता था कि यह विद्यालय सर्वप्रिय हो—कोई भी इसे पराये लोगों-की सस्था न समझे। मेने विद्यालय भवनके लिए काले—गोरोसे सबसे चन्देकी प्रार्थना की थी। इस प्रार्थनासे ही उनमे विद्यालयके सबधमे एक प्रकारका आत्मीय भाव प्रत्यक्ष हो गया था—वे इस बातको समझने लगे थ कि विद्यालयसे हमारा भी कुछ नह और नाता है।

सर्वसाधारणको यह समझानेकी चेष्टा की गई कि यह विद्यालय आपका है। आप सब लोग इसकी सहायता कीजिए। इसके साथ ही विद्यालयस हानवाल लाभ उन्हे बतलाये गय। तब सभी लोग विद्याल-यके पक्षमे हो गए।

यहाँ मे यह भी कहना चाहता हूँ—इसका सुबूत भी आगे चलकर दूँगा—कि इस समय टस्केजी विद्यालयकी मदद करनेवालोमे टस्केजी, अलबामा और समस्त दक्षिणके गोरे अधिवासियोके बराबर मदद करनेवाला कोई नही है। शुरूसे ही मै अपने भाइयोको यह नसीहत देता आया हूँ कि काले गोरेका ख्याल न कर अपने पडोसियोंको, किसी प्रकारकी गॉठ न रखकर शुद्ध हृदयसे, अपने मित्र बना लो। मैने उन्हें यह भी बतलाया है कि किसी प्रश्नके बारेमें या निर्वाचनके सँबधमे सम्मति देते हुए स्थानीय हिताहितका विचार करके—न कि

किसी जातिका विरोध करनेके लिए—अपने मित्रोंको वोट देनेकी सलाह देनी चाहिए।

स्कूलके लिए खरीदी हुई भूमिका ऋण चुकानेके हेतु लगातार कई महीने तक उद्योग हाता रहा। तीन महीनाम जनरल मार्शलका ऋण चुकाने योग्य धन इकट्ठा हा गया और फिर ओर दो महीन परिश्रम करनेसे पूरे पाँच सौ डालर जमा हा गय। इससे हमार नाम सौ एकड जमीनका कागज हो गया। अब हम लागोंको बडा सन्तोष हुआ। सतोष कवल इसी बातका न था कि स्कलकी एक निजी जगह हो गई, किन्तु सबसे अधिक सन्तोषका विषय यह था कि इस धनका अधिक अश टस्कजाक ही गारे और काले लोगोंस सग्रह किया गया था। प्राय मला जलसो बठका आर छाट छाट फुटकर दानोंसे यह सग्रह हुआ था।

धन एकत्र कर चकन पर हम लागान खती बारीक काममे हाथ लगाया। इससे दा लाभ हानवाल थे। एक ता स्कूलके लिए कुछ बँधी आमदनी हा जाता और दूसर छात्राका भी कृषिकर्मका शिक्षा मिल जाती। टस्कजा स्कूलके सभा काम वन्ध लोगोंकी असला आवश्यकताओंकी पूर्त्ति करनक लिए ही समय ओर साधनक अनुसार आरभ किये गये हे। प्रारभ खतीस हा किया गया क्योंकि सबसे पहले पेटकी चिन्ता दूर करनका प्रयत्न होना चाहिए।

बहुतसे विद्यार्थी स्कूलम भरती हाकर अधिक दिन ठहर नही सकते थे क्योंकि भाजन-खर्चके लिए उनक पास पसा नही रहता था। ऐसे विद्यार्थियोंको सालमें नौ महीन विद्यालयम रह सकने योग्य बनानेके लिए ही औद्योगिक शिक्षाकी तजवीज करनेकी अवश्यकता हुई।

टस्कजी विद्यालयको सबसे पहले जा पशु मिला वह एक गोरे आदमीका दिया हुआ एक अन्धा ओर बूढा घोडा था। पर आज

वहाँ दो सौसे अधिक घोड़े, टट्टू, खच्चर, गायें, बैल, बछड़े, और अनुमान सातसौ सूअर और बहुतसी भेड़-बकरियाँ हैं।

जब भूमिका ऋण चुका दिया गया, खेती आरंभ हो गई और पुराने कमरोंकी मरम्मत हो चुकी तब हम लोगोंने विद्यालयके लिए एक नया भवन बनवाना आवश्यक समझा; क्योंकि विद्यार्थियोंकी संख्या प्रतिदिन बढ़ती ही जा रही थी। हम लोगोंने बहुत सोच समझ कर भावी भवनका नकशा तैयार किया और हिसाब लगा कर देखा कि इसमें छः हज़ार डालर लगेंगे। इतनी बड़ी रकम कहाँसे मिले? पर हम यह जानते थे कि दोमेंसे एक बात अवश्य होगी—या तो स्कूल उन्नति करके आगे बढ़ेगा या पीछे हट जायगा। यदि आगे बढ़ना है तो विद्यार्थियोंके लिए स्थानका प्रबन्ध करना ही पड़ेगा; क्योंकि यदि हम लोग विद्यार्थियोंकी रहन सहन पर पूरी निगरानी न रख सके तो हम लोगोंके सारे परिश्रमों पर पानी फिर जायगा और यह निगरानी स्थानका यथेष्ट प्रबन्ध हुए बिना हो नहीं सकती।

इसी समय एक ऐसी घटना हुई जिससे मुझे बड़ा सन्तोष और साथ साथ आश्चर्य भी हुआ। जब नगरनिवासियोंको यह बात मालूम हुई कि हम लोग एक नया भवन बनवानेकी फ़िक्रमें हैं तब एक लकड़ीके कारखानेका गोरा मालिक मेरे पास आया और कहने लगा—"भवनके लिए लकड़ीका जितना समान लगेगा वह सब मैं यहाँ लाकर खड़ा किये देता हूँ। उसका मूल्य मैं अभी नहीं चाहता। जिस समय आपके हाथ रुपया आजाय उस समय दे दीजिएगा। इसके सिवाय मैं आपकी कोई ग्यारंटी या स्वीकारता नहीं चाहता कि रुपया आने पर मुझे दे दिया जायगा।" मैंने साफ़ साफ़ कह दिया कि मेरे पास इस वक्त एक पैसा भी नहीं है। इस पर भी वह यही कहता रहा कि

"लकडी लाकर मै यहॉ रखवा देता हूँ।" पर मैने उसे ऐसा करनेसे रोका और जब मेरे हाथ कुछ रुपया आ गया तब लकडी लाने दी।

अब फिर मिस डेविड्सनने काले-गोरे दोनोंसे चन्दा लेना आरभ किया। इस नये भवनके समाचारसे नीग्रो लोगोको जो आनन्द हुआ मैने नही देखा कि दसरे लोगोको कभी किसी बातसे वैसा आनन्द हुआ हो। एक रोज इमारतके लिए धन किस तरह सग्रह किया जाय इस विषयमे विचार करनेको एक सभा हो रही थी। उसमे बारह मीलसे चल कर एक बूढा नीग्रा आया जो अपने साथ बेलगाडी पर एक बडा सूअर लाया था। भरी सभामे खडे होकर उसने कहा, "मै निर्धन हूँ, इस लिए धन नही द सकता। पर भवनके व्ययके चन्देमे मै यह सूअर देता हूँ। मझे आशा ह कि जिन लोगोको अपनी बिरादरीसे प्रेम है ओर जिनमें कुछ भी स्वाभिमान है, व अबकी सभामे एक एक सूअर अवश्य दान करेगे।" इस सभामे ओर कितने ही लोगोंने प्रतिज्ञा की कि इमारतफडके लिए हम अपनी कमाईके कुछ दिन अर्पण कर देवेगे।

जब, टस्केजीसे पूरा चन्दा उतर चुका तब, मिस डेविड्सनने विशेष धन सग्रह करनेके लिए उत्तरकी ओर जाना निश्चय किया। कुछ सप्ताहो तक वे लोगास मिल्ती जुलती रही ओर पाठशालाओं, गिरजों तथा अन्य सभा समितियोमे वक्तृता देती रही। चन्दा करनेमे उन्हे बडी कठिनाई झेलनी पडी, क्योकि स्कूलकी विशेष प्रसिद्धि उस ओर नही हुई थी। तथापि मिस डेविड्सनको वहॉके बडे बडे लोगोका चित्त अपनी सस्थाकी ओर आकर्षित करनेम बहुत बिलम्ब नही लगा। मिस डेविड्सन जिस नाव (अगन-बोट) पर सवार होकर उत्तर प्रान्तकी भूमि पर उतरी उसी नाव पर, न्यू यार्ककी एक महिलासे उनका परिचय हो गया। उत्तर प्रान्तके चन्दा देनेवालोकी नामावलीमें इन्हीका पहला नाम है। नाव पर दोनोमे परिचय हुआ, बातचीत शुरू हुई

और टस्केजी-विद्यालयकी बात चली। टस्केजी-विद्यालयके प्रयत्न से ये इतनी प्रसन्न हुई कि चलते वक्त मिस डेविड्सनको पचास डालरका एक चेक देती गई। विवाहसे पहले और इसके उपरान्त भी मिस डेविड्सनने पत्र व्यवहार करके और लोगोंसे स्वय मिल करके भी उत्तर दाक्षिणमें धन सग्रह करनेका काम बराबर जारी रक्खा। इसके साथ ही वे टस्केजी विद्यालयकी देखरेख और अध्यापनका कार्य भी करती थीं। इसके अतिरिक्त वे टस्केजीके ओर आसपासके बढे लोगोंमे काम करती और टस्केजीम एक रविवार—पाटशाला भी चलाती थी। उनमें शारीरिक बल अधिक नही था पर विद्यालयक लिए दिन रात परिश्रम करते रहनेमे ही उन्हे आनन्द मिलता था। धन सग्रह करनेके लिए घर घर घमकर वे इतनी थक जाती थी कि रातको अपने कपडे उतारना भी उनकी सामर्थ्यके बाहरका काम हो जाता था। बोस्टनमे एक महिलासे ये मिली थी। उस महिलाने मुझसे कहा—" जब मिस डेविड्सन मुझस मिलने आइ तब म किसी काममे फँसी थी, इस लिए मैने उनस कुछ समय तक ठहरनेक लिए कहा। थाडी देर बाद जब मै बाहरके कमरेमे आई तो देखा कि उन्ह थकावटसे नीद आ गई है।"

सबसे पहले, मिस्टर ए एच पार्टर नामक एक सज्जनके नाम पर —जिन्होने एक बहुत बडी रकम दी थी—' पोर्टर-हाल ' नामका भवन बनाया गया। जिन दिनो इस भवनका काम चल रहा था उस समय रुपयेकी बडी तगी मालम हुई। एक साहूकारसे मैन वादा किया था कि अमुक दिन चार सौ डालर आपको दूँगा पर उस दिन सबेरे मेरे पास एक पैसा भी न था ' जब दस बजे डाक आई तब उसमें मिस डेविड्सनका भेजा हुआ पूरे चार सौ डालरका एक चेक मेरे हाथ आया ! ऐसी घटनाये मेरे जीवनमे प्राय हुई है। अस्तु। ये जो चार सौ डालर मिस डेविड्सनने भेजे थे सो बोस्टनकी दो महिलाओंने

दिये थे। दो वर्ष बाद, जब कि टस्केजी-विद्यालयका काम बहुत बढ़ गया था और हमलोग धनके अभावसे भविष्यके विषयमें उदास और हताश हो रहे थे, इन्हीं दो महिलाओंने छः हज़ार डालर भेजकर हमारी मदद की थी। इस मददसे हम लोगोंको जो आश्चर्य हुआ और जो उत्तेजन मिला उसका वर्णन करनेकी लेखनीमें सामर्थ्य नहीं। इसके उपरान्त ये ही दो स्त्रियाँ चौदह वर्षों तक बराबर छःसौ डालर अर्थात् अठ्ठारह हज़ार रुपया वार्षिक भेजकर विद्यालयकी सहायता करती रहीं।

पहला भवन बन चुकने पर अब दूसरा उठानेकी बारी आई। विद्यार्थी पढ़ाई हो चुकनेके बाद प्रतिदिन नियमपूर्वक उसकी नीव खोदने लगे। अभी उन लोगोंका यह संस्कार मिटा नहीं था कि हाथसे काम करना अपना मान घटाना है। एक विद्यार्थीने एक दिन कह भी डाला था कि " हम लोग यहाँ पढ़ने आते हैं, मज़दूरी करने नहीं। " पर हाँ, धीरे धीरे यह कुसंस्कार मिटता जाता था। कुछ दिनोंके परिश्रमसे नीव तैयार हो गई और नीवका पत्थर देनेके लिए दिन निश्चित हो गया।

दक्षिणका यह भाग गुलामगीरीका केन्द्रस्थान था। कृष्णकटिबन्धके इस स्थानमें इमारतकी नीव रख दी गई। गुलामगीरीको बन्द हुए अभी केवल १६ वर्ष हुए थे। सोलह वर्ष पहले कोई नीग्रो यदि लोगोंको पुस्तकों द्वारा शिक्षा देनेका साहस करता तो समाज और राज्य दोनों ही उस पर टूट पड़ते; परन्तु उस दिन उसी दासत्वके केन्द्रस्थल पर अज्ञान-नाशिनी भगवती सरस्वतीके सुरम्य निकेतनकी नीव-शिला बिठाई गई। सचमुच ही वह समारम्भ और वसन्तका वह प्राकृतिक सौन्दर्य अपूर्व था। संसारके शायद ही किसी स्थानको ऐसा मनोहर दृश्य देखनेका अवसर मिला हो।

इस अवसर पर उस प्रदेशके शिक्षाविभागके सुपरिंटेंडेंट आनरेबल वाडी थामसनकी मुख्य वक्तृता हुई। कोणशिलाके इर्दगिर्द शिक्षक, विद्यार्थी,

उनके मातापिता या मित्रमंडली, उस प्रदेशके गोरे अधिकारी, आस-पासके मुख्य मुख्य गोरे रहीस और अनेक नीग्रो स्त्रियाँ तथा पुरुष, जिन्हें कुछ वर्ष पहले ये ही गोरे अपने गुलाम समझते थे, एकत्रित हुए थे। दोनों ही जातियोंके लोग कोणाशिलाके पास अपना कुछ न कुछ स्मारक या चिह्न रखनेके लिए बहुत ही उत्सुक दिखाई देते थे।

भवन बन चुकनेके पहले हम लोगोंको कई बड़ी बड़ी कठिनाइयोंसे सामना करना पड़ा। बिलपर बिल आ धमकते थे और उनका रुपया चुका न सकनेके कारण हम लोग बहुत ही दुखी होते थे। जिसे इस तरहके मौके बारबार नहीं आये हैं कि स्कूलके लिए इमारतें तो बनवाना है पर यह मालूम नहीं है कि धन कहाँसे आयगा, वह हम लोगोंकी दुरवस्थाकी और अड़चनोंकी पूरी पूरी कल्पना कदापि नहीं कर सकेगा। मुझे टस्केजीके वे दिन याद आते हैं जब मैंने इस फ़िक्रमें कि धन कहाँसे लाया जाय, बिस्तरे पर करवटें बदलते हुए सारीकी सारी रातें बिता दी हैं। मैं जानता था कि यह समय मेरी जातिकी परीक्षाका है—समय इस बातको बतलावेगा कि हम नीग्रो लोगोंमें कोई स्वतंत्र विद्यापीठ चलानेकी सामर्थ्य है या नहीं। मुझे मालूम था कि यदि इस कार्यमें मैं हारा, तो सारी जातिको इसका कुफल चखना पड़ेगा। मुझे यह भी विदित था कि नीग्रो जाति बदनाम है और इसलिए हमारे प्रयत्न भी 'बालू पर भीत' समझे जा रहे हैं। मैं जान चुका था कि यदि ऐसा ही कोई दुस्साध्य कार्य गोरे लोग उठा लेते तो लोगोंको उनके कामयाब होनेमें ज़रा भी सन्देह न रहता; और इसके विपरीत यदि हम लोग कामयाब हुए तो लोग आश्चर्य करेंगे। इन बातोंके बोझेने हम लोगोंको बुरी तरह दबा रक्खा था।

इस दुरवस्थामें भी मैं टस्केजी नगरके जिस किसी गोरे या नीग्रो मनुष्यके पास गया उसने कुछ न कुछ अवश्य सहायता की; ऐसा एक भी मौका नहीं आया जब किसीने इंकार कर दिया हो। कई बार ऐसा

हुआ कि सैकडो रुपयाके बिल आये और उनका रुपया चुकानेके लिए मुझे गाँवके दस पाँच सज्जनोसे छोटी छोटी रकमे उधार लेनी पडी। पर एक बातका म सदा ध्यान रखता था कि स्कूलकी साख बनी रहे, और इस प्रयत्नमे मुझे बराबर सफलता प्राप्त हुई।

मि० कम्बल जिन्हाने जनरल आर्मस्ट्रागको लिखकर मुझे टस्केजी-स्कूलके लिए बुलाया था, बडे ही योग्य पुरुष थे। उनका एक उपदेश मै कभी न भूलूँगा। टस्कजीका काम शुरू हाने पर एक दिन उन्होने पितृतुल्य स्नेहसे कहा था—"वाशिगटन, यह सदा स्मरण रखना कि साख ही पूँजी है।"

एक बार धनाभावके मारे जब हमलाग बहुत ही तग हुए तब मने जनरल आर्मस्ट्रागका अपनी सारी दशा लिख भजा। उन्हाने तत्काल ही अपनी सारी बचतका चेक मरे पास भज दिया! इस प्रकारसे जनरल आर्मस्ट्रागने टस्कजी विद्यालयकी कई बार मदद की है। यह बात शायद मेने इससे पहले सर्वसाधारणपर जाहिर नही की थी।

स्कूलका प्रथम वर्ष समाप्त हान पर, १८८२ क ग्रीष्म ऋतुमे माल्ड-नकी मिस फैनी ए स्मिथक साथ मेरा विवाह हुआ। शरद्‌तुमे हम दोनो टस्केजीम मकान लेकर एक साथ रहने लग। स्कूलमे इस समय चार शिक्षक थे, उन्हे भी इसी मकानमे रहनका जगह दी गई। मेरी सहधर्मिणी हैम्पटन-विद्यालयकी ग्रज्युएट थी। स्कूलक लिए इन्होने भी जीतोड परिश्रम किया था। इनके कारण मरा घर सदा हँसताखेलता दिख पडता था। पर दुर्भाग्यवश १८८४ क मई मासमे, पोशिया एम वाशिगटन नामकी एक कन्याको छोडकर, य सुरलोकको सिधार गई।

आरभसे ही मरी सहधर्मिणी तन, मन और धनसे विद्यालयकी सहायता करती थी। उनके विचार और अभिलाषाये सर्वथा मेरी ही जैसी थी, पर विद्यालयकी कली खिलनस पहले ही उन्हाने इह लोकसे प्रस्थान कर दिया।

दसवाँ परिच्छेद ।

टेढ़ी खीर ।

टस्केजी-विद्यालयका आरम करनेसे पहले ही मैंने यह विचार कर रक्खा था कि इस विद्यालयके द्वारा विद्यार्थियोंको खेती बारी और गृहस्थीके कामोंके अतिरिक्त, मकान बनानेका काम भी सिखलाया जायगा। ऐसा करनेम मेरा यह अभिप्राय था कि इन कामोको सिखलाते हुए विद्यार्थियोको काम करनेकी नई पद्धतियाँ भी बतलाई जायें जिससे उनके परिश्रमोसे स्कूलका भी लाभ हो और उन्हे भी परिश्रमके महत्त्व, उसके उपयोग और उससे होनेवाले आनन्दका अनुभव हो। इसके सिवाय उनकी मानसिक उन्नति यहातक हो जाय कि वे किसी परिश्रमको आपत्ति या कष्ट न समझ कर परिश्रमके लिए ही परिश्रम करना सीखे। हवा, जल, भाफ, बिजली और अश्वबल आदि निसर्गशक्तियोंको किसतरह उपयोगमे लाना चाहिए, इसकी शिक्षा भी मै उन्हे देना चाहता था।

शुरू शुरूमे बहुतसे लोगोने मुझे विद्यार्थियो द्वारा भवन बनवानेकी चेष्टासे रोक देना चाहा। पर मै अपने विचारोंको बदलनेवाला न था। जिन लोगोने मुझे रोका उनसे मैंने कहा—" मै जानता हूँ कि बाहरके अनुभवी कारीगर जैसा भवन बना देगे वैसा हमारे विद्यार्थी नही बना सकेंगे, पर विद्यार्थियोके हाथों भवन बनवानेसे जो लाभ होगे उनके सामने यह कमी किसी गिनतीमे न रह जायगी। उन्हे जो शिक्षा प्राप्त होगी, अपने बल पर खडे होनेकी जो आदत पडेगी और जो आत्मविश्वास उत्पन्न होगा उसका मूल्य भवनके डौलढाँचेसे बहुत अधिक है।"

जिन लोगोको मेरे इन विचारोमे विश्वास न होता था उनसे मैंने

यह भी कहा कि " हमारे विद्यार्थी निर्धन है, कपास, चावल और गन्ने बेचनेवालोंकी झोपडियोंमें पले हुए है । इसलिए यह मै जानता हूँ कि कारीगरोंकी बनाई हुई सुन्दर हवेलीमें स्थान मिलनेसे उन्हें बडीभारी खुशी होगी, पर मेरा यह विश्वास है कि अपने मकान आप ही बना लेना यदि उन्हें सिखलाया जायगा तो उनके मनोविकासका मार्ग बहुत ही सुगम हो जायगा। भूल होना स्वाभाविक है, पर इन्ही भूलोसे वे आगेके लिए बहुमूल्य शिक्षा भी प्राप्त करेंगे। "

टस्केजी-विद्यालयको स्थापित हुए बीस वर्ष हो गये । इस बीचमे इमारते बनवानेका काम विद्यार्थियो द्वारा ही हुआ है और लगभग चालीस भवन बन चुके ह । इनमेसे चारको छोडकर बाकी सब विद्यार्थियोंके परिश्रमके ही फल है । दक्षिण प्रान्तमे इस समय ऐसे सैकडो आदमी फैले हुए हे जो पहले इसी विद्यालयके विद्यार्थी थे और जिन्हें कारीगरीकी शिक्षा यही पर भवन बनानेके कारण मिली थी ।

पुराने विद्यार्थी शिक्षा समाप्त कर चले जात हे। उनक स्थानमे नये विद्यार्थी आकर उनकी परम्परा सुरक्षित रखते है। इस प्रकार ज्ञान और कौशलका सिलसिला बराबर जारी रहता ह और आज यहाँ तक उन्नति हुई है कि भवन बनानेमे हमारे विद्यालयको किसी बाहरी कारीगर या मजदूरकी आवश्यकता नही पडती, सब काम अर्थात् इमारतोके नक्शे खीचनेसे लेकर इमारते तैयार होने पर उनमे बिजलीकी रोशनी लगा देने तक सब तैयारियाँ हमारे विद्यालयके शिक्षक और विद्यार्थी वहीके वही अपने हाथो कर लेते है ।

ऐसा होनेसे विद्यालयके भवनतकसे विद्यार्थियोका स्नेह हो जाता है। किसी इमारतकी दीवार पर यदि कोई नया विद्यार्थी चाकू या पेन्सिलसे निशान करता हुआ दिखाई देता है तो पुराना विद्यार्थी उससे तत्काल ही कहता है-" खबरदार ! ऐसा काम मत करना। यह हमारी इमारत

है। इसके बनानेमें मैने सहायता की है।" इस प्रकारके शब्द मैने स्वय कई बार सुने है।

विद्यालयके शुरू दिनोमें हम लोगोको ईंटे बनानेके काममें बडी कठिनाई झेलनी पडी। जब खेती बारीका काम चल निकला तब हम लोगोने ईंटे बनानेका विचार किया। अपनी इमारतोंके लिए तो ईंटोकी जरूरत थी ही, इसके अतिरिक्त और भी एक कारण था। टस्केजीमें ईंटें बनानेका कारखाना एक भी न था और इससे वहाँ भी ईंटोंकी बडी माँग थी। हमारे पास न तो धन था और न इस कामका अनुभव ही था। तो भी हमने यह कठिन कार्य हाथमे ले लिया।

ईंटे बनानेका काम गन्दा और कठिन है, इस कारण इसमे विद्यार्थियासे सहायता लना जग टेढी खीर थी। जब वे ईंटें बनानेके काममे लगाये गये तब बहुत घबराये और शारीरिक परिश्रमसे उनका जी हटने लगा। घुटने घुटने भर मिट्टी आर कीचडमे खडे होकर घटो काम करना किसीको भी पसन्द न आया। बहुतसे विद्यार्थी तो कामसे घबराकर विद्यालय छोड गये।

कई जगह देखभाल कर अन्तम एक स्थान पर मिट्टीके लिए गडहा खोदा गया। अबतक मरी यह धारणा थी कि ईंटे बनानेका काम सुगम है, पर जब काम पडा तब मालूम हुआ कि इस काममे भी विशेषकर ईंटें पकानेमे, बुद्धि ओर कोशलकी आवश्यकता है। बडे परिश्रमसे हम लोगोने पचीस हजार ईंटे तैयार करके पजावेमे पकानेके लिए रक्खीं। पजावा दुरुस्त न होनेसे हो, या काफी आग न होनेसे हा, हमारी पहली कोशिश तो बिलकुल ही व्यर्थ गई। इसके बाद हमने दूसरा पजावा तैयार किया। यह प्रयत्न भी खाली गया। इससे विद्यार्थी भी पीछे हटे। तीसरी बार इस विषयकी शिक्षा पाये हुए अनेक अध्यापकाने बडे परिश्रम और उद्योगसे फिर पजावा लगाया। ईंटे पकनेके लिए एक सप्ताह लगता था। चार

पाँच दिन बीत गये और हम लोगोंको यह आशा हुई कि अब शीघ्र ही बहुतसी ईंटें तैयार मिल जायँगी, पर एक दिन आधी रातके समय अकस्मात् पजावा खिसल पडा और हमारे सारे परिश्रमो पर पानी फिर गया।

अब चौथी बार पजावा लगानेके लिए मेरे पास एक डालर भी न बचा। मेरे साथी शिक्षकोंने ईंट बनानेका विचार छोड देनेके लिए मुझसे अनुरोध भी किया। इसी बीच मुझे अपनी एक पुरानी घडीका स्मरण हुआ। मैं समीपके माण्टगामरी नगरमे गया और वहाँ इसे रेहन रखकर फिर पजावा लगानेके लिए पद्रह रुपये ले आया। इन पद्रह रुपयोके बल पर मैने अपने निराश साथियोमे फिर उत्साह उत्पन्न किया और चौथा पजावा फिर लगा दिया। मुझे यह बतलाते हुए आनन्द होता है कि इस बार मेरी ईंटे भलीभाति पक गई। इसके बाद जब तक मेरे पास धन आया तब तक उस घडीके रेहनकी मियाद गुजर गई और मै घडी छुडा न सका पर मुझे इसके लिए कभी दुःख न हुआ।

अब हमारे यहा ईंटोंका कारखाना भी शिल्पविभागका एक विशेष अश हो गया है। इसमे विद्यार्थियो द्वारा जो ईंटे तैयार होती है वे चाहे जैसे बाजारमे कट सकती है। इसके अतिरिक्त, हाथोसे और यन्त्रोकी सहायतासे ईंटे तैयार करनेके काममे कितने ही युवक अच्छी जानकारी रखते है और उन्होने दक्षिणके कई हिस्सोमे यह व्यवसाय जारी कर दिया है।

इंटोंके कामसे मैने गोरो और कालोके सबधके विषयमे एक नई बात सीखी। हमारे विद्यालयकी बनी हुई ईंटे बहुत बढियाँ होती थी, इस लिए विद्यालयसे कोई सरोकार न रखनेवाले गोरे भी उन्हें खरीदने लगे। उनके दिलमे यह बात भी बैठ गई कि विद्यालयकी बदौलत समाजके एक बडे

भारी अभावकी पूर्ति हो रही है। वे यह भी समझने लगे कि नीग्रो शिक्षा पाकर निकम्मे नहीं हो जाते, बल्कि उनसे समाजके सुख और वैभवकी वृद्धि होती है। आसपासके लोग ईंटें खरीदनेके लिए आने लगे, इससे उनसे हमारी जान पहचान बढ़ी और आपसमें लेन देन भी शुरू हो गया। दक्षिण प्रान्तके इस हिस्सेमें हम लोगोंमें जो कुछ अच्छापन दिखाई देता है उसकी जड़ जमानेमें ईंटोंकी शिक्षाने बड़ी भारी मदद की है।

दक्षिणमें जहाँ जहाँ हमारे ईंटें बनानेवाले विद्यार्थी गये हैं वहाँ वहाँ उन्होंने समाजका कुछ न कुछ उपकार करके उसे अपना कृतज्ञ बनाया है। इस प्रकारसे दोनों जातियोंमे परस्पर अच्छा संबंध स्थापित हुआ है।

मनुष्यकी प्रकृतिमें कोई ऐसी बात अवश्य है जिससे वह गुणोंको—फिर वे गुण किसी वर्णके मनुष्यमें क्यों न हों—परख कर उनकी क़दर करता है। मैंने यह भी अनुभव किया है कि बकबकसे कोई काम नहीं होता; जो कुछ होता है, प्रत्यक्ष कार्यसे होता है। नीग्रो लोगोंके विषयमें ही देखिए। उदाहरणार्थ, किसी नीग्रोकी बनाई हुई एक बहुत अच्छी इमारत है। ऐसी इमारत नीग्रो आदमी बना सकता है या नहीं, बनावे तो कैसे बना सकता है, इत्यादि बातों पर एक ग्रन्थ लिख डालनेसे भी जो काम न होगा, वह उस इमारतके देखनेसे हो जायगा।

टस्केजी-विद्यालयमें कई प्रकारकी गाड़ियाँ भी बनती हैं। खेतीके कामोंके लिए और खास विद्यालयके लिए हम इन गाड़ियोंसे काम लेते हैं। ये सब गाड़ियाँ स्वयं विद्यार्थियोंके हाथोंकी बनाई हुई हैं। हमारे यहाँ जो गाड़ियाँ तैयार होती हैं वे बिकनेके लिए भी भेजी जाती हैं। इन गाड़ियोंने भी ईंटोंकी तरह सर्व साधारणको मोह लिया है और

गाडीका काम सीखे हुए विद्यार्थी जहॉ कही गये है वहॉ वे दोनो जातियोके सम्मानभाजन हुए है । जिस समाजसे हमारे विद्यार्थीका सबध हो जाता है वह समाज फिर उसे अपने गलेका हार बना लेता है ।

जो मनुष्य दूसरोकी आवश्यकताये पूरी कर सकता है, वह, चाहे किसी जातिका हो, उपराचढीमे बाजी मार ही ले जायगा । किसी भाषा-विशेषमे पारगत होकर यदि कोई मनुष्य किसी समाजमे प्रवेश करे तो वहॉ उसकी क्या कदर होगी ? हॉ, ईटे, घर ओर गाडियोंका काम जाननेवालेकी कदर जरूर होगी । बात यह हे कि जिस मनुष्यकी सहायतासे समाजका कोई अभाव पूरा होता है, समाज उसीका आदर करता है ।

ईटें पकानमे जब हम लोगोको पहली बार कामयाबी हुई, तब हम लोगोने यह काम विद्यार्थियोंको सिखलानेके लिए ओर भी अधिक जोर दिया । इस बार तक आसपासके गॉवोंमे ओर नगरोमे यह बात प्रसिद्ध हो चुकी थी कि टस्कजी विद्यालयमे प्रत्येक विद्यार्थीको कोई न कोई शिल्पव्यवसाय या धन्धा सिखलाया जाता है, चाहे वह विद्यार्थी अमीर हो या गरीब । इस पर कई विद्यार्थियोके मातापिताओने चिट्ठिया भेजकर बडा विरोध किया ओर कुछ तो विरोध करनेके लिए स्वय ही चल आये । नये भरती होनेवाले विद्यार्थियोके मातापिताओने भी किसी न किसी रूपमे यह प्रार्थना की कि हमारे लडकोको सिवाय पुस्तके पढानेके ओर कुछ भी न सिखलाया जाय ! पढाईमे बडी बडी पुस्तकोके ढेर ओर उनके बडे बडे नाम देखकर ही विद्यार्थी ओर उनके माता पिता प्रसन्न होते थे ।

मेने इस विरोध पर कुछ भी ध्यान न दिया । पर हॉ, जब कभी समय मिल जाता था, प्रदेशके भिन्न भिन्न स्थानोमे जाकर विद्यार्थियोके अभिभावकोको शिल्पशिक्षाका महत्त्व ओर उससे होनेवाले लाभोका

परिचय करा देनेमे चूकता नही था। इसके आतिरिक्त, विद्यार्थियोंको भी समय समय पर इसकी महत्ता बतला दिया करता था। शुरू शुरूमें शिल्पाशिक्षासे लोगोंके हृदयमे एक प्रकारका तिरस्कार था, तो भी विद्यार्थियोकी सख्या बढती ही जाती थी, यहाँ तक कि दसरे वर्ष छ महीनोंके भीतर ही अलबामाके भिन्न भिन्न भागों और दूसरे राज्योसे आये हुए विद्यार्थियोकी सख्या डेढ सो पर पहुँच गई थी।

सन् १८८२ के ग्रीष्मकालमे मे अपने साथ मिस डेविड्सनको लेकर नये भवनके लिए धनसग्रह करनेके अभिप्रायसे उत्तरकी ओर गया। रास्तेम मे न्ययार्क नगरमे अपने एक पुराने मुलाकाती पादरीसे एक सिफारिशी चिट्ठी लेनेके लिए ठहरा। परन्तु इस भले आदमीने चिट्ठी देना तो दूर रहा, उलटा मुझे यह समझा देना चाहा कि मै अपने घरका रास्ता लूँ-धनसग्रह करनेके बखेडमे न पडू। क्योकि ऐसा करनेसे लेनेके देने पडेगे—राहखर्च भी न मिलेगा। इस उपदेशके लिए मैंने उसे धन्यवाद दिया ओर अपना रास्ता लिया।

पहला मुकाम नार्थम्पटनम हुआ। होटलवाले तो मुझे ठहरने न देगे इस आशकासे मैंने आधा दिन किसी ऐसे नीग्रो कुटुम्बीका ढूँढनेमे बिताया जिसके यहाँ ठहरनेका और भोजनका सुभीता हो जाय। पीछे मुझे मालूम हुआ कि यदि मै एक होटलमे चाहता तो ठहर सकता था। इससे मुझे बडा आश्चर्य हुआ।

धन तो यथेष्ट मिला, और इसी लिए भवन पूरा तैयार न होने पर भी इस वर्षके 'धन्यवाद पर्व' पर हम लोगोने पोर्टर—हालके ही भजन-मन्दिरमे पहली ईशस्तुति और प्रार्थना की। इस अवसरपर 'धन्यवाद-मत्र' पढनेके लिए भी एक अत्युत्तम व्यक्ति जिनका नाम पादरी राबर्ट सी बेडफोर्ड है, मिल गये। ये विसकानासिनके रहनेवाले एक गोरे आदमी है और उस वक्त माटगोमरी राज्यके काले गिरजेमे धर्मोपदेशक थे।

इससे पहले मैंने कभी इनका नाम भी न सुना था और मिस्टर बेडफोर्ड भी मुझसे इतने ही अपरिचित थे। इन्होंने टस्केजीमें आना और 'धन्यवादपर्व' पर उपदेश देना बड़े आनन्दसे स्वीकार किया। अभीष्ट सिद्धि होनेपर इस प्रकार ईश्वरको धन्यवाद देनेकी प्रथा गोरोंमें तो प्रचलित थी; परन्तु नीग्रो लोगोंके लिए यह एक बिलकुल नई बात थी। इस अवसर पर उपस्थित लोगोंमें अपूर्व उत्साह देख पड़ता था। नये भवनका वह दृश्य, वह उपासनाकार्य और वह दिन लोगोंको भूलनेवाला नही।

मिस्टर बेडफोर्डने विद्यालयका ट्रस्टी होना भी स्वीकार कर लिया। अब तक उसी नातेसे और अन्य प्रकारसे भी वे विद्यालयकी बराबर सहायता कर रहे है। विद्यालयकी उन्नतिका उन्हें सदा ही ध्यान रहता है। वे विद्यालयके लिए, कैसा ही मामूली काम क्यों न हो, करके बड़े प्रसन्न होते हैं। वे हर बातमें निजको एकदम भूल जाते हैं, और जिस कामसे लोग किनारा कसते है उसे आगे बढ़कर कर डालते हैं। इसमें सन्देह नही कि वे सत्य मार्ग पर चलनेवाले एक अलौकिक महात्मा हैं।

कुछ दिनोंके उपरान्त हमारे विद्यालयमें एक नवीन व्यक्तिने प्रवेश किया। ये हैम्पटन-विद्यालयसे हाल ही उत्तीर्ण होकर निकले थे। इनके कारण टस्केजी-विद्यालयने बड़ी उन्नति की है। इनका नाम मिस्टर लोगन है। ये सत्रह वर्षसे विद्यालयके कोषाध्यक्ष हैं और मेरी अनुपस्थितिमें प्रिन्सिपलका कार्य भी करते हैं। ये इतने स्वार्थत्यागी हैं, कामधन्धेमें इतने चतुर हैं, और इनकी बुद्धि भी इतनी तीव्र है कि इनके कारण मुझे और कामोंसे बाहर जानेके लिए बहुत अवकाश मिलता है—मेरी अनुपस्थितिमें कोई काम न कभी रुका है और न कभी बिगड़ा ही है। अनेक अवसरों पर धनाभावके कारण विद्यालयको

अनेक कठिनाइयाँ झेलनी पडी है पर मि० लोगनने कभी हिम्मत नही हारी।

पहला भवन बनकर तैयार हुआ ही चाहता था कि हम लोगोंने, दूसरे वर्षके मध्यमे, विद्यार्थियोके लिए एक भोजनगृह खोल दिया। दूर दूरसे अनेक विद्यार्थी आते थे, इसलिए उनके भोजन निवास आदिका प्रबन्ध करना आवश्यक था। विद्यार्थियोकी संख्या इतनी बढने लगी कि उनकी भीतरी स्थितियोकी तथा रहन-सहनकी पूरी पूरी देखभाल रखना कठिन हो गया और यह देखकर हम लोग बहुत दुखी हुए।

भोजनगृह खालनेके लिए हमारे पास विद्यार्थी और उनकी क्षुधाके अतिरिक्त और कोई साधन न था। नय भवनम रसोई और भोजन आदिके लिए कोई स्थान न बना था। इस लिए भवनके नीचेकी भूमि खोद कर इस कामके लिए स्थान निकालनेका विचार किया गया। विद्यार्थियोने भूमि खोदनेम बहुत सहायता दी, जिससे शीघ्र ही रसोई और भोजन आदिके लिए स्थानका किसी कदर प्रबन्ध हो गया। पर अब इसी स्थानका इतना परिवर्तन हो गया है कि देखकर कोई यह नही कह सकता कि कभी यह रसोईघर था।

अब और एक पेचीदा मामला आ पडा। भोजनका सामान खरीदनेके लिए धन बिलकुल न था। इस पर गॉवके कुछ व्यापारी हम लोगोंको खाद्य पदार्थ उधार देनेके लिए तैयार हुए। मुझे खुद अपने ऊपर जितना विश्वास नही उतना लोग मुझ पर रखते थे। इससे कभी कभी मै बहुत ही चकराता था। (यह बात बिना अनुभवके समझमे नहीं आ सकती।) हमारे पास रसोई बनानेके लिए स्टोव या मिट्टीके तेलवाले चूल्हे नहीं थे और न खानेके लिए थालियॉ ही थी। इस लिए शुरू शुरूमें पुराने ढगके ही चूल्होसे काम लेना पडा। कुछ बेचे—जो इमारत

बनते समय काम आई थी—वहॉ पडी हुई थी, उन्हीसे मेजोका काम लिया गया। थालियॉ भी कुछ मिली पर वे नहीके बराबर थी।

आरम्भमें रसोईघरका प्रबन्ध बडा गडबड रहता था। नियमित समय पर भोजन करना तो वहॉ कोई जानता ही न था। भोजनके पदार्थ भी ठीक नही बनत थ। एक दिन प्रात कालकी घटना है कि मै भोजनगृहके दरवाजे पर खडा था। भीतर विद्यार्थी भोजनके अप्रबन्धकी शिकायत कर रहे थ। कितनाका उस दिन जल भी न मिला था। इसी समय एक लडकी, जिस कुछ भी खानेको न मिला था, बाहर आई और 'खाना न सही, पानी तो कमस कम पी लूँ' इस विचारसे वह कुएँ पर गई। पर वहॉ रस्सी भी टूटी हुई थी! वहॉसे लोटकर उसने, मुझ न देख पानेस, बहत ही निराश होकर कहा— "इस विद्यालयम पीनेको जल भी नही मिलता।' यह सुनकर मेरे हृदयमे गहरी चाट लगी। इसके समान नाउम्मेद करनवाली बात मने और कोई नही सुनी।

एक बार विद्यालयक ट्रस्टी मि० बडफर्ड विद्यालय देखनेके लिए आये। उन्हे भाजनगृहक ऊपर सानेक लिए स्थान दिया गया। एक दिन तडके दो विद्याथियास झगडा हा पडनेक कारण उनकी नींद खुल गई। झगडा इस बातका था कि उस दिन कहवका प्याला दोनोमेसे कौन ले। एक विद्यार्थीने अन्तम यह सिद्ध कर दिया कि उसे तीन दिन हुए, प्याला नही मिला और तब उसने वह प्याला ले लिया।

परन्तु धीरे धीरे उद्यागम लग रहकर हम लोगोने सारी कठिनाइयों और अभावोको दूर कर दिया। कोई काम हो, यदि चतुराईसे, सच्चे हृदयसे और अध्यवसायके साथ किया जाय तो अवश्य ही सिद्ध होता है।

इस समय जब मुझे उन पुरानी कठिनाइयो और अभावाका ध्यान आता है तो मै बहुत ही प्रसन्न होता हूँ, क्योकि यदि आरभहीमें सुख

और चैनके सामान प्रस्तुत हो जाते तो शायद हम लोगोके दिमाग ठिकाने न रहते और हम लोगो द्वारा कोई काम भी न बनता। मेरा तो यह सिद्धान्त है कि काई काम हो उसे अपने ही बल पर शुरू करना चाहिए।

अब पुराने विद्यार्थी टस्केजीम आकर बहुत ही आनन्दित हाते है, क्योकि उन्हान जिस स्वाभाविक क्रमसे उन्नति आरभ की थी उसी क्रमसे वह आगे बराबर हाती हुई चली जा रही है। अब वह अव्यवस्था और अभाव नही रहा। इस समय भाजनगृहक कमरे बडे बडे है ओर सुन्दर तथा हवादार है। उनम जा जा वस्तये आवश्यक हार्ती हे, व सब इस समय प्रस्तुत है। सब काम बेशिकायत ओर नियमसे होत हे। विद्यार्थियो द्वारा तैयार हुए पक्वान्न, मेजे उनपरक कपड (मेज पाश), फूलोंके गुच्छे और कॉचके बरतन आदि सामान करीनेसे रक्ख हुए पाकर और भोजनक समय परोसनमे काई शिकायतकी बात न दखकर पुरान विद्या थियोको बडा हर्ष होता ह आर अवसर मिलने पर व अपना हर्ष मुझ पर भी प्रकट करते हे। उन्ह विशषकर इसी बातका हर्ष है कि टस्के-जीके विद्यालय ओर विद्यार्थियान अपनी उन्नति अपन बल पर खडे होकर स्वाभाविक क्रमसे का है।

ग्यारहवाँ परिच्छेद।

सोनेके पहले बिछौनेकी तैयारी।

कुछ दिनोंके उपरान्त हैम्पटन विद्यालयके कोषाध्यक्ष जनरल जे एफ बी मार्शल विद्यालयमे आये। इनका आना एक बडे महत्त्वकी घटना थी। इन्ही मार्शल साहबने हम लोगो पर विश्वास रखकर टस्केजी विद्यालयकी भूमिके लिए आरभमे ढाई सौ डालर उधार दिये थे। उन्होने विद्यालयमे एक सप्ताह तक रहकर सब कार्योंका भली भाँति निरीक्षण किया। विद्यालयके प्रबन्ध और कार्यक्रम आदिसे वे बहुत ही प्रसन्न हुए और उन्होने अपनी रिपोर्टमे विद्यालयकी प्रशसा लिखकर वह रिपोर्ट हैम्पटन विद्यालयमे भेज दी। इसके कुछ दिन उपरान्त वहाँकी सुप्रसिद्ध अध्यापिका मिस मेरी एफ मैकी— जिन्होंने हैम्पटन विद्यालयमे भरती करनसे पहल मुझसे झाड़ू दिलवाकर मेरी परीक्षा ली थी—आ गई और कुछ दिनोमे स्वय जनरल आर्मस्ट्राग भी आ पधारे।

इस समय टस्केजी विद्यालयमे अध्यापकोकी सख्या बहुत बढ गई थी। उनमेस अधिकाश हैम्पटनहीके ग्रेज्युएट थे। हम लोगोने इन हितचिन्तकोका विशेषत जनरल आर्मस्ट्रागका सच्चे हृदयसे स्वागत किया। अभ्यागत भी विद्यालयकी इस थोडेसे अरसेमे इतनी अधिक उन्नति देख कर बहुत ही प्रसन्न हुए। आसपासके नीग्रो लोग जनरल आर्मस्ट्रागकी प्रशसा सुन चुके थे और इसलिए जब उन्हें मालूम हुआ कि जनरल आर्मस्ट्राग टस्केजी-विद्यालयमें आये है तो वे दूर दूरसे उन्हें देखनेके लिए आये। गोरोंने भी उनका अच्छा स्वागत किया।

जनरल आर्मस्ट्रांगके इस समागमसे मुझे उनका स्वभाव भली भाँति परखनेका बहुत ही अच्छा अवसर मिला। सिबिल वारमें जनरल आर्मस्ट्रांग दाक्षिणी गोरोंके विरुद्ध लड़े थे; इसालिये मैं यह समझता था कि वे उनसे चिढ़ते होंगे और दाक्षिणके सिर्फ़ काले लोगोंकी ही मदद करना उन्हें अभीष्ट होगा; परन्तु उनके टस्केजीमें आने पर मेरा यह भ्रम दूर हो गया और मैंने जाना कि जनरल आर्मस्ट्रांग बड़े ही उच्च विचार और उदार प्रकृतिके महात्मा हैं। जिस ढंगसे वे दाक्षिणी गोरोंसे मिलते और बातचीत करते थे उससे स्पष्ट मालूम होता था कि वे दोनों जातियोंकी सुखसमृद्धि देखनेके लिए उत्सुक थे। कभी किसी अवसर पर उन्होंने दाक्षिणी गोरोंके विषयमें कोई अनुचित बात नहीं कही। जनरल आर्मस्ट्रांगके समागमसे मैंने यह जाना कि महात्मा लोग सबसे स्नेह रखते हैं। द्वेष रखना नीच जनोंका काम है। निर्बलकी सहायता करनेसे सहायक ही अधिक बलवान् होता है और अभागोंको कष्ट देनेवाला स्वयं बलहीन हो जाता है; यह तत्त्व भी मैंने उन्हींसे सीखा। तभीसे मैंने निश्चय कर लिया कि अब मैं कभी किसी जातिके मनुष्यके साथ घृणा करके अपने आपको नीच न बनाऊँगा। मेरा विश्वास है कि अब मेरे मनमें दक्षिणी गोरोंके प्रति कोई बैरभाव नहीं है। अपने जाति-भाइयोंकी सेवा करनेमें मुझे जो आनन्द होता है वही आनन्द दाक्षिणी गोरोंकी सेवा करके भी प्राप्त होता है। किसीके मनमें यदि जातिद्वेषकी जड़ जमी हुई देखता हूँ तो मुझे उस पर बहुत दया आती है।

विचार करके मैंने यह मालूम किया है कि दक्षिण अमेरिकाके जो गोरे इस बातके उद्योगमें लगे रहते हैं कि राजनीतिक विषयोंमें नीग्रो लोगोंकी सम्मतिका कोई उपयोग न हो, वे केवल नीग्रो लोगोंकी ही हानि नहीं करते, बल्कि अपनी भी हानि करते हैं। नीग्रो लोगोंकी हानि तो अस्थायी होती है, पर गोरोंकी नीतिमत्ता ही सदाके लिए बिगड़ जाती है। मैंने अनुभव करके यह बात जानी है कि जो गोरा

नीग्रो लोगोंका मत निर्बल करनेके लिए झूठी सौगद खानेको तैयार होता है वह अपने जीवनमें अपने भाइयोसे भी अनुचित व्यवहार करना सीख लेता है । नीग्रोको ठगनेवाला गोरा अपने गोरे भाइयोको भी ठगनेमे सकोच नही करता । काननका ताखमे रख करके नीग्रोको दड देनेवाला गोरा आदमी आगे माका आने पर अपने गोरे भाईसे भी वैसा ही व्यवहार करता है । इन सब बातोसे यह स्पष्ट सिद्ध है कि अमेरिकाका यह अज्ञानान्धकार दूर करनेके लिए समचे राष्ट्रकी सहायता बहुत आवश्यक हे ।

जनरल आर्मस्ट्रागके शिक्षासबधी विचाराका गारे काले दोनामें दिन पर दिन अधिक प्रचार हाता जाता है । आजकल प्राय सभी दक्षिणी राज्यामे बालका आर बालिकाओका शिल्पकलाकी शिक्षा देनेका प्रयत्न किया जाता ह ओर इन सार प्रयत्नोंक मल जनरल आर्मस्ट्राग है ।

विद्यालयके साथ भाजनगृहका पूरा प्रबन्ध हा चुकन पर विद्यार्थियोकी सख्या बेहिसाब बढन लगी । हम लोगोके पास धन नही था, तो भी हम कई सप्ताहा तक विद्यार्थियाके भाजनक अतिरिक्त उनके बिस्तर आदिका भी प्रबन्ध करना पडा । स्थान न होनेके कारण विद्यालयक पास कुछ काठरिया किराय पर लनी पडी । य कोठरियॉ बहुत बुरी दशाम थी जिसके कारण जाडम विद्यार्थियाको बहुत कष्ट हुआ । भोजन-खर्चक लिए प्रत्येक विद्यार्थीसे मासिक आठ डालर लिये जाते थ । इतना भी विद्यार्थियोस मिलना कठिन होता था । भोजन-खर्चहीमें कोठरीका किराया ओर कपडाकी धुलाई भी आ जाती थी । इसके अतिरिक्त विद्यार्थी विद्यालयका जो कार्य करते थे उसका पुरस्कार इन आठ डालरोमसे काट दिया जाता था । पढाईकी फीस वार्षिक पचास डालर होती थी ओर आजकलके समान उस समय भी जो विद्यार्थी देने लायक थे उनसे यह फीस वसूल कर ली जाती थी ।

इन छोटी छोटी रकमोंसे भोजननिवासगृह शुरू करनेके योग्य पूँजीका प्रबन्ध नही हो सका। दूसरे सालके जाडेमें बडी ठड पडी और विद्यार्थियोको पूरे ओढने बिछौने भी न मिल सके । कुछ समयतक थोडेसे विद्यार्थियोके लिए केवल चारपाई और चटाई-का ही प्रबन्ध हो सका और शेषके लिए वह भी न हुआ। जिस दिन आधिक जाडा पडता था उस दिन विद्यार्थियोकी चिन्ताके कारण मुझे भी रातको नीद न आती थी। प्राय मै आधी रातके समय विद्यार्थियोकी टूटी फूटी झोपडियोम जाकर उन्हे धीरज दिलाता था । वहाँ मै उन विद्यार्थियोको एक ही कबल ओढकर आगके चारो ओर बैठे हुए पाता था। कुछ विद्यार्थी तो रात रात भर बैठे रहते थे। एक रात बहुत ही अधिक ठड पडी। दूसरे दिन जब सब विद्यार्थी प्रार्थनामन्दि-रमें इकट्ठे हुए तब मेने कहा—"जिन लोगोको कल जाडेसे बहुत आधिक कष्ट हुआ हो, वे हाथ ऊपर उठावे।' सुनते ही एक साथ सब विद्यार्थियोने हाथ उठा दिया। हम लोगोको इस प्रकारसे उनके कष्टोका अनुभव हुआ पर वे स्वय कभी शिकायत न करते थे। वे जानते थे कि हम लोग अपनी शक्तिभर उनके दु:ख दूर करनेका यत्न कर रहे है। इसी लिए वे सदा सब कार्योम शिक्षकोकी सहायता करनेके लिए तैयार रहते थे।

मैने उत्तर और दक्षिण अमरिकाम अनेक बार यह शिकायत सुनी है कि यदि किसी नीग्रोको कोई ऊँचा पद या अधिकार मिल जाता है तो उसके मातहत लोग न तो उसका कहना मानते है और न परस्पर मेलसे रहते हे। पर मे अपने अनुभवकी बात कहता हूँ कि इन उन्नीस वर्षोमे किसी विद्यार्थीने अथवा विद्यालयके किसी नौकरने अपनी जबा-नसे या कामसे मेरा कभी निरादर नही किया । उलटे उन्होने अनेक बार मुझ पर एहसान चढाकर मुझे ही अपना कृतज्ञ बनाया है। जब कभी मै कोई पुस्तक या और कोई चीज हाथमे लेकर कही जाता हूँ,

तो मेरे विद्यार्थी उसी समय वह चीज़ मेरे हाथसे लेकर निर्दिष्ट स्थानतक पहुँचा देते हैं । पानी बरसनेके समय अगर मैं दफ्तरसे बाहर निकलता हूँ तो कोई न कोई विद्यार्थी मेरे हाथसे छाता अवश्य ले लेता है।

इसके साथ ही मुझे यह कहते हुए भी आनन्द होता है कि दाक्षिणके गोरोंके साथ मेरा जो सहवास रहा है उसमें अब तक कभी किसी गोरेने मेरा निरादर नहीं किया। टस्केजी और आसपासके गोरे लोग मेरा हर प्रकारसे सम्मान करनेहीमें अपना गौरव समझते हैं ।

जब कभी मैं किसी स्थानके लिए प्रस्थान करता हूँ तो लोगोंको न जाने कहाँसे मेरी यात्राका समाचार मिल जाता है और प्रायः सभी स्टेशनों पर अनेक गोरे और विशेषतः गाँवोंके गोरे कर्म्मचारी मुझसे आकर मिलते हैं और दक्षिणमें मेने जो कार्य आरम्भ किया गया है उसके लिए धन्यवाद देते हुए मेरा अभिनन्दन करते हैं। डालास–हाउस्टनकी यात्रामें मुझे यही अनुभव प्राप्त हुआ है।

एक बार एटलांटा जाते समयमें रेलगाड़ीमें सफ़र कर रहा था। बहुत अधिक थक जानेके कारण बीचमें मैं एक ऐसे डब्बेके पास गया जिसमें यात्रियोंके सोनेका भी प्रबन्ध रहता है । वहाँ बोस्टनकी दो महिलायें बैठी थीं। मैंने उन्हें देखते ही पहचान लिया। उनसे मेरी अच्छी जान पहचान थी। उन्होंने भी मुझे देखते ही अन्दर आ बैठनेके लिए आग्रह किया। शायद उन देवियोंको दाक्षिणका रिवाज मालूम न था। खैर, उनके बहुत आग्रह करनेपर मैं उनके पास बैठ गया। थोड़ी ही देर बाद मेरे बिना जाने उन्होंने नौकरको तीन आदमियोंका भोजन परोसनेकी आज्ञा दी । इससे मैं और भी चकराया–कारण उस डब्बेमें दाक्षिणी गोरे भरे हुए थे और उनमेंसे बहुतेरे हमीं लोगोंकी ओर देख रहे थे। जब भोजन परोस कर मेरे सामने रक्खा गया तब कोई न कोई बहाना निकालकर मैंने इस बलासे बचनेकी बहुत चेष्टा की। पर उन महिलाओंने बहुत ज़ोर देकर मुझे

अपने साथ भोजन करनेके लिए विवश कर दिया। मैंने मन-ही-मन कहा—" अब तो बेतरह फँसा ! "

अब और एक बला खड़ी हुई। मेज़ पर भोजन परोसा जा चुकने पर उन महिलाओंमेंसे एकको अपनी थैलीमें रक्खी हुई उमदा चायकी याद आई और उसने चाहा कि वह तैयार करके अभी भोजनके वक्त सबको दी जाय। नौकर अच्छी तरह तैयार न कर सकेगा इस विचारसे उसने उसे स्वयं तैयार किया। आखिर किसी तरह भोजन हो गया। मनकी अवस्था चलबिचल होनेसे मुझे ऐसा हो गया था कि कब इस भोजनसे मेरा छुटकारा होता है। उतना समय तो मुझे एक युगसा मालूम हुआ ! भोजनोपरान्त इस विपद्से रक्षा पानेके निमित्त मैं धूम्रपान करनेके कमरेमें चला गया। उस समय कितने ही यात्री प्रकृति देवीका सौन्दर्य्य देखनेके लिए इस डब्बेमें आ गये थे। जितने लोग वहाँ थे उन्हें न जाने कहाँसे यह मालूम हो गया कि मैं कौन हूँ। मैं जब उस डब्बेमें गया तो मुझे मेरे जीवनका एक अत्यन्त आश्चर्यकारक दृश्य दिखाई दिया। उन यात्रियोंमेंसे प्रत्येक आदमी—प्रायः सभी जार्जियाके रहनेवाले थे—मुझसे आकर मिला और प्रत्येकने बड़े प्रेमसे बातें कीं। उन लोगोंने दक्षिणके लिए मैंने जो जो कुछ प्रयत्न किया था उसके लिए मुझे शुद्ध अन्तःकरणसे धन्यवाद दिये। यह खुशामद या ठकुरसुहाती न थी; क्योंकि यह तो सबको मालूम था कि मेरी प्रशंसा करनेसे किसीको कुछ मिलनेवाला नहीं।

प्रारंभसे ही मैंने सदा इस बातका उद्योग किया है कि विद्यार्थी लोग टस्केजी-विद्यालयको मेरी अथवा दूसरे अधिकारियोंकी सम्पत्ति न समझ कर स्वयं अपनी समझें और सदा ट्रस्टियों और शिक्षकोंकी भाँति उसकी उन्नतिकी चिन्तामें लगे रहें। मैंने उन्हें यह भी बतलानेकी चेष्टा की है कि मैं विद्यालयका कोई अधिकारी या स्वामी नहीं, केवल उसका मित्र और

परामर्शदाता हूँ। विद्यालयके प्रबन्ध आदिके विषयमें यदि कुछ कहना हो तो मेरी यही इच्छा रहती है कि विद्यार्थी स्वयं आकर साफ़ साफ़ कह दें। मैं वर्षमें दो तीन बार विद्यार्थियोंसे, पत्र भेजकर विद्यालयके कार्योंकी आलोचना करनेके लिए कहता हूँ। यदि विद्यार्थियोंके पत्र नहीं आते हैं तो मैं स्वयं ही उन्हें गिरजेमें एकट्ठा करके इस विषयकी चर्चा करता हूँ। इस प्रकारकी विद्यार्थियोंकी सभायें करना मुझे बहुत ही पसन्द है और विद्यालयके भावी कार्यक्रमको निश्चित करनेमें मुझे इनसे बड़ी मदद मिलती है। सब बातोंका रत्ती रत्ती पता लगानेमें इन सभाओंसे बड़ा काम निकलता है। किसी कामकी जिम्मेदारी दूसरे पर रख कर उसे यह जतला देना कि हम तुम्हारा विश्वास करते है, बड़ा ही लाभदायक होता है। जब मैं मालिक और मज़दूरोंके बीच होनेवाले झगड़ोंका हाल पढ़ता हूँ तो यह विचार मेरे मनमें आता है कि अगर मालिकने मज़दूरोंको अपनाकर उनसे हर काममें सलाह ली होती और यह मालूम करा दिया होता कि मालिक-मज़दूर दोनोंका स्वार्थ एक ही है तो हड़ताल आदिकी कठिनाइयाँ सहजहीमें दूर हो जातीं। यह तो एक सामान्य नियम है कि जिस मनुष्य पर हम विश्वास करेंगे वह भी हमारे ऊपर विश्वास करेगा। नीग्रो लोगोंके लिए भी यही नियम है। उन्हें आप यदि इतना ही विश्वास दिलानेमें समर्थ हो जायँ कि आप निःस्वार्थ भावसे उनकी शुभकामना करते हैं तो फिर वे आपके चरणोंके दास बन जायँगे।

टस्केजीमें विद्यार्थियोंसे भवन बनवानेके अतिरिक्त शुरूसे मेरा यह विचार था कि मेज़, कुरसी तथा दूसरे सामान भी बनवाये जायँ। चारपाइयाँ या चटाइयाँ तैयार होनेतक विद्यार्थी बड़ी सहनशीलताके साथ खाली ज़मीन पर ही सोते रहे!

शुरू शुरूमें बढ़ईका काम जाननेवाले बहुत ही थोड़े विद्यार्थी थे; और उनकी बनाई हुई चारपाइयाँ बहुत ही लचर-पचर और भद्दी

होती थीं । जब कभी मैं विद्यार्थियोंके कमरेमें जाता था तो एक दो चार-पाइयाँ अवश्य टूटी हुई पाता था । सब विद्यार्थियोंको एक एक चटाई देनेकी बड़ी ही कठिन समस्या हम लोकोंके सामने थी । बहुत सोच विचारके बाद हम लोगोंने एक तदबीर ढूँढ़ निकाली । एक तरहका सस्ता कपड़ा ख़रीदकर उससे कई बड़े बड़े थैले तैयार किये गये, और पासहीके जंगलसे देवदार वृक्षकी पतली कोमल छाल (पयाल जैसी) इकट्ठा करके उनमें भर दी गई । इस तरहसे एक प्रकारके गद्दे बन गये और तब चटाइयोंके बदले इन्हींका व्यवहार होने लगा । फिर धीरे धीरे चटाइयाँ भी बनने लगीं और अब तो हमारे यहाँ उसका एक कारख़ाना ही ख़ुल गया है । इस कारख़ानेमें बालिकाओंको एक ख़ास ढंगके साथ शिक्षा भी दी जाती है, और टस्केजीके कारख़ानेमें तैयार होनेवाली चटाई बाज़ारकी किसी चटाईसे घटिया नहीं होती ।

पहले पहल छात्रावासमें कुरसियोंका कोई प्रबन्ध न था । कुरसियोंके बदले लकड़ीकी तीन पटियोंमें कीलें जड़ कर एक तरहके स्टूलसे बनाकर उनसे काम लेते थे । उन दिनों विद्यार्थियोंको केवल एक विस्तर, विद्यार्थियों द्वारा बने हुए कुछ स्टूल और कभी कभी एकाध भद्दी मेज़ मिलती थी । अब भी ये सब चीजें विद्यार्थी ही बनाते हैं; परन्तु अब साजसरंजाम बहुत बढ़ गया है; और बढ़ईगरीमें भी अब इतनी तरक्की हो गई है कि विद्यार्थियों द्वारा बनी हुई चीज़ोंमें कोई जल्दी नुक्स नहीं निकाल सकता । मैंने शुरूसे ही इस बात पर ध्यान रक्खा है कि टस्केजीकी हरेक बातमें और हरेक स्थानमें स्वच्छता होनी चाहिए । हम लोग अगर ग़रीब हैं तो हमारे पास सुखसुभीतेके सामान न होना कोई अपराध नहीं; परन्तु इसके साथही यदि स्वच्छता भी न हो तो, लोग हमें, कभी क्षमा न करेंगे— हमसे घृणा करने लगेंगे । यह बात मैंने अपने विद्यार्थियोंको बार बार बतलाई है और अब भी बतलाता हूँ ।

ब्रशसे दाँत साफ करने पर भी हमारे यहाँ बहुत जोर दिया जाता है। जनरल आर्मस्ट्राग इस दाँतोंकी सफाईके उपदेशको The Gospel of the tooth brush अर्थात् 'दाँतोंको ब्रशसे साफ करनेका धर्मोपदेश' कहा करते थे। टस्केजी-विद्यापीठका यह एक विशिष्ट सस्कार रहा है। ब्रश पास रहते हुए जो विद्यार्थी उससे दाँत साफ नही करता उसे हम लोग अपने विद्यालयमे भरती नही करते। पुराने विद्यार्थियोंसे ब्रशकी कडाईका हाल सुनकर जो नये विद्यार्थी भरती होनेके लिए आते है वे अपने साथ कमसे कम टूथ ब्रश अवश्य लाते है-और कोई चीज चाहे न ले आवे। एक दिन सबेरे मै लेडी-प्रिन्सिपलके साथ विद्यार्थिनियोकी कोठरियाँ देखने गया। एक कमरेमे तीन नई बालिकाये थी। मैन उनसे पूछा,-"तुम लोगोके पास टूथ-ब्रश है?" फौरन उनमेसे एक लडकीने ब्रश सामने लाकर कहा,-"यह है। कल ही हम तीनो जनी मिलकर इसे खरीद लाई है।" उन्हे उस वक्त तक यह ज्ञान न था कि सबका एक एक अलग ब्रश होना चाहिए!

टूथब्रशके उपयोगसे विद्यार्थियाको बडा लाभ हुआ है। यहाँतक मैने अनुभव किया है कि यदि किसी विद्यार्थीका टूथब्रश खो गया और वह चट बिना कहे दूसरा ले आया तो आगे चलकर ऐसे विद्यार्थीने बडी कीर्त्ति सपादन की है! दाँतोकी सफाईके अतिरिक्त शरीरके शेष अवयवोकी स्वच्छता पर भी बहुत ध्यान दिया जाता है। भोजनकी तरह स्नान भी नित्य नियमित समय पर करनेकी शिक्षा दी जाती है। स्नानागार तैयार होनेके पहलेसे ही हम लोगोने यह शिक्षा आरभ कर दी थी। बहुतसे विद्यार्थी देहातोसे आये हुए थे और इसलिए उन्हें सोना, बिस्तर बिछाना आदि बातें भी सिखलानी पडती थी। रातको कुरता पहननेका महत्त्व भी उन्हें बतलाया गया।

यहाँ कोई विद्यार्थी फटे, मैले, बिना बटनोके, तेलहे कपडे नही पहनने

पाता। शुरू शुरूमें इसकी शिक्षा देनेमें बड़ी कठिनाई पड़ती थी। पर अब मुझे यह कहते आनन्द होता है कि स्वच्छताकी शिक्षासे हमारे विद्यार्थियोंने इतना बड़ा लाभ उठाया है और पुराने विद्यार्थियोंसे नये विद्यार्थियोंने यह गुण इतना ले लिया है कि नित्य संध्यासमय जब सब विद्यार्थी गिरजेसे बाहर आते हैं और जब उनके कपड़ोंकी परीक्षा की जाती है तो एक भी विद्यार्थी ऐसा नहीं निकलता कि जिसके कपड़े मैले हों या कोटमें एक बटनका भी स्थान खाली हो।

बारहवाँ परिच्छेद ।

धन-संग्रह ।

टस्केजी-विद्यालयमें जब विद्यार्थियोंके निवास आदिका प्रबन्ध हो गया तब पहले भवन अर्थात् पोर्टर-हालके ऊपरके खंडकी कुछ कोठरियोंमें बालिकाओंके रहनेका प्रबन्ध किया गया। परन्तु छात्रोंकी संख्या दिनोंदिन बढ़ने लगी। विद्यार्थियोंको तो भवनके बाहर भी स्थान दिला दिया जासकता था; परन्तु बालिकाओंको वहाँ रखना ठीक न मालूम हुआ। इसलिए एक विशाल छात्रावास शीघ्र ही बनवानेकी आवश्यकता हुई; क्योंकि बालिकाओंके रहने और सब छात्रोंके भोजनादिके लिए पर्याप्त स्थान चाहिए था।

इस नये भवनका नकशा बनने पर मालूम हुआ कि उसके बननेमें दस हज़ार डालर लगेंगे। कार्य आरंभ करनेके लिए हम लोगोंके पास धन बिलकुल न था; पर तो भी इस नये भवनका नामकरण हम लोगोंने कर दिया। हम लोग जिस राज्यमें कार्य कर रहे थे उस राज्यका आदर करनेके निमित्त इस भवनका नाम 'अलबामा–हाल' रखनेका निश्चय किया गया। अब फिर मिस डेविड्सन आसपासके गोरों और नीग्रो लोगोंसे चन्दा उगानेका उद्योग करने लगीं और प्रायः सबोंने अपनी अपनी शक्तिके अनुसार सहायता दी। विद्यार्थियोंने भी पहलेकी भाँति जमीन खोदकर नीवकी तैयारी आरम्भ कर दी।

नये भवनके लिए हमें रुपयोंकी बहुत ही ज़रूरत थी। जब सब उपाय हम लोग कर चुके तब एक ऐसी घटना हुई जिससे जनरल आर्मस्ट्रांगके मनकी असाधारण उदारताका पूरा परिचय मिला। हम लो-

गोंको धनकी बड़ी चिन्ता हो रही थी कि इसी बीच जनरल आर्मस्ट्रांगका एक तार आया जिसमें उन्होंने मुझसे पूछा था,–" क्या आप एक मासतक उत्तर प्रान्तमें मेरे साथ प्रवास कर सकते हैं ? यदि कर सकते हों तो शीघ्र ही हैम्पटन चले आवें । " मैं तार पाते ही हैम्पटनके लिए रवाना हो गया । वहाँ पहुँचने पर मुझे मालूम हुआ कि जनरलने चार गवैयोंको साथ लेकर उत्तर प्रान्तके भिन्न भिन्न स्थानोंमें भ्रमण करना निश्चय किया है । उनका यह भी विचार है कि स्थान स्थान पर सभायें की जायें और वहाँ मैं और जनरल महाशय व्याख्यान दें । जब मुझे यह मालूम हुआ कि ये सभायें हैम्पटन-विद्यालयके लिए नहीं बल्कि टस्केजी-विद्यालयके लिए होंगीं और उनके सारे व्ययकी जिम्मेवारी हैम्पटन-विद्यालय लेगा तब मुझे जो आश्चर्य हुआ उसका अन्दाज़ पाठक ही कर लें ।

जनरल आर्मस्ट्रांगने मुझसे स्वयं कुछ नहीं कहा । पर मैंने यह मालूम किया कि इस प्रकार स्थान स्थानमें परिभ्रमण कर व्याख्यान देनेमें उनका मतलब सिर्फ़ यही था कि उत्तर प्रान्तके बड़े बड़े लोगोंसे मेरा परिचय हो जाय और 'अलबामा-हाल' के लिए कुछ धन मिल जाय । यदि कोई क्षुद्र बुद्धिवाला मनुष्य होता तो वह यही समझता कि यह सारा धन मानों हैम्पटन-विद्यालयके कोशसे ही दिया जाता है । परन्तु जनरल आर्मस्ट्रांगके मनमें ऐसे संकुचित और तुच्छ विचार कभी न आये । वे जानते थे कि उत्तर प्रान्तके लोगोंने जो धन दिया है वह किसी ख़ास विद्यालयके लिए नहीं बल्कि सारी नीग्रो जातिकी उन्नतिके हेतु अर्पण किया है । यह भी वे ख़ूब जानते थे कि हैम्पटन-विद्यालय तभी बलशाली होगा–उसकी प्रतिष्ठा तभी बढ़ेगी जब समस्त दाक्षिणी नीग्रो लोगोंकी उन्नतिके लिए निःस्वार्थ और उदार प्रयत्न करनेका वह केन्द्र बन जाय और इस काममें वह अगुआ बने । उत्तर प्रान्तकी वक्तृताओंके संबंधमें जनरल आर्मस्ट्रांगने मुझे यह उपदेश दे रक्खा था;–" अपने

भाषणके प्रत्येक शब्दके साथ श्रोताओको एक एक नई बात—नई कल्पना बतलाओ, अर्थात् ऐसा प्रयत्न करो जिससे तुम्हारे प्रत्येक शब्दसे उनके हृदयमें एक नया विचार उत्पन्न हो। ' मे समझता हूँ कि यह उपदेश प्रत्येक वक्ताको ध्यानमे रखना चाहिए। मै सदा ही इस उपदेशपर अमल करनेका यत्न करता आ रहा हूँ।

न्यूयार्क, ब्रुकलिन, बोस्टन, फिलाडेल्फिया और अन्यान्य नगरोमे हम लोगोंने सभाये की, और जनरल आर्मस्ट्रागने मेरे साथ, हैम्पटन विद्यालयके लिए नही बल्कि टस्केजी विद्यालयके लिए सहायता माँगी। इन सभाओमे ' अल्बामा हाल बनवानेके हेतु धन सग्रह करने और टस्केजी-विद्यालयको सर्व प्रसिद्ध करनेका हम लोगोने प्रयत्न किया, और हमारे इन दोना कामोम हमे बहुत कुछ सफलता प्राप्त हुई।

इस प्रकार उत्तर प्रान्तमे मेरी मेल–मुलाकात बढन पर मै फड जमा करनेके लिए अकेला ही जान लगा। बिगत पद्रह सालह वर्षोमे विद्यालयकी नई नई आवश्यकताआकी पृत्ति करनेक निमित्त धनसग्रहक लिए मुझे विद्यालय छोड बहुत दूर दरकी यात्रा करनी पडी है और मेरा बहुतसा समय भी इस काममे व्यतीत हुआ ह। धन सग्रह करते हुए मुझे जो अनुभव प्राप्त हुए है उनके वर्णनस पाठकाका अवश्य ही मनोरञ्जन होगा। परोपकारी सस्थाओन–उनके सचालकोने मुझसे अनेक बार पूछा है कि मै (अच्छे कामोमे धन खर्च कर सकनेवाले) अमीर लोगोसे सहानुभूति और सहायता किस प्रकार प्राप्त करता हूँ। इसके उत्तरमे 'मै भिक्षा देहि'के शास्त्रके दो ही नियम बतला सकता हूँ —

(१) साधारण लोगों और सस्थाओको अपने कार्यका पूरा परिचय देनेमे कोई बात उठा न रखना।

(२) परिणामके लिए अधीर न होना।

दूसरे नियमके अवलबनमे मुझे बडी कठिनाई पडी है। अब मै सम-

झने लगा हूँ कि परिणामके लिए अधीर होनेसे व्यर्थ ही शारीरिक और मानसिक शक्ति चिन्ताकी चिता पर भस्म हो जाती है। इसी शक्तिका उपयोग और अच्छे कामोंमें किया जा सकता है। पर तो भी इसमें सन्देह नहीं कि ऐसी दशामें जब कि अपने पास धन बिलकुल न हो और महाजनोंके बिल पर बिल आते हों, निश्चिन्त बैठ रहना अथवा धैर्य रखना बड़ा ही कठिन होता है। अनेक अमीर और नामवर लोगोंसे मिलकर मैंने यह अनुभव प्राप्त किया है कि जो लोग अपने शरीर और मनको वशमें रखते हैं, जो कभी अधीर नहीं होते, जिनका आत्म-संयमन कभी नष्ट नहीं होता और जो सदा शान्त, स्वस्थ, सहनशील और नम्र बने रहते हैं, वे ही बड़े भारी कर्मवीर और कीर्त्तिके भागी होते हैं। इस प्रकारके पुरुषोंमें मैंने प्रेसिडेंट ' विलियम मैकिनले 'को आदर्श-स्वरूप पाया है।

मेरी सम्मतिमें किसी प्रयत्नकी सफलता प्राप्त करनेका मूलमंत्र उस कार्यको करते हुए अपने आपको भूल जाना—उस कार्यमें ही सब तरहसे तन्मय हो जाना है। जिस कार्यमें हम जितने ही मगन हो जाते हैं उतना ही वह कार्य हमें सुख देता है।

कुछ लोग धनवानोंको केवल इसी लिए दोष देते हैं कि वे धनवान् हैं और उपकारी कार्योंमें अधिक धन नहीं देते हैं। जब मैं ऐसी बातें सुनता हूँ तो टस्केजी–विद्यालयके लिए धनसंग्रह करनेमें मुझे जो अनुभव हुआ है वह मुझे चुप नहीं बैठने देता। पहले तो, जो लोग इस प्रकार धनवानोंको दोष देते हैं वे यह नहीं जानते कि यदि धनवान् लोग अपनी मिलकियतका बड़ा भारी हिस्सा दानधर्म्ममें ही खर्च कर डालें तो उनका व्यवसाय गिर जाय, हज़ारों लोग भूखों मरें, और बहुत बड़ा अनर्थ हो जाय। दूसरे, धनवानोंके पास सहायता माँग-नेके लिए कितने लोग आते हैं इसका अन्दाज़ भी बहुत थोड़े लोग कर

सकते है। मै ऐसे धनवानोंको जानता हूँ जिनके पास रोज कमसे कम बीस आदमी सहायता मॉगने आते है। मैने धनवानोंकी कोठियोंमें जाकर देखा है कि वहॉ चार छह आदमी एक ही कामसे अर्थात् धनके लिए बैठे हुए है। यह तो लोगोके खुद आकर मिलनेकी बात हुई, इसके अलावे डाकसे कितनी प्रार्थनायें आती होंगी सो ईश्वर जाने! अनेक ऐसे भी दाता होते है जो अपना नाम भी प्रकट नही होने देते। ऐसे लोगोंके दानका अन्दाज कौन कर सकता है? इस प्रकार गुप्तरूपसे हरसाल हजारो रुपयोंका दान करनेवाले कई लोगोंको मै जानता हूँ। परन्तु मैने कई बार सुना है कि लोग उन पर कुछ भी दान न करनेका—कजूसीका दोष लगाते है! उदाहरणार्थ, न्यूयार्कमें दो महिलायें है। इनके नाम समाचारपत्रोमे बहुत ही कम प्रकाशित होते है। परन्तु इन्ही दो महिलाओंने गत आठ वषामें हम लोगोको तीन बडी भारी इमारतें बनवाने लायक गुप्तदान दिया है। इसके अतिरिक्त और भी कई बार अलग दान दिये है जिनकी कुल रकम बहुत बडी होगी। इन उदार स्त्रियोने केवल टस्केजा-विद्यालयकी ही मदद नही की है बल्कि अन्यान्य कायामे भी इसी प्रकार बहुत सहायता दी है।

यद्यपि टस्कजीके लिए मेरे हाथों लाखो रुपये सग्रह किये गये है, तथापि जिसे 'भिक्षा' कहते है उससे मै बचा हुआ हूँ। धनके लिए मैने भीख नही मॉगी, ओर लोगोंसे भी मेने कई बार कहा है कि मै भिक्षुक नही हूँ। मेरा यह दृढ विश्वास है कि धनके लिए किसी धनवानका गला दबानेसे धन नही मिलता। जो लोग धन कमाना जानते है वे उसका व्यय करना भी जानते है—यह मै जानता हूँ और इस लिए धनसग्रहकी यात्रामें मै केवल लोगोंके सामने हाथ पसारनेके बदले टस्केजी—विद्यालय ओर उससे निकले हुए ग्रेज्युएटोके कार्योंका परिचय देता रहा हूँ, और इसी उपायसे मुझे धन भी अधिक मिला है।

मैं समझता हूँ कि धनवान् लोग हमसे सब बातों और कार्योंका गुरुता और योग्यतापूर्वक वर्णन ही सुनता चाहते हैं ।

घर घर माँगने जानेमें शरीरको बहुत कष्ट होते हैं इसमें सन्देह नहीं; परन्तु इन कष्टोंका प्रतिफल भी मिलता है । इसके सिवाय मनुष्य-स्वभावकी जाँच-पड़ताल करनेका भी सुअवसर हाथ लगता है और उत्तम पुरुषोंसे—सर्वोत्तम पुरुषोंसे कहना अधिक अच्छा होगा—मिलनेका सौभाग्य प्राप्त होता है । किसी देशका स्थूल रूपसे निरीक्षण करनेमें यह मालूम हो जाता है कि प्रत्येक देशमें सबसे अधिक परोपकारी और प्रभावशाली पुरुष वे ही होते हैं जो सार्वजनिक कार्योंसे—सबके लाभके लिए स्थापित हुई संस्थाओंसे—सहानुभूति रखते हैं ।

एक बार मैं बोस्टन नगरमें एक धनाढ्य महिलासे मिलने गया । मैंने अपने नामका कार्ड अन्दर भेजा और उत्तरकी बाट जोहता हुआ खड़ा रहा । इतनेमें उस महिलाके पतिने बाहर आकर मुझसे पूछा—' तुम्हें क्या चाहिए ? " मैंने अपना उद्देश्य समझाना चाहा; पर वह भला आदमी इतना तेज़ और रूखा हो गया कि बिना उस महिलासे मिले ही मुझे वहाँसे लौट आना पड़ा । इसके अनन्तर मैं वहाँसे थोड़ी ही दूर पर रहनेवाले एक सज्जनके घर गया । उसने शुद्ध अन्तःकरणसे मेरा यथोचित स्वागत किया और एक बड़ी रकमका चेक मेरे नाम लिखदिया । इसके लिए मैं उसे धन्यवाद भी न देने पाया कि उसने कहा,— " मिस्टर वाशिंगटन, आपने मुझे ऐसे अच्छे काममें हाथ बटानेका अवसर दिया इसलिए मैं आपका बहुत ही कृतज्ञ हूँ । ऐसे सत्कार्यमें योग देना भी एक बड़े गौरवकी बात है । आपके आगमनसे बोस्टनवासियोंको यह गौरव प्राप्त हुआ इसलिए हम लोग आपके बहुत अनुग्रहीत हैं । " धनसंग्रहके कार्यसे मुझे यह अनुभव हो गया है कि पहले प्रकारके—रुखाईका व्यवहार करनेवाले लोग दिनों दिन

घट रहे है और दूसरे प्रकारके लोगोंकी—सुजनताका व्यवहार करनेवालोंकी संख्या बराबर बढती जा रही है। इसी बातको इस प्रकारसे भी कह सकते है कि अब धनवान् लोग, अच्छे कार्योंके लिए मदद मॉगनेवाले स्त्री-पुरुषोंको, भिक्षुक न समझ कर अपने ही कार्य करनेवाले लोकप्रतिनिधि मानने लगे है।

बोस्टन शहरमें मैंने यह देखा है कि दाता धन देकर मुझे धन्यवाद देनेका अवसर न देकर उलटे मुझहीको धन्यवाद देते है। वे लोग यह समझते है कि ऐसे कामोमे दान देना अपना ही गौरव बढाना है। अन्य स्थानोमे भी मुझे अच्छे अच्छे लोगासे मिलनेका अवसर प्राप्त हुआ है, पर जैसी उदार और दयालु प्रकृतिक लोग मैंने बोस्टनमे देखे वैसे अन्यत्र कही देखनेम न आये। मै समझता हूँ कि लोगोमे दिनोंदिन दानशीलता बढ रही हे। धनसग्रह करते हुए मेरे सामने यही एक बात रही और अब भी है कि धनवान् लागोको सत्कार्योम दान देनेका मौका दिलानेमे काई बात उठा न रखनी चाहिए।

टस्केजी-विद्यालयके प्रारभके दिनामे कुछ समयतक उत्तर प्रान्तके शहरो और देहातोंमे भटकते रहने पर भी कहीसे एक पैसा भी मुझे न मिला था। कई बार ऐसा हुआ है कि जिन लोगोसे बहुत कुछ सहायता मिलनेकी आशा थी उनसे तो कुछ भी न मिलता और उदासीसे मेरा उत्साह भग हो जाता, पर जिन लोगोसे कभी कुछ भी मिलनेकी आशा न होती थी, ऐसे लोगोसे कभी कभी बडी सहायता मिल जाती थी।

कनेक्टिकट राज्यके स्टेफर्ड गॉवसे दो मीलके फासले पर रहनेवाले एक सज्जनके विषयमे मुझसे यह कहा गया था कि अगर उन्हे टस्केजी-विद्यालयका सब हाल बतलाया जायगा तो वे अवश्य सहायता करेंगे। इसलिए मै एक दिन उनसे मिलने गया। उस रोज़ बडी ही ठड थी

और पाला पड रहा था । पर इसकी मैने कोई परवा नही की और उनके मकान तक जाकर मैने उनसे भेट की । उन्होने मेरी बाते सब सुन ली, पर दिया कुछ भी नही । इससे मुझे खेद अवश्य हुआ क्योकि मेरे तीन घटे व्यर्थ ही खर्च हुए परन्तु सन्तोष इस बातका था कि मैने अपना कर्तव्य किया । यदि मे उनसे न मिलता तो मुझे अपना कर्तव्य पालन न करनेके कारण बहुत अधिक बेचनी होती ।

इस घटनाके दो वर्ष बाद इन्ही सज्जनने मेरे पास एक पत्र भेजा जिसमे लिखा था,— ' आपके विद्यालयके लिए इस पत्रके साथ मै दस हजार डालरकी एक हुडी भेजता हूँ । मैने यह रकम अपने मृत्युपत्रमे (वसीहतनाममे) आपके विद्यालयके नाम लिख दी थी, पर अब इसे मै जीते जी ही दे डालना उचित समझता हूँ । दो वर्ष पूर्व मैने आपके दर्शन किये थे, उसका स्मरण होनसे मुझे बडा आनन्द होता है । '

इस हुडीसे मुझे जैसा आनन्द हुआ वैसा और किसी बातसे न हुआ होगा । विद्यालयको अबतक जितने दान मिले थे उनमे सबसे बडी रकम यही थी । यह दान भी ऐसे अवसर पर मिला जब कि बहुत दिनोंसे विद्यालयको कहींसे कुछ भी न मिला था । धनाभावके कारण उस समय हम लोग बडी चिन्तामे थे । एक बडे विद्यापीठके सचालनका भार सिर पर था, अभी कितने ही बिलोको चुकाना था, इसके सिवाय हर महीने बिल पर बिल आते ही जाते थे और हम लोग यह नही जानते थे कि इनको चुकानेके लिए धन कहाँसे आवेगा ! मै नही जानता कि इससे भी अधिक चिन्ताग्रस्त करनेवाली और कोई दुरवस्था हो सकती है ।

यदि मेरे विषयमे पूछिए तो मुझ पर दूनी जिम्मेदारी थी और इसलिए मेरी चिन्ता भी उसी हिसाबसे बढी हुई थी । यही विद्यापीठ यदि गोरोंकी किसी मडलीकी देखरेखमे होता और उसमे नाकामयाबी होती तो केवळ नीग्रो लोगोंकी शिक्षाका एक प्रबन्ध टूट जाता, परन्तु

यह नीग्रो द्वारा ही चलाई जानेवाली एक संस्था यदि मिट जाती तो एक विद्यालयकी ही हानि न होती; बल्कि सारी जाति पर कलंकका टीका लग जाता। ऐसी विकट अवस्थामें इन दस हज़ार डालरोंने बड़ा भारी काम किया।

मैंने अपना यह सिद्धान्त बना लिया है और मैं मौका पाकर विद्यालयके अध्यापकोंको बार बार यही बतलाया करता हूँ कि विद्यालयकी आन्तरिक अवस्था जितनी ही निर्मल, पवित्र और उपयोगी रक्खी जायगी उतनी ही उसे बाहरसे सहायता मिलेगी।

मैं पहली बार जब सुप्रसिद्ध रेल-महाजन मिस्टर कार्लीस पी. हटिंगटनसे मिला तो उन्होंने हमारे विद्यालयके लिए सिर्फ़ दो ही डालर दिये थे। उन्हीं हटिंगटन साहबने, उनकी मृत्युसे कुछ महीने पहले जब मैं उनसे मिला तो, पचास हज़ार डालर दे दिये! इन दो दानोंके मध्यसमयमें मिस्टर और मिसेस हटिंगटनसे हमें और भी कई बड़ी बड़ी रकमें मिली हैं।

कुछ लोग शायद यह कहेंगे कि यह टस्केजी--विद्यालयका बड़ा भाग्य था जो उसे पचास हज़ार डालर मिल गये। पर मैं इसे भाग्य या तक़दीर नहीं कहता। यह अविराम परिश्रम और अध्यवसायका ही फल था। दीर्घोद्योगके बिना किसीको कुछ नहीं मिलता। मिस्टर हटिंगटनने मुझे जिस वक्त दो ही डालर दिये उस वक्त मैंने अधिक दान न देने पर उन्हें दोष नहीं लगाया। तबसे मैं बराबर उन्हें यह दिखलानेका उद्योग करता रहा कि हम लोग अधिक दानके पात्र हैं। मैं लगातार बारह वर्षतक यह उद्योग करता रहा। ज्यों ज्यों वे विद्यालयकी उन्नतिके आगे बढ़ते हुए कदम देखते चले त्यों त्यों अधिक सहायता भी करते गये। मिस्टर हटिंगटनसे अधिक सहानुभूति और विद्यालयके कार्यमें उदारता रखनेवाला कोई भी धानिक पुरुष मैंने नहीं देखा।

उन्होंने हम लोगोंको भरपूर धन दिया; यही नहीं, बल्कि उन्होंने मुझे संस्थासंचालनके विषयमें अनेकबार पितृवत् स्नेहसे उपदेश दिया है और इस कार्यमें अपना अमूल्य समय खर्च किया है।

उत्तर प्रान्तमें धन संग्रहका कार्य करते हुए मुझे बड़ी बड़ी कठिनाइयोंसे सामना करना पड़ा है। लोग शायद् विश्वास न करेंगे, इस लिए मैंने अबतक एक घटनाका हाल किसीको भी नहीं बतलाया है; पर आज बतला देता हूँ। मैं अपने कामसे ह्रोड द्वीपके प्राविडेन्स नामक स्थानमें आया हुआ था। सबेरेका वक्त था, मेरी जेबमें भोजनके लिए एक पैसा भी न था; एक महिलासे कुछ मिलनेकी आशा थी। उससे मिलनेके लिए सड़कके उस पार जाते समय गाड़ीकी राह पर मुझे पचीस सेंटका (साड़े बारह आनेका) एक सिक्का हाथ लग गया! भोजनके लिए ये पचीस सेंट तो मिल ही गये, और थोड़ी ही देर बाद उस महिलाके यहाँसे आशानुसार दान भी मिल गया!

एक बार उपाधिदानके अवसर पर मैंने ट्रिनिटी चर्चके रेक्टर बोस्टनके पादरी मिस्टर विंचेस्टर डोनाल्डको विद्यालयमें मुख्य भाषण करनेके लिए निमंत्रित किया। व्याख्यान सुननेके लिए आनेवाले लोगोंको बैठनेकी जगह बहुत ही कम थी। इस लिए हम लोगोंने पेड़की डालियाँ छाकर और लकड़ीकी बड़ी बड़ी बल्लियाँ खड़ी करके एक मामूली मंडप तैयार कर दिया था। ज्यों ही डाक्टर डोनाल्ड वक्तृता देने खड़े हुए त्यों ही मूसलधार वृष्टि होने लगी। इसलिए उन्हें अपनी वक्तृता बन्द करनी पड़ी और उन पर छाता लगाना पड़ा!

ट्रिनिटी चर्चके रेक्टर उस बड़े भारी जनसमुदायके सामने एक पुराने छातेके नीचे खड़े हैं और इस बातकी राह देख रहे हैं कि वर्षा समाप्त होकर कब मेरा भाषण आरम्भ होता है! इस दृश्यको जब मैंने देखा तब मुझे अपने कियेकी सुध हुई!—मालूम हुआ कि मैंने कितने बड़े साहसका काम कर डाला है।

शीघ्र ही पानी रुका ओर डाक्टर डोनाल्डने अपनी वक्तृता चटपट दे डाली। हवा प्रतिकूल थी तो भी आपकी वक्तृताका रग जम गया। कुछ देर बाद, भीगे कपडे सूखने पर, डाक्टर साहबने यों ही मामूली बातचीतमें कहा कि "यहॉ एक बडा गिरजाघर बन जाय तो अच्छा हो।" दूसरे ही दिन इटालीमे प्रवास करती हुई दो स्त्रियोका एक पत्र मेरे पास आया। उसमें लिखा था कि "टस्कजीमे जिस बड गिरजाघरकी जरूरत है हमने उसे बनवानेका सारा खर्च दना निश्चय किया है!"

इसके कुछ ही दिन बाद (अमेरिकाक सुप्रसिद्ध दानी) मिस्टर एड्रू कार्नेजीन टस्कजी विद्यालयके नवीन पुस्तकालयके लिए बीस हजार डालर भेज दिये! हमारा पुराना पुस्तकालय एक छोटीसी झोपडीमे था। मिस्टर कार्नेजीकी सहानुभूति ओर सहायता प्राप्त करनेम मुझे दस वर्ष उद्योग करना पडा। दस वर्ष पहले पहली मलाकातमे उन्होने हमार विद्यालयकी ओर विशेष ध्यान न दिया था। परन्तु मैन उन्हे यह दिखला देनेका निश्चय किया था कि हम लोग आपक दानपात्र हे। दस वर्ष अविराम परिश्रम करनके पश्चात् मेन उन्हे निम्नलिखित पत्र लिखा —

१५ दिसबर १९००

मिस्टर एड्रू कार्नेजी,

५ डब्ल्य ५१ स्ट्रीट, न्यूयार्क—की सेवामें।

प्रिय महाशय, कुछ समय पूर्वकी भेटम सूचित किये अनुसार टस्केजी—विद्यालयक पुस्तकालय भवनके लिए आपकी सेवामे यह प्रार्थनापत्र भेजता हूँ।

इस समय हमारे विद्यालयमे ११०० विद्यार्थी, ८६ कर्मचारी और अध्यापक (सपरिवार) है। विद्यालयके आसपास लगभग २०० नीग्रो रहते हे। य सब लोग इस पुस्तकालयसे बहुत लाभ उठा सकगे।

हमारे पास १२०० पुस्तक, सामयिक पत्र ओर मित्रोंके दिये हुए उपहार आदि है। इनक लायक हमारे पास स्थान नहीं और न कोई वाचनालय ही हे जहॉ लाग आकर पुस्तके या पत्र पढ सकें।

हमारे विद्यालयके ग्रेज्युएट दक्षिणके हर हिस्सेमें काम करने जाते हैं। इस लिए इसमें सन्देह नहीं कि वाचनालयसे उन्हें जो ज्ञान प्राप्त होगा वह समस्त नीग्रो जातिकी उन्नतिमें सहायक होगा।

हमारी आवश्यकतानुसार भवन बीस हज़ार डालरमें बन जायगा। इस भवनके लिए ईंटें बनानेका तथा बढ़ई, लुहार आदिका सारा काम विद्यार्थी खुद कर लेंगे। आपके धनसे केवल भवन ही नहीं बनेगा, बल्कि भवनके बनानेमें बहुतसे विद्यार्थियोंको इमारतके कामकी शिक्षा मिलेगी और उनके कार्य्यके पुरस्कारस्वरूप उन्हें जो धन मिलेगा उसकी सहायतासे वे विद्यालयमें रहकर शिक्षा प्राप्त कर सकेंगे। मैं नहीं जानता कि इतने धनसे दूसरी किसी जातिकी इतनी उन्नति हो सकती है। यदि आप कुछ और अधिक विवरण जानना चाहें तो मैं प्रसन्नतापूर्वक बतला सकता हूँ।

विनीत—
बुकर टी. वाशिंगटन,
प्रिन्सिपल।

इस उत्तरमें मिस्टर कार्नेजीने लिखा कि:—

"पुस्तकालयके भवनके लिए मैं बड़ी प्रसन्नतासे बीस हज़ार डालर तक देनेके लिए तैयार हूँ। आपके इस उदार कार्य्यसे मुझे बहुत प्रसन्नता प्राप्त हुई है।"

मैं अपने अनुभवसे यह बात कहता हूँ कि व्यवहार यदि साफ़ और सुन्दर रक्खा जाय तो धनवान् लोग सहानुभूतिके साथ अवश्य सहायता करते हैं। टस्केजी विद्यालयका हिसाब और अन्य व्यवहार मैंने इतना साफ़ रखनेकी चेष्टा की है कि न्यूयार्ककी बड़ीसे बड़ी कोठी भी उसे देखकर प्रसन्न होगी।

विद्यालयको मिले हुए बड़े बड़े दानोंका हाल मैं ऊपर कह चुका। पर, हमारे विद्यालयको उन्नत दशामें लानेके लिए जो धन खर्च हुआ

है उसका बड़ा भारी अंश छोटी छोटी रकमोंसे ही इकट्ठा हुआ है । जितने परोपकारी कार्य होते हैं वे साधारणतः सच्ची सहानुभूति रखनेवाले साधारण लोगोंकी छोटी मोटी रकमों पर ही चला करते हैं । धनसंग्रह करते समय मैंने अनेक धर्मोपदेशकोंकी हालत देखी है । इनके पीछे सहायता माँगनेवालोंकी इतनी भीड़ रहती है कि साधारण मनुष्य देख-कर ही घबरा जाय । पर इनकी सहानुभूति और सहिष्णुता देखकर मैं चकित हो जाता हूँ । ईसाके समान उदार और परोपकारी जीवनका महत्त्व मैंने इन्हीं धर्मोपदेशकोंके जीवनसे समझा है । आज पैंतीस वर्षोंसे काले लोगोंकी उन्नतिके लिए अमेरिकाका सार्वजनिक (सब संप्रदायोंका) क्रिश्चियन चर्च जो काम कर रहा है वह बड़ा ही प्रभाव उत्पन्न करनेवाला है । रविवारकी पाठशालाओं, क्रिश्चियन एनडेवर सोसायटियों, मिशनरी संस्थाओं और सार्वजनिक चर्चोंसे मिलनेवाले धनसे ही नीग्रो लोगोंका काया पलट हो रहा है ।

इन छोटी रकमोंका जिक्र करते हुए मुझे यह भी कहना चाहिए कि टस्केजीके ग्रेज्युएट भी अपना वार्षिक चन्दा समय भर भेज देते हैं । अप-वादरूप बहुत ही थोड़े हैं । यह चन्दा पचीस सेंटसे दस डालर तक है ।

तीसरे वर्षका कार्य आरंभ होनेके समयसे हमें अन्य तीन स्थानोंसे अकस्मात् सहायता मिलने लगी, और अबतक बराबर मिलती है । (१) अलबामा-सरकारने अपनी सहायता दो हज़ार डालरसे बढ़ाकर तीन हज़ार प्रतिवर्ष कर दी और आगे चलकर यह सहायता साढ़े चार हज़ार डालर तक पहुँच गई । इस सहायतावृद्धिमें वहाँकी व्यवस्थापक सभाके सदस्य माननीय मिस्टर एम्. एफ. फास्टरने बहुत उद्योग किया है । (२) जान एफ. स्लेटर-फंडसे हमें प्रति वर्ष ग्यारह हज़ार डालर मिलते हैं । (३) पीबाड़ी फंडसे भी सहायता मिलने लगी । पहले पाँच ही सौ डालर मिले; पर बढ़ते बढ़ते अब यह रकम पंद्रह सौ डालर तक पहुँच गई है ।

स्लेटर और पीबाडी इन दो फडोंसे सहायता पानेका उद्योग करनेमें दो अच्छे सज्जनोंसे मेरी जान पहचान हुई । इन दोनोने नीग्रो लोगोंकी शिक्षाको एक अच्छे मार्ग पर ला दिया है । इनमेंसे एक तो वाशिंगटनके मिस्टर जे एल एम करी और दूसरे न्यूयार्कके मिस्टर मारिस के जेसप है । डाक्टर करी दक्षिण प्रान्तके रहनेवाले है । वे पहले सयुक्त-सेनामे एक सैनिक थे । उनके समान नीग्रो जातिकी अभिवृद्धि चाहनेवाले अथवा वर्णविद्वेषको पास भी न फटकने देनेवाले सज्जन इस देशमें बहुत कम होगे । उनमे विशेषता यह है कि काले गोरे दोनों ही उन पर विश्वास रखते है । उनसे मेरी जो पहली भेंट हुई उसे मैं कभी न भूलूँगा । मे उनसे मिलनेके लिए रिचमड शहरमे उनके मकान पर गया था । इससे पहले उनकी सुजनताके विषयमे मै बहुत कुछ सुन चुका था । तथापि मेरी उम्र अल्प होने और अनुभव भी कुछ न होनेके कारण उनके सामने जाते मुझे डर लगा और शरीर कॉपने लगा । उन्होंने बडे प्रेमसे मरा हाथ पकटा और मुझसे इतनी मधुर और उत्साह देनेवाली वाणीसे बातचीत की, तथा मेरे कर्त्तव्यके विषयमे मुझे ऐसी अच्छी शिक्षा दी कि मुझे इस बातका पूरा विश्वास हो गया कि मानव जातिके कल्याणके लिए सदा निष्काम भावसे प्रयत्न करनेवालोमेंसे ही वे एक महात्मा हे । ओर सचमुच ही, अनुभवसे मेरा यह विश्वास दृढसे दृढतर होता गया है ।

मिस्टर मारिस के जेसप, स्लेटर—फडके कोषाध्यक्ष है । नीग्रो लोगोंकी उन्नतिके लिए अपना समय और सम्पत्ति खर्च करनेवाला इनके समान धनवान् और उद्योगी पुरुष मैने दूसरा नही देखा । इधर कुछ वर्षोंमें टस्केर्जी—विद्यालयकी औद्योगिक शिक्षाको जो महत्त्व प्राप्त हुआ है और उसकी जैसी मजबूत नीव दी गई है उसके लिए विद्यालय इनका सदा कृतज्ञ रहेगा, क्योकि इन्हीके प्रयत्न और प्रभावसे यह सब हो सका है ।

तेरहवाँ परिच्छेद ।

पाँच मिनिटकी वक्तृताके लिए दो हज़ार मीलकी यात्रा ।

जब विद्यालयके साथ छात्रावासका प्रबन्ध हो गया तब बहुतसे ऐसे विद्यार्थियोंने भी विद्यालयमें भरती होनेके लिए प्रार्थना की जो योग्य और सत्पात्र थे, पर किसी प्रकारकी फ़ीस न दे सकते थे। इन प्रार्थियोंको निराश करना हम लोगोंसे न बन पड़ा और इनके लिए, सन् १८८४ मे, एक नाइट-स्कूल (रात्रिकी पाठशाला) खोला गया ।

हैम्पटनके नाइट-स्कूलके समान इसका भी प्रबन्ध किया गया । ऐसे ही विद्यार्थी इसमें भरती किये गये जो अपने भोजनका कुछ भी प्रबन्ध न कर सकते थे और इस कारण दिनकी पाठशालामें न पढ़ सकते थे। उन्हें दिनमें दस घंटे काम करना पड़ता था और रातको दो घंटे पढ़ना पड़ता था। परन्तु यह नियम पहले एक दो वर्षके लिए ही था। उन्हें भोजन-खर्चसे कुछ आधिक मिल जाता था और उनकी यह बचत विद्यालयके कोशमें जमा की जाती थी। आगे जब ये विद्यार्थी दिनकी पाठशालामें पढ़ना शुरू करते थे तब उनकी इस बचतसे उनका भोजन-खर्च चलाया जाता था । इस समय इस नाइट-स्कूलमें साढ़े चार सौ विद्यार्थी पढ़ते हैं।

इस नाइट-स्कूलसे बढ़कर विद्यार्थियोंकी योग्यता परखनेवाली और कौनसी कठिन कसौटी हो सकती है ? इसमें विद्यार्थियोंकी दृढ़ताका अच्छा परिचय मिल जाता है; इसी लिए मैं इसको बहुत महत्त्वकी संस्था समझता हूँ। रातकी दो घंटेकी पढ़ाईके लिए जो विद्यार्थी दिनमें दस घंटे धोबीखाने या ईंटोंके कारखानेमें काम कर सकता है उसमें

शिक्षा सम्पादनकी पूरी सामर्थ्य होती है यह बात आप ही साबित हो जाती है।

रातकी पढ़ाई समाप्त होने पर विद्यार्थी दिनकी पाठशालामें भरती होता है। वहाँ उसे सप्ताहमें चार दिन शिक्षा दी जाती है और बाकी दो दिन वह अपने काममें खर्च करता है। इसके अतिरिक्त गरमीके तीन महीने भी वह अपने कामहीमें बिताता है। रातकी पाठशालासे जो विद्यार्थी निकल आता है उसे साधारणतः शिल्पसंबंधी और मानसिक शिक्षा पूर्ण करनेका मार्ग मिल जाता है। विद्यार्थी कितना ही धनवान् क्यों न हो उसे इस विद्यालयमें हाथसे काम करना ही पड़ता है। अब अन्य विषयोंके समान शिल्पशिक्षा भी सर्वप्रिय हो चुकी है। टस्केजी-विद्यालयसे ग्रेज्युएट होकर संसारमें यश और नाम प्राप्त करके सुखी बने हुए कितने ही स्त्रीपुरुषोंने इसी नाइट-स्कूलसे पढ़ना आरम्भ किया था।

टस्केजीमें शिल्पशिक्षा पर ज़ोर दिये जानेका यह अर्थ नहीं है कि यहाँ धार्मिक अथवा आध्यात्मिक शिक्षामें कुछ ढिलाई की जाती है। यह विद्यालय किसी संप्रदाय विशेषका नहीं; तथापि पूर्ण धार्मिक है। हमारी उपासनायें, प्रार्थनासभायें, रविवारकी पाठशालायें, क्रिश्चियन एनडेवर सोसाइटियाँ, वाइ. एम. सी. ए. और अन्यान्य मिशनरी संस्थायें हमारे उक्त कथनको प्रमाणित करती हैं।

सन् १८८५ में मिस आलिविया डेविड्सनसे मेरा विवाह हुआ। विवाहके पश्चात् भी वे अपनी शक्ति और समय, घरके कामकाजके अतिरिक्त, विद्यालयके लिए खर्च करती रहीं। विद्यालयमें पढ़ाने और निगरानी करनेके अतिरिक्त पहलेकी भाँति बीच बीचमें धनसंग्रह करनेके लिए उत्तर प्रान्तमें भ्रमण करनेका क्रम भी उन्होंने ज़ारी रक्खा। चार वर्ष संसारसुख अनुभव कर और आठ वर्ष विद्यालयके लिए प्रसन्नतापूर्वक उद्योग करके १८८९ में वे इहलोकसे सिधार गईं!

अपने प्रिय कार्यके लिए उन्होंने अपना शरीर दे डाला था! हम दोनोंके संसारसुखके चिह्नस्वरूप हमारे दो सुन्दर और बुद्धिवान् पुत्र हुए। उनके नाम बेकर टैलिफेरो और अर्नेस्ट डेविड्सन है। इनमेसे बडे, बेकरने टस्केजीमें ईटे तैयार करनेके काममे अच्छी जानकारी प्राप्त कर ली है।

लोगोंने मुझसे कई बार पूछा है कि मैने सर्व साधारणमे वक्तृता देनेका आरम्भ किस प्रकार किया। इसके उत्तरमे मुझे यह कहना है कि सार्वजनिक भाषणोंमें मैने अपने जीवनका बहुत ही थोडा अश लगाया है। बात यह है कि मै कोरी बातें करनेकी अपेक्षा वास्तविक कार्य करना अधिक पसन्द करता हूँ। मै जब जनरल आर्मस्ट्रागके साथ उत्तर प्रान्तमें भ्रमण करने गया था और बडे बडे नगरोमे सभायें करके मैने व्याख्यान दिये थे तब मालूम होता है कि एक व्याख्यानके समय वहाँकी जातीय शिक्षासमितिके सभापति माननीय मिस्टर थामस डब्ल्यू बिकनेल उपस्थित थे। कुछ दिनोके उपरान्त उन्होने मुझे समितिके एक अधिवेशनमें व्याख्यान देनेके लिए निमन्त्रित किया। यह अधिवेशन माडीसन नामक नगरमे होनेवाला था। यहीसे मानो मेरे व्याख्यान-जीवनका आरभ हुआ।

समितिमे मेरे व्याख्यानके समय लगभग चार हजार आदमी उपस्थित थे। पीछेसे मुझे यह भी मालूम हुआ कि इस व्याख्यानको सुननेके लिए अलबामा रियासत ओर खास टस्केजीके भी कुछ गोरे लोग चले आये थे। कुछ समय बाद इनमेसे कुछ लोगोने मुझसे कहा कि " हम आपके व्याख्यानमे दक्षिणी गोरोकी मट्टी पलीद होनेका ही अनुमान करते थे और इसी लिए हम लोग आपका व्याख्यान सुननेके लिए इतनी दूर गये, पर आपके मुँहसे एक भी खराब शब्द न सुनकर हम लोगोको बडा ही आश्चर्य हुआ। यही नही बल्कि टस्केजी–विद्या-

लय स्थापित करनेमे गोरे लोगोने जो सहायता दी थी उसके लिए आपने उनका आभार तक माना । ”

टस्केजीमे जिस समय मे पहले पहल आया उसी समय मैने यह निश्चय कर लिया था कि यहाँ मै अपना घर बनाऊँगा । टस्केजीसे मरा प्रेम हो गया था । वहाँके गोरे अधिवासियोंमें टस्केजीके लिए जो प्रीति थी उससे कम प्रीति मुझमे नही थी और मुझे वहाँके अच्छे कार्या पर उतना ही अभिमान था और बुरे कामाके लिए उतनी ही घृणा थी जितनी कि गोराको थी । दक्षिण प्रान्तमे मे जिन बातोको छिपाये रहता था अथवा जिन्हे कहना नही चाहता था उन बातोको उत्तर प्रान्तमे जाकर कहना मेने कभी उचित नही समझा । किसी व्यक्तिको गालियाँ देकर सन्मार्गम प्रवृत्त करनेकी आशा करना दुराशा मात्र है । हाँ, यदि उसके दोष दूर करने ह तो सबसे अच्छा उपाय यही है कि उसके दोषाकी ओर अधिक ध्यान न दकर उसके अच्छे कामोकी प्रशसा करता रहे । इस तत्त्व पर अमल करते हुए मैने उचित अवसर पर दक्षिणके लोगोके अन्यायका समुचित रीतिसे, विरोध करनेमे भी भूल नहीं की हे और उचित आलोचना करने पर मेने देखा है कि उससे दक्षिण-वाले नाराज भी नही होते । आलोचनाके विषयमे मेरा यह सिद्धान्त रहा है कि जहाँके लागाकी आलोचना करनी हो वही जाकर उसे करना चाहिए । इस लिए यदि कभी दक्षिणवालोकी आलोचना करनी होती है तो मे दक्षिणके ही किसी नगरमे उसे करता हूँ—बोस्टन या और किसी शहरमे जाकर नही ।

माडीसनवाली वक्तृतामें मैने यह बतलाया था कि सीधे और सच्चे व्यवहारसे ही काले-गोरोमे मेल बढ सकता है और दोनो जातियोको इस बातका यत्न करना चाहिए कि परस्पर द्वेषभाव रहनेके बदले मित्रभाव स्थापित हो । मैने वहाँ यह भी बतलाया था कि हम लोग जिस स्थान

और समाजमें रहते हैं उसी स्थान और समाजका जिस बातमें हित हो उसी बात पर ध्यान देकर निर्वाचनके समय सम्मति देनी चाहिए। हजारों मील दूर रहनेवाले किसी मनुष्यको प्रसन्न करनेके लिए अपने हिताहितका विचार छोड़ सम्मति देना अपनी हानि करना है।

इस व्याख्यानमें मैंने नीग्रो जातिका ध्यान इस बातकी ओर दिलाया था कि यदि उसे अपना भविष्य उज्ज्वल करना हो तो और सब बातोंको छोड़ उसे अपने कला-कौशल बुद्धिमत्ता, और शुद्ध आचरणसे समाजको अपनी ओर खींच लेना चाहिए। यदि उससे यह न बन पड़ेगा तो समाजको उसकी आवश्यकता ही न रहेगी। जिस किसी मनुष्यने कोई कला हस्तगत कर ली है—फिर उसका रंग चाहे गोरा हो या काला—वह अपनी कलाके बलसे अवश्य बाजी मार लेगा; और जो नीग्रो औरोंकी आवश्यकताओंके अनुसार उन्हें पूर्ण करनेमें जितना ही समर्थ होगा उसकी इज्जत और प्रतिष्ठा भी उसी हिसाबसे बढ़ती जायगी।

उक्त कथनकी सत्यता प्रमाणित करनेके लिए मैंने एक दृष्टान्त भी दिया था। पहले एक एकड़ ज़मीनमें ४९ मन शकरकन्द पैदा होते थे; परन्तु हमारे विद्यालयके एक ग्रेज्युएटने एक ही एकड़से २५० मन शकरकन्द पैदा करके दिखला दिये। खेतीकी अर्वाचीन पद्धति और रसायनशास्त्रके ज्ञानसे ही वह ऐसा कर सका। इससे आसपासके गोरे किसानोंने उसका बड़ा सम्मान किया और बहुतेरे उसके पास शकरकन्दकी खेतीके विषयमें पूछताँछ करनेके लिए आने लगे। उसके आदरसत्कारका मुख्य कारण यही था कि उसने अपने ज्ञान और परिश्रमसे समाजके सुख और वैभवको बढ़ाया था। मैंने इसके साथ ही यह भी जतला दिया था कि हम लोग अच्छे शकरकन्द पैदा करना अथवा सदा खेतों पर काम करते रहना ही नीग्रो लोगोंके लिए काफ़ी नहीं समझते। मैंने यह समझानेकी चेष्टा

की थी कि इसी प्रकारके किसी भी काममें—किसी भी उद्योग धन्धेमें यदि कोई अच्छा जानकार हो जाय तो आगे चलकर उसके लड़के और नाती उससे भी अधिक कुशल और अभिज्ञ होंगे ।

इस प्रकार मैंने अपने पहले व्याख्यानमें दोनों जातियोंके विषयमें थोड़ीसी बातें कहीं थीं । तबसे अबतक मेरे उन विचारोंमें कुछ भी परिवर्त्तन नहीं हुआ है ।

पहले जब मैं किसी मनुष्यको नीग्रो लोगोंके विषयमें अपशब्द प्रयोग करते हुए देखता था अथवा उनकी सर्वांगीन उन्नतिको रोक देनेका प्रयत्न करते हुए पाता था तो मन-ही-मन बहुत अप्रसन्न होता था; पर अब अगर मैं किसीको किसी गैरकी उन्नतिमें बाधा डालते हुए देखता हूँ तो मुझे उस मनुष्य पर दया आती है । मैं जानता हूँ कि स्वयं किसी प्रकारकी उन्नति न कर सकनेके कारण ही वह इस बुरे मार्ग पर चलता है । ऐसे मनुष्य पर मुझे इस लिए दया आती है कि वह जिस संसारकी उन्नतिमें बाधा डालनेकी चेष्टा करता है उस संसारकी उन्नति किसीके रोके नहीं रुक सकती और इस लिए वह संकीर्ण-हृदयवाला मनुष्य आगे चलकर स्वयं अपने किये पर लज्जित होगा । परस्पर सहानुभूति और बन्धु-प्रेम, आदि बातोंमें मानव जातिकी बराबर प्रगति होती जा रही है और इस प्रगतिको रोकनेकी चेष्टा करना और चलती हुई रेलगाड़ीको रोकनेके लिए उसके आगे लेट जाना एक ही बात है ।

माडीसनमें शिक्षासमितिके सामने मैंने जो व्याख्यान दिया उससे उत्तर अमेरिकामें मेरा नाम चारों ओर फैल गया और तबसे व्याख्यान देनेके लिए मुझे वहाँके निमंत्रण पर निमंत्रण आने लगे ।

इस समय मैं दाक्षिणके गोरों पर भी अपने विचार प्रकट करनेके लिए उत्सुक हो रहा था । संयोगवश १८९३ में मुझे इसके लिए भी अच्छा मौका मिल गया। इस वर्ष एटलांटामें सब राष्ट्रोंके पादरियोंकी एक महा-

सभा हुई थी। जिस समय मुझे इस महासभामे व्याख्यान देनेका निमंत्रण-पत्र मिला उस समय मे बोस्टनमें एक काम कर रहा था। पहले तो मुझे एटलाटामे जाकर व्याख्यान देना असभव ही मालूम हुआ। तथापि मैने अपने कार्यक्रमको देखकर यह मालूम किया कि मै बोस्टनसे चलकर एटलाटामे व्याख्यानसे आध घटे पहले पहुँच सकता हूँ और बोस्टन लौटनेसे पहले वहाँ एक घटे ठहर सकता हूँ। आमत्रण-पत्रमें मेरे व्याख्यानके लिए पॉच मिनिटका समय लिखा था। अब मेरे सामने केवल यही प्रश्न रहा कि इतनी लम्बी मजिल मार कर वहाँ पॉच मिनिटके समयमे मै कुछ कह भी सकूँगा या नही।

मैने यह सोचा कि इस अवसर पर जहाँ बडे बडे गोरे अधिकारी और महाजन एकत्रित होगे। उन लोगोको टस्कजी विद्यालयके कार्योका परिचय देनेके लिए ऐसा अच्छा अवसर शीघ्र न मिलेगा। इस लिए मैने यह यात्रा करना स्वीकार कर लिया। वहाँ जाकर मैने दो हजार दक्षिणी और उत्तरी गोरोके सामन केवल पॉच मिनिट व्याख्यान दिया। मेरा व्याख्यान सुनकर वे लोग आनन्दसे गद्गद हो गये। दूसरे दिन एटलाटाके समाचारपत्रोने मेरे व्याख्यान पर अपने अनुकूल अभिप्राय प्रकट किये, और चारो ओर उसकी चर्चा होने लगी। दाक्षिणके बडे बडे लोगोको मेरा व्याख्यान सुननका मौका मिला और मेने समझा कि मेरा उद्देश्य सफल हुआ।

अब लोगोमे मेरा व्याख्यान सुननकी चाह दिन पर दिन बढने लगी और गोरे तथा नीग्रो दानो ही उसके लिए समानरूपसे उत्सुक होने लगे। टस्केजीके कार्यसे मे जितना समय बचा सकता था उतना समय मै इन व्याख्यानोमे खर्च करने लगा। टस्केजी-विद्यालयके फडके लिए ही मैने उत्तर प्रान्तमे अनेक व्याख्यान दिये। नीग्रो लोगोंके सामने मेरे जो व्याख्यान होते थे उनका उद्देश्य यही होता था कि लोग धार्मिक और मानसिक तथा शिल्प-सबधी ओर ओद्योगिक शिक्षाका महत्त्व जान जायँ

अब मै अपने जीवनकी एक महत्त्वपूर्ण घटना आपको बतलाता हूँ। १८ सितबर सन् १८९५ के दिन एटलाटाकी सर्वजातीय प्रदर्शनीमें मेरा जो व्याख्यान हुआ उससे लोगोमें बडा आन्दोलन मचा और ओरसे छोरतक सारे देशमे मेरी कीर्ति फैल गई।

इस घटना पर इतना आन्दोलन हुआ हे और मेरे भाषणके सबधमें मुझ पर प्रश्नोकी इतनी भरमार हुई है कि यदि मै यहाँ इस घटनाका विस्तारपूर्वक विवरण दे दूँ तो कुछ अनुचित न होगा। बोस्टनसे आकर एटलाटामे मैने जो पाँच मिनिटकी वक्तृता दी, वही शायद मेरे इस दूसरे व्याख्यानका मल हे। एटलाटाकी प्रदर्शनीको सरकारकी सहायता चाहिए थी और इसलिए वाशिगटन नगरम काग्रेस-कमेटीसे मिलनेके हेतु एटलाटाके पचोके साथ जानेके लिए वहाँके अग्रगण्य लोगोने एक तार द्वारा मुझसे प्रार्थना की। इन पचामें जाजियाके पचीस मुखिया और प्रतिष्ठित पुरुष थे। बिशप ग्राट, बिशप गेनिस और मै, इन तीन आदमियोका छोडकर बाकी सब गोरे थे। शहरके मेयर (शेरीफ) और शहरके अन्य अधिकारियोने कमेटीके सामने भाषण किये। इनके बाद दोनो काल प्रतिनिधियोके भाषण हुए। वक्ताओकी नामावलीमें मेरा नाम सबके बाद लिखा गया था। मै कभी ऐसी कमेटीके सामने उपस्थित न हुआ था ओर राजधानीमे मैने कभी बोलनेका साहस भी न किया था। क्या कहूँ और क्या न कहूँ, कुछ देरतक तो मै यही सोचता रहा। अन्तमे मेरी बारी आई और उस समय मेरे हृदयमे जो विचार उठे मैने प्रकट कर दिये। इस समय मुझे अपना सम्पूर्ण व्याख्यान स्मरण नही, पर मेरे कहनेका तात्पर्य यह था कि यदि काग्रेस वास्तवमें दक्षिणसे जातिभेद दूर कर दोनो जातियोमे परस्पर मेल बढाना चाहती है तो उसे उचित है कि वह दोनों जातियोंकी साम्पत्तिक और मानसिक उन्नतिमे हर प्रकारसे सहायता करे। मैने यह

भी बतलाया कि दासत्वकी बेड़ी टूटने पर दोनों जातियोंने अपनी कितनी उन्नति की है यह दिखलानेका सुयोग और उससे भविष्यत्के कार्यके लिए भरपूर उत्साह इस प्रदर्शनीसे मिलेगा। इसके बाद मैंने कहा कि यद्यपि केवल राजनीतिक अधिकारोंसे ही नीग्रो लोगोंको स्वर्ग नहीं मिल जायगा; तथापि उनके निर्वाचन-संबंधी अधिकारोंको छल कपटसे छीन लेनेका प्रयत्न भी न होना चाहिए, बल्कि इसके साथ ही उनमें उद्यम, कौशल, मितव्यय, बुद्धिमत्ता और सदाचारके प्रचारका भी प्रयत्न किया जाना चाहिए। अन्तमें मेरे कहनेका यह भाव था कि सिविल-वारके बाद लोगोंको इस प्रकारका यह पहला ही सुअवसर प्राप्त हुआ है, और यदि कांग्रेस इस अवसर पर चाही हुई रकम देगी तो इससे दोनों जातियोंका वास्तविक और स्थायी कल्याण होगा।

मैंने यह व्याख्यान केवल पंद्रह-बीस मिनिट तक दिया था तो भी जार्जियाके पंचों और कांग्रेसके सदस्योंने मेरा हार्दिक अभिनन्दन किया, जिससे मुझे बहुत ही आश्चर्य हुआ। कमेटीने एक दिलसे हम लोगोंके अनुकूल रिपोर्ट लिख भेजी और थोड़े ही दिनोंमें उसकी सूचना कांग्रेसने मान भी ली। इससे एटलांटा-प्रदर्शनीकी सफलताके विषयमें कोई सन्देह न रहा।

इस यात्रासे लौटकर प्रदर्शनीके संचालकोंने यह निश्चय किया कि प्रदर्शनीमें एक ऐसा बड़ा भवन बनवाया जाय जिसमें यह दिखलाया जाय कि दासत्वसे मुक्त होकर नीग्रो लोगोंने अबतक क्या उन्नति की है। यह भी निश्चय हुआ कि भवनका नकशा नीग्रो ही खींचें और भवन भी वे ही बनावें। इस निश्चय पर शीघ्र ही अमल भी किया गया। नीग्रो लोगोंने जो भवन तैयार किया वह किसी बातमें प्रदर्शनीके अन्य भवनोंसे कम न था।

अब यह विचार हुआ कि नीग्रो लोगोंका पदार्थसंग्रह भी अलग

रक्खा जाय और उस पर मैं निगरानी करूँ । पर टस्केजीमें इस वक्त कामोंकी बहुत अधिकता थी और इस लिए मैंने यह बात स्वीकार न की । तब शायद मेरी ही सूचनासे लिंचबर्गके मिस्टर आई० गारलैंड पेन इस काम पर नियुक्त किये गये । मैंने अपनी शक्ति भर उनकी सहायता करनेमें कोई बात उठा न रक्खी । पदार्थसंग्रह बड़ा और देखने योग्य था । हैम्पटन और टस्केजी-विद्यालयसे आई हुई वस्तुओं-पर तो लोग टूटे पड़ते थे। नीग्रो वस्तुसंग्रह देखकर दक्षिणी गोरोंको बहुत ही आश्चर्य और आनन्द हुआ ।

प्रदर्शनी खुलनेका दिन समीप आया और कार्यक्रम बनने लगा । कुछ लोगोंका यह प्रस्ताव था कि प्रदर्शनी खुलने पर पहले दिन किसी नीग्रोकी भी वक्तृता होनी चाहिए; क्योंकि प्रदर्शनीमें उन लोगोंने मुख्य-तया योग दिया है, और इसके सिवाय उनमेंसे किसीका व्याख्यान पहले रोज़ होनेसे दोनों जातियोंमें परस्पर सद्भाव भी बढ़ेगा । कुछ लोगोंने इस प्रस्तावका विरोध किया; परन्तु डायरेक्टर लोग सुयोग्य थे इस लिए उन्होंने आरंभिक वक्तृताके लिए किसी नीग्रोको निमंत्रित करनेका निश्चय कर दिया । अब दूसरा प्रश्न यह उठा कि इस कार्य्यके लिए किसको बुलाया जाय । कई दिन वादविवाद होता रहा और अन्तमें यह निश्चय हुआ कि मैं ही पहले दिन वक्तृता दूँ । शीघ्र ही मेरे पास निमंत्रण-पत्र भी आ गया ।

इस निमंत्रणसे मुझ पर कितनी बड़ी जिम्मेदारी आ पड़ी, सो वही अनुमान कर सकता है जो स्वयं कभी ऐसी स्थितिमें पड़ा हो । निमंत्रण-पत्र पाते ही मेरे मनमें तरह तरहके विचार उठने लगे। मुझे स्मरण हुआ कि मैं गुलाम था, मेरा बचपन दुःख दरिद्रता और अज्ञानमें बीता है, इतनी बड़ी जिम्मेदारीके कार्यके लिए आपको तैयार करनेके मुझे बहुत ही कम मौके मिले हैं, कुछ ही वर्ष पहले मेरी अवस्था इतनी गिरी हुई

थी कि श्रोताओंमेंसे कोई आदमी उठकर मुझे अपना 'गुलाम' बतलाकर गिरफ्तार कर सकता था, और इस समय भी बहुत संभव है कि मेरे पुराने मालिकोंमेंसे कुछ लोग मेरा भाषण सुननेके लिए एटलांटाकी प्रदर्शनीमें आवें।

एक नीग्रोके लिए ऐसे महत्त्वपूर्ण राष्ट्रीय अवसर पर दाक्षिणी गोरे पुरुषों और स्त्रियोंके साथ एक ही व्यासपीठ (प्लेटफार्म) पर खड़े होकर वक्तृता देनेका यह पहला ही अवसर था। मैं जानता था कि मेरे पुराने मालिकोंके प्रतिनिधि (वंशज) रूप दक्षिणके बड़े बड़े विद्वान् और धनवान् इस व्याख्यानको सुननेके लिए आवेंगे। इसके साथ ही मुझे यह भी मालूम था कि उत्तर प्रान्तके भी बहुतसे गोरे और मेरी जातिके लोग उपस्थित होंगे।

मैंने पहले ही यह निश्चय कर लिया था कि मैं कोई ऐसी बात न कहूँगा जिसे मैं सत्य और समुचित नहीं समझता। मुझे इस बातकी कोई सूचना नहीं मिली थी कि मैं कौनसी बात कहूँ और कौनसी छोड़ दूँ। मेरे लिए यह गौरवकी ही बात थी। प्रदर्शनीके संचालकोंको यह भली भाँति मालूम था कि अगर मैं चाहूँ तो एक ही बातसे प्रदर्शनीकी मर्य्यादा भंग कर दे सकता हूँ। परन्तु मुझे अपने भाषणमें सचाईके साथ अपनी जातिका पक्ष सुरक्षित रखना था और इस लिए मैं इस बातसे डरता था कि मेरा भाषण यदि अप्रासंगिक हुआ तो भविष्यमें कई बरसों तक कोई नीग्रो ऐसे अवसरों पर वक्तृता देनेके योग्य न समझा जायगा। उत्तर प्रान्तवासियोंके संबंधमें और साथ ही दक्षिणके अच्छे अच्छे सज्जनोंके विषयमें सच बातें बतलानेका ही मैंने निश्चय किया।

उत्तर और दक्षिणके समाचारपत्रोंमें मेरे भावी भाषणके संबंधमें खूब टीका-टिप्पणियाँ होने लगीं और उनसे प्रदर्शनी खुलनेके पूर्व चारों ओर मेरी चर्चा फैल गई। दक्षिणके कई समाचारपत्र मेरे व्याख्यान

देनेके विरोधी थे । मेरे कई जाति भाइयोंने मेरे व्याख्यानके लिए कितनी ही बातें सुझाई थीं । उस समय विद्यालयका वर्षारम्भ होनेके कारण मुझे अवकाश बहुत कम था, तो भी समय निकालकर मैंने अपना भाषण पूरा ध्यान देकर तैयार किया । सितंबरकी अठार-हवीं तारीख जैसे जैसे पास आने लगी वैसे वैसे मुझे न जाने क्यों, अपने प्रयत्न पर पानी फिरनेकी आशंका होने लगी और मेरा उत्साह भी घटने लगा । मैंने अपना भाषण अपनी स्त्रीको पढ़ सुनाया; उन्होंने उसे बहुत सराहा । एटलांटाके लिए प्रस्थान करनेसे एक दिन पहले १६ सितंबरको टस्केजी-विद्यालयके अध्यापकोंके बहुत आग्रह करने पर मैंने उन्हें भी अपना भाषण पढ़ सुनाया । उन्होंने उस पर जो आलो-चना की उससे भी मेरे मनकी धुकधुकी कुछ कम हो गई ।

१७ सितंबरको प्रातःकाल मैं अपनी स्त्री मिसेस वाशिंगटन और तीनों सन्तानोंके साथ एटलांटाके लिए रवाना हुआ । फाँसी पर लटकाये जानेके लिए जानेवाले किसी अपराधीके समान इस समय मेरी दशा हो रही थी ! टस्केजीसे जाते समय मुझे पासहीके एक गाँवमें रहनेवाला एक गोरा किसान मिला । उसने मेरी तरफ़ देखकर कहा– " वाशिंगटन, तुमने उत्तरके गोरोंके सामने और गाँव देहातोंमें रहनेवाले मेरे जैसे दक्षिणी गोरोंके सामने लेकचरबाजी की है; पर, कल एटलांटामें उत्तरके गोरे लोग, और दक्षिणके गोरे तथा नीग्रो लोग तुम्हारा लेकचर सुननेके लिए इकट्ठे होंगे । मालूम होता है कि तुम इसी सोचमें पड़े हुए हो । " इस गोरे किसानने मेरे मनका हाल तो खूब जान लिया; पर उसकी स्पष्टोक्तिसे—साफ़ साफ़ कह देनेसे मेरे मनको धैर्य न मिला ।

मार्गमें अनेक गोरे और नीग्रो मेरी ओर इशारा करके प्रदर्श-नीके विषयमें ज़ोर ज़ोरसे बातें करते हुए दिखाई देते थे । एटलांटामें एक कमेटीने हम लोगोंका स्वागत किया । गाड़ीसे उतरते ही सबसे

पहले, एक नीग्रोके मुँहसे निकले हुए ये शब्द सुन पडे–" कल प्रदर्शनीमें हमारी जातिके इसी आदमीका व्याख्यान होनेवाला है, मै इसका व्याख्यान सुननेके लिए अवश्य जाऊँगा । "

उस समय सारा नगर सब प्रदेशोंके डेलिगेटों, विदेशी राज्योंके प्रतिनिधियों और बडी बडी नागरिक ओर सामरिक सस्थाओंसे ठसाठस भरा हुआ था । समाचारपत्रोने बडे बडे शीर्षक देकर दूसरे रोजके कार्यक्रमके विषयमे लेख प्रकाशित किये थे । इन सब बातोसे मेरी छाती और भी धडकने लगी । रातको मुझे पूरी नीद भी न आई । दूसरे दिन प्रात काल मैने अपनो व्याख्यानको एक बार फिर पढा और इस उद्योगमें सफलता प्राप्त करनेके लिए ईश्वरसे प्रार्थना की । यहाँ मै यह बतला देना आवश्यक समझता हूँ कि परमेश्वरसे अपने भाषण पर अनुग्रह करनेकी प्रार्थना किये बिना, मै कभी श्राताआके सामने न आता था ।

मेरा यह नियम है कि वक्तृता देनेसे पहले मे उसकी तैयारी कर लेता हूँ । मै श्रोताओके सामने उसी भावसे खडा होकर भाषण करता हूँ कि जिस भावसे कोई मनुष्य अपने मित्रसे एकान्तमे बातें करता है । प्रत्येक श्रोताके हृदयसे भिड जाना ही मरी व्याख्यानकलाका लक्ष्य होता है । किसी सभामे भाषण करत हुए मे यह नही साचा करता कि मेरा भाषण समाचारपत्रोमे शोभा पायगा या नही, अथवा इस भाषणको और लोग पसन्द करेगे या नही । उस समय तो सम्मुख उपस्थित लोगोंमें ही मेरी सारी सहानुभूति, सारे विचार और सारी शक्ति तन्मय हो जाती है ।

प्रात काल ही बहुतस लाग जुलूस निकालकर मुझे प्रदर्शनी तक लिवा ले जानेके लिए मेरे स्थान पर आये । इस जूलूसमे बहुतेरे नीग्रो सज्जन गाडियों पर सवार होकर सम्मिलित हुए थे । मैने इस बातको गौर करके देखा कि प्रदर्शनीके अधिकारी नीग्रो लोगोकी खातिर करनेमें विशेष

सावधानीसे काम ले रहे थे । प्रदर्शनीतक पहुँचनेमें जुलूसको तीन घंटे लगे । रास्ते पर बड़ी कड़ी धूपसे सामना करना पड़ा । प्रदर्शनीके स्थान-पर पहुँचकर गरमी और मानसिक कष्टोंके कारण मेरा शरीर शिथिल हो गया । सभास्थान मनुष्योंसे ठसाठस भरा हुआ था और स्थानाभावके कारण सहस्रों श्रोता बाहर खड़े थे ।

प्लेटफार्म खूब लंबा चौड़ा था; स्थान, व्याख्यानके लिए सर्वथा योग्य था । प्लेटफार्म पर पैर रखते ही नीग्रो लोगोंने एक साथ तालियाँ बजाईं और कुछ गोरोंने भी उनका अनुकरण किया । मुझे एक रोज़ पहले ही यह बतलाया गया था कि बहुतसे गोरे तमाशेके तौर पर मेरा भाषण सुननेके लिए आनेवाले हैं, बहुतोंकी मेरे साथ सहानुभूति है इस लिए उपस्थित होंगे; परन्तु अधिकांश लोग ऐसे ही होंगे जो मेरी 'मूर्खताकी प्रदर्शनी ' देखकर प्रदर्शनीके संचालकोंसे ताना मारते हुए यह कहेंगे कि कहिए, हमारा ही भविष्यत्कथन ठीक निकला न ?

टस्केजी–विद्यालयके एक ट्रस्टी और मेरे मित्र, दक्षिणरेलवेके मैनेजर, मिस्टर विलियम. एच. बाल्डविन एटलांटामें रहते हुए भी प्रारम्भिक कार्यक्रम समाप्त होने तक अन्दर नहीं आये; क्योंकि उन्हें इस बातका बड़ा भय और सन्देह था कि न तो मेरा (बुकर टी.वाशिंगटनका) यहाँ कुछ सम्मान होगा और न मैं अपना काम ही सफलताके साथ कर सकूँगा ।

चौदहवाँ परिच्छेद ।

एटलाटा–प्रदर्शनीमे व्याख्यान ।

आरभमे गवर्नर बुलकने एक छोटीसी वक्तृता देकर प्रदर्शनी खोली । इसके उपरान्त जार्जियाके बिशप नेल्सनकी प्रार्थना, अलबर्ट हावेलका स्तुतिपाठ, प्रदर्शनीके सभापति, तथा स्त्रीमडलकी सभापत्नी मिसेस जोसेफ आदिके भाषण हुए । अन्तमें गवर्नर बुलकने मेरा परिचय करा दिया ओर कहा–" नीग्रो जातिकी उन्नति, सस्कृति और साहसप्रीतिके प्रतिनिधि आज हम लागाके सम्मुख उपस्थित हे । वे अब अपना व्याख्यान देगे । "

व्याख्यान दनक लिए जब मे खडा हुआ तब श्राताओने, विशेषत नीग्रो भाइयोंने खुब करतल ध्वनि की । मुझे इस समय स्मरण हे कि मै जो कुछ बतलानेके लिए खडा हुआ था उसका भाव यही था कि दोनो जातियोंमें परस्पर मेल रहे ओर परस्परकी सहायतासे दोनो उन्नत हो । उस वक्त हजारो मनुष्याकी दृष्टि केवल मेरे ऊपर गडी हुई थी । मैने अपना व्याख्यान इस तरह प्रारभ किया —

" मान्यवर सभापति महाशय सचालक सभाके सदस्य, और नगरवासियो, दक्षिणकी जनसख्याम एक तृतीयाश नीग्रो लोग है । इस लिए जब तक इन लागोका ध्यान न रक्खा जायगा तब तक दक्षिणवासियोंकी नैतिक, सामाजिक अथवा साम्पत्तिक, किसी प्रकारकी उन्नति कदापि नही हो सकेगी । मेरी जातिके लोग खूब समझते हे कि इस विशाल प्रदर्शनीके सचालकोने नीग्रो जातिके पराक्रम और महत्त्वका जैसा कुछ आदर किया है वेसा और किसीने कभी नही किया, और इसलिए सभापति महाशय ओर सचालक महाशयो, मै

उन सबकी ओरसे इस बातको आप लोगोंके सम्मुख प्रकट करता हूँ। मैं समझता हूँ कि हम लोगोंके दासत्वविमोचनके उपरान्त आजतक जितने कार्य हुए हैं उन सबकी अपेक्षा नीग्रो जातिके इस गौरवसे दोनों जातियोंकी मित्रता विशेष दृढ़ हुई है।

"आज हम लोगोंको जो अवसर प्राप्त हुआ है उससे हम लोगोंमें औद्योगिक उन्नतिका एक नया युग आरंभ होगा। स्वाधीनता पा लेने-पर हम लोगोंने अज्ञानवश मूलकी ओर ध्यान न देकर शिखरसे ही अपना जीवन आरंभ किया था। कहनेका तात्पर्य यह है कि हम लोगोंने धन और कलाकौशल्यके साधनोंको छोड़कर कांग्रेस या राज-सभामें स्थान पानेकी चेष्टा आरम्भ की थी! दही दूधका कारख़ाना ज़ारी करने या फलोंका बाग़ लगानेके बदले हमारा हौसला राजसभा या अन्य स्थानोंमें व्याख्यान देनेकी तरफ़ बढ़ गया था!

"एक बार समुद्रमें बहुत दिनोंसे भूले भटके एक जहाज़ने एक दूसरे जहाज़को देखा। पहले जहाज़के यात्री गरमी और प्यासके मारे छटपटा रहे थे। इस लिए उन्होंने उसके मस्तूल पर इसी मतलबका एक निशान लगा रक्खा था। उसका मतलब समझकर दूसरे जहाज़ने उत्तरमें कहा,—'जिस स्थान पर तुम हो, वही पर बाल्टी लटकाओ।' उस जहाज़ने फिर इशारेसे पानी माँगा और उसे फिर वही उत्तर मिला। तीसरी चौथी बार फिर पानी माँगा गया और वही उत्तर बार बार दिया गया। तब पहले जहाज़के कप्तानने बाल्टी लटकाकर पानी खींचा और देखा तो उसे अमेजन नदीके मुहानेका साफ़, मीठा और ताजा पानी मिल गया! हमारे जो जातिभाई अपने साथी दाक्षिणी गोरोंसे मित्रता रखनेमें विशेष लाभ नही समझते और विदेशमें जाकर अपनी उन्नति करना चाहते हैं उनसे मैं भी यही कहूँगा कि 'जिस स्थानपर तुम हो वहीं बाल्टी लटकाओ। जिस समाजमें रहते हो उसी समाजके सब लोगोंके साथ जी खोलकर मित्रता करो।'

" खेती, शिल्प, व्यापार, घरू काम और अन्यान्य उद्यमोंमें अपनी बाल्टी लटकाओ । दक्षिणवाले और बातोंके लिए चाहे भले ही दोषी हों पर व्यापारमें नीग्रो लोगोंको आगे बढनेका अवसर दक्षिणमे ही मिला करता है और यही बात आजकी प्रदर्शनीसे भलीभाँति स्पष्ट हो जाती है । मुझे यह एक बडा भय है कि दासत्वके अधकारसे निकलकर एकाएक स्वतन्त्रताके प्रकाशमें आजानेके कारण शायद हम लोग इस बातकी ओर आनाकानी करे कि हम लोगोमेसे बहुतेरोको परिश्रम करके ही अपना गुजारा करना है, अथवा इन बातोको भूल जायँ कि हम लोग नित्य परिश्रम करनेकी उपयोगिता और महत्ता जितनी ही बढावेंगे, सामान्य व्यवसायोमे दिमाग भिडाकर जितना ही अधिक कोशल लाभ करेंगे, चमकदमक और दिखौआपनको त्याग कर सचाई और पुरुषार्थमे जितनी ही अधिक उन्नति करेंगे, उतना ही हमारा सिर ऊँचा होगा। जबतक कोई जाति सुन्दर काव्यकी रचना करने और खेत पर हल चलानेमे समान प्रतिष्ठा नहीं समझती तब तक वह जाति सम्पन्न हो नहीं सकती । हम लोगोंका कार्य शिखरसे नहीं, बल्कि मूलसे आरभ होना चाहिए । हमे अपने दु खो और क्लेशोके कारण तथा अपनी शिकायतोके कारण मिले हुए सुअवसरको अपने हाथसे न खो दना चाहिए ।

" जो गोरे दक्षिणको सम्पन्न करनेके लिए विदेशियोको ले आना चाहते है उनसे भी (यदि वे ध्यान देकर सुने तो) मे यही कहूँगा कि जहाँ तुम हो वही बाल्टी लटकाओ ! उन्ही अस्सी लाख नीग्रो भाइयोमें अपनी बाल्टी लटकाओ कि जिनके स्वभावसे तुम परिचित हो और जिनकी सचाई और स्वामिभक्तिकी परीक्षा तुम ऐसे अवसर पर कर चुके हो जब वे अपने कपट-व्यवहारसे, यदि चाहते तो तुम्हारा सर्वस्व नष्ट कर डालते । उन्ही लोगोमे अपनी बाल्टी लटकाओ

जिन्होंने हडताल या और किसी तरहके उपद्रव किये बिना तुम्हारे खेत जोते है, तुम्हारे जगलोको काटकर साफ किया है, तुम्हारी रेलकी सडकें और शहर बनाये हे और इस प्रकार दक्षिणकी सम्पन्न अवस्था दिखलानेवाली इस प्रदर्शनीको खडी करनेमे जिन्होंने मदद की हे। अगर तुम इसी प्रकारसे उनकी सहायता कर उन्हें उत्साहित करते रहोगे ओर कर्मेन्द्रिय, ज्ञानेन्द्रिय और अन्त करणकी शिक्षा दिलानेमें उनकी मदद करोगे तो तुम्हारी परती पडी हुई जमीन वे खरीद लेगे, उसे उपजाऊ बनावेगे ओर तुम्हारे कारखाने चला देग। इसके साथ ही य नीग्रो लोग जा, ससारमे सबसे अधिक सहनशील, शान्त, विश्वासपात्र ओर कानूनके पाबन्द है पहलेकी भॉति तुम्हारी और तुम्हार परिवारकी सेवामे तत्पर रहेगे। तुम्हारे बाल-बच्चाका लालन करनेमे, तुम्हारे रुग्ण मातापिताओकी रात रात भर जागकर सेवा-टहल करनेम, उनक देहान्त पर शोकाकुल हो उनके पीछे पीछ स्मशानतक आँसू बहाते हुए जानेमे और ऐसी ही अन्य अनक बातोम हम लागोने तुम्हे अपनी सचाई आर स्वामिभक्तिका यथेष्ट प्रमाण दे दिया है। अब इसके बाद भी हम लोग विदेशियोसे कही अधिक कृतज्ञता ओर नम्रताके साथ तुम्हारा साथ देगे और आवश्यकता पडने पर अपन प्राण भी तुम लोगा पर न्योछापर कर देगे! हम अपने धाम्मिक, औद्योगिक आर व्यावहारिक जीवनको तुम्हारे जीवनमे मिला दग। केवल सामाजिक बातामे, उगलियाके समान हम तुमसे भिन्न रहेगे परन्तु पारस्परिक उन्नतिके कामोम हम लोग हाथकी भॉति एक हो जायँगे।

" जबतक हम सबोकी उन्नति और अभिवृद्धि न होगी तबतक दानोमेसे कोई भी निर्भय या सुरक्षित नही हो सकता। नीग्रोलोगोकी उन्नति रोकनेका यदि कही उद्याग होता हो तो उसे बदल कर उत्तम नागरिक बनानेका उद्योग कीजिए। इस प्रकारके उद्योगसे हजार गुना अधिक लाभ होगा। दोनों जातियोका मगल इसीमे है!

" मानवी अथवा दैवी नियमोंमें जो बातें अवश्यंभावी हैं–अपरिहार्य हैं–उनसे कभी छुटकारा नहीं हो सकता ।

" सृष्टिके कभी न बदलनेवाले नियमोंसे अन्याय करनेवाले और उसे सहनेवाले दोनों एक साथ बंधे हुए हैं और जिस प्रकार पाप और दुःख साथ साथ रहते हैं उसी प्रकार हम दोनों भी (अन्यायी और अन्यायपीड़ित) एक साथ ही नियति ' या ' मृत्युकी ओर कंधोंसे कंधे मिलाकर जा रहे हैं ।

" एक करोड़ साठ लाख हाथ या तो भार उठानेमें तुम्हारी सहायता करेंगे या तुम्हारी इच्छाके विरुद्ध तुम्हारा बोझ नीचे खींचकर तुम्हें मुँहके बल गिरा देंगे । दक्षिणकी जनसंख्याका तीसरा हिस्सा या तो अज्ञान और पापकी कीचड़में डूब जायगा या उन्नत और बुद्धिमान् ही बन जायगा । या तो हम लोग आपके व्यापार और वैभवकी वृद्धिमें सहायता करेंगे या समूचे समाजकी उन्नतिके बाधक बनकर उसके उत्साहको भंग करनेवाले एक गतिरहित–निर्जीव, मुर्दे ही बन जावेंगे ।

"सज्जनो, इस प्रदर्शनीमें हम लोगोंने अपनी उन्नति दिखलानेका नम्रतापूर्वक प्रयत्न किया है । आप लोग इससे अधिककी आशा न करें । तीस वर्ष पूर्व हमारी दशा शोचनीय थी–हम लोगोंके पास कुछ भी न था । तबसे अबतक खेतीके औज़ार, बग्गियाँ, भाफ़के इंजिन, समाचारपत्र, पुस्तकें, मूर्तियाँ, नक्काशी और चित्र आदि बनानेमें और उनमें नवीन नवीन आविष्कार तक करनेमें हम लोगोंको थोड़ी कठिनाइयाँ नहीं उठानी पड़ी हैं–इस उन्नतिके मार्गको हमने सहज ही तै नहीं कर लिया है । यद्यपि हम लोगोंको इस बातका बड़ा अभिमान है कि प्रदर्शनीमें रक्खी हुई चीज़ें खुद हम लोगोंने तैयार की हैं; तथापि हम लोग यह भी कदापि नहीं भूल सकते कि यदि दक्षिणके राज्य और उत्तरके दानशूर

सज्जन हम लोगोंकी धनद्वारा सहायता न करते तो इस प्रदर्शनीमें हम लोगोंके करतबका रंग फीका पड़ जाता ।

"हमारी जातिमें जो विशेष बुद्धिमान् लोग हैं वे सामाजिक समताके लिए आन्दोलन करनेको बड़ी भारी मूर्खता समझते हैं और कृत्रिम उपायोंसे अधिकारयुक्त होनेकी अपेक्षा स्वाभाविक उपायोंसे अर्थात् दृढ़ प्रयत्न करके उन अधिकारोंका प्राप्त करना अधिक अच्छा समझते हैं । संसारके बाज़ारमें अपना माल तैयार करके भेजनेवाली कोई भी जाति बहुत दिनों-तक अवहेलाकी दृष्टिसे नहीं देखी जा सकती और न वह उन्नतिमें किसीसे पीछे ही रह सकती है । यह बात बहुत ठीक है कि कानूनसे हम लोगोंके जो अधिकार हैं वे हमें मिलने चाहिए; पर इससे भी अधिक महत्त्वकी बात यह है कि हमें पहले उन अधिकारोंका उचित उपयोग करनेकी योग्यता प्राप्त करनी चाहिए । किसी नाटकघरमें जाकर एक डालर खर्च करनेकी अपेक्षा किसी कारखानेमें काम करके एक डालर कमाना बहुत अच्छा है ।

"अन्तमें, मैं आप लोगोंसे यही विनय करूँगा कि इस प्रदर्शनीने हम लोगोंको जितनी अधिक आशा और उत्साह दिलाया है, और गोरोंसे हमारा जितना अधिक संबंध बढ़ाया है, उतना और किसी अवसर या कार्यसे नहीं बढ़ा । तीस वर्ष पूर्व दोनों जातियोंने खाली हाथ प्रयत्न आरंभ किया था । इन तीस वर्षोंमें दोनों जातियोंने जो उन्नति की है उसका फल इस वेदीके सामने आप लोग देख सकते हैं । इस पवित्र वेदीके सामने नम्रतापूर्वक झुककर मैं यह कहना चाहता हूँ कि पर-मात्माने दाक्षिणके लोगोंके सामने जो बड़ा और गूढ़ प्रश्न रक्खा है उसकी मीमांसामें आप लोगोंको मेरी जातिसे सदा सहायता और सहानुभूति मिलती रहेगी । पर आप लोग इस बातको सदा ध्यानमें रक्खें कि इस प्रदर्शनीमें जो खेत, जंगल, खान, कारखाने, साहित्य, कला आदिसे सम्बन्ध रखनेवाली वस्तुयें रक्खी हैं उनसे आपको लाभ तो

अवश्य होगा, पर नियमानुसार सबके साथ उचित न्याय करनेके उद्देश्यसे परस्परका जातिद्वेष और भेदभाव नष्ट करनेका जो फल या लाभ होगा वह इन भौतिक लाभासे कही अधिक कल्याणकारी होगा ! जातिद्वेषको नष्ट करके भौतिक सम्पन्नता प्राप्त करनसे हमारा प्रिय दक्षिण प्रान्त निस्सन्देह दूसरा नन्दनवन बन जायगा ! '

मेरा व्याख्यान समाप्त होते ही गवनर बुलक तथा अन्य कई लोगोंने प्लेटफार्म पर आकर मर हाथम हाथ मिलाया । लोग मुझे इतनी अधिक हार्दिक बधाइयाँ देने लगे कि मेरा वहाँसे निकलना कठिन हो गया । दसरे दिन जब मै बाजार गया तब मझे बहुतसे लोगोंने चारो ओरसे घर लिया आर मुझस हाथ मिलाना चाहा । मैं जिस किसी गली कूचेमे जाता था वही लोग मुझसे मिलत आर मुझ बधाई दते थ । म इससे इतना घबरा गया कि मुझे अपन डर पर लाट आना पडा । दूसरे दिन सबेरे म टस्कजीक लिए रवाना हो गया । एटलाटा स्टशन पर ओर फिर जहाँ जहा गाडी ठहरती थी वहाँ वहा बहुतस लोग मुझस हाथ मिलानेके लिए आये हुए देख पडत थ ।

अमेरिकाक प्राय सभी समाचारपत्राम मेरा वह व्याख्यान छप गया और महीनों तक उस पर अनुकूल सम्पादकीय लेख निकलते रहे । 'एट लाटा कन्स्टिटयूशन ' पत्रके सम्पादक मिस्टर क्लार्क हावेलने न्यूयार्कके एक पत्रसम्पादकके पास तार द्वारा सवाद भेजा कि दक्षिणमें आज-तक जितने व्याख्यान हुए है उन सबम प्रोफसर बुकर टी वाशिंगटनका कल जो व्याख्यान हुआ वह परम उत्कृष्ट और रमणीय हुआ है । उनका स्वागत भी वैसा ही अपूर्व हुआ । इसमे मैन कोई अत्युक्ति नही की है । उनक व्याख्यानसे वास्तवमे हम लोगोको बहुतसी नई बाते मालूम हुई । उन्होंने अपने व्याख्यानमें काले और गोरे, दोनोंकी समुचित आलोचना की । "

'बोस्टन ट्रन्सास्क्रिप्ट' नामक समाचारपत्रमें यहाँ तक लिखा गया था कि "एटलाटा-प्रदर्शनीमें बुकर टी वाशिंगटनके व्याख्यानके सामने वहाँका सारा कार्यक्रम, और तो क्या स्वय प्रदर्शनी भी, फीकी पड गई थी । इस व्याख्यानने समाचारपत्रोंमे जैसा आन्दोलन उपस्थित कर दिया है वेसा कभी किसी व्याख्यानसे नहीं हुआ था ।"

शीघ्र ही चारो ओरसे व्याख्यान करानेवाल आर पत्रसम्पादक गण मुझसे व्याख्यान देने और लेख लिखनेके लिए आग्रह करने लगे । व्याख्यान करानेवाली एक सस्था तो मुझ एक साथ पचास हजार डालर अथवा प्रतिव्याख्यानके लिए दो सो डालर देनेके लिए तयार हो गई ! पर उन सबोको मैने यही उत्तर दे दिया कि "मैने अपन जीवन भर टस्केजी-विद्यालयकी सेवा करनेका सकल्प कर लिया हे, मे उक्त विद्यालयकी और अपनी जातिकी सेवाक लिए ही व्याख्यान दिया करता हूँ । मेरा यह कोई पेशा नही, जो धनलाभकी दृष्टिसे ही मे इस कामको करूँ ।"

मेने अपने व्याख्यानकी एक नकल सयुक्त राज्यके प्रेसिडेंट आनरेबल ग्रोवर क्लीवलेंडके पास भेजी । इसके उत्तरम उन्होंने अपने हस्ताक्षरके साथ नीचे दिया हुआ पत्र मेरे पास भजा —

'ग्रे गेबल्स, बजार्डस बे मसेच्युसेट्स,
६ अक्टूबर, १८९५

श्रीमान् बुकर टी वाशिंगटनकी सेवामे—

प्रिय महाशय, एटलाटा प्रदर्शनीमें दिये हुए व्याख्यानकी एक नकल मेरे पास भेज कर आपने मुझे बहुत ही अनुगृहीत किया है ।

आपके इस उत्तम व्याख्यान पर मै आपको हार्दिक उत्साहसे बधाई देता हूँ । मैने आपका व्याख्यान बहुत ध्यानपूर्वक पढा है और यदि आपके इस व्याख्यानके अतिरिक्त प्रदर्शनीमें और कोई बात न होती तो भी कोई हानि न होती । आपकी जातिका कल्याण चाहनेवाले सब

लोगोंको आपके व्याख्यानसे आनन्द और उत्साह प्राप्त होगा, इसमें सन्देह नहीं। यदि आपके व्याख्यानसे हमारे नीग्रो देशबन्धु अपने नागरिकत्वके अधिकारसे यथासंभव लाभ उठानेका निश्चय और नवीन आशा न करें तो सचमुच ही आश्चर्यकी बात होगी।

आपका सच्चा हितैषी
ग्रोवर क्लीवलैंड।"

कुछ काल पश्चात् जब मिस्टर क्लीवलैंड प्रेसिडेंटकी हैसियतसे एटलांटा-प्रदर्शनी देखने आये तब उनसे मेरी भेंट भी हुई। मेरे और अन्य लोगोंके प्रार्थना करने पर उन्होंने नीग्रो-भवनमें चलकर वहाँ रक्खे हुए नीग्रो-कारीगरीके नमूने देखने और उपस्थित नीग्रो लोगोंको हाथ मिलानेका अवसर देनेके लिए एक घंटेका समय देना स्वीकार किया। मिस्टर क्लीवलैंडसे पहली बार मिलते ही उनकी रहन-सहनकी सादगी, मनकी उदारता और हृदयकी सचाईका मुझ पर बड़ा प्रभाव पड़ा। इसके बाद भी कई बार उनसे मिलनेका मुझे अवसर मिला है। जितना ही अधिक मैं उनसे मिलता हूँ उतना ही अधिक मेरा उनसे स्नेह होता जाता है। एटलांटा-प्रदर्शनीके नीग्रो-भवनमें जाकर उन्होंने खुले दिलसे सबसे हाथ मिलाया। एक फटे-पुराने कपड़े पहनी हुइ नीग्रो बुढ़ियासे हाथ मिलाते हुए वे इतने गद्गद और प्रसन्न मालूम होते थे मानो किसी करोड़पतिका ही स्वागत कर रहे हैं! बहुतसे लोगोंने इस अवसरसे लाभ उठा कर उनसे उनकी डायरीमें अपने नाम लिखवाय और उन्होंने भी यह काम इतनी सावधानी और धैर्यके साथ किया, मानों राज्यसंबंधी किसी महत्त्वपूर्ण पत्र पर हस्ताक्षर ही कर रहे हों!

मिस्टर क्लीवलैंडने मेरे साथ अपना मित्रभाव कई प्रकारसे प्रकट किया है। इतना ही नहीं, बल्कि, टस्केजी–विद्यालयके लिए मैंने उनसे जो जो प्रार्थनायें की हैं उन सबको उन्होंने स्वीकार किया है। उन्होंने विद्यालयको

स्वयं आर्थिक सहायता दी है और अपने मित्रोंसे भी दिलाई है । मेरे साथ उन्होंने जैसा मित्रभाव रक्खा है उससे मैं नहीं समझता कि वे वर्णद्वेष भी रखते होंगे । वे इतने उच्चविचारके उदार पुरुष हैं कि उनमें वर्णद्वेष जैसे संकुचित भाव कभी समा ही नहीं सकते । ऐसे ही ऐसे महानुभावोंसे मिलकर मैंने यह मालूम किया है कि केवल क्षुद्र और छोटे मनुष्य ही अपने लिए जीते हैं अर्थात् स्वार्थी होते हैं । वे कभी अच्छे ग्रन्थोंको नहीं पढ़ते, देशाटन नहीं करते, दूसरी आत्माओंसे—संसारके बड़े बड़े पुरुषोंसे परिचय नहीं करते । वर्णद्वेषसे जिनकी दृष्टि छोटी हो जाती है उन्हें संसारकी सुन्दर और मनोहर वस्तुओंका दर्शन नहीं हो सकता । देश देश घूमकर नाना प्रकारके लोगोंसे मिलकर मैंने यह जाना है कि परहितके लिए प्रयत्न करनेवाले लोग सबसे अधिक सुखी होते हैं, और जो सदा अपने ही स्वार्थमें लगे रहते हैं वे सबसे अधिक दुखी होते हैं ! जातिद्वेषके समान मनुष्यको अन्धा और तुच्छ बनानेवाली दूसरी वस्तु नहीं । प्रत्येक रविवारकी संध्याको मेरा उपदेश हुआ करता है । उस समय मैं अपने विद्यार्थियोंसे अकसर कहा करता हूँ कि मैं ज्यों ज्यों बड़ा और बूढ़ा होता जाता हूँ और ज्यों ज्यों मेरा सांसारिक अनुभव बढ़ता जाता है त्यों त्यों मेरा यह विश्वास दृढसे दृढतर होता जाता है कि ‘ दूसरोंको अधिक उपयोगी और सुखी बनानेका मौका मिलना ’ बस, यही एक ऐसी बात है कि जिसके लिए हमें जीते रहनेकी और समय पड़ने पर अपने प्राण भी न्योछावर कर देनेकी आवश्यकता है । गरज यह कि मनुष्यका जीवन परोपकारके * लिए है और आवश्यकता पड़ने पर उसके लिए प्राणतक न्योछावर कर देना हमारा धर्म है ।

---

* श्लोकार्धेन प्रवक्ष्यामि यदुक्तं ग्रन्थकोटिभिः ।
परोपकारः पुण्याय पापाय परपीडनम् ॥

मेरे व्याख्यानसे और उसकी जो प्रशसा हुई उससे नीग्रो लोग बहुत ही प्रसन्न हुए–उनके समाचारपत्रोंने भी खूब प्रसन्नता प्रकट की, परन्तु यह प्रसन्नता बहुत दिनो तक न रहने पाई। थोडे ही दिनोंमे जब उत्साह मन्द पड गया तब मेरे उस ठड व्याख्यानको पढकर मेरे बहुतसे जातिभाइयोको ऐसा भासन लगा कि हम उस समय भूल गये–वास्तवमे वह व्याख्यान इतना प्रशसाके योग्य न था। उनका कहना यह था कि मैंने दक्षिणी गोरोके विषयमे तो बहुत अधिक उदारता दिखलाई, पर अपनी जातिके अधिकारोका वैसा अच्छा प्रतिपादन नही किया। इस तरह कुछ दिनो तक मेरे विषयमे नीग्रो लोग ऐसी ही शिकायत करते रहे, पर पीछसे व सब मेरे अनुकूल हो गये।

यहाँ मुझे एक बात और याद आती है जिसे बतला देना जरूरी है। टस्केजी-विद्यालयके ग्यारहवे वर्षमे मुझे एक ऐसा अनुभव प्राप्त हुआ जिसे मै कभी भूल नही सकता। प्लाइमाउथ चर्चके पादरी और 'आउट लुक' पत्रके सम्पादक डाक्टर लीमन एबटने अपने पत्रमें प्रकाशित करनेके लिए नीग्रो धर्मोपदेशकोके सबधमे मेरी सम्मति माँगी थी, तदनुसार मैंने अपनी यथार्थ सम्मति लिख भेजी। एक तो धर्मोपदेशकोकी दशाका मैने जो चित्र खीचा वह काला ही था–जब मै ही काला हूँ, तब वह चित्र कहाँसे गोरा हो?–और दूसरे अभी दासत्वसे मुक्त हुए हम लोगोंको अच्छे उपदेशक निर्म्माण करनेका अवसर ही न मिला था।

मै समझता हूँ कि देशके प्रत्येक नीग्रो धर्मोपदेशकने मेरी उस सम्मतिको पढा होगा, क्योकि मेरे पास इस विषयमे ऐसे सैकडों ही पत्र आये जिनमे मेरी सम्मतिको दूषित और असन्तोषजनक बतलाया था। इस घटनासे एक वर्ष बादतक कोई भी ऐसी सभा न हुई जिसमें मुझे उलटी सीधी न सुनाई गई हो अथवा मुझे अपनी सम्मति लौटा लेने या उसमे उचित परिवर्त्तन करनेके लिए कहनेका प्रस्ताव पास न किया

गया हो। कई सस्थाओंने तो यहाँ तक कहना प्रारभ किया था कि लोग अपने बालकोको टस्केजी-विद्यालयम पढनेके लिए न भेजें। इसी कामके लिए एक सस्थाकी ओरसे एक उपदेशक भी नियुक्त हुआ था। इसने स्थान स्थान पर जाकर यह उपदेश दना आरभ किया कि कोई अपने बाल-कोंको टस्केजीके विद्यालयमे पढनेके लिए न भेजे। पर मजेकी बात यह थी कि इसी भले आदमीने अपने पुत्रको, जो हमारे विद्यालयमें पढता था, विद्यालयसे नही हटाया ! कितने ही समाचारपत्रोने तो मेरी कडी आलोचना करने अथवा मुझ अपनी सम्मति लाटा लेनेकी सूचना करनेका मानो काम ही उठा लिया था।

इतना सब होते हुए भी मने इसके उत्तरमे न तो कुछ कहा और न अपनी सम्मति ही लोटा ली। मे जानता था कि मेरी सम्मति यथार्थ है और समय पाकर तथा शान्तिपर्वक विचार करके लाग उसी सम्म-तिका समर्थन करने लगेगे। कछ दिनोंके बाद जब बडे बडे धर्माधिका-रियान धर्मोपदेशकोकी दशाका अनुसन्धान आरम्भ किया तब उन्हे मेरे कथनकी सत्यता प्रतीत हो गई। मेथाडिस्ट चर्चके एक वृद्ध और प्रभावशाली धर्माधिकारीने ता यहाँ तक कह दिया कि मने धर्मोपदशकोकी दशाका चित्र खीचनेमें बडी मुलामियतसे काम लिया है। थाडेही दिनोंमें लोकमत भी बदलने लगा और और लोग भी धर्मोपदेशकोंकी दशाका सुधार होना आवश्यक बतलाने लगे। यद्यपि इस समय भी धर्मोपदेश-कोंकी जेसी चाहिए वैसी अच्छी दशा नही हे, तथापि मेरे शब्दोने—बडे बडे धर्मोपदेशकोका भी यही कथन है—लोगोके हृदयम यह अच्छी तरह ठँसा दिया कि धर्मोपदेशका कार्य करनेवाले लोग उच्चश्रेणीके शिक्षित और सदाचारी होने चाहिए। जिन लोगोने आरम्भमे मेरे लेखसे असन्तुष्ट होकर मेरी निन्दा की थी पीछे उन्हीने मेरी स्पष्ट सम्मतिके विषयमें मेरा हार्दिक अभिनन्दन किया और इससे मुझे बहुत सन्तोष हुआ।

इस समय धर्मोपदेशकोंमें मेरे जैसे हार्दिक मित्र हैं वैसे और किसी विभागमें नहीं है। नीग्रो-धर्मोपदेशकोंका चरित्र अब बहुत सुधरा हुआ है और यह जातिकी उन्नतिका एक सन्तोषप्रद लक्षण है। धर्मोपदेशकोंके संबंधमें और अपने जीवनकी अन्य घटनाओंके विषयमें मुझे जो अनुभव मिला है उससे मेरा यह विश्वास हो गया है कि जब अपने किसी उचित कार्यके या कथनके विरुद्ध चारों ओरसे आन्दोलन होता हो तब हमें मौन धारण करके रह जाना चाहिए-उस समय सबसे अच्छा उपाय चुप हो रहना ही है। यदि हमारा कथन या कार्य सत्य है तो समय पाकर वह अवश्य ही सिद्ध होगा।

जिस समय मेरे एटलांटा-प्रदर्शनीवाले व्याख्यानकी चर्चा चारों ओर फैल रही थी उस समय जान्स हापाकिन्स यूनिवर्सिटीके अध्यक्ष डाक्टर गिलमनका एक पत्र मेरे पास आया। वह पत्र नीचे दिया जाता है। डाक्टर गिलमन प्रदर्शनीकी पुरस्कार-समितिके प्रधान नियुक्त हुए थे।

" जान्स हापाकिन्स यूनिवर्सिटी, वाल्टीमोर,
अध्यक्ष-कार्यालय, ३० सितंबर १८९५.

प्रिय वाशिंगटन महाशय,

क्या आप एटलांटा-प्रदर्शनीके शिक्षाविभागकी पुरस्कार-कमेटीके पंच होना पसन्द करेंगे ? यदि पसन्द करें तो मैं आपका नाम कमेटीके पंचोंकी नामावलीमें लिख लूं। कृपया तार द्वारा उत्तर दीजिए।

आपका सच्चा हितैषी,
डी. सी. गिलमन। "

एटलांटा-प्रदर्शनीकी आरंभिक वक्तृताके निमंत्रणकी अपेक्षा इस नि-

मंत्रणसे मुझे बहुत ही अधिक आश्चर्य हुआ । अब मेरा यह कर्त्तव्य हुआ कि पंचकी हैसियतसे केवल नीग्रो ही नहीं बल्कि गोरोंके विद्यालयोंकी भी वस्तुओं पर मैं अपनी सम्मति दूँ । उत्तरमें मैंने पंच होना स्वीकार कर लिया और अपना काम ठीक तरहसे करनेके लिए मैं एटलांटामें एक मास तक रहा । पंचोंकी कमेटीमें साठ पंच थे । इनमें आधे तो प्रायः दक्षिणके गोरे थे और आधे उत्तरके । कमेटीमें कालेजोंके प्रेसिडेंट, मुख्य मुख्य शास्त्रज्ञ, बड़े बड़े विद्वान् और भिन्न भिन्न विषयोंके अनुभवी जानकार थे । मिस्टर पेज नामक एक पंचकी सूचनासे मैं ही शिक्षाविभागका मंत्री बनाया गया । गोरोंके विद्यालयोंकी प्रदर्शित वस्तुओंका निरीक्षण करते समय मैंने उपस्थित गोरोंको बहुत विनयशील पाया । यह काम समाप्त होने पर जब मैं अपने साथी पंचोंसे विदा होकर घर जाने लगा तब मुझे मोहवश बहुत दुःख हुआ ।

मैं अपनी जातिकी राजनीतिक अवस्था और उसके भविष्यके विषयमें अपनी स्पष्ट सम्मति प्रकट करूँ, इसके लिए मुझसे अनेक बार कहा गया है । मेरी यह सम्मति है कि—अब तक मैंने इसे किसी पर प्रकट नहीं किया था—दाक्षिणी नीग्रो लोगोंको, उनकी योग्यता, उनके चरित्रबल और उनकी सम्पत्तिके अनुसार, सब प्रकारके राजकीय अधिकार शीघ्र ही मिलनेवाले हैं । ये राजकीय अधिकार अस्वाभाविक उपायोंसे अथवा किसी ग़ैरके करतबसे न मिलेंगे, बल्कि स्वयं दाक्षिणी गोरे ही ऐसा सुअवसर ले आवेंगे और उनके अधिकारोंकी रक्षा भी करेंगे । दक्षिणी गोरोंकी यह पुरानी धारणा है कि बाहरी लोगोंके दबावसे उन्हें अपनी इच्छाके विरुद्ध कार्य करने पड़ते हैं । ज्यों ज्यों यह धारणा मिटती जायगी त्यों त्यों नीग्रो जातिको अधिकार मिलने लगेंगे और यह कार्य अब किसी अंशमें आरंभ भी हो गया है ।

मैं इस बातको और भी स्पष्ट करके बतलाता हूँ । यह सोचिए कि

यदि प्रदर्शनी खुलनेसे कुछ महीने पहले दक्षिणके समाचारपत्रों और सभाओंमें इस बातका आन्दोलन किया जाता कि प्रारभिक कार्यक्रममें एक नीग्रोको स्थान दिया जाना चाहिए तथा पुरस्कार देनेवाले पचोंमे एक नीग्रो भी होना चाहिए, तो क्या इससे हमारी जातिका कुछ भी गौरव हो सकता ? मै नही समझता कि इससे हम लोग कोई लाभ उठाते। हॉ, प्रदर्शनीके अधिकारियोने नीग्रो लोगोकी योग्यता देखकर गुणोंका योग्य गौरव करनेके लिहाजसे स्वय ही उनका यथेष्ट आदर किया — उन्हें स्वय ही यह अच्छा मालूम हुआ। मनुष्यके स्वभावकी बनावट ही ऐसी है कि वह अन्तमे जातिद्वेषको भूल कर काले-गोरोंमे कोई अन्तर नही देखता और दोनाकी योग्यता समझ कर उनका यथेष्ट आदर करता ही है।

मेरी तो यह राय है कि नीग्रो लोग राजकीय अधिकार मॉगनेमे अधिक विनयशील रहें तो बहुत अच्छा हो। यह बडे ही सतोषकी बात है कि बहुतसे नीग्रो लोगोंका आचरण ऐसा ही देखनेमे आता है। धन-सम्पत्ति, बुद्धिमता ओर उत्तम चरित्रबल होने पर ही राजकीय अधिकार सुख देते है। उन अधिकारोसे सुख प्राप्त करनेकी योग्यता पहले होनी चाहिए। यह योग्यता धीरे धीरे अवश्य प्राप्त होगी। यह काई बाजीगरका खेल नही जो 'आओ' कहते ही आ जाय ' मेरे कहनेका तात्पर्य यह नही है कि नीग्रो लोग सम्मति (वोट) ही न दिया करे। मै तो यह कहता हूँ कि बिना पानीमे उतरे जैसे कोई बालक तैरना नही सीख सकता वैसे ही, वोट दिये बिना स्थानीय स्वराज्यसे भी कोई लाभ नही उठा सकता। परन्तु इसके साथ मेरी यह भी सलाह है कि वोट देनेके समय नीग्रो लोग अपने गोरे पडोसियोसे भी सलाह लिया करें जो उनसे अधिक बुद्धिवान् और चरित्रवान् है।

मे ऐसे नीग्रो सज्जनोंको जानता हूँ जिन्होने दक्षिणी गोरोके उत्साह

दिलानेसे और उन्हींकी सलाह और मददसे हजारों डालरकी मिलकियत प्राप्त कर ली है, परन्तु जब वोट देनेका मौका आता है तब ये ही नीग्रो लोग उनके पास सलाह लेने तकको नही जाते । यह बहुत ही अनुचित बात है और इस लिए मै चाहता हूँ कि इस विषयमें लोग बहुत जल्द सावधान हो जायँ । मे यह नही चाहता कि नीग्रो लोग हॉमें हॉ मिलाया करे अथवा बातको खूब सोचे समझे बिना दूसरोके कहनेसे ही अपनी सम्मति दे दिया करे । कभी नही । यदि वे ऐसा करने लगेगे तो उनके विषयमे दक्षिणी गोराका विश्वास और आदर नष्ट हो जायगा ।

कोई राज्य एसा नियम नही बना सकता जिससे अशिक्षित और दरिद्र गोरा तो वोट द सके पर उसी हैसियतका नीग्रो न दे सके । यह नियम अन्यायपूर्ण हे और इससे बहुत बडी हानि होगी। इसका परिणाम यह होगा कि नीग्रो तो शिक्षित और सम्पन्न बननेका प्रयत्न करेगे और गोरेको दरिद्र और मर्ख बने रहनेम उत्तेजना मिलेगी । इस समय वोट इकट्ठा करनेमे बडे बडे कपटनाटक होते हे, पर मे समझता हूँ कि शिक्षा और दोनो जातियाके परस्पर मित्रभावसे यह बात बहुत दिन न रहने पावेगी । जो गोरा नीग्रोको धोखा देकर उसका वोट छीन लेता है वह आगे चलकर अपने गोरे भाईसे भी ऐसा ही व्यवहार करने लगता ह और अन्तमे इसका परिणाम किसी बडे भारी अपराधमे होता है । मुझे आशा हे कि वह समय शीघ्र ही आवेगा जब दक्षिणमे सब लोग समानरूपसे वोट देनेके लिए उत्साहित होगे । दक्षिणके अधिकारी अब इस बातको जल्द ही जान लेगे कि स्थानीय स्वराज्यमे सबको समान अधिकार न मिलनेसे अथवा उसमे कुछ लोगाका कुछ भी स्वार्थ न होनेसे जो त्रिशकुकी अवस्था उत्पन्न होती है उसकी अपेक्षा यही सब प्रकारसे अच्छा हे कि सबको समान अधिकार दिये जायँ और राजकीय व्यवस्थामे जीवन उत्पन्न किया जाय ।

मेरी सम्मतिमे, साधारणत सबको सम्माति देनेका समान अधिकार

होना चाहिए। परन्तु दाक्षिणके कुछ राज्योंकी अवस्था इस समय इतनी बिगड़ी हुई है कि वहाँ कुछ काल तक वोट देनेके लिए विद्या और सम्पत्ति दोनों बातें आवश्यक रक्खी जानी चाहिए। अर्थात् शिक्षाकी या सम्पत्तिकी अथवा दोनोंकी यथेष्ट योग्यता बिना वोट देनेका अधिकार किसीको न दिया जाय। इस विषयमें नियम कैसे ही बनें, यह ज़रूरी है कि उनका उपयोग दोनों जातियोंके लिए समान रूपसे और समान न्यायसे हो।

पंद्रहवाँ परिच्छेद ।

व्याख्यानकी सफलताका रहस्य ।

एटलाटा–प्रदर्शनीमें मेरा व्याख्यान लोगोको किस कदर पसद हुआ यह मै स्वय न बतलाकर सुप्रसिद्ध सामरिक सवाददाता मिस्टर क्रीलमेनके शब्दोमें बतलाता हूँ । मि क्रीलमेन मेरे व्याख्यानके समय मौजूद थे । उन्होने नीचे लिखा हुआ तार न्यूयार्कके ' वर्ल्ड ' के पास भेजा था —

" एटलाटा, १८ सितबर, १८९५

प्रदर्शनी खुलनेके अवसर पर गोरे श्रोताओके सामने एक नीग्रो मूसाने बडे माककी वक्तृता दी । दाक्षिणके इतिहासम इस तरहकी यह पहली घटना ह । ओर एक महत्वकी बात यह हुई कि जाजिया आर लुसियानाके नागरिकोके साथ नीग्रो लोगोका एक जुलूस निकला था । इस समय सर्वत्र इन्ही बातोकी चर्चा हो रही हे । न्ययार्ककी न्यू इग्लेड सोसायटीके सामने हेनरी ग्रेडीके स्मरणीय भाषणके उपरान्त दक्षिणमे इस प्रदर्शनके समान उत्साहदर्शक और महत्त्वपूर्ण बात ओर कोई नही हुई ।

"जिस समय टस्कजी–विद्यालयके प्रिन्सिपल प्रोफेसर बुकर टी वाशिगटन व्याख्यान देनेके लिए प्लेटफार्म पर खडे हुए उस समय सध्या समयके स्वच्छ सर्यके सुकोमल किरण उस विशाल भवनकी खिडकियोंसे अन्दर प्रवेश कर श्रोताओके सिरपरसे उनके मुखकमल पर चमकने लगे और इससे उनके चेहरे पर एक प्रकारका दिव्य तेज झलकने लगा । उस समय हेनरी ग्रेडीके उत्तराधिकारी क्लार्क हावेलने मुझसे कहा,– 'इस मनुष्यकी वक्तृता अमेरिकामे नैतिक क्रान्ति उत्पन्न करनेवाली है ।'

"ऐसे महत्त्वपूर्ण अवसर पर गोरे पुरुषों और स्त्रियोंके सामने अब तक किसी नीग्रोका भाषण नही हुआ था। इस भाषणको सुनकर लोग चकित हो गये और उन्होने बडा हर्ष प्रकट किया!

"मिसेस टामसनकी वक्तृता समाप्त होते ही सब लोग प्लेटफार्म पर पहली पांक्तिमे बेठे हुए एक ऊँचे पूरे, कपिल वर्णके नीग्रोकी ओर टकटकी लगाकर देखने लगे। ये टस्केजी-विद्यालयके सर्वस्व बुकर टी. वाशिंगटन थे। अबसे अमेरिकाकी नीग्रो जातिमे इन्हीका पद सबसे ऊँचा समझना चाहिए। इस समय बैड पर राष्ट्रीय गीतोका मधुर गान हो रहा था जिससे सब लोग शान्त हो रहे थे-किसी तरहका शोर गुल न था।

"हजारो लोगोकी दृष्टि उस नीग्रो वक्ता पर गडी हुई थी। बात भी ऐसी ही थी। सब लोग जानते थे कि आज एक काला मनुष्य हम लोगोके हितार्थ निर्भय होकर भाषण करनेवाला है। ये प्रोफेसर वाशिंगटन ही थे। प्राफसर साहब जब अपने स्थानसे व्याख्यानस्थान पर आये तब अस्ताचल पर आरूढ हुए सूर्यदेवके आरक्त किरण भवनकी खिडकियामेसे आकर उनके चेहरे पर चमकने लगे, ओर लोगोने प्रचड करतलध्वनिसे उनका स्वागत किया। सूर्यकिरणोके तापसे अपने नेत्रोंको बचानेके लिए उन्होने अपना मुँह एक ओर जरा फेर लिया ओर प्लेटफार्म पर इधर उधर टहलना शुरू कर दिया। इसके बाद अस्ताचल पर विराजमान हुए सूर्यकी ओर ही अपनी दृष्टि स्थिर कर उन्होने अपनी वक्तृता आरभ कर दी।

"उनके देहकी गठन बडी ही सुन्दर थी। शरीर भरपूर ऊँचा और कसा हुआ था, छाती चौडी और उभरी हुई थी, ललाट विशाल, नाक सीधी, चेहरा चोडा और दृढताका सूचक, दाँत बिलकुल साफ और नेत्र तेजोमय थे। चेहरे पर एक प्रकारका दिव्य तेज था। उनकी कत्थई रगकी गर्दन पर उठी हुई नसे दिखाई देती थीं। मुट्ठीमें मजबूतीसे पेन्सिल

पकडकर उन्होंने अपना मोहडेदार हाथ ऊपर कर रक्खा था। अपने मजबूत पेरों पर एडीसे एडीसे भिडाकर, पर पजे अलग रखकर, वे गडेसे खडे हुए थे। उनकी आवाज साफ और जोरदार थी। वे एक बातको श्रोता-ओके दिलों पर अच्छी तरह जमा कर फिर दूसरी बात उठाते थे। उनकी वक्तृता सुनकर दश मिनिटके भीतर ही सब लोग जोशमें भर गये और रूमाल, बेत और टोपियॉ हिला हिलाकर अपना आनन्द प्रकट करने लगे। जाजियाकी सुन्दर स्त्रियॉ खडी होकर प्रसन्नतासे तालियॉ बजाने लगी। ऐसा मालूम होता था कि मानो वक्ताने सब पर जादू कर दिया हो! जब वक्ताने हाथकी उँगलियोको फैलाकर अपना कालासा हाथ सिर पर उठा रक्खा और अपनी जातिकी ओरसे दक्षिणी गोरोको सम्बोधनकर कहा, 'केवल सामाजिक कायामे हाथकी उँगलियोकी भॉति हम अगग अलग रहे, पर पारस्परिक उन्नतिके सब कामोमे हम लोगोको हाथकी भॉति एक होना चाहिए,' और जब उनकी इस आवाजकी लहर चारो दीवारोसे टकराइ तब सबके सब लोग उठ खडे हुए और मारे आनन्दके बहुत दर तक तालियॉ बजाते रहे।

"मेने अनेक देशाके वक्ताओकी वक्तृताये सुनी हे पर इस नीग्रो वक्ताने सूर्यके आरक्त किरणामे खडे होकर उन लोगोके सामने–कि जिन्होने नीग्रो जातिको गुलामीमे ही सडानेके लिए युद्ध किया था–अपनी जातिके पक्षका बडी खूबीके साथ जेसा अच्छा समर्थन किया वैसा स्वय ग्लैड-स्टनसे भी न बन पडता! लोग मारे आनन्दके तालियॉ बजाते जाते थे, परन्तु वक्ता पर उनका कुछ भी प्रभाव न पडता था–उनके उत्सुक चेहरेकी छटा जरा भी नही बदलती थी।

"सभामडपमे ही एक ओर एक हट्टा कट्टा दरिद्र नीग्रो बैठा हुआ था। वह वक्ताके चेहरेकी ओर एकटक निहार रहा था। अन्तमे वक्ताके भाषणके प्रभावसे उसकी ऑखोसे ऑसू टपकने लगे। इस समय प्रायः सभी नीग्रो लोगोंकी यही दशा हुई।

"वक्तृता समाप्त होते ही गवर्नर बुलक वक्ताके पास लपक कर आये और उन्होंने ज्यों ही उनसे हाथ मिलाया त्यों ही फिर तालियाँ बजीं। कुछ देरतक ये दोनों महाशय हाथमें हाथ दिये आमने सामने खड़े हुए देख पड़े।"

इस व्याख्यानके बाद टस्केजी-विद्यालयके आवश्यक कार्योंसे फुरसत पाने पर मैं कभी कभी व्याख्यानोंके निमंत्रण स्वीकार कर लेता था; परन्तु जहाँतक मुझसे बनता मैं ऐसे ही स्थानोंमें व्याख्यान देना स्वीकार करता था जहाँसे टस्केजी-विद्यालयको सहायता मिलनेकी आशा होती थी। व्याख्यान देना स्वीकार करनेसे पहले ही मैं यह निश्चय करा लेता था कि मुझे अपने जीवनके मुख्य कार्य और अपनी जातिकी आवश्यकताओंके विषयमें कहनेका पूरा अवसर मिलेगा। मैं यह बात भी पहले ही जतला देता था कि पेशेके ख़यालसे या केवल स्वार्थके लिए मैं कोई व्याख्यान न दूँगा।

मैं स्वयं अभीतक इस बातको नहीं समझ सका हूँ कि लोग मेरा व्याख्यान सुननेके लिए इतने उत्सुक क्यों रहते हैं। सभामंडपके बाहर खड़े होकर यदि मैं लोगोंको उत्साहपूर्वक मेरा व्याख्यान सुननेके लिए आते हुए देखता हूँ तो मैं इस बातसे बहुत ही लज्जित होता हूँ कि मेरे कारण इन लोगोंका अमूल्य समय नष्ट हो रहा है। कुछ वर्ष पूर्व माडीसनकी एक साहित्यसभाके सामने मेरा व्याख्यान होनेवाला था। निश्चित समयसे एक घंटा पहले बड़े ज़ोरोंसे बर्फ गिरने लगी और कई घंटे गिरती रही। मैंने समझा कि आज न लोग आवेंगे और न मुझे कुछ कहना पड़ेगा। तो भी कर्त्तव्य जानकर मैं वहाँ गया। देखा तो, श्रोताओंसे सब हाल भर गया है! उस विराट् जनसमुदायको देखकर मेरी विचित्र दशा हुई जिससे मैं दिनभर बेचैन रहा!

लोग मुझसे प्रायः पूछा करते है कि क्या मैं भी व्याख्यान देनेसे

पहले घबरा जाता हूँ ? और साथ साथ यह भी कहते हैं कि आदत पड़ जानेसे अब कोई घबराहट न होती होगी । इसके जवाबमें मैं यह कहता हूँ कि व्याख्यान देनेसे पूर्व मैं बहुत ही घबरा जाता हूँ। अनेक अवसरों पर व्याख्यान होनेके पहले मेरी घबराहट इतनी बढ़ गई है कि मैंने कई बार फिर कभी व्याख्यान न देनेका संकल्प भी कर डाला है। व्याख्यान न देनेसे पहले मैं घबराता हूँ, इतना ही नहीं, बल्कि, बाद भी इस सन्देहसे कि मैं कोई बात कहनेके लिए भूला तो नहीं, बहुत व्याकुल होता हूँ ।

परन्तु व्याख्यानके पूर्वकी घबराहटका बदला मुझे अच्छा मिल जाता है। दस मिनिटके कथनसे मुझे यह बोध होने लगता है कि अब श्रोताओंके दिल मेरे काबूमें आरहे हैं और उनसे मेरी पूरी एकता हो चली है। वास्तवमें वक्ताको जब यह मालूम हो जाता है कि श्रोताओंके दिल मेरे दिलसे मिल रहे हैं तब उससे उसे जैसी कुछ प्रसन्नता होती है वैसी और किसी बातसे न होती होगी । पूर्ण सहानुभूति और एकताका धागा वक्ता और श्रोताओंको मिला देता है और यह धागा किसी दृश्य या मूर्त्त वस्तुके समान बहुत मज़बूत होता है। यदि हज़ारों श्रोताओंमेंसे एक भी ऐसा हो जिसे मेरे विचारोंके साथ सहानुभूति न हो अथवा जो उत्साहशून्य, साशंक और दोषदर्शी हो, तो मैं उसे तत्काल पहचान लेता हूँ और उसकी ओर मुड़कर कोई ऐसा चुटकिला छोड़ता हूँ कि वह उसी समय ठीक हो जाता है—यह चुटकिला या मनोरंजक कथा उस पर रामबाणका काम करती है और उस समय उसके मनकी गति देखते ही बनती है । परन्तु चुटकिला मैं इसलिए कभी नहीं छोड़ता कि केवल सुननेवालोंका दिल बहला करे। ऐसे मन बहलावके ढंगको मैं बिलकुल पसन्द नहीं करता हूँ।

जो वक्ता इस विचारसे ही भाषण करता है कि अपने गौरवके लिए मुझे भी कुछ कहना चाहिए, वह अपना और श्रोताओंका अपराध करता है। मेरा तो यह सिद्धान्त है कि जबतक कोई विशेष बात लोगोंको न बतलानी हो, तबतक कभी भाषण न करना चाहिए। जिसे इस बातका पूरा विश्वास हो कि मेरे शब्दोंसे किसी व्यक्ति या कार्यकी कुछ सहायता हो जायगी, उसे ही भाषण करना चाहिए और इस प्रकारके भाषण करनेमें वक्तृत्वके कृत्रिम नियमोंसे मुझे कोई लाभ नहीं दिखाई देता। इसमें सन्देह नहीं कि विराम, श्वासोच्छ्वास, स्वरका उतार-चढ़ाव आदि बातें जानने और अमल करने योग्य हैं; परन्तु व्याख्यानमें इनसे जान नहीं आ जाती। जब मुझे कोई व्याख्यान देना होता है तब मैं अँगरेजी भाषाके नियम, अलंकारशास्त्रके नियम आदि सब कुछ भूल जाता हूँ, और अपने श्रोताओंको भी ये बातें भुला देना चाहता हूँ।

मेरे व्याख्यानके समय यदि कोई श्रोता बीचहीमें उठकर चला जाता है तो मेरा चित्त ठिकाने नहीं रहता। इसलिए जहाँ तक बनता है मैं अपने व्याख्यानको इतना रोचक और चित्ताकर्षक बनानेका प्रयत्न करता हूँ कि जिससे किसीकी वहाँसे उठनेकी इच्छा ही न हो। प्रायः श्रोता लोग साधारण उपदेशोंकी अपेक्षा तत्त्वकी बातें सुनना अधिक पसन्द करते हैं। यदि उन्हें रोचक पद्धतिसे–कथा कहानियों या चुटकिलोंके साथ तत्त्वकी बातें सुनाई जावें तो वे शीघ्र ही उनका ठीक परिणाम भी निकाल लेते हैं।

शिकागो, बोस्टन, न्यूयार्क, और बुफालो आदि शहरोंके व्यापारी लोग विशेष चतुर, दृढ और व्यवहारदक्ष हैं और मैं ऐसे ही लोगोंमें व्याख्यान देना सबसे अधिक पसन्द करता हूँ। ये लोग बड़े उत्साह और ध्यानसे व्याख्यान सुनते हैं और व्याख्यानगत प्रश्नोंका तत्काल ही उत्तर

भी देते है । मुझे ऐसे लोगोके सामने व्याख्यान देनेका कई बार अवसर मिला है । ऐसे व्यवहारदक्ष व्यापारियोकी सस्थाओको हस्तगत करनेके लिए–उन्हे अपने विचारोंसे भर देनेके लिए–किसी दावतक उपरान्त बडा ही अच्छा अवसर मिलता है, परन्तु कठिनाई यह आ पडती है कि भोजनमे ही बहुतसा समय नष्ट हो जाता है और तब तक अपने कार्यकी सफलताके विषयमे तरह तरहकी आशकाये करते हुए बैठे रहना पडता है ।

मै ऐसी दावताम बहुत कम शरीक होता हूँ । कारण, जब कभी ऐसा माका आता है तो मुझे बचपनम अपने मालिकके यहाँसे सप्ताहमे एक बार मिलनेवाली लपसीकी याद आ जाती है । उन दिनो बाजरेकी रोटी और सूअरका मास ही हमारा भोजन होता था, पर रविवारके दिन हम तीन लडकाके लिए मालिकके बडे मकानसे थोडीसी लपसी मिला करती थी जिसे पाकर हम लोग बहुत खुश होते थे और यह चाहते थे कि रोज रोज ही रविवार हुआ कर । मे अपनी टीनकी थाली लपसीके लिए ऊपर उठाय और आँखे बन्द किये बैठा रहता था । अनन्तर आँखे खोलने पर थालीमे बहुत सी लपसी परोसी हुई देखकर मन-ही-मन बड़ा खुश होता था ! थालीको इधरस उधर हिलाकर लपसीको थालीभरमे फैला लेता ओर मन-ही-मन कहता था कि यह बहुत बढ गई है–अब इसे बहुत देर तक खाता रहूँगा ! मै यह नही समझ सकता था कि थालीके एक कौनेमे जो लपसी थी वही फैलकर थालीभरमे फैल गई है और इससे वह एक कौनेकी लपसीसे अधिक नही है ! मेरे हिस्सेकी यह लपसी दो बडे चमचे भरसे अधिक नही होती थी, पर उसके खानेमे मुझे जो आनन्द मिलता था वह इन पचासो पक्वान्नोकी दावतोमे भी नही मिलता !

श्रोताओमे पहला नबर तो उक्त शहरोके व्यवहारदक्ष व्यापारियो-

का है। इसके बाद मैं दक्षिणकी दोनों जातियोंके सामने एक साथ या अलग अलग व्याख्यान देना पसन्द करता हूँ। उनके उत्साह और प्रत्युत्तरसे मुझे बड़ा आनन्द होता है। काले लोगोंके 'तथास्तु' और 'साधु, साधु' कहनेसे, कोई भी वक्ता हो, अवश्य उत्साहित होगा। इनके बाद कालेजके तरुण विद्यार्थियोंका नंबर है। हारवर्ड, येल, विलियम्स, अमहर्स्ट, पेन्सिलवानिया, मिशिगन आदि विश्वविद्यालयोंमें तथा नार्थ कैरोलिनाके ट्रिनिटी कालेजमें और ऐसे ही अन्य अनेक स्थानोंमें मेरे अनेक व्याख्यान हुए हैं।

मेरे व्याख्यानके बाद बहुतसे लोग मेरे पास आकर मुझसे हाथ मिलाते हैं और कहते हैं,-"किसी नीग्रोको 'मिस्टर' कहनेका यह पहला ही अवसर है!" यह सब देख-सुनकर मुझे बड़ा कुतूहल होता है।

टस्केजी-विद्यालयके लाभके लिए जब व्याख्यान देने होते हैं तब मैं खास खास स्थानों पर सभायें करनेका प्रबन्ध करता हूँ। ऐसे अवसरों पर मुझे देवालयों, रविवारकी पाठशालाओं, क्रिश्चियन एन्डेवर सोसायटियों और स्त्रीपुरुषोंके भिन्न भिन्न क्लबोंमें जाना पड़ता है और कभी कभी तो एक एक दिनमें चार चार व्याख्यान देने पड़ते हैं।

तीन वर्ष पूर्व, मिस्टर मारिस के. जेसप और डाक्टर करीके अनुरोधसे स्लेटर-फंडके पंचोंने नीग्रो लोगोंकी पुरानी बसतियोंमें घूम घूम कर सभायें करनेके लिए मुझे और मेरी स्त्रीको कुछ धन देना निश्चय किया। गत तीन वर्षोंमें मैंने प्रत्येक वर्षके कई सप्ताह इस काममें खर्च किये हैं। कार्यक्रम इस प्रकारका रहा कि सबेरे धर्मोपदेशकों, अध्यापकों तथा पेशेवालोंके सामने मैं व्याख्यान देता, दो पहरको स्त्रियोंमें मिसेस वाशिंगटन वक्तृता देतीं, और सन्ध्या समय सर्व साधारणके सामने फिर मेरा व्याख्यान होता। इन सभाओंमें नीग्रो लोगोंके अति-

रिक्त गोरे भी आया करते थे। उदाहरणार्थ, चटनुगाकी सभामें तीन हज़ार श्रोता थे जिनमें आठ सौ गोरे थे। इन सभाओंका कार्य मुझे बहुत पसन्द आया और इनसे लाभ भी बहुत हुआ।

इन सभाओंके कारण हम लोगोंको हर तरहके लोगोंसे मिलकर उनकी असली हालत जाननेका बहुत ही अच्छा अवसर मिला। इसके अतिरिक्त दोनों जातियोंके पारस्परिक व्यवहार भी हम लोग भली भाँति देख सके। ऐसी सभाओंमें काम करनेके बाद नीग्रो जातिकी उन्नतिके विषयमें मेरा उत्साह बहुत बढ़ जाता है। मैं यह जानता हूँ कि ऐसे अवसरों पर लोग प्रायः दिखौआ उत्साह प्रकट किया करते हैं; पर बारह घाटका पानी पीकर अब मुझे इतना अनुभव हो गया है कि इससे मैं धोखा नही खा सकता। इसके सिवाय मैं हर बातकी तह तक पहुँचकर उसका ठीक ठीक पता लगानेका पूरा पूरा उद्योग किया करता हूँ।

समझबूझकर बात करनेका अभिमान रखनेवाले एक मनुष्यके मुँहसे मैंने सुना कि, "नीग्रो जातिमें सैकड़ा नब्बे स्त्रियाँ दुराचारिणी होती हैं।" एक सम्पूर्ण जातिके विषयमें इससे बढ़कर निराधार और मिथ्या विधान और क्या हो सकता है?

बीस वर्षतक दक्षिणमें रहकर और वहाँके निवासियोंकी वास्तविक दशाका पता लगाकर मुझे यह विश्वास हो गया है कि मेरी जाति सदाचार, सम्पत्ति, शिक्षा आदि सभी बातोंमें दिनोंदिन बराबर तरक्की करती जा रही है। किसी खास स्थानके निम्न श्रेणीके लोगोंकी रहन-सहनको प्रमाणस्वरूप लेकर सारी जाति पर कलंक लगाना बुद्धिमानीका काम नहीं है।

सन् १८९७ के आरंभमें बोस्टन निवासियोंने मुझे राबर्ट गोल्ड शाका स्मारक खोलनेके अवसर पर निमंत्रित किया। यह समारंभ बोस्टनके म्यूज़िक हालमें बड़ी धूमधामसे हुआ। बड़े बड़े विद्वान् और प्रतिष्ठित

लोग उपस्थित हुए थे। गुलामीके कई पुराने विरोधी भी आये हुए थे। सभापतिका आसन मैसेच्युसेट्स राज्यके गवर्नर आनरेबल रोजर वुलकाट महाशयने मडित किया था और उनके साथ प्लेटफार्म पर अनेक गण्यमान्य लोग बैठे हुए थे। इस सभाके विषयमे 'ट्रन्स क्रिप्ट' नामक पत्रके निम्न-लिखित लेखसे बहुत अच्छा प्रकाश पडेगा।

"कल म्यूजिक हाल्मे विश्वबधुत्वके सन्मानार्थ जो सभा हुई थी उसम टस्केजी–विद्यालयके प्रिन्सिपलका व्याख्यान बहुत ही अच्छा हुआ। गवर्नर वुल्काटने उनका इस प्रकार परिचय दिया कि–'गत जून मासमे हारवर्ड–यनिवर्सिटीने आपको एम ए की पदवी प्रदान की है। इस देशके सबसे प्राचीन विश्वविद्यालयकी ओरस यह आनरेरी डिग्री प्राप्त करनेवाले सबसे पहले नीग्रो आप ही है। आपको यह माननीय पदवी अपनी जातिके उदार नेतृत्वकी सूचनारूप मिली है।' जिस समय प्रोफेसर वाशिगटन व्याख्यान देनक लिए खड हुए उस समय ऐसा जान पडा कि माना मसेच्युसेट्सके स्वातन्त्र्यकी साक्षात् प्रतिमा ही खडी हुई हो। उनके चहरे पर मेसेच्युसेट्सकी परम्परागत और अचल श्रद्धा झलक रही थी। उनके शक्तिशाली विचारो और उज्ज्वल भाषणमें पूर्वकालीन घोर सग्रामका वैभव दिखाई देता था। वह सारा दृश्य ऐतिहासिक सौन्दर्यसे भरा हुआ ओर महत्त्वसे परिपर्ण था। निरुत्साही बोस्टन अपने अन्त करणक सत्य और सद्भावके अग्नितेजसे दीप्तिमान हो रहा था। किसी सार्वजनिक अवसर पर न दिखाई देनेवाले लोगोंके झुडके झुड, और पर्वके दिन घर छोडकर बाहर जानेवाले सैकडों परिवार आज उस सभाभवनमे ठसाठस भरे हुए थे। नगरके नरनारियोने उत्तम वस्त्र ओर आभूषण पहनकर कुछ ऐसी शोभा उप-स्थित की थी, मानो यह नगर अपना ही जन्ममहोत्सव मना रहा हो।

"सामरिक गीतोसे भवन गूँज रहा था। जब कर्नल शाके मित्र और

कर्मचारी, शिल्पी, सेट गाडन्स, स्मारक कमेटीके सदस्य, गवर्नर, उनके मत्री और मैसेच्युसेट्सकी ५४ वी पल्टनके नीग्रो सैनिक आदि लोग आये और प्लेटफार्म पर चढने लगे तब चारो ओरसे जयजयकी पुकार और तालियोंकी कडकडाहट आरभ हुई। कमेटीकी ओरसे गवर्नर एड्रूके एक पुराने मत्रीने भाषण किया। इसके बाद गवर्नर वुलकाटने एक छोटी पर बहुत ही सुन्दर वक्तृता दी। उन्होने कहा, 'वागनरके दुर्गकी घटनासे इस जातिके इतिहासमे नवीन युग आरभ हुआ ओर अब इस जातिने शैशव काल पार कर यौवनकालमे पदार्पण किया है।' उन्होने बोस्टनके विजयस्तभका तथा कर्नल शा और उनकी काली पल्टनोके कार्योका बडी ही ओजास्विनी भाषामे वर्णन किया। तब—

" Mine eyes have seen the glory of
the coming of the Lord "

यह गीत हुआ ओर इस अच्छे मौके पर बुकर वाशिगटन व्याख्यान दनके लिए उठ खडे हुए। उस समय श्रोताओकी शान्ति भग हो गई ओर उनमे आवेश ओर उत्साह भर गया। सारा श्रोतृसमाज उनका जयजयकार करने ओर उन्हे धन्यवाद देनेके लिए कई बार उठा। जब इस काले वर्णके सुशिक्षित और बलवान् मनुष्यने गभीर ध्वनिसे अपना भाषण आरभ किया ओर स्टर्न्स तथा एड्रूका जिक्र छेडा तब लोग बडे ही उत्साह ओर एकाग्रतासे वक्ताकी ओर देखने लगे। सैनिको और नागरिकोकी ऑखोमे आसू भर आये। प्लेटफार्म पर बैठे हुए काली पल्टनके सिपाहियोकी ओर, विशेषकर उन सिपाहियोकी ओर जिन्होंने बहुत घायल हो जाने पर भी हाथसे अपना जातीय झडा गिरने न दिया था—मुडकर वाशिगटन महाशय कहने लगे,—'५४ वी पल्टनके बचे हुए वीरो, और कटे हुए हाथ पैरोंसे आजके समारभकी शोभा बढानेवाले सैनिको, तुम्हारा सेनापति अब भी जीवित है। यदि बोस्टनवाले उसका

कोई स्मारक न बनाते और इतिहासमें उसका कोई उल्लेख न किया जाता, तो भी तुम लोगोंमें और उस नमकहलाल जातिमें जिसके कि तुम लोग प्रतिनिधि हो, राबर्ट गोल्ड शाका अक्षय्य स्मारक सदा बना रहता।' इन शब्दोंको सुनते ही श्रोताओंमें उत्साहसागर उमड़ आया। मैसेच्यु-सेट्सके गवर्नर, रोज़र वुलकाटने उठकर बड़े ज़ोरसे कहा,—बुकर टी. वाशिंगटनका त्रिवार जयजयकार हो!"

उस समय प्लेटफार्म पर फोर्ट वागनरके झण्डेदार, न्यू बेडफर्डके काले अफ़सर, सार्जेंट विलियम कारने भी उपस्थित थे। यद्यपि उनकी पल्टनके अधिकांश सिपाही मारे जा चुके थे और भाग गये थे तथापि वे अन्त समयतक अमेरिकाकी ध्वजा लिये खड़े रहे थे। युद्ध समाप्त होने पर उन्होंने कहा था, 'अमेरिकाके पुराने झंडेने कभी ज़मीन नहीं देखी!' वही झंडा इस समय भी उनके हाथमें था! मैंने जब काली पल्टनके बचे हुए वीरोंको सम्बोधन करके भाषण किया और सार्जेंट कारनेका नाम लिया तो वे आप ही उठ खड़े हुए और उन्होंने अपना झंडा ऊपर उठा दिया। मैंने कई बार अपने भाषणसे लोगोंको उत्साहित या उत्तेजित हुए देखा है; पर इस मौके पर जैसा दृश्य दिखाई दिया वैसा पहले न कभी देखा था और न अनुभव ही किया था। कई मिनिटों तक मारे आनन्दके लोग आपेमें न रहे।

स्पेनके साथ अमेरिकाका युद्ध समाप्त हो चुकने पर, शान्तिके उप-लक्ष्यमें अमेरिकाके सभी बड़े बड़े नगरोंमें उत्सव हुए। इसी प्रकारका एक उत्सव शिकागोमें भी हुआ। शिकागो-विश्वविद्यालयके प्रेसिडेंट विलियम हारपर स्वागतकारिणी सभाके सभापति थे। उन्होंने मुझे व्याख्यान देनेके लिए निमंत्रित किया। मैं वहाँ गया और मेरा पहला व्याख्यान १६ अक्टूबर, रविवारके दिन सन्ध्याके समय हुआ। उस

दिन श्रोताओंकी बड़ी भीड़ थी । ऐसी भीड़ मेरा व्याख्यान सुननेके लिए इससे पहले इस प्रदेशमें कभी न हुई थी । उसी दिन दो स्थानों-पर और भी मैंने व्याख्यान दिये ।

पहले व्याख्यानके लिए अनुमान सोलह हज़ार श्रोता उपस्थित थे और सभामन्दिरके बाहर अनुमान इतने ही लोग अन्दर आनेकी चेष्टा कर रहे थे । उस समय भीड़की यह कैफ़ियत थी कि बिना पुलिसकी मद-दके कोई अन्दर नहीं जा सकता था । उपस्थित सज्जनोंमें प्रेसिडेंट विलियम मैकिनले, उनके मंत्री, परराष्ट्रोंके प्रतिनिधि, इसी युद्धमें नाम पाये हुए जलस्थल-सेनाके अनेक अफ़सर और अन्य बड़े लोग भी थे । मेरे अतिरिक्त रैबी एमिल जी. हर्श, फादर टामस पी. हाउनेट और डाक्टर जान एच. बरोज आदि वक्ताओंके भी भाषण हुए । इस सभाका हाल लिखते हुए शिकागोके 'टाइम्स हेरल्ड' ने मेरे भाषणके विषयमें इस प्रकार लिखा थाः—

"उन्होंने (मैंने) कहा कि नीग्रो लोग नष्ट होनेकी अपेक्षा दासत्वको अधिक पसन्द करते हैं । उन्होंने यह स्मरण दिलाया कि काले अमेरिकन दास बने रहें और गोरे अमेरिकन स्वतंत्र हों—इसीके लिए राज्यक्रान्तिके समय क्रिसपस अटक्सने अपने प्राण दिये थे । न्यू आरलीन्समें नीग्रो लोगोंने जैक्सर्नके साथ जैसा व्यवहार किया था, उसका भी उन्होंने उल्लेख किया । जिस समय दक्षिणी गोरे नीग्रो जातिके दासत्वके लिए लड़ रहे थे—उन्हें सदा गुलाम बनाये रखनेके लिए जी तोड़ प्रयत्न कर रहे थे उस समय नीग्रो लोगोंने जिस स्वामिभक्तिके साथ उनके परिवारकी रक्षा की थी, उसका भी उन्होंने बहुत ही हृदयद्रावक चित्र खींचा । पोर्ट हडसन, फ़ोर्ट वागनर और फ़ोर्ट पिलोमें उन्होंने जिस शूरताका परिचय दिया था उसका भी उन्होंने वर्णन किया । क्यूबावासियोंको स्वातंत्र्य दिलानेके लिए नीग्रो लोगोंने अपने ऊपर होनेवाले अन्यायोंको

भूलकर एलकाने और साशियागो पर जिस वीरताके साथ छापा मारा था उसकी भी उन्होने खूब प्रशसा की।

"इन सब बातोंमें वक्ताने यही दिखलाया कि उनकी जातिके लोगोंका व्यवहार बहुत ही उचित और शुद्ध रहा है। इसके बाद उन्होने अपने वक्तृत्वपूर्ण शब्दोंमें गोरोंसे प्रार्थना की,–' जब आप लोग स्पेनिश-अमेरिकन युद्धमे किये हुए नीग्रो लोगोके सारे पराक्रम सुन ले, दक्षिणके और उत्तरके सैनिकोसे आपको इसका पूरा वृत्तान्त मालूम हो जाय, और दासत्वकी प्रथा उठा देनेवालोसे तथा पहलेके मालिकोसे उनके विषयमे आद्यन्त जान ले, तब अपने अन्त करणमे इस बातको सोचे कि जो जाति इस प्रकार देशके लिए मरनेको–अपने प्राण न्योछावर करनेको तैयार रहती है उसे जीवित रहनेका अवसर देना चाहिए या नहीं।"

स्पेनिश-अमेरिकन युद्धमे योग देनेका अवसर देकर प्रेसिडटने हम लोगोंका जो गौरव किया था उसके लिए मैने अपने व्याख्यानमें उन्हें अनेक धन्यवाद दिये। व्याख्यान सुनकर लाग बहुत ही प्रसन्न हुए। स्टेजके दाहिनी ओर प्रेसिडेन्टके बैठनकी जगह खास तोर पर बनाई गई थी। वहाँ प्रेसिडेट उपस्थित भी थे। जिस समय उनकी ओर मुडकर मैने उनके प्रति कृतज्ञता प्रकट की उस समय सब लोग उठ खडे हुए और लगातार जयघोष करते हुए रूमाल, टोपियाँ और बेत हिलाने लग गये। स्वय प्रेसिडेटने भी खडे होकर सिर झुकाया। तब तो श्रोताओके उत्साहका पारावार ही न रहा। उस समय जिस प्रकारसे उन्होने इस उत्साहको प्रकट किया उसका वर्णन करना असभव है!

शिकागोके इस व्याख्यानका एक अश दक्षिणी गोरोंकी समझमे भली भाँति नही आया और इसलिए वहाँके समाचारपत्र मुझ पर तरह

तरहके आक्षेप करने लगे, यहाँ तक कि, 'एज–हेरल्ड' के सम्पादकने मुझसे उसका खुलासा भी लिख भेजनेकी प्रार्थना की । मैने उत्तरमें लिख भेजा कि "उत्तरी श्रोताओके सामने मै उन बातोंको कभी नहीं कहता, जिन बातोको मे दक्षिणी श्रोताओके सामने कहना अनुचित समझता हूँ । इससे अधिक खुलासेकी मै कोई आवश्यकता नहीं समझता । यदि मेरी सत्रह वर्षकी सेवाओसे दक्षिणके निवासी मेरा ठीक ठीक अभिप्राय नही समझ सके तो अब मेरे शब्दोंसे क्या खाक समझेगे ? व्यावहारिक और नागरिक वर्णद्वेष नष्ट करनेके सबधमे एटलाटामें मैने जो कुछ कहा था उसीकी पुनरावृत्ति मैने यहाँ शिकागोमें की थी । अपनी जातिकी सामाजिक अवस्थाके सम्बन्धमे मै कभी चर्चा नही करता ।" इसके साथ ही मेने एटलाटावाले अपने व्याख्यानसे कुछ अश उद्धृत भी कर दिये । इस उत्तरसे सम्पादक महाशयकी दिलजमई हो गई आर दूसरे समाचारपत्र भी चुप हो रहे ।

सार्वजनिक समेल्नोम तरह तरहके लोग मिलते है । साधारणत लम्बी डाढी, बिखरे हुए बाल, लबा और छोटासा चेहरा, काला कोट और कोट तथा फतूही पर तेलकी चिकनाहट—इतने लक्षणोसे युक्त मनुष्यको देखते ही म समझ जाता हूँ कि यह कोई विक्षिप्त है । ऐसे लोगोंसे मुझे भय मालूम होता है । शिकागोमे व्याख्यानके बाद एक ऐसाही मनुष्य मुझे मिला । उसकी एक एक बात ना नौ हाथकी थी । वह कहता था कि मै एक ऐसी तरकीब जानता हूँ जिससे मकई तीन चार साल तक बिना बिगडे रक्खी रह सकती हे और इस तरकीबको दाक्षिणी लोग अमलमे ले आवे तो जात-पाँतका प्रश्न बातकी बातमे हल हो जाय । मैने उसे यह समझानेका प्रयत्न किया कि इस समय हमारे सामने केवल यही प्रश्न है कि एक वर्षका काम चल जाने लायक धान पैदा कर लेना कैसे सिखालाया जावे, पर उसे सन्तोष न हुआ । एक और

महात्मा ऐसे ही मिले जो इस उद्योगमें लगे थे कि सब महाजनी को-ठियाँ और बेंक बन्द हो जायँ । वह मुझे भी इस उद्योगमें मिलाना चाहता था और कहता था कि जब ऐसा हो जायगा तब ही नीग्रो लोग अपने बल पर खड़े हो सकेंगे !

किसी किसी मनुष्यकी यह आदत हुआ करती है कि वह दूसरोंका समय ही नष्ट किया करता है । एक दिन बोस्टनके एक होटलमें मुझे खबर मिली कि कोई आदमी मुझसे मिलने आया है । मैं जल्दी जल्दी अपने कपड़े पहनकर नीचे उतरा तो देखा कि एक निकम्मा आदमी खड़ा है । उसने बड़े शान्त भावसे कहा, " कल मैंने आपका व्या-ख्यान सुना और बड़ी प्रसन्नता लाभ की । आज फिर इसी लिए आया हूँ कि और भी कुछ सुनकर कृतार्थ होऊँ ! "

लोग मुझसे प्रायः पूछते हैं कि आप टस्केजीसे इतनी दूर रहकर भी विद्यालयका प्रबन्ध कैसे करते हैं । बात यह है कि मैं ' जो काम तुम स्वयं कर सकते हो उसे दूसरोंसे मत कराओ ' इस सिद्धान्तको नहीं मानता । मेरा तो यह सिद्धान्त रहता है कि ' जो काम दूसरे लोग भली भाँति कर सकते हों उसे तुम स्वयं मत करो । '

टस्केजी-विद्यालयमें एक बड़ा सुभीता यह है कि कोई काम किसी मनुष्यके उपस्थित न रहनेसे रुक नहीं जाता । उसकी व्यवस्था ही ऐसी अच्छी और परिपूर्ण है । इस समय वहाँ सब मिलाकर ८६ कार्यकर्त्ता लोग हैं । इन सबके कामोंका ऐसा हिसाब लगा रक्खा है कि हरेक काम समय पर और भली भाँति होता रहता है । कई शिक्षक बहुत पुराने हैं और विद्यालय पर वैसा ही प्रेम करते हैं जैसा कि मैं करता हूँ । मैं जब विद्यालयमें नहीं रहता तब सत्रह वर्षोंसे कोषाध्यक्षका काम करनेवाले मि० वारन लोगन मेरा काम देख लेते हैं । इस काममें मिसेस वाशिं-

गर्टन और मेरे प्राइवेट सेक्रेटरी मि० स्काट उनकी यथेष्ट सहायता करते हैं। मि० स्काट मेरी चिट्ठियोंको देख लेते हैं और विद्यालय तथा दक्षिणी नीग्रोभाइयोंके विषयमें आवश्यक बातोंकी सूचना मुझे दे दिया करते हैं। उनके उद्यम, उनका चातुर्य और उनकी काम करनेकी खूबीके लिए मैं उनका बहुत कृतज्ञ हूँ। विद्यालयका प्रबन्ध करनेके लिए एक कार्यकारिणी सभा भी है, जिसका अधिवेशन सप्ताहमें दो बार होता है। इस सभामें विद्यालयके नौ विभागोंके नौ प्रधान रहते हैं। इसके सिवाय एक और सभा है, जो प्रति सप्ताह आयव्ययके विषयमें विचार करती है। इसमें छः सदस्य हैं। महीनेमें एक बार, अथवा आवश्यकता पड़ने पर अनेक बार शिक्षकोंकी एक साधारण सभा हुआ करती है। इन सबके अतिरिक्त धार्मिक और कृषिविभागके शिक्षकोंकी भी कई छोटी मोटी सभायें होती रहती हैं।

मैंने अपने जानने समझनेके लिए ऐसा प्रबन्ध कर रक्खा है कि मैं कहीं भी रहूँ, मेरे पास विद्यालयके कार्योंकी डेली रिपोर्ट आया करे। इससे मुझे विद्यालयके संबंधमें सब विवरण हरवक्त मालूम रहता है; यहाँतक कि किन किन विद्यार्थियोंने छुट्टी ली है और किस कारणसे ली है, इसका भी मुझे पता रहता है। विद्यालयकी दैनिक आय, गोशालासे आये हुए दूध और मक्खन, विद्यार्थियों और शिक्षकोंको मिलनेवाला भोजन, बाज़ारसे अथवा अपने खेतोंसे लाई हुई तरकारियाँ, आदिका पूरा पूरा ब्योरा इन रिपोर्टोंमें होता है। इस तरहका प्रबन्ध होनेसे सब काम विद्यालयके उद्देश्यके अनुकूल बराबर होते रहते हैं।

इन सब कामोंको करते हुए भी मुझे विश्राम और विहारके लिए समय मिल जाता है। लोग मुझसे पूछते हैं कि तुम यह सब कैसे कर लेते हो। इसका उत्तर देना कठिन है। मेरी यह धारणा हो गई है कि दृढ़ताके साथ प्रयत्न करनेके लिए और निराश कर देनेवाली महान्-

से महान् कठिनाइयोंका सामना करनेके लिए जैसे बलयुक्त शरीरकी और सुदृढ़ मज्जातन्तुओंकी आवश्यकता होती है उनकी प्राप्ति अपने ऊपर और अपने कार्यके ही ऊपर अवलम्बित है। मैंने अपना जीवन ऐसा नियमित कर लिया है कि मुझे सब काम और यथेष्ट विश्राम करनेका पूरा अवकाश मिल जाता है। मैं अपने प्रत्येक दिनका कार्यक्रम बना रखता हूँ। जहाँतक शीघ्र हो सकता है, अपने नित्यके कामसे निपटकर मैं कोई नया काम ढूँढ़ता हूँ और दूसरे दिन उसमें हाथ लगा देता हूँ। कामके अधीन रहकर उसके गुलाम बननेकी अपेक्षा मैं कामको अपने अधीन रखकर उसे ही गुलाम बनाये रहता हूँ। कामको पूर्णतया अपने अधीन रखनेसे शरीर नीरोग रहता, मन प्रफुल्लित होता, हृदयमें बल आता और आत्माको शान्ति मिलती है। मैं यह अपने अनुभवकी बात कहता हूँ। अपना काम प्यारा हो जानेसे एक प्रकारकी अपूर्व शक्ति प्राप्त होती है।

तड़के अपने काममें लग जानेसे मैं समझ लेता हूँ कि आजका दिन अच्छा बीतेगा और खूब काम होगा; पर इसके साथ ही, न जानी हुई विपत्तियोंके लिए भी मैं तैयार रहता हूँ। मैं यह सुननेके लिए तैयार रहता हूँ कि विद्यालयका कोई भवन गिर पड़ा, या जल गया, या और कोई वारदात हो गई; अथवा किसी समाचारपत्र या सार्वजनिक सभामें मेरे कामोंकी कड़ी आलोचना हुई, इत्यादि।

गत उन्नीस वर्षोंके लगातार काममें मैंने केवल एक बार छुट्टी ली है। इसका कारण यह हुआ कि दो वर्ष पूर्व मेरे कुछ मित्रोंने मुझे धन देकर सपत्नीक यूरोप जाकर वहाँ तीन महीने विश्राम करनेके लिए विवश किया था। मेरी रायमें प्रत्येक मनुष्यको अपना शरीर सुदृढ़ रखना चाहिए। मेरी तबियत ज़रा भी ख़राब हो जाती है तो मैं शीघ्र ही उसका इलाज करता हूँ। मुझे यदि कभी मीठी नींद न आई तो मैं समझता हूँ

कि कुछ गड़बड़ है। यदि शरीरके किसी अंगमें कुछ शिथिलता मालूम होती है तो मैं किसी अच्छे डाक्टरके पास जाकर उसकी चिकित्सा कराता हूँ। मैं यह समझता हूँ कि हर समय और हर स्थान पर नींद ले सकनेकी शक्तिसे बहुत लाभ होते हैं। मुझे इतना अभ्यास हो गया है कि जब मैं चाहता हूँ, पंद्रह बीस मिनिट झपकी लेकर शरीरकी सब थकावट दूर कर देता हूँ।

मैं ऊपर कह चुका हूँ कि दिन खतम होनेसे पहले ही मैं अपने कामोंसे निपट लेता हूँ; परन्तु यदि कभी कोई ऐसा बिकट प्रश्न आ पड़ता है कि उसका एकाएक निर्णय करना मैं उचित नहीं समझता; तो उसे दूसरे दिनके लिए छोड़ देता हूँ, अथवा, अपनी स्त्री और अपने मित्रोंसे उसके विषयमें परामर्श करता हूँ।

मुझे अच्छे अच्छे ग्रन्थ पढ़नेके लिए रेलकी सफ़रमें मौका मिलता है। समाचारपत्र पढ़नेका मुझे बड़ा शौक़ है; पर शोक इस बातका है कि मैं बहुतसे समाचारपत्र पढ़ डालता हूँ। उपन्यासोंमें मुझे कुछ लज्ज़त नहीं आती। जिस उपन्यासकी बड़ी तारीफ़ सुननेमें आती है— जिसके बाँचनेके लिए बीसों मित्र सिफ़ारिश करते हैं उसे भी मैं बड़ी कठिनाईसे पढ़ता हूँ। जीवनचरितोंसे मेरा बड़ा प्रेम है; पर कोई जीवनचरित हाथमें लेनेसे पहले मैं यह अच्छी तरह देख लेता हूँ कि वह चरित किसी सत्पुरुष या सद्वस्तुका है या नहीं। यदि नही, तो मैं उसे नही पढ़ता। अब्राहम लिंकनके विषयमें जितनी पुस्तकें छपी हैं अथवा मासिकोंमें जो जो लेख निकले हैं उन सबको मैंने पढ़ डाला है। साहित्यमें लिंकन ही मेरे प्रधान गुरु हैं।

सालमें छः महीने मुझे टस्केजीसे बाहर रहना पड़ता है। विद्यालयसे दूर रहनेमें हानि तो है ही; पर इसके बदलेमें कुछ लाभ भी अवश्य होजाता है। कार्यमें परिवर्त्तन होनेसे एक प्रकारका विश्राम मिलता है।

रेलगाड़ीमें बैठकर बहुत दूरकी यात्रा करनेसे मेरी तबियत हरी हो जाती है और आराम भी मिलता है । हाँ; कभी कभी वहाँ भी लोग मिलनेके लिए आ जाते हैं और उसी सदाकी रीतिसे कहा करते हैं— "क्या आप ही बुकर टी. वाशिंगटन हैं ? मैं आपसे मिलना चाहता था ।" विद्यालयसे दूर रहने पर मुझे छोटी मोटी बातें भूल जाती हैं और मुख्य मुख्य बातों पर विचार करनेका अवसर मिलता है । यह विद्यालयमें रहते हुए हो नहीं सकता । इसके सिवाय मुझे अन्य स्थानोंके शिक्षाप्रबन्ध देखने और अच्छे अच्छे अध्यापकोंसे मिलनेका भी अवसर मिलता है ।

सबसे आनन्ददायक विश्राम मुझे उस समय मिलता है, जब टस्केजीमें रातके भोजनके उपरान्त मैं अपनी स्त्री और बच्चोंके साथ बैठकर कहानियाँ कहता और सुनता हूँ । इसी प्रकार रविवारके दिन उनके साथ जंगलोंमें सैर करनेके लिए निकल जाना मुझे बहुत ही प्रिय है । वहाँ प्रकृतिकी शोभा देखनेमें हम लोग मगन हो जाते हैं । वहाँ किसी प्रकारका कष्ट नहीं । स्वच्छ वायु, सुन्दर वृक्ष, घनी झाड़ियाँ नाना प्रकारके फूल, और पुष्पवृक्षोंसे सर्वत्र फैलनेवाली सुगन्धि इन सबसे मोहित होकर हम लोग झिल्लियोंकी तानारीरी और पक्षियोंका मधुर गान सुनकर अपूर्व आनन्द प्राप्त करते हैं । वास्तवमें, यही तो विश्राम है !

मुझे अपने बाग़में भी बड़ा आनन्द मिलता है । कृत्रिम वस्तुओंकी अपेक्षा साक्षात् निसर्गसे हीं संलग्न होनेमें मुझे प्रसन्नता होती है । दफ्तरके कामसे निपटकर मैं घंटे आध घंटेके लिए जमीन खोदने, बीज बोने और पौधे रोपनेमें लग जाता हूँ । यह काम करते हुए मेरे अन्तःकरणमें यह भाव उठता है कि प्रकृतिके महाप्राणमें मेरा प्राण मिल रहा है और इससे मुझमें दृश्य संसारके संकटोंसे सामना करनेकी शक्ति आ रही है । मुझे ऐसे मनुष्य पर दया आती है जिसने स्वयं प्रकृतिसे ही आनन्द, बल और स्फूर्ति प्राप्त करनेकी विद्या नहीं सीखी ।

विद्यालयमें बहुतसे बत्तख और जानवर पाले जाते हैं; पर उनके सिवाय मैं स्वयं भी बढ़िया बढ़िया सूअर और बत्तख रखता हूँ । सूअर पालनेका मुझे बड़ा शौक है। खेल आदिकी मुझे अधिक परवा नहीं रहती। फुटबालका खेल तो मैंने कभी देखा ही नहीं । ताशके पत्ते भी मैं नहीं पहचान सकता । हाँ अपने लड़कोंके साथ कभी कभी गोटियोंका खेल खेल लेता हूँ । बचपनमें यदि मुझे खेलनेके लिए अवकाश मिलता तो इस समय भी मुझे उससे आनन्द मिलता; पर यह असंभव था !

सोलहवाँ परिच्छेद।

यूरोप।

सन् १८९३ मे मिसिसिपी-निवासिनी और फिस्क-यूनिवर्सिटीकी ग्रेज्युएट मिस मारगरेट जेम्स मरेके साथ मेरा विवाह हुआ। ये कुछ वर्ष पूर्व यहाँ अध्यापिका होकर आई थी और विवाहके समय विद्यालयकी 'लेडी प्रिन्सिपल' थी। विद्यालयके कामोमें मुझे इनसे बडी मदद मिलती है। इन्होने एक मातृसभा स्थापित की है। इसके अतिरिक्त ये टस्केजीसे आठ मील दूरकी एक बडी बसतीके वालको, स्त्रियों और पुरुषोको वहाँ जाकर खेतीके विषयमे शिक्षा दती हे।

इन दो कामोके आतिरिक्त हमारे विद्यालयमे स्त्रियाका एक क्लब है। उसकी देखरेख भी मिसेस वाशिगटन पर ही हे। इस क्लबमे विद्यालय तथा आसपासकी स्त्रियाँ महीनेमें दो बार एकत्रित होकर कुछ महत्त्वके विषयो पर विचार करती हे। इन सबके आतिरिक्त, मिसेस वाशिगटन दक्षिणकी नीग्रो स्त्रियोके क्लबकी तथा उनक राष्ट्रीय क्लबके कार्यकारी मडलकी चेयरमेन है।

मेरी सबसे बडी लडकी पोशियाने कपडे सीनेका काम भली भाँति सीख लिया है। बाजा बजानमे तो वह बहुत ही प्रवीण है। वह टस्केजी-विद्यालयमे पढती है और अपना कुछ समय पढानेके काममे भी खर्च करती है।

मेरे मझले लडके बेकर टेलिफेरोने बाल्यावस्थासे ही ईंटे बनानेका काम सीखा है और अब वह उस काममें बहुत निपुण हो गया है। इस कामसे उसे बहुत ही प्रेम है। वह कहा करता है कि मै इष्टिकाकार

(कुंमार) बनूँगा ! गत वर्षकी गरमीमें उसने मुझे एक पत्र लिखा था जिसको पढकर मुझे बहुत सन्तोष हुआ। घरसे बिदा होते समय मैं उससे कह आया था कि प्रतिदिन तुम अपना आधा समय अपने काममें लगाया करो ओर आधा जिस तरह चाहो, बिताओ। दो सप्ताह उपरान्त मुझे उसका वह पत्र मिला जिसकी नकल नीचे देता हूँ —

"टस्केजी, अलबामा।

प्रिय पिताजी,

आपने यहाँसे चलते समय कहा था कि तुम प्रतिदिन अपना आधा समय अपने काममे लगाया करो, पर मुझे अपना काम इतना पसन्द है कि मे अपना सारा समय उसीमे लगाना चाहता हूँ। इसके अतिरिक्त मै धन एकत्र करनेका भी उद्योग कर रहा हूँ क्योंकि आगे चल कर जब मे दूसरे विद्यालयमे पढने जाऊँगा तब वहाँ मुझे अपना खर्च चलानेके लिए धनकी आवश्यकता होगी।

आपका पुत्र —

बेकर।"

मेरा सबसे छोटा लडका अर्नस्ट डेविड्सन वाशिंगटन वैद्य बननकी इच्छा प्रगट करता हे। विद्यालयमे पढने और काम करनेके अतिरिक्त वह वहाँके वैद्यक कार्यालयका भी कुछ कुछ काम कर लेता है।

मुझे अपना घर बडा प्यारा है। पर मेरा आधिकाश समय सार्वजनिक कामोमे उसके बाहर ही खर्च हो जाता है। इससे मुझे बहुत बुरा मालूम होता है। ससारके अच्छेसे अच्छे स्थानकी अपेक्षा मुझे अपने कुटुम्बमें रहना बहुत पसन्द है। जिन लोगोको नित्य अपने घर आकर विश्राम करनेका अवसर मिलता है उनसे मै हसद करता हूँ। परन्तु कभी कभी मुझे यह भी खयाल होता है कि ऐसे लोग शायद

इस सुखको कोई सुख नहीं समझते। लोगोंकी भीड़भाड़, उनसे हाथ मिलाना, सफ़र करना आदि बातोंसे, थोड़े ही समयके लिए क्यों न हो, फुरसत मिलने पर मुझे घर आनेमें बड़ा ही आनन्द प्राप्त होता है! मैं समझता हूँ कि थकावट दूर करनेके लिए सबसे अच्छी ओषधि यही है।

मेरी प्रसन्नताका दूसरा स्थान प्रार्थनामन्दिर है, जहाँ नित्य रातको साढ़े आठ बजे सब विद्यार्थी और अध्यापक सपरिवार एकत्र होते हैं। इन ग्यारह बारह सौ स्त्रियों और पुरुषोंको अपने सामने परमेश्वरकी प्रार्थना करते हुए देखनेसे मनमें बड़े ही उच्च भाव उठते हैं। उस समय पर यह विचार उठता है कि इन सब स्त्री-पुरुषोंके जीवनको अधिक श्रेष्ठ और उपयोगी बनानेमें हमारे हाथसे कुछ सहायता हो रही है। क्या इससे भी बढ़कर अभिमानका और गौरवका और कोई काम हो सकता है?

१८९९ के वसन्त ऋतुमें एक बड़ी ही आश्चर्यजनक घटना हुई। बोस्टन नगरकी कुछ भद्र महिलाओंने टस्केजी-विद्यालयकी सहायताके लिए एक सभा की जिसमें दोनों जातियोंके मुख्य मुख्य लोग सम्मिलित हुए थे। बिशप लारेन्स सभापति थे। मेरा भी व्याख्यान हुआ। इसके अतिरिक्त मि० डंबारने कुछ कवितायें और मि० डुबाइसने कुछ वर्णनात्मक लेख पढ़ सुनाये। सभामें आये हुए कुछ लोगोंको मालूम हुआ कि मेरा शरीर बहुत शिथिल होता जाता है। इससे सभा विसर्जित होने पर एक महिलाने मुझसे पूछा कि आप कभी यूरोप गये हैं? मैंने कहा—नहीं। उसने पूछा क्या आप वहाँ जाना चाहते हैं? मैंने कहा—नहीं, यह बात मेरी शक्तिसे बाहर है। इस संवादको मैं थोड़ी देर बाद बिलकुल भूल गया। पीछे मुझे यह खबर मिली कि मि. गारिसन आदि मेरे मित्रोंने मुझे और मेरी स्त्रीको तीन चार

मासके लिए यूरोप भेजनेके विचारसे कुछ धनसंग्रह किया है। उन्होंने बहुत ज़ोर देकर मुझे वहाँ जानेके लिए आग्रह किया। एक वर्ष पूर्व ही मि० गारिसनने मुझसे गरमीके दिनोंमें यूरोप जानेका वचन लेना चाहा था। उस समय मुझे यह बात इतनी असंभव मालूम होती थी कि मैंने उसकी तरफ़ कोई ध्यान ही नहीं दिया था; पर अबकी बार मि० गारिसनने कुछ महिलाओंको इस 'साज़िश' में शामिल करके मेरे जानेका पूरा प्रबन्ध कर रक्खा था, यहाँतक कि मेरे जानेका मार्ग और मैं किस स्टीमरसे जाऊँगा यह भी निश्चित हो चुका था।

ये सब बातें ऐसी कारवाई, सफ़ाई और फुरतीसे हुईं कि मैं जानेके लिए विवश हो गया। मैं अठारह वर्षसे लगातार टस्केजी–विद्यालयकी सेवामें लग रहा था। इसी सेवाकार्यमें मेरा जीवन समाप्त हो जाय, इसके अतिरिक्त मेरे मनमें और कोई विचार ही न आया था। दिनों-दिन विद्यालयके खर्चका बोझ मुझ ही पर बढ़ता जाता था, इसलिए मैंने अपने बोस्टनके मित्रोंसे निवेदन किया कि–"आपकी उदारता और दूरदर्शिताके लिए मैं आपका कृतज्ञ हूँ; पर मेरी अनुपस्थितिमें विद्यालयकी आर्थिक दशा बिगड़ जायगी, इसलिए मैं यूरोप न जा सकूँगा।" इस पर उन्होंने लिख भेजा कि "मि० हिगिनसन तथा अन्य कई सज्जन, जो अपना नाम प्रकट करना नहीं चाहते, आपकी अनुपस्थितिमें विद्यालयकी यथेष्ट सहायता करनेके लिए बहुत बड़ी रकम एकत्र कर रहे हैं।" यह उत्तर पढ़कर मुझे चुप हो जाना पड़ा। अब मेरे बचनेकी और कोई सूरत न रही!

इतना सब कुछ होने पर भी यूरोपयात्राका विचार मुझे स्वप्नवत् ही मालूम होता था। मैं जन्मसे ही घोर दासत्वमें पला था। बचपनमें मुझे सोनेकी जगह नहीं थी, खानेको पूरा भोजन नहीं मिलता था, वस्त्र वगैरहकी भी ऐसी ही दुर्दशा थी। भोजनके लिए मेज़ तो अब

मिलने लगी है। मै समझता था कि ससारके सुख केवल गोरोंके लिए है—हम लोगोंके लिए नहीं ! यूरोप, लदन और पेरिसको मै स्वर्ग ही समझता था। ऐसी अवस्थामें मुझे यूरोपकी यात्राके सौभाग्यको स्वप्न जैसा समझना स्वाभाविक ही था।

इसके अतिरिक्त और दो विचार मुझे विकल कर रहे थे। मै समझता था कि लोग जब मेरी इस यात्राका समाचार सुनेंगे तब बिना कुछ जाने बूझे कहने लगेगे कि वाशिगटनको अब दिमाग हो गया है और अब वह बनने लगा है। बचपनमे मै अपने जातिभाइयोके विषयमे सुना करता था कि यदि उन्हें कुछ सफलता होगी तो वे अपने-को बहुत श्रेष्ठ समझने लगेंगे और धनाढ्योका अनुकरण करनेसे उनका मस्तक फिर जायगा। अब मुझे उन बाताका स्मरण हुआ। इसके अतिरिक्त मे यह भी समझता था कि अपना काम छोडकर मै यूरोपमे सुखस न रह सकूगा। बहुत सा काम अभी करना था और, और ओर लोग उसमे लगे हुए थे। एसी अवस्थामें सिर्फ मेही काम ओडकर चला जाऊँ यह मुझे अच्छा न मालूम होता था। बचपनसे मेरा सारा समय काम ही करते बीता था ओर इसलिए मै यह नही समझ सकता था कि अत्र य तीन चार महीन बिना कामके कैसे बिता सकूँगा।

यही कठिनाई मिसेस वाशिगटनके सामने भी थी, परन्तु मुझे विश्रा-मकी बहुत जरूरत है, इस खयालसे उन्होंने यरोप चलना स्वीकार कर लिया। उस वक्त नीग्रोजातिके जीवनसम्बन्धी कुछ प्रश्नो पर बडा आन्दोलन हो रहा था। उसे भी हम दोनोने छोड दिया और बोस्टनमें अपने मित्रोसे कहला भेजा कि हम लोग जानेके लिए तैयार है। उन्होंने भी शीघ्र ही प्रस्थान करनेके लिए आग्रह किया और तब यह तै हो गया कि १० मई के दिन हम दोनो यूरोपके लिए प्रस्थान करेंगे। मेरे परम मित्र मि० गारिसनने मेरी यात्राका बहुत ही अच्छा प्रवन्ध कर

दिया और उन्होंने तथा उनके मित्रोने मुझे इग्लेड और फान्सके अनेक —सज्जनोंके नाम परिचय-पत्र भी दे दिये। टस्केजीमें सब लोगोंसे मिल कर ता० ९ को हम दोनों न्यूयार्क नगरमें आये। यहाँ मेरी कन्या पोर्शिया जो उस समय फ्रामिगहममें विद्याभ्यास करती थी, हम दोनोंसे मिलने आई। मेरे सेक्रेटरी मि० स्काट और अन्य कई मित्र न्यूयार्क चले आये थे। जहाज पर सवार होनेसे कुछ ही पहले एक बडी आश्चर्यजनक घटना हुई। दो महिलाओका एक पत्र मिला जिसमें उन्हाने टस्केजीमे बालिकाओंकी शिल्पशाखाके लिए भवन बनवानेके निमित्त यथेष्ट धन देना स्वीकार किया था।

रेड स्टार लाइन कपनीके फ्रीसलेड नामक जहाज पर हम लोग सवार हुए। यह जहाज बहुत ही सुन्दर ओर सुडौल था। मैने अब तक महासागरमे चलनेवाला कोई भी जहाज न देखा था। जहाज पर सवार होते ही मेरे मनमे जो विचार उठे उनका वर्णन करना असभव हे। मुझे उस समय बडी प्रसन्नता हुई और कुछ भय भी हुआ। जहाजके कप्तान और अन्य कर्मचारी हम दोनाको केवल जानते ही न थे, बल्कि हमारी राह देख रहे थ। उन्हाने हम दोनोंका स्वागत किया। इससे हमे आश्चर्य हुआ। जहाज पर और भी कई जान पहचानके सज्जन बैठे हुए थ। मुझे यह सन्देह हो रहा था कि जहाजके कुछ यात्री हमारे साथ अच्छा व्यवहार न करेगे। मैने सुन रक्खा था कि अमेरिकन जहाजो पर हमारे जातिभाइयोंके साथ अनक बार बडे बुरे व्यवहार किये गये है, परन्तु हम दोनोके साथ कप्तान और अदनेसे अदने नौकरने भी बडा ही अच्छा सुलूक किया। वहाँ कुछ दक्षिणी गोरे भी थे, वे भी बडी सुजनताके साथ हम दोनोसे पेश आये।

जब जहाजका लगर उठा तब, लगातार अठारह वर्षसे मेरे ऊपर जिस चिन्ता और जिम्मेदारीका बोझा था, वह हर मिनिट हलका होने

लगा। अठारह वर्षोंके बाद यह पहला ही अवसर था जब मेरी चिन्ता किसी कदर घटी हुई मालूम हुई । मुझे इस समय जो प्रसन्नता हुई उसका मैं वर्णन नहीं कर सकता। अब मेरा यूरोप देखनेका हौसला भी बढ़ा; पर इस समय भी मुझे यह विश्वास न होता था कि मैं यूरोपकी यात्रा करने जा रहा हूँ !

मिस्टर गारिसनने हम दोनोंके लिए जहाज़में एक बहुत ही अच्छे कमरेका प्रबन्ध कर दिया था। जब दो तीन दिन जहाज़ पर बीत गये तब मुझे नींद खूब आने लगी। यहाँ तक नींद बढ़ी कि मैं दिनरातके चौबीस घंटोंमें पंद्रह घंटे सोने लगा ! उस वक्त मुझे विश्वास हुआ कि सचमुच काम करते करते मैं बहुत थक गया था। यूरोप पहुँचनेके एक मास बाद तक मैं इसी प्रकार प्रति दिन पंद्रह घंटे सोता रहा। अब प्रातःकाल उठकर मुझे इस बातकी कोई चिन्ता नहीं रहती थी कि आज किसीसे भेंट करनी है, या रेल पर जाना है अथवा कहीं कोई व्याख्यान देना है । इससे मेरी तबियतको बड़ा आराम मिलता था। अमेरिकामें प्रवास करते समय मुझे कई बार एक ही रातमें तीन भिन्न भिन्न स्थानों पर सोना पड़ता था ! कहाँ वह दौड़धूप, और कहाँ यह आराम !

रविवारके दिन कप्तानने मुझसे धर्मोपदेश करनेकी प्रार्थना की; पर मैं धर्मोपदेशक नहीं था, इस लिए उसकी यह प्रार्थना मैंने स्वीकार नहीं की। तथापि कई यात्रियोंके आग्रह करने पर मैंने एक दिन भोजनोत्तर एक व्याख्यान दिया। दस दिनकी सुखयात्राके बाद हम लोग बेलजियमके सुप्रसिद्ध एंटवर्प नगरमें उतरे।

जिस होटलमें हम दोनों ठहरे वह शहरके चौकके बिलकुल सामने था। दूसरे दिन इस नगरमें एक बड़ा उत्सव हुआ। इस अवसर पर नगरका दृश्य देखकर हमें बड़ी प्रसन्नता हुई। यहाँ कुछ दिन रहनेके पश्चात् मुझे कुछ सज्जनोंने हालेंडमें सैर करनेके लिए निमंत्रित किया। इस सैरसे हम

दोनोंको बड़ी प्रसन्नता हुई। इस अवसर पर देहातमें रहनेवाले लोगोंकी वास्तविक दशा भी हम दोनोंने देखी। सैर करते करते हम दोनों राटरडमतक चले गये और फिर वहाँसे लौट कर हेगमें आये जहाँ उस समय शान्तिमहासभाका (Peace Conference) अधिवेशन हो रहा था। वहाँ उपस्थित अमेरिकन प्रतिनिधियोंने हम दोनोंका अच्छा स्वागत किया।

हालेंडकी कृषिविषयक उन्नतिका और पशुओंकी उत्कृष्टताका मुझ पर बड़ा अच्छा संस्कार हुआ। जमीनके एक ज़रासे टुकड़ेसे कितना अनाज पैदा किया जा सकता है, इसका अन्दाज़ मुझे इसी देशमें आकर हुआ! मैंने यहाँ यह देखा कि लोग जमीनका एक तिनकेके बराबर हिस्सा भी बेकाम नहीं रहने देते। हरे भरे घासके मैदानोंमें एक साथ तीन तीन चार चार सौ गौओंको चरते हुए देखकर मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई।

हालेंडसे हम दोनों बेलजियम गये। वहाँ बुसेल्समें ठहरे और फिर वाटरलूका युद्धक्षेत्र देखकर बेलजियमसे सीधे पेरिसको गये। वहाँ मि० थिओडर स्टनटनने हमारे रहनेका प्रबन्ध कर दिया। शीघ्र ही यूनिवर्सिटी क्लबने इम दोनोंको भोजनके लिए निमंत्रित किया। भोजमें भूतपूर्व प्रेसिडेंट बेंजामिन हैरिसन और आर्कबिशप आयर्लेंड भी सम्मिलित हुए थे। अमेरिकाके प्रतिनिधि जनरल होरेस पोर्टर उस अवसर पर अध्यक्ष थे। वहाँ मैंने एक छोटीसी वक्तृता दी जिससे लोग बड़े प्रसन्न हुए। जनरल साहबने टस्केजी-विद्यालयकी और मेरी बहुत प्रशंसा की। भोज-वक्तृताके बाद मेरे पास व्याख्यान देनेके लिए कई निमंत्रण आये; पर अपने शरीररक्षाके उद्देश्यमें बाधा पड़नेकी संभावना जानकर मैंने उन निमंत्रणोंको अस्वीकार कर दिया। तो भी रविवारके दिन अमेरिकन गिरजेमें मैंने व्याख्यान देना स्विकार कर लिया। उस अवसर पर जनरल हैरिसन, जनरल पोर्टर तथा अन्य

कई बड़े बड़े लोग उपस्थित थे। इसके अनन्तर जनरल पोर्टरके यहाँ एक स्वागत-समारंभमें भी मैं सम्मिलित हुआ। यहाँ अमेरिकाके सुप्रीम कोर्टके दो जजोंसे मेरी भेंट हुई। पेरिसमें रहते समय अमेरिकन प्रतिनिधि, उनकी पत्नी और अन्य अमेरिकन सज्जनोंने हम दोनोंसे बड़े स्नेहका व्यवहार रक्खा।

पेरिसमें ही मेरा सुप्रसिद्ध अमेरिकन नीग्रो-चित्रकार मि. टैनरसे विशेष परिचय हुआ। अमेरिकामें इनसे भेंट हुई थी, पर इतना परिचय नहीं था। पेरिसमें इनके चित्रोंको लोग बड़े आदर और उत्सुकतासे देखते हैं। इनका बनाया हुआ एक चित्र देखनेके लिए हम दोनों लक्ष्मवर्गके राजप्रासादमें गये। वहाँके अमेरिकनोंको यह विश्वास न होता था कि किसी नीग्रोकी यहाँतक कदर हो सकती है! जब उन्होंने खुद जाकर उस चित्रको देखा तब उन्हें विश्वास हुआ। मैं अब तक पुकार पुकार कर अपनी जातिको और अपने विद्यार्थियोंको जो तत्त्व बतला रहा था उस तत्त्वकी, मि. टैनरके परिचयसे यथेष्ट पुष्टि हुई। वह तत्त्व यही था कि काम कोई हो—कितना ही मामूली क्यों न हो—उसमें जो मनुष्य कौशल लाभ करता है—औरोंसे अधिक अच्छा करके दिखाता है वह फिर किसी वर्णका ही क्यों न हो उसकी परख और कदर होती है। मेरी जातिके लोग एक मामूली कामको भी जितने ही अच्छे ढंगसे करना सीख लेंगे उतनी ही उनकी कीर्ति होगी। मुझे जब हैम्पटनमें पहले पहल कमरा साफ़ करनेका काम दिया गया था तब मैंने इसी तत्त्वसे प्रेरित होकर उसमें सफलता लाभ की थी। मैंने किसी कदर यह भी समझ लिया था कि मेरा भावी जीवन इसी झाड़ू देने पर ही निर्भर है, और इस लिए मैंने उस कामको इस खूबीके साथ करना निश्चय किया था कि उसमें कोई दोष न रह जाय। अस्तु। राजप्रासादके चित्रकी ओर देखते हुए मि०

टैनरके विषयमें किसीने यह पूछताँछ नहीं कि यह मनुष्य जर्मन है या फ्रेंच है, या काला नीग्रो है ! उनके विषयमें लोग इतना ही जानते थे कि वे एक कुशल चित्रकार है, किसीके मनमें उनके रूप-रगका प्रश्न ही नही उठता था । बात यह है कि ससार अच्छी वस्तुओको देखता है, उन वस्तुओंके बनानेवालेकी जाति, रग या इतिहास नहीं पूछता ।

मै समझता हूँ कि मेरी जातिका भविष्य केवल इसी प्रश्न पर निर्भर है कि वह अपने स्थानके तथा प्रान्तके समाजका सुख और वैभव बढाती है या नही । जिस स्थान पर हम लोग निवास करते है, उस स्थानके लोगोंकी साम्पत्तिक, मानसिक और नैतिक उन्नतिमें यदि हम सहायता करते है तो उसका योग्य पुरस्कार हमें अवश्य मिलेगा । मानवी सृष्टिका यह अटल सिद्धान्त है ।

फ्रेच लोग कार्य करना और सुख लाभ करना बहुत पसन्द करते है । मेरे जातिभाई इस विषयमे अभी फ्रेचोसे पीछे है, परन्तु नीतिमत्तामे फ्रेच मरे जातिभाईयासे श्रेष्ठ नही । उन्होने तीव्र जीवनसग्राम आर स्पर्धाके कारण विशष अध्यवसायके साथ काम करना आर हिसाबसे रहना सीख लिया है । कुछ कालमे मेरी जाति भी इतना कर लेगी । सचाई और उदारता नीग्रा जातिसे फ्रेंच जातिमे अधिक नही दिखाई दी । गूगे जानवरोसे स्नह ओर ममता करनेमें मेरी जाति उनसे बहुत आगे बढी हुई है । फ्रान्सके प्रवाससे नीग्रो जातिके अच्छे भविष्यके विषयमे मेरा विश्वास और भी दृढ हो गया ।

पेरिससे चलकर जुलाईके आरभमे हम दोनो लन्दन पहुँचे । उस समय पार्लियामेटके आधिवेशन हा रहे थे। वहाँ पहुँचते ही मेरे पास जगह जगहसे आमत्रण आने लग, पर मुझे विश्राम करना था, इस लिए मेने बहुतोको अस्वीकार कर दिया, किन्तु अपने दो एक मित्रोके अनुरोध करने पर मैने

ऐसेक्स हालमें एक दिन व्याख्यान दिया । आनरेबल जोसेफ़ शोट सभापति थे । सभामें मि. ब्राइस तथा पार्लियामेंटके अन्य कई सदस्य सम्मिलित हुए थे। यहाँ मैंने जो व्याख्यान दिया वह इंग्लैंड तथा अमेरिकाके कई पत्रोंमें प्रकाशित हुआ । इस अवसर पर इंग्लैंडके कई सुविख्यात पुरुषोंसे मेरा परिचय हुआ । मार्क ट्वेनसे भी मेरी पहली भेंट यहीं हुई ।

रिचर्ड कावडेन नामक अँगरेज़ राजनीतिज्ञकी पुत्री मिसेस टी. फिशर अनविनके यहाँ हम दोनों कई बार मेहमान रहे । मिस्टर और मिसेस अनविनने हमें सुखी करनेमें कोई बात उठा न रक्खी । इसके बाद एक सप्ताह तक जान ब्राइटकी पुत्री मिसेस क्लार्कने हमारा आतिथि-संस्कार किया । मिस्टर और मिसेस क्लार्कने एक वर्ष बाद हम लोगोंको टस्केजीमें आकर दर्शन दिये । बरमिंगहममें हम दोनों मि० जोसेफ स्टर्जके यहाँ ठहरे थे । इनके पिता गुलामीको मेटनेवालोंमें अगुए थे । और भी ऐसे कई सज्जनोंसे भेंट हुई जो गुलामीके शत्रु थे । इन लोगोंने जिस सहानुभूतिके साथ गुलामोंको स्वतंत्रता दिलानेमें सहायता की थी, उसका अनुमान भी मैं इंग्लेंड आनेसे पहले न कर सका था ।

ब्रिस्टल नगरके लिबरल क्लबमें हम दोनोंने व्याख्यान दिये । अन्धोंके रायल कालेजमें उपाधि दानके अवसरपर मेरा मुख्य व्याख्यान हुआ । यह उत्सव क्रिस्टल पेलेसमें (शीश महलमें) हुआ था और वेस्टमिनिस्टरके स्वर्गीय ड्यूकने सभापतिका आसन ग्रहण किया था । इंग्लैंडमें ये सबसे धनी माने जाते थे । ड्यूक, उनकी पत्नी और कन्याको मेरा भाषण बहुत ही प्रिय हुआ और उन्होंने मुझे हार्दिक धन्यवाद दिये । लेडी अबरडानकी कृपासे हम दोनोंको और अनेक स्त्री—पुरुषोंके साथ महारानी विक्टोरियासे मिलनेका सौभाग्य प्राप्त हुआ और इसके बाद हमें महारानीकी ओरसे चाय पीनेके लिए निमंत्रण भी मिला। इस समय मिस सुसान बी. एन्टर्नीसे भी भेंट हुई ।

एक ही समयमें दो अद्वितीय स्त्रियोंसे भेंट करके मैंने अपना बड़ा सौभाग्य समझा।

हम दोनों पार्लियामेंटकी कामन्स सभामें कई बार गये। वहाँ सर हेनरी एम. स्टानलेसे भेंट हुई और उनसे बहुत देरतक आफ्रिका और आफ्रिका-का अमेरिकन नीग्रो लोगोंसे क्या सम्बन्ध है, इस विषयमें बातचीत होती रही। इस बातचीतसे मेरा यह विश्वास हुआ कि यदि अमेरिकन नीग्रो आफ्रिकामें जाकर रहें तो वहाँ उनकी कोई उन्नति न होगी।

हम दोनों अनेक बार देहातोंमें जाकर अँगरेज़ोंके यहाँ मेहमान रहे हैं। अँगरेज़ोंकी रहनसहनका ठीक पता यहीं लगता है। मैंने यहाँ देखा कि कमसे कम एक बातमें अँगरेज़ लोग अमेरिकनोंसे बढ़े हुए हैं। अँगरेज़ लोग अपने जीवनको सुखी बनानेका ढंग बहुत अच्छी तरहसे जानते हैं। उनकी रहन-सहन और चालढालमें पूर्ण उन्नति हो चुकी है। उनका प्रत्येक कार्य ठीक समय पर होता है। नौकर चाकर अपने मालिक और मालकिनकी बड़ी इज्ज़त करते हैं। अँगरेज़ नौकर ही बना रह-नेकी इच्छा करता है और इस लिए वह अपने काममें इतना पटु होता है कि कोई अमेरिकन नौकर उसकी बराबरी नहीं कर सकता; परन्तु अमे-रिकामें नौकर खुद मालिक बननेकी इच्छा रखता है। इन दोनोंमें कौन अच्छा है सो कहनेका साहस मैं नहीं करना चाहता।

इंग्लेंडमें एक और बात बहुत अच्छी देखी। वहाँ लोग कानूनके बड़े पाबन्द हैं। हर कामको कायदेके साथ और पूरी तौरसे करते हैं। अँगरेज़ लोग भोजनमें बहुत अधिक समय लगाते हैं। परन्तु दौड़धूप करनेवाले सुदृढ़ अमेरिकन जितना काम करते हैं उतना ये कर सकते हैं या नहीं, इस विषयमें मुझे सन्देह है।

इंग्लेंडके अमीर उमरावोंके विषयमें मेरा खयाल पहलेकी अपेक्षा बहुत अच्छा हो गया। इससे पहले मैं यह नहीं जानता था कि सर्वसाधारण

उन्हें किस आदर और प्रेमकी दृष्टिसे देखते है और परोपकारके तथा दूसरे अच्छे कामोंमे वे अपना कितना समय ओर धन खर्च करते है । पहले इस बातकी मुझे कल्पना भी न थी कि वे इन कामोको बहुत ही जी लगाकर करते हे । मै यह समझता था कि ये लोग मोज उडाते है और धन बरबाद करते हे ।

ॲगरेज श्रोताओंके सामने व्याख्यान देकर उन पर प्रभाव डालनेमे मुझे बडी कठिनाई हुई । साधारणत ॲगरेज लोग इतने गम्भीर और विचारशील होते है कि मेरे मुँहस जिस बातको या चुटकिलेको सुनकर अमेरिकन लोग हँस पडते है उसको सुनकर ॲगरजोके चेहरो पर मुस्कराहट भी नही आती ।

ॲगरज लाग जिनमे एक बार मित्रता कर लत है उन्हे व अपने हृदयसे दर नही करत । एस मित्र अन्यत्र कही न हाग । लदनके स्टेफर्ड हाउसम सदरलण्ड ड्यूक ओर डचसन हम दानाको एक स्वागत समारम्भम बुलाया था । सदरलडकी डचस इग्लटकी स्त्रियामे सबसे सुन्दर ह । इस समारभम अनमान तीन सो लाग उपस्थित थे । सन्ध्याके समय इतन बड समूहमे डचेसन हम दानोको दो बार ढूढ निकाला, अच्छी तरह बातचीत की, ओर टस्कजी जाने पर वहॉका पूरा पूरा हाल लिख भजनके लिए कहा । मैने भी उनके कथनानुसार वहॉस पूरा हाल लिख भजा । बडे दिना पर उन्होने अपने हस्ताक्षरके साथ अपना एक फोटो भेज दिया । अब बराबर चिट्ठीपत्री हुआ करती है । मै डचेसको अपन सच्च मित्रोमेसे ही एक समझता हूँ ।

तीन महीने यूरोपमे भ्रमणकर हम दोनो सेंट लुई नामक जहाज पर सवार होकर साउथम्पटनसे रवाना हुए । इस जहाज पर लुई नगरके अधिवासियोंका दिया हुआ एक सुन्दर पुस्तकालय था । इस पुस्तकालयमे मुझे फ्रेडरिक डगलसका जीवनचरित मिला । उसे मैने पढना

आरंभ कर दिया। इस पुस्तकमें मि० डगलसने अपनी पहली और दूसरी इंग्लैंड-यात्राके समय जहाज़ पर उनके साथ जैसा सुलूक हुआ था उसका वर्णन किया था। यह वर्णन मैंने ध्यान देकर पढ़ा। उन्होंने लिखा था कि जहाज़के कमरेमें आनेकी मुझे मनाई की गई थी और इसलिए मुझे डेक पर ही रहना पड़ता था। जिस समय यह वर्णन मैं पढ़ चुका उसी समय जहाज़के कुछ यात्री (स्त्री-पुरुष दोनों) मेरे पास आये और सन्ध्यासमय होनेवाले उत्सव पर भाषण करनेके लिए कहने लगे! यह दशा होते हुए भी कुछ लोग यह कहते ही जा रहे है कि अमेरिकामें वर्णद्वेषकी मात्रा घट नहीं रही है! इस उत्सवमें न्यूयार्कके वर्त्तमान गवर्नर आनरेबल बेंजामिन बी. ओडेल सभापति हुए थे। सब लोगोंने बड़े ध्यानसे मेरा व्याख्यान सुना। कुछ यात्रियोंने टस्केजी–विद्यालयके विद्यार्थियोंको छात्रवृत्तियाँ दिलानेके लिए चन्दा भी इकट्ठा किया।

जब मैं पेरिसमें था तब वेस्टवर्जीनियाके निवासियोंकी ओरसे तथा जिस नगरमें मेरा बचपन बीता है उस नगरके निवासियोंकी ओरसे निम्नलिखित आमंत्रण पत्र पाकर मुझे बहुत ही आश्चर्य हुआ:—

"चार्लस्टन, १६ मई १८९९.

प्रोफ़ेसर बुकर टी. वाशिंगटन, पेरिस–फ्रान्स।

प्रिय महाशय!

पश्चिम वर्जीनियाके अनेक सुयोग्य निवासियोंने आपके कार्य और योग्यताकी बहुत प्रशंसा की है, और उनकी यह इच्छा है कि यूरोपसे लौटने पर आप यहाँ पधारकर अपने वचनामृतसे उन्हें तृप्त करनेकी कृपा करें। हम लोग इस विचारसे पूर्ण सहमत हैं और चार्लस्टन निवासियोंकी ओरसे आपको यहाँ आनेकी प्रार्थना करते हैं। आपने अपने कार्योंसे हम लोगोंका गौरव बढ़ाया है और हमें

आशा है कि आप यहाँ पधारकर हम लोगोंको आपका सम्मान करनेका अवसर दे कृतार्थ करेंगे। भवदीय

डबल्यू हरमन स्मिथ।"

इस पत्रके साथ एक और भी आमत्रण पत्र था जिस पर चार्लस्टनके डेली गजट, डेली मेल ट्रिब्यून, जी डब्ल्य एटकिनसन गवर्नर तथा कई बेकोंके डायरेक्टरों तथा बडे बडे अधिकारियोंके हस्ताक्षर थे।

जिस शहरमे मेरा बचपन बीता ओर जिस शहरसे मै अज्ञान और अनाथ अवस्थामे विद्यार्जनके लिए बाहर निकला उस शहरकी सिटीकोसिल, सरकारी अधिकारिया आर दानो जातियाके अगुओंसे यह न्योता पाकर मुझे बहुत ही आश्चर्य हुआ ओर मेरी बुद्धि चकरा गई।

मैने दोनों आमत्रण स्वीकार कर लिय ओर निश्चित समय पर मै चार्लस्टन जा पहुँचा। रल्वे स्टेशनपर भतपूव गवनर मि० मेक कारकल तथा अन्य कई बडे बडे लोगोन मेरा स्वागत किया। सभा हई ओर उसम गवर्नर आनेरेबल मि० एटकिनसनन सभापतिका आसन ग्रहण किया। स्वागतकी वक्तृता मि० मेक कारकल्ने दी। नीग्रो लोग भी इस स्वागत समारम्भमे सम्मिलित थ। सभास्थान दानो जातियाक लागोस ठसाठस भर गया था। इस समय व गार लाग भी उपस्थित थ जिनक यहाँ बचपनमे मै काम कर चुका था। दसरे दिन गवर्नर और उनकी पत्नी मिसेस एटकिनसनने राजप्रासादमे मेरा स्वागत किया।

इसके कुछ दिन उपरान्त, जाजिया-राज्यान्तर्गत एटलाटाके नीग्रो लोगान मेरा स्वागत किया जिस समय उस राज्यक गवर्नर सभापति थे। न्यू आरलीन्समे भी मेरा स्वागत हुआ ओर उस अवसर पर वहाँके मेयर सभापति थे। ओर भी कितने ही स्थानासे मेरे पास निमत्रण आये, पर मै उन्हें स्वीकार न कर सका।

सत्रहवाँ परिच्छेद ।

अन्तिम शब्द ।

यूरोप जानेसे पहले मेरे जीवनमें कई आश्चर्यकारक घटनायें हुईं । यदि सच पूछिए तो मेरा जीवन आश्चर्यपूर्ण घटनाओंका भंडार है । मेरा विश्वास है कि जो मनुष्य अपने जीवनको शुद्ध, निःस्वार्थ और उपयोगी बनानेकी चेष्टामें लगा देगा उसका जीवन ऐसी ही अकल्पित और उत्साह बढ़ानेवाली घटनाओंसे पूर्ण हो जायगा । दूसरे प्राणियोंको अधिक सुखी और अधिक उपयोगी बनानेका प्रयत्न करनेसे जो आनन्द प्राप्त होता है, उसका अनुभव जिस मनुष्यको नहीं उसकी दशा पर मुझे बड़ी दया आती है ।

लकवेकी बीमारीसे एक वर्ष तक पीड़ित रहनेके बाद और अपनी मृत्युसे छः महीने पहले जनरल आर्मस्ट्रांगने एक बार फिर टस्केजी-विद्यालय देखनेकी इच्छा प्रकट की । इस समय उनसे चला तक नहीं जाता था; पर उनकी इच्छा पूर्ण करनेके लिए वे टस्केजीमें लाये गये । वहाँकी रेलवेके गोरे मालिकोंने बिना कुछ लिए ही, पाँच मीलकी दूरीसे एक स्पेशल पर उन्हें ले आनेका प्रबन्ध कर दिया था । रातके नौ बजे जनरल आर्मस्ट्रांग विद्यालयमें आये । विद्यालयके फाटकसे उनके ठहरनेके स्थान तक एक हज़ार विद्यार्थी और शिक्षक हाथोंमें रोशनी लिये खड़े थे । उस अपूर्व दृश्यको देखकर जनरल आर्मस्ट्रांग बहुत ही प्रसन्न हुए । इसके बाद दो महीनेतक वे मेरे यहाँ मेहमानके तौर पर रहे । इस बीचमें वे बोलने चलने और उठने बैठनेमें असमर्थ होने पर भी सदा दाक्षिणके लोगोंकी चिन्ता किया करते थे । उन्होंने मुझसे यह भी कई बार कहा कि नीग्रो लोगोंके साथ साथ गरीब और निर्धन गोरोंकी

भी उन्नतिका प्रयत्न करना देशका कर्तव्य है। इस पगु अवस्थामे भी जनरल आर्मट्रागका देशकी चिन्ता ओर कार्य करते देखकर मुझ पर बडा गहरा प्रभाव पडा और मैने यह निश्चय किया कि मं उनके प्रिय कार्यमे जरूर हाथ बटाऊँगा।

कुछ ही सप्ताह पीछे जनरल आर्मस्ट्राग इह लोकस कूच कर गय। तब मुझे एक ओर ऐसे ही महात्मा मिले। ये वे ही डाक्टर हार्लीस बी फ्रिसेल है जो जनरल आर्मस्ट्रागके स्थान पर हम्पटन-विद्यालयक प्रिन्सिपल है। ये भी साधुता ओर परापकारम जनरल आर्मस्ट्रागक समान हे। जनरल महाशयकी इच्छाक अनुसार इन्हान विद्यालयको परमान्नत बनानेमें कोई बात उठा नही रक्खी हे। इतने पर भी ये अपनी प्रसिद्धि नही चाहते आर विद्यालयकी उन्नतिका सारा यश जनरल आर्म स्ट्रागको ही देते हे।

लोगाने मुझसे कई बार पूछा है कि तम्हार जीवनम सबस आधिक आश्चर्यजनक घटना कोनसी हुई। इसका उत्तर दनम मुझे कोई सकोच नही। वह घटना यो है कि रविवारके दिन सबर मै अपनी पत्नी और बालबच्चोके साथ अपन मकान पर बैठा हुआ था कि इतनेमे मुझ निम्न-लिखित पत्र मिला –

‘ हारवर्ड यानिवार्सिटी कब्रिज।

ता २८ मई १८९६।

प्रोफेसर बुकर टी वाशिगटनकी सेवामे–

प्रिय महाशय, आगामी उपाधिदानक अवसर पर हारवर्ड-विश्वविद्यालय आपके प्रति अपना आदरभाव प्रकट करनेके लिए आपको एक उच्च उपाधि दना चाहता है। पर हम लोगोका यह नियम हे कि उपस्थित महाशयोंको ही उपाधि दी जाती है। उपाधिदान–समारभ २४

जूनके दिन होगा। उस दिन दो पहरके बारह बजसे सन्याके पाँच बजेतक आप उपस्थित रहे। क्या आप २४ जूनको केंब्रिजमे आजानेकी कृपा करगे ?

आपका

चार्ल्स डब्ल्यू इलियट,

प्रेसिडेंट, हारवर्ड-यनिवसिटी। ”

मेने कभी स्वप्नम भी नही सोचा था कि मेरी यह प्रतिष्ठा होगी ! पत्र पढकर मेरे नत्राम जल भर आया। गुलामाबादम गुलामोके काम कोयलेकी खानाके काम, बिना अन्न वस्त्रक बिताये हुए दिन, सडककी पटरी पर बिताई हुई रात शिक्षा प्राप्त करनेकी उत्सुकता, टस्केजीके शुरू शुरूक कठिनाईके दिन, विद्यालय चलानेके लिए स्थानकी चिन्ताम करवटे बदलते हुए काटी हुई रात, नीग्रोजाति पर हानवाले अत्याचार ओर कष्ट, इन सबक चित्र मेरी आँखोके आगे नृत्य करने लगे आर दु खसे म विकल हो गया।

मनें न कभी नाम पानकी इच्छा की ओर न उसका पीछा ही किया। नाम अथवा प्रतिष्ठाको म लोककल्याणका एक साधन मात्र समझता हूँ। मित्रोस बाते करत हुए मेन कई बार कहा भी है कि यदि मै अपनी प्रतिष्ठासे दूसराका हित कर सकूँ तो मुझे उसस सन्तोष होगा। धनकी तरह प्रतिष्ठा भी यदि देशसेवाक काम आती हो तो मै उसे चाहता हूँ। बडे बडे योग्य धनवानोसे मिलकर मन यही जाना है कि वे धनको परोपकारका एक ईश्वरदत्त साधन समझते ह। सुप्रसिद्ध धनी और दानवीर मि जान डी राकफेलरके दफ्तरमे जाते ही मेरा यह विश्वास ओर भी दृढ हो जाता है। वे अपना प्रत्येक डालर सत्कार्यमें लगाना चाहते है आर इसलिए वे हरेक कार्यकी बडी बारीकीसे परीक्षा करते है जैसे कोई व्यापारी पूँजी लगानेसे पहले लाभ

हानिका विचार कर लिया करता है । धनाढ्योंकी यह दशा देखकर चित्त बहुत प्रसन्न होता है ।

२४ जूनको सबेरे नौ बजे मैं प्रेसिडेंट इलियट, बोर्ड आफ़ ओवरसियर तथा अन्य निमंत्रित सज्जनोंसे निश्चित स्थान पर जा मिला । उपाधिदानका समारंभ सैंडर्स थिएटरमें होनेवाला था । जनरल नेल्सन, ए. माइल्स, बेल–टेलीफौनके आविष्कारक डाक्टर बेल, बिशप विनसेंट और पादरी सैवेज भी उपाधिदानके लिए बुलाये गये थे । प्रेसिडेंट इलियटके स्थानसे थिएटरतक हम लोगोंका एक जुलूस निकला । इस जुलूसमें सबके आगे प्रेसिडेंट इलियट, मैसेच्युसेट्सके गवर्नर और बोर्ड आफ़ ओवरसियरके लोग थे और उनके पीछे हम लोग । हमारे पीछे चोगा पहने हुए विश्वविद्यालयके प्रोफ़ेसरोंकी मंडली थी । इस ठाठसे हम लोग सैंडर्स थिएटरमें पहुँचे । आरंभिक कार्यक्रम समाप्त होने पर उपाधिदानका समारंभ आरंभ हुआ । उपाधिपानेवालोंके नाम पहले गुप्त रक्खे जाते हैं और फिर जिन लोगोंको उपाधियाँ मिलती हैं उनके नाम पर विद्यार्थी और दूसरे लोग उनकी प्रतिष्ठाके अनुसार जयघोष करते हैं । उस समय लोगोंके उत्साह और आनन्दका पारावार नहीं रहता ।

जब मेरा नाम लिया गया; तब मैं उठकर प्रेसिडेंट इलियटके पास जा खड़ा हुआ । उन्होंने अपने प्रासंगिक और सुन्दर भाषणके साथ मुझे एम० ए०—मास्टर आफ आर्ट्स–की उपाधि दी । इसके उपरान्त और भी कई लोगोंको उपाधियाँ दी गई । उपाधिदानका समारंभ हो चुकने पर हम लोगोंने प्रेसिडेंटके साथ जलपान किया और हम सब विश्वविद्यालयके चारों ओर घुमाये गये । स्थान स्थान पर लोग उपाधिपानेवालोंके नाम लेकर जयघोष करते थे । चारों ओर घूम फिर कर हम लोग मेमोरियल हालमें पहुँचे । यहाँ सब विद्यार्थियोंके भोजनका

प्रबन्ध किया गया था । उस अवसर पर राज्य, धर्म, व्यापार और शिक्षा प्रभृति सब विभागोंके कितने ही लोग अपने कालेजके अभिमान और प्रेमसे उत्साहित होकर उपस्थित हुए थे। ऐसा अभिमान, ऐसा प्रेम और ऐसा जनाकीर्ण सुन्दर दृश्य केवल एक हारवर्डके ही विश्वविद्यालयमें दिखाई देता है जिसे देखकर कोई जल्दी भूल नही सकता !

भोजनके उपरान्त प्रेसिडेंट इलियट, गवर्नर रोजर बुलकाट, जनरल माइल्स, डाक्टर सैवेज, आनरेबल हेनरी लाज आदि महाशयोंके व्याख्यान हुए और अन्तको मेरा भी व्याख्यान हुआ । मेरे व्याख्यानका मुख्य अंश नीचे लिखे अनुसार थाः—

" आप लोगोंने आज मेरी जो प्रतिष्ठा की है, यदि मैं अपने आपको किसी अंशमें भी उसका पात्र समझूँ तो मेरे मनका बोझ बहुत कुछ हलका हो जायगा। आप लोगोंने इस अवसर पर दक्षिणके मेरे गरीब भाइयोंमेंसे मुझे उपाधि ग्रहण करनेके लिए क्यों बुलाया है, यह बतलानेकी मुझे कोई आवश्यकता नही; परन्तु तो भी मेरे लिए यह कहना अनुचित या अप्रासंगिक न होगा कि अमेरिकन लोगोंके सामने आज मुख्य प्रश्न यह है कि विद्वानों, धनवानों और शक्तिसम्पन्नोंको, तथा मूर्ख, निर्धन और शक्तिहीन लोगोंको एक स्थान पर कैसे एकत्र किया जाय और ये दोनों ही परस्पर व्यवहार बढ़ाकर कैसे परस्परकी उन्नति करनेमें सहायक हों। बीकनस्ट्रीटकी बड़ी बड़ी हवेलियोंमें रहनेवाले धनवानोंको अलबामा और लुसियानाके खेतों पर काम करने-वाले तथा झोपड़ियोंमें रहनेवाले दरिद्रोंकी आवश्यकतायें कैसे मालूम हों ? यही एक बड़ा भारी प्रश्न है । हारवर्ड विश्वविद्यालय आज, अपने आपको नीचे गिराकर नहीं, बल्कि निम्नश्रेणीके लोगोंको ऊपर लाकर—उनको उन्नत करके—इस प्रश्नका निर्णय कर रहा है ।

" यदि मैंने अपने अतीत जीवनमें अपने जातिभाइयोंको उन्नत करने और अपनी और आपकी जातिका संबंध दृढ़ करनेके लिए, आपके विचारमें, कोई उद्योग किया हो तो, मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि आजसे मैं इस उद्योगको दूने परिश्रमके साथ करूँगा। ईश्वरके यहाँ प्रत्येक व्यक्ति और प्रत्येक जातिकी सफलताका एक ही माप है। इस देशकी ऐसी स्थिति है कि यहाँ चाहे जो जाति हो उसे अपनी उन्नति अमेरिकन मापसे—कसौटीसे मापना चाहिए। केवल इच्छा या उद्देश्यका कोई अच्छा परिणाम नही होता। इसलिए आगामी पचास वर्ष या इससे भी अधिक समयतक हमारी जाति भी इसी अमेरिकन कसौटी पर कसी जायगी। यहीं हमारी सहनशीलता, अध्यवसाय, संयम, धैर्य और मितव्ययिताकी परीक्षा हो जायगी और यह भी मालूम हो जायगा कि हम लोग ऊपरी चमकदमकमें फँस जाते हैं या वास्तविक तत्त्वको स्वीकार करते हैं; विद्वान् होकर सादगी और विनयशीलतासे रहना सीखते हैं तथा प्रतिष्ठा पाकर देश और समाजकी सेवा स्वीकार करते हैं, या अपनी जातिको कलंकित करते हैं। "

यह बिलकुल पहला ही अवसर था जब किसी नीग्रोको ऐसी सम्मानसूचक उपाधि मिली हो, और इसलिए समाचारपत्रोंने इस विषयकी बड़ी चर्चा की। न्यूयार्कके एक समाचारपत्रके संवाददाताने लिखा कि,—

" जिस समय बुकर टी. वाशिंगटनका नाम पुकारा गया और जब वे इस सम्मानको स्वीकार करनेके लिए खड़े हुए, उस समय जितनी अधिक तालियाँ बजीं उतनी देशभक्त जनरल माइल्सके अतिरिक्त और किसीके नाम पर नहीं बजीं। केवल सहानुभूति दिखलानेके लिए, अथवा पहलेसे लोगोंको इस प्रकार पढ़ा दिया गया था इस लिए, तालियाँ नहीं बजीं, बल्कि लोगोंके आन्तरिक उत्साह और उल्लासका यह फल था। नीचेसे लेकर सबसे ऊपरकी गैलरीतकके सब लोग

इस जयध्वनिमे सम्मिलित थे ओर उन पर आश्चर्य तथा आनन्दकी आरक्त प्रभा प्रकट हो रही थी । इससे यह प्रमाणित होता है कि लोगोंने पहलेके गुलाम और अबके एक महान् कार्यकर्त्ताके कार्योंके लाभ और महत्त्वको भली भॉति समझ लिया है। '

बोस्टनके एक समाचारपत्रमे निम्नलिखित सम्पादकीय लेख निकला था —

" टस्केजी–विद्यालयके प्रिन्सिपलको ' मास्टर आफ आर्ट्स की उपाधि देकर हारवर्ड–विश्वविद्यालयने उनकी ओर अपनी दानोकी प्रतिष्ठा बढाई है । प्राफेसर बुकर टी वाशिगटनने दाक्षिणमे अपने जातिभाइयोका शिक्षित, सुयोग्य और उत्तम नागरिक बनानेमे जो परिश्रम किया है उसक कारण उन्ह हमारे राष्ट्रके महान् कार्यकर्त्ताओमे स्थान मिलना चाहिए । जिस विश्वविद्यालयके सुपुत्रामे एसे योग्य पुरुषका नाम हो, उसे सचमुच ही अपन गारवका अभिमान हाना चाहिए ।

' नीग्रा जातिम पहल पहल मि० वाशिगटनने ही एक अमेरिकन विश्वविद्यालयसे एसी सम्मानसूचक उपाधि पाई हे । यह एक प्रतिष्ठाकी बात है । मि० वाशिगटनको नीग्रो हाने अथवा गुलामीमें पेदा होनेके कारण यह उपाधि नही मिली हे, बल्कि उन्होने जिस महान् बुद्धिवल ओर दीनवत्सलतासे अपने जातिभाइयोकी उन्नति की है उसके बदलमे ही उनका यह सम्मान किया गया हे । जिस किसीमे य दो बात हागी—वह चाह किसी वर्णका हो—अवश्य उन्नत होगा ।

बास्टनके एक दूसरे पत्रने यों लिखा —

" अमेरिकामे हारवर्ड–विश्वविद्यालयने ही सर्व प्रथम एक काले आदमीको उपाधि दी । जिस मनुष्यन टस्केजी–विद्यालयके कार्य और इतिहासको देखा है वह बुकर टी वाशिगटनके धैर्य, दृढ उद्योग ओर उत्तम व्यावहारिक ज्ञानकी प्रशसा किये बिना न रहेगा । हारवर्ड-

विश्वविद्यालयने एक ऐसे मनुष्यको--जो पहले गुलाम था--उपाधि दी, यह ठीक ही हुआ, परन्तु जातिसेवा और देशसेवाका पूरा महत्त्व तो भविष्यकाल ही बतलावेगा।"

'न्यूयार्क-टाइम्स' के संवाददाताने इस प्रकार लिखा:—

"सभी भाषण अच्छे हुए; पर उस काले मनुष्यके भाषणका भी बड़ा आदर हुआ। उसका भाषण समाप्त होने पर लगातार बहुत देरतक ज़ोर ज़ोरसे तालियाँ बजती रहीं।"

टस्केजी-विद्यालय खोलते समय मैंने मन-ही-मन यह संकल्प किया था कि मैं इसकी इतनी उन्नति करूँगा और इसे इतना उपयोगी बनाऊँगा कि किसी रोज संयुक्तराज्यके अधिपति (President) भी इसे देखने आवेंगे। यह मैं स्वीकार करता हूँ कि यह बड़े साहसका विचार था और इसमें अविचारकी मात्रा भी अधिक थी। इसी कारण मैंने इस विचारको अपने हृदयमें छुपा रक्खा था, परन्तु सौभाग्यसे मेरा संकल्प व्यर्थ नहीं गया।

१८९७ के नवंबर महीनेमें मैंने इस विषयमें पहला प्रयत्न किया और प्रेसिडेंड मैक् किनलेके मंत्रियोंमेंसे कृषिविभागके मंत्री आनरेबल जेम्स विलसनको मैं विद्यालय दिखलानेके लिए ले आया। उस समय विद्यालयमें कृषि तथा ऐसे ही दूसरे विषयोंकी शिक्षा देनेके लिए 'स्लेटर आर्मस्ट्रांग' नामक एक भवन बनवाया गया था और उसीके उद्घाटनके अवसर पर भाषण करनेके लिए विलसन महाशय निमंत्रित किये गये थे।

स्पेनिश-अमेरिकन युद्धमें अमेरिकनोंकी विजय हुई और इस विजय-सन्धिके उपलक्ष्यमें सर्वत्र आनन्दोत्सव मनाये जाने लगे। इसी अवसर पर, मैंने सुना कि प्रेसिडेंट मैक् किनले एटलांटाके उत्सवमें सम्मिलित होनेवाले हैं। गत अठारह वर्षोंसे मैं अपने सहयोगी अध्या-

पकोंके साथ एक ऐसी संस्था चला रहा था जिससे राष्ट्रकी बड़ी सहायता होनेवाली थी। मैंने यह निश्चय कर लिया कि जिस प्रकार होगा, मैं प्रेसिडेंट और उनके मंत्रि-मंडलको अपना विद्यालय दिखलानेके लिए ले आऊँगा। इस लिए सबसे पहले मैं वाशिंगटन नगरमें गया और वहाँ प्रेसिडेंटसे मिलनेके लिए 'श्वेतभवन (White house)' पहुँचा। उस समय वहाँ बहुतसे मनुष्योंकी भीड़ लगी हुई थी और इसलिए मुझे भय हुआ कि कदाचित् आज प्रेसिडेंट महाशयसे भेंट न हो सकेगी। तो भी मैं किसी प्रकार उनके सेक्रेटरी मि० पोर्टरसे मिला और मैंने उन्हें अपना उद्देश्य बतलाया। मि० पोर्टरने कृपाकर तत्काल ही मेरे नामका कार्ड प्रेसिडेंटके पास भेज दिया और शीघ्र ही मुझे उनके पास जानेकी आज्ञा मिल गई।

प्रेसिडेंट मैक् किनलेके पास नित्य कितने ही लोग मिलने आते थे। इसके अतिरिक्त उन्हें सैकड़ों सरकारी काम करना पड़ते थे। इसलिए मेरी समझमें यह बात न आती थी कि इतने सारे काम करके भी प्रेसिडेंट मैक् किनले क्योंकर इतने शान्त, स्थिर और प्रसन्न रहते हैं! मुझसे वे बड़ी प्रसन्नताके साथ मिले और सबसे पहले उन्होंने मेरे टस्केजीसंबंधी कार्य पर हर्ष प्रकट कर मुझे धन्यवाद दिया। इसके उपरान्त मैने उन्हें अपने आनेका उद्देश्य बतलाया। मैंने उन्हें यह भली भाँति जना दिया कि आप राष्ट्रके सर्व प्रधान अधिकारी हैं और इस लिए आपके शुभागमनसे केवल हमारे विद्यार्थी ही उत्साहित न होंगे, बल्कि समस्त जातिकी बड़ी भारी सहायता होगी। यह बात उन्हें जँच तो गई; पर टस्केजी आनेका वादा उन्होंने न किया; क्यों कि उस समय एटलांटा जानेकी ही बात पक्की नही हुई थी और इसलिए उन्होंने मुझसे फिर किसी समय इस बातका स्मरण दिलानेके लिए कहा।

दूसरे महीनेके तीसरे सप्ताहके आरंभमें उनका उत्सवमें सम्मिलित

होनेका विचार दृढ हो गया। मै फिर वाशिंगटनमें जाकर उनसे मिला। इस समय मेरे साथ टस्केजीके मि हेअर नामक प्रधान गोरे अधिवासी भी गोरोंकी तरफसे प्रेसिडेट महाशयको निमन्त्रित करनेके लिए मेरे साथ हो लिये थे।

इससे कुछ ही पहले दक्षिणके भिन्न भिन्न स्थानोंमें कई भारी दगे हो गये थे जिसके कारण देशमे बडी अशान्ति फैल गई थी और नीग्रो लोग बहुत दुखी हा रहे थे। प्रेसिटट महाशयस मिलने पर मैने देखा कि वे इन झगडोके कारण बहुत चिन्तित ह। अन्य अनेक सज्जन उस समय उनसे मिलने आये थे, तो भी उन्हाने मझे ठहरा लिया और मेरे साथ नीग्रो जातिके प्रश्नों पर बहुत देर तक बातें की। इस बीचमें उन्होन कई बार यह भी कहा कि मै आपकी जातिके विषयम केवल मौखिक बातोंसे हा सन्तुष्ट नही हूँ—वास्तवमे भी कुछ करना चाहता हूँ। मैन भी मौका पाकर उनसे कहा कि यदि इस समय आप अपन रास्तसे १४० मील हटकर टस्कजीकी नीग्रा सस्थामे पदार्पण कर ता इसी एक बातसे जैसा उत्साह नीग्रो जातिम फैल जायगा वेसा और किसी बातसे नहीं फैल सकता। मेने ताड लिया कि यह बात उनके मनमे बैठ गई।

इसी समय एग्लण्डनिवासी एक सज्जन भी जो पहले गुलाम रक्खा करते थे—वहाँ पहुँच गये। टस्केजी जानेके विषयमे प्रेसिडेट महाशयने उनसे भी राय ली। उन्होने कहा, ' आप टस्केजी—विद्यालयम अवश्य जायें। नीग्रो जातिके परम हितषी डाक्टर करीने भी इस बात पर बडा जोर दिया। बस मेरा काम बन गया। प्रेसिडेट महाशयने वादा किया कि ' मै १६ दिसबरके दिन आपका विद्यालय देखने आऊँगा।'

जब लोगोंको यह समाचार मिला तब विद्यालयके विद्यार्थी, अध्यापक और टस्केजीके समस्त अधिवासी बहुत ही प्रसन्न हुए। नगरके गोरे

निवासी नगरको सिगारनेमे लग गये और विद्यालयके कर्मचारियोंसे मिलकर प्रेसिडेंटका यथायोग्य स्वागत करनेके लिए समितियाँ भी बनाने लगे। इससें पहले मुझे यह न मालूम था कि हमारे विद्यालयके विषयमें टस्केजी तथा आसपासके गोरे निवासियोकी क्या राय है। प्रेसिडेटके स्वागतकी तैयारियाँ करते समय कितने ही गोरे लोग मुझसे मिलकर कहते थे कि 'यदि हम लोगोसे भी कुछ काम लिया जा सकता हो तो हम करनेके लिए तैयार हे।' उस समय उनके भावसे यह मालूम होता था कि कहने भरकी देरी हे कि ये लोग चाहे जो काम करनेके लिए मुस्तेद हो जायँगे। प्रेसिडेटके आगमनसे और अलबामाके गोरे काले समस्त लोगोने हम लागोंके कार्यके प्रति जो स्नेह व्यक्त किया उससे, मेरा अन्त करण द्रवित हो गया।

१६ दिसबरको सबेरे टस्केजीके छोटेसे गाँवमे इतनी भीड हुई जितनी पहले कभी न हुई थी। प्रेसिडेन्टके साथ मि० मेक किनले तथा प्राय सभी मत्री आये थे, बहुतोंके साथ उनके परिवारके लोग और रिश्तेदार भी थे। स्पेनिश–अमेरिकन युद्धमे विजय पाकर आये हुए जनरल शफ्टर ओर जनरल जोसेफ वीलर आदि मुख्य मुख्य सेनापतियोने इस समारभमे योग दिया था। समाचारपत्रोंके सवाददाताओंकी भी कमी न थी। इन्ही दिना माटगोमरीमे अलबामा राज्यकी व्यवस्थापक सभाके आधिवेशन हानेवाले थे, पर इस अवसर पर टस्केजीमे उपस्थित रहनेके लिए कार्यकर्त्ताओन उनका समय बदल दिया था और वहाँके गवर्नर तथा अन्य अधिकारी प्रेसिडेटके आनेसे पहले ही टस्केजीमें उपस्थित हो गये थे।

टस्केजीके अधिवासियोने रेलस्टेशनसे वियालय तक सब मार्ग सिगार रक्खे थे। हम लोगोने ऐसा प्रबन्ध कर रक्खा था कि थोडे ही समयमे विद्यालयके सब काम प्रसिडेट महाशयको दिखला दिये जायँ।

प्रत्येक विद्यार्थीके हाथमें एक एक ऊख दिया गया था जिसके सिरे पर कपासकी डोंड़ियाँ लगा रक्खी थीं। विद्यार्थियोंके पीछे विद्यालयके भिन्न भिन्न भागोंके पुराने और नये काम घोड़ों, खच्चरों और बैलों पर लदे हुए थे। मक्खन निकालने, जमीन जोतने और रसोई बनानेके तथा ऐसे ही अन्य सब कामोंके नये पुराने दोनों ढंग दिखलाये गये थे। इन सब कामोंको देखनेमें प्रेसिडेंटको डेढ़ घंटा खर्च करना पड़ा।

विद्यार्थियोंने हालहीमें एक नया प्रार्थनामान्दिर (गिरजा) बनाया था। उसीमें प्रेसिडेंट महाशयका व्याख्यान हुआ। उसका कुछ अंश इस प्रकार है:—

"ऐसे आनन्ददायक अवसर पर आप सब लोगोंसे मिलने और आपके कार्योंको देखनेसे मुझे बड़ी ही प्रसन्नता हुई है। 'टस्केजी नार्मल और इंडस्ट्रियल इन्स्टिटयूट' की स्थापना जिस उद्देश्यसे हुई है, वह अत्यन्त अनुकरणीय है। केवल इसी देशमें नहीं, विदेशोंमें भी इस विद्यालयकी कीर्ति फैलती जाती है।

"जिन्होंने इन विद्यार्थियोंको शिक्षा देकर इन्हे प्रतिष्ठित और समाजके लिए उपकारी बनानेका भार अपने ऊपर उठाया है, जिन्होंने इस विद्यालयको स्थापित कर अपनी जातिका कल्याण किया है, और जिन्होंने इस पवित्र कार्यमें हाथ बँटाये है उन सबको मै हार्दिक बधाई देता हूँ।

"इस अनुपम शिक्षाकी प्रयोगशालाके लिए स्थान भी ऐसा अच्छा मिला है कि और कहीं शायद ही मिलता। इस विद्यालयने देशके ऐसे ऐसे दाताओंसे भी सहायता पाई है कि जो किसी नये काममें योग देना नही जानते!

"टस्केजी-विद्यालयकी चर्चा करते समय प्रो० बुकर टी. वाशिंगटनकी

असाधारण बुद्धिमता और उद्योगप्रियता स्वयं ही नेत्रोंके सामने आ जाती है। इस महान् कार्यको इन्होंने ही प्रारंभ किया है। इसके लिए हम सब लोग इनके कृतज्ञताभाजन हैं। इन्हींके उत्साह और साहससे विद्यालयकी इतनी उन्नति हुई है और उसकी पात्रता दिनोंदिन बढ़ती जा रही है। ये अपनी जातिके एक नेता समझे जाते हैं । देश देशान्तरके लोग इन्हें एक उत्तम अध्यापक, वक्ता और महात्मा समझते हैं, और इनके इन्हीं गुणोंके कारण ही सब लोग इन्हें मानते हैं।"

इसके उपरान्त नौ-सेनाविभागके मंत्री आनरेबल जान डी. लॉगने भाषण किया। उसका कुछ अंश नीचे दिया जाता है:—

" आज मुझसे व्याख्यान नहीं दिया जाता! अपनी दोनों जातियोंके देशभाइयोंके संबंधमें आशा, आदर और अभिमानसे मेरा अन्तःकरण भर गया है । आपके कार्य देखकर मुझे कृतज्ञताके साथ बड़ा ही आश्चर्य और आनन्द प्राप्त हो रहा है । मुझे विश्वास है कि दिनोंदिन आपकी उन्नति होती जायगी और इस समय आपके सम्मुख जो प्रश्न उपस्थित है उसे हल कर डालनेमें आप समर्थ होंगे।

" नहीं नहीं, उस प्रश्नको आप हल कर चुके हैं। आज हम लोगोंके सामने जो चित्र उपस्थित है, वह वाशिंगटन (जार्ज) और लिंकनके चित्रोंकी पंक्तिमें रखने योग्य है। इस चित्रसे भावी सन्ततिको बड़ी भारी शिक्षा मिलनेवाली है। यह चित्र समाचारपत्रों द्वारा सर्वत्र प्रसिद्ध हो जाना चाहिए । इस चित्रमें क्या क्या दिखलाया गया है ?—संयुक्त राज्यके प्रेसिडेंट प्लेटफार्म पर खड़े हैं, उनके एक तरफ अलबामाके गवर्नर हैं और दूसर तरफ कुछ ही समय पूर्व जो गुलामीके अन्धकारमें छिपी हुई थी उस नीग्रो-जातिके प्रतिनिधि और टस्केजी-विद्यालयके काले प्रेसिडेंट हैं । इस प्रकारसे यह त्रिमूर्ति—(ब्रह्मा विष्णु महेश)—का चित्र है।

" ईश्वर उस प्रसिडटका कल्याण करे कि जिसकी छायामें अमेरिकनोंने इस दृश्यको देखा ! ईश्वर उस अलबामा राज्यका कल्याण करे जो यह बतला रहा है कि हम स्वय इस प्रश्नको हल कर लेंगे ! ईश्वर उस परोपकारी वक्ता बुकर टी वाशिंगटनका कल्याण करे जो परमात्माका प्यारा शिष्य ह ! यदि जगदीश्वर स्वय इस ससारमे अवतीर्ण होता ता, आज वह भी यही कार्य करता ।

अन्तमें पोस्टमास्टर जनरल मि० स्मिथने अपना व्याख्यान समाप्त करते हुए कहा —

" इधर कुछ दिनाम हम लागाने कई दृश्य दखे । हमने दक्षिणक प्रधान नगरोका सान्दर्य और वैभव दखा वीर सैनिकोंका जुलूस दखा और फूलोंस सजी हई पल्टनाकी कवायद भी देखी, परन्तु आज प्रात काल जा दृश्य यहा दखा ह उसस अधिक प्रभावशाली, उत्साहवर्द्धक और भविष्यक सबधमें आशाजनक आर कोई दृश्य हम लोगाने नही देखा ! "

प्रसिडेंट महाशयक वाशिंगटन चल जान पर उनका निम्नलिखित पत्र मेरे पास आया —

सरकारी कोठी, वाशिंगटन,
ता २२ दिसबर १८९९

प्रिय महाशय,

आजकी टाक्स उस स्मरणपत्रकी—जा मिलनसमयकी स्मृतिमें प्रेसिटेंटकी आरस विद्यालयको दिया गया था—मोटे अक्षरोवाली कुछ प्रतियाँ आपकी सेवामे भेजी जाती है । इस पत्र पर प्रेसिडेंट महाशय और उन मत्रियोके हस्ताक्षर ह जो वहाँ उपस्थित थे । टस्केजीमें आपन हम लागोका जो आतिथ्य किया, आर सारा कार्यक्रम जिस सुन्दरताके साथ सम्पादन किया, उसके लिए मै आपको हृद-

यसे बधाई देता हूँ। कार्यक्रमका प्रत्येक अश भली भाँति सम्पादित हुआ और उससे प्रत्येक अतिथिने बडी प्रसन्नता लाभ की। भिन्न भिन्न कामों और धन्धोंमें लगे हुए विद्यार्थियोंकी आपन जो प्रदर्शनी दिखलाई वह अपूर्व थी और देखनेवालो पर उसका बडा असर पडता था। प्रेसिडेट महाशय तथा मन्त्रिमडलने आपके कार्योका जो आदर किया है वह बहुत ही उचित है और आपके विद्यालयकी भावी उन्नतिका सूचक ह। अन्तमें मे यह कह बिना नही रह सकता कि आपके शिष्टाचार और विनयसे सब लोग बहुत ही प्रसन्न हुए है। आपके उपयागी ओर स्वदशहितैषी विद्यालयकी दिनदूनी रातचोगुनी उन्नति हाती रहे।

भवदीय,
जान एडिसन पोर्टर,
प्रेसिडेंट-सेक्रेटरी। '

उस जमानेको बीत आज बीस वर्ष हो गये जब पहले एक पेसा नही था ओर एक शिक्षक तथा तीस विद्यार्थियाका लेकर एक पुरानी टूटी फूटी झोपडी ओर मुर्गीखानेमे पाठशाला आरभ की गई थी। अब उसी पाठशालाक अधिकारम तेईस सौ एकड जमीन हे जिसमेसे सात सो एकडमे विद्यार्थी खेती करत है। इस समय टस्केजी-विद्यालयके छाटे बडे सब मिलाकर चालीस भवन हे जिनमेंसे चारको छोडकर बाकी सब विद्यार्थियोंके ही बनाये हुए है। इन विद्यार्थियोको खेतों पर खती ओर इमारतोंमें-उनके बननेके समय-इमारते बनानेकी सर्वोत्तम प्रणालीकी शिक्षा दी जाती है।

इस समय विद्यार्थियाको मानसिक ओर धार्म्मिक दोनों प्रकारकी शिक्षा दी जाती है। इसके अतिरिक्त शि प-शिक्षाके अट्ठाईस विभाग

हैं। इनमें विद्यार्थियोंको नाना प्रकारके हुनर सिखलाये जाते हैं। इन हुनरोंको सीखकर विद्यार्थी काम भी यहीं पा जाते हैं। दक्षिणकी दोनों जातियोंमें हमारे विद्यालयके ग्रेज्युएटोंकी इतनी अधिक माँग है कि हम आधी भी पूरी नहीं कर सकते हैं। विद्यालयमें भरती होनेके लिए भी इतने आवेदनपत्र आते हैं कि धन और स्थानके अभावसे हमें आधे आवेदनपत्रोंको अस्वीकृत कर देना पड़ता है।

शिल्पशिक्षाके संबंधमें हम लोग तीन बातोंका ध्यान रखते हैं:-(१) विद्यार्थियोंको ऐसी शिक्षा दी जानी चाहिए कि जिससे वे दक्षिणकी वर्तमान अवस्थामें उपयोगी हों; अर्थात् उन वस्तुओंको तैयार कर सकें जिनकी कि आजकल दक्षिणमें माँग है (२) हमारे विद्यार्थियोंमें इतना कौशल बुद्धिमत्ता और शुद्ध आचरण होना चाहिए कि वे अपना और दूसरोंका, पुरुषार्थके साथ, निर्वाह कर सकें। (३) प्रत्येक विद्यार्थीको यह जानना चाहिए कि परिश्रमसे भागनेके बदले परिश्रमसे प्रेम करना ही मनुष्यत्व है, परिश्रम करनेमें कोई बुराई नहीं, सब तरहसे भलाई है। बालकोंको खेती और बालिकाओंको गृहस्थीके काम सिखलाये जाते हैं। इसके अतिरिक्त प्रति वर्ष बहुतसी बालिकाओंको कृषिविद्या भी सिखलाई जाती है। बाग़ लगाना, फल उपजाना, दही मक्खन आदि तैयार करना, शहदकी मक्खियोंको पालना, बढ़िया बत्तख़ पैदा करना आदि काम बालिकाओंको सिखलाये जाते हैं।

हमारा विद्यालय किसी ख़ास धर्म या संप्रदायका अनुयायी नहीं है; तो भी उसके साथ ' फेल्प्स हाल बाइबल ट्रेनिंग स्कूल ' नाम की एक शाखा खोली गई है। इसमें विद्यार्थियोंको धर्म्मोपदेशकके तथा गाँव-देहातोंमें जाकर करने योग्य अन्य धार्म्मिक काम सिखलाये जाते हैं। इन विद्यार्थियोंको भी नित्य आधे दिन किसी न किसी शिल्प-शाखामें अवश्य काम करना पड़ता है। जब ये विद्यार्थी विद्यालयसे

उत्तीर्ण होकर धर्मोपदेशके लिए बाहर निकलते हैं तब लोगोंको शिल्प-वाणिज्यका भी ढंग सिखला देते हैं।

विद्यालयमें इस समय तीन लाख डालरकी सम्पत्ति है। इसके अतिरिक्त स्थायी फंडके हिसाबमें दो लाख पंद्रह हजार डालरकी सम्पत्ति है। इस समय हमें और कई भवन बनवाने हैं और नित्यव्ययके लिए भी धनकी आवश्यकता है। पर स्थायी फंडसे रुपया निकालना दूर रहा, हम उसे पाँच लाख डालर तक पहुँचानेकी चिन्तामें हैं। इस समय वार्षिक खर्च अस्सी हज़ार डालर है। इसका अधिकांश घर घर घूमकर संग्रह करता हूँ। विद्यालयकी सम्पत्ति रेहन-बै करनेका किसीको हक़ नहीं है। सब काग़ज़पत्र पंचोंके नाम हैं। इन पंचोंमें कोई किसी धर्मविशेष या संप्रदायका अनुयायी नहीं। विद्यालय इन्हीं पंचोंके अधीन है।

विद्यार्थियोंकी संख्या तीससे ग्यारहसौ तक पहुँच गई है। अमेरिकाके २७ राज्य, आफ्रिका, क्यूबा, पोर्टोरिको, जमैका और अन्य दूर दूर देशोंसे विद्यार्थी आते हैं। अध्यापकोंकी संख्या ८६ है, और यदि उनके परिवारोंकी भी गिनती की जाय तो, विद्यालयमें हर समय १४०० लोग उपस्थित रहते हैं।

कई लोगोंने मुझसे पूछा कि इतने आदमियोंके रहते हुए भी, तुम्हारी संस्थामें कभी कोई दंगाफ़साद नहीं होता इसका क्या कारण है। इसके उत्तरमें मुझे दो बातें कहनी हैं:—(१) यहाँ विद्याप्राप्तिके लिए जो स्त्रियाँ या पुरुष आते हैं वे बड़े श्रद्धालु होते हैं, और (२) वे सदा ही अपने अपने काममें लगे रहते हैं। नीचे दिये हुए कार्यक्रमसे यह बात स्पष्ट हो जायगी।

कार्यक्रम ।

प्रातःकाल ५ बजे सोकर उठनेकी घंटी। ५ बजकर ३० मिनिट पर जलपानकी तैयारी। ६ बजे जलपान। ६—२० पर जलपानसे निवृत्ति।

६—२० से ६—५० तक सब कमरोंको झाड़ू देकर साफ़ करना। ६—५० पर काम। ७—३० पर प्रातःकालकी पढ़ाई। ८—२० पर स्कूलकी घंटी। ८—२५ पर सब विद्यार्थियोंका एक कतारमें खड़े होना और उनके वस्त्रोंकी परीक्षा। ८—४० पर गिरजेमें प्रार्थना। ८—५५ पर पाँच मिनिटतक दैनिक पत्रोंका पढ़ना। ९ बजे स्कूलका पढ़ाईका आरंभ। १२ बजे पढ़ाई बन्द। १२—१५ पर भोजन। दोपहर १ बजे कामकी घंटी। १—३० पर पढ़ाई शुरू। ३—३० पर पढ़ाई बन्द। ५—३० पर सब कामोंके समाप्त होनेकी घंटी। ६ बजे संध्याका भोजन। ७—१० पर सायंकालकी प्रार्थना। ७—३० पर रातकी पढ़ाई। ८-४५ पर पढ़ाई बन्द। ९-२० पर विश्रामकी घंटी। ९—३० पर सोनेकी घंटी।

हम लोग सदा इस बातका ध्यान रखते है कि विद्यालयकी योग्यता उसके ग्रेज्युएटोंसे जानी जाती है। इस समय टस्केजी—विद्यालयमें शिक्षा पाये हुए तीन हजार स्त्री—पुरुष दक्षिणके भिन्न भिन्न भागोंमें काम कर रहे हैं। ये लोग अपने जीवनसे लोगोंको सब प्रकारकी उन्नतिका मार्ग दिखला रहे है। इनके व्यावहारिक ज्ञान और आत्मसंयमके प्रभावसे दोनों जातियोंमें परस्पर मेलमिलाप बढ़ता जा रहा है और गोरोंको यह विश्वास होने लगा है कि नीग्रो-जातिमें विद्याका प्रचार होनेसे अनेक लाभ होंगे।

जहाँ जहाँ हमारे ग्रेज्युएट पहुँचते है, वहाँ वहाँ ज़मीन खरीदने, इमारतें बनाने, हिसाबसे रहने, लिखने पढ़ने और शुद्ध आचरण रखनेके संबंधमें विलक्षण परिवर्तन हो जाते है। हमारे ग्रेज्युएटोंके कारण समाजका रूपरंग बिलकुल बदलता जा रहा है।

दस वर्ष पूर्व मैंने टस्केजीमें नीग्रो-महासभा स्थापित की थी। अब प्रत्येक वर्ष इसका विराट् अधिवेशन होता है और आठ

नौ सौ नीग्रो प्रतिनिधि टस्केजीमें आकर नीग्रो-जातिके आर्थिक नैतिक और मानसिक प्रश्नोका विचार करते और उन्नतिके उपाय सोचते है। टस्केजीकी इस महासभाकी अब कितनी ही शाखायें भिन्न भिन्न राज्योमे हो गई हे ओर उनका भी यही काम हे। गतवर्षकी सभामे एक नीग्रो प्रतिनिधिने इन सभाओका परिणाम बतलाते हुए कहा था कि दस परिवारोने धन देकर नये मकान खरीदे। नीग्रो महासभाके दूसरे दिन 'कामकाजियोंकी सभा—Workers' Conference— होती ह। दक्षिणके बडे बडे राज्योम काम करनवाले राजकर्मचारी आर अध्यापक इस सभामे एकत्र होते ह। नीग्रो महासभाम लागाकी वास्तविक दशा दखनेका इन्हे बहुत अच्छा अवसर मिलता ह।

हर कामम मेरी मदद करनेवाले मि० टी टामस फारच्यून सरीखे कुछ नीग्रो सज्जनाकी सहायतासे मन सन १९०० के ग्रीष्मम 'दि नेशनल नीग्रो बिजिनस लीग' नामकी एक सभा स्थापित की है। इसका पहला अधिवशन बोस्टनम हुआ आर उस अवसर पर सयुक्त राज्यके भिन्न भिन्न भागोसे व्यापारी आर कामकाजी लाग आये थे। कोई ३० राज्योन अपन प्रतिनिधि भजे थ। अब इस लीगकी अनेक स्थानाम शाखायें भी खुल गई हें।

व्याख्यान दनेके लिए मेरे पास अनेक निमत्रण आते ह आर यदि विद्यालयकी देखरेख तथा धनसग्रहके कार्यसे मुझे अवकाश मिलता है तो मै व्याख्यान देने जाता भी हूँ। इन व्याख्यानोमे मेरा कितना समय चला जाता है, यह आपको एक समाचारपत्रके निम्नलिखित अवतरणसे मालूम हो जायगा। न्यूयार्क बफालोके नेशनल एजुकेशनल एसोसिएशनके सामने मेन जो व्याख्यान दिया उसके सबधमें यह लिखा गया था—

"सुप्रसिद्ध नीग्रो अध्यापक बुकर टी. वाशिंगटन कल सन्ध्याको पश्चिम ओरसे यहाँ आ पहुँचे। जबसे वे यहाँ आये हैं, तबसे बराबर काममें लगे हुए हैं। यात्राकी थकावट भी दूर न होने पाई थी कि उन्हें कल सायं-भोजमें सम्मिलित होना पड़ा। इसके बाद इराकिसके सभामंडपमें आठ बजे तक उन्होंने अपने मिलनेके लिए आये हुए लोगोंकी एक सभा की। उस समय संयुक्त राज्यके दो सौसे अधिक अध्यापकोंने उनका स्वागत किया। इसके बाद गाड़ी पर सवार कराके वे म्यूज़िक हालमें लाये गये और वहाँ उन्होंने डेढ़ घंटेतक 'नीग्रो शिक्षा' पर पाँच हज़ार श्रोताओंके सामने दो व्याख्यान दिये। यहाँसे रेवरेंड मि० वाटकिन्स आदि लोगोंकी मंडली उन्हें स्वागतके लिए दूसरे स्थान पर लिवा ले गई।"

इस व्याख्यान देनेके कामके अतिरिक्त एक और काम मुझे करना पड़ता है। दोनों जातियोंके स्वार्थसे संबंध रखनेवाली कुछ बातोंकी ओर दक्षिणके और साधारणतः सब देशके लोगोंका ध्यान दिलानेके लिए बिना समाचारपत्रोंमें लेख लिखे मुझसे नहीं रहा जाता। पत्र-संपादकोंने इस काममें सहानुभूतिके साथ मेरी सहायता भी की है।

ऊपरी और आकस्मिक बातोंसे किसीकी कैसी ही राय हो, मैं अब अपनी जातिके विषयमें पहलेकी अपेक्षा अधिक आशावान् हूँ। गुणोंकी परीक्षा और प्रतिष्ठा करनेवाला मानवी स्टाष्टिका श्रेष्ठ नियम सार्वत्रिक और सनातन है। दक्षिणके गोरे और उनके पहलेके गुलाम दोनों ही अपने अन्तःकरणमें वर्णद्वेषसे मुक्त होनेके लिए जो यत्न कर रहे हैं उसे बाहरके लोग न तो जानते हैं और न जानकर उसका मर्म ही समझ सकते हैं। परन्तु इसमें सन्देह नही कि इस प्रकारके प्रयत्न हो रहे हैं और इसीलिए मैं कहता हूँ कि सब लोग इनके साथ दया और सहानुभूतिका व्यवहार रखकर इनकी सहायता करें।

इस समय जब कि इस आत्मचरितके ये अन्तिम शब्द लिखे जा रहें हैं मैं बर्जीनियाके रिचमंड शहरमें उपस्थित हूँ। यहाँ कुछ वर्ष पूर्व राजधानी थी और पचीस वर्ष पहले दरिद्रताका मारा हुआ मैं इसी शहरमें सड़ककी पटरीके एक चबूतरेके नीचे सोया था।

इस समय मैं यहीं नीग्रो लोगोंका मेहमान हूँ और उनके अनुरोधसे 'एकेडेमी आफ् म्यूजिक' नामक अत्यन्त विशाल और वैभवशाली भवनमें दोनों जातियोंके सामने व्याख्यान देने आया हूँ। इस भवनमें नीग्रो-लोग आज पहले ही पहल आ सके हैं। मेरे आनेसे एक दिन पहले सिटीकौन्सिलने यह प्रस्ताव पास किया है कि मेरा व्याख्यान सुननेके लिए सब लोग मिलकर एक साथ जायँ। व्यवस्थापक सभाने (हाउस आफ् डेलिगेट्स और सिनेट्स भी इसी सभामें शामिल हैं) भी एक रायसे यह निश्चय किया है कि सब सदस्य व्याख्यानके समय उपस्थित होंगे! सैकड़ों नीग्रो, कितने हीं नामी गोरे रईस, सिटीकौंसिलके सदस्य, व्यवस्थापक सभाके सभासद और राज्यके सरकारी अधिकारी इस सभामें बड़े उत्साहके साथ एकत्र हुए हैं। इन सबोंको मैंने आशा और धैर्यसे भरा हुआ अपना सन्देश सुनाया, और जिस राज्यमें मेरा जन्म हुआ था वहीं मेरा इसप्रकार स्वागत हुआ इसलिए मैंने दोनों जातियोंको हार्दिक धन्यवाद दिया।

परिशिष्ट ।

जनरल आर्मस्ट्रांगका मृत्युपत्र । *

अब समय अच्छा और अनुकूल है । परिवार और विद्यालयका सब ठीक ठीक प्रबन्ध हो चुका है । भयकी कोई बात नहीं रही है । यह ईश्वरको धन्यवाद देनेका समय है । मेरा अन्तकाल समीप है । कब मृत्यु होगी, इसका कोई ठिकाना नहीं । इस लिए भावीकी ओर ध्यान देकर मैं जो कुछ उचित समझता हूँ, बतला देता हूँ ।

जब किसी विद्यार्थीकी मृत्यु होती है तब उसे जहाँ ले जाकर गाड़ते हैं, वहीं—विद्यालयके कब्रस्तानमें—मेरी भी लाश गाड़ी जाय । मेरी कब्र पर छतरी स्मारक अथवा और कोई आडम्बर न खड़ा किया जाय । केवल एक सादा पत्थर रहे । उस पर कोई अवतरण या विचार न खोदा जाय । केवल मेरा नाम और जन्ममृत्युकी तिथि लिखी रहे । मेरी उत्तरक्रियाके समय कोई उपदेश या वक्तृता न दे । युद्धमें मरनेवाले वीर सैनिकके समान मेरी उत्तरक्रिया हो ।

मुझे आशा है कि मेरे मित्र विद्यालयके प्रबन्धमें कोई त्रुटि न होने देंगे। कुछ लोग जबतक स्वार्थत्याग करनेके लिए तैयार न हों, तबतक विद्यालयका काम ठीक नहीं चल सकेगा ।

---

* यह पत्र आर्मस्ट्रांगके अन्य कागजोंके साथ हैम्पटनमे उनकी मृत्युके पश्चात् मिला है । आर्मस्ट्रांगके जिन जिन मित्रोंने इसे देखा वे इसे उनके भाव और अन्तःस्वरूपका परिचायक समझते हैं । ऐसे अमूल्य पत्रको प्रकाशित करना बहुत उचित मालूम होता है ।

—एच. बी. फ्रिसेल,
प्रिन्सिपल, हैम्पटन-विद्यालय ।

जिस कार्यमें स्वार्थत्यागकी आवश्यकता नहीं होती उस कार्यकी ईश्वरके यहाँ, कोई प्रतिष्ठा नहीं। परन्तु लोग जिसे स्वार्थत्याग कहते हैं वह, अपना और अपने साधनोंका उत्तम और शुभ उपयोग है—अपने समय, शक्ति और सामग्रीका सदुपयोग है!

जो मनुष्य इस प्रकारका स्वार्थत्याग नहीं करता, उसकी दशा बहुत ही शोचनीय है! वह अधर्मी या नास्तिक है! ईश्वरके विषयमें उसे कुछ भी ज्ञान नहीं!

विद्यालयके विषयमें इन बातोंको सदा ध्यानमें रखना चाहिए:— कोई किसीसे न झगड़े। सब लोग मिलकर काम करें। अधीर होकर अट्ट-सट्ट बातें या 'मनमाना घरजाना' कोई न करे। सब लोग बुद्धिमानी और उदारतासे सबका कल्याण करनेका यत्न करें। चतुर और विद्वान् होने पर भी, जो मनुष्य अपने दिमागको ठिकाने नहीं रख सकता और संयमी नहीं है, उसे विद्यालयसे निकाल देना चाहिए। दांभिक लोगोंकी अपेक्षा झगड़ालू लोग अधिक खराब होते हैं!

मेरा चरित कोई न लिखे। अच्छे मित्र मेरा सुन्दर चरित लिख डालेंगे, पर उसमें पूर्ण सत्य न रहेगा। जीवनका महत्त्व बहुत गहरे पानीमें रहता है। हम मनुष्योंको उसका बहुत ही कम ज्ञान होता है। केवल एक ईश्वर ही जानता है। ईश्वरकी दयालुता पर मुझे पूरा विश्वास है। जिसका धर्म या संप्रदाय जितना ही छोटा हो उतना ही अच्छा है। 'हे ईश्वर मैं अनन्य भक्तिसे तेरी शरण लेता हूँ।' बस, यह एक ही सिद्धान्त मेरे लिए बस है।

अपने मा-बाप, घरबार, युद्धका अनुभव, विलियम्स कालेजके दिन, और हैम्पटनका कार्य, इन सबके लिए मैं ईश्वरको धन्यवाद देता हूँ। हैम्पटनने मुझे अनेक प्रकारसे धन्य किया है। कारण, हैम्पटनके ही कार्यसे इस देशके सबसे अच्छे लोग मेरे मित्र और सहायक हुए हैं, और युद्धके कारण मुक्त हुए लोगोंका—नीग्रो लोगोंका—प्रत्यक्ष और जित लोगोंका—दक्षिणी गोरोंका—अप्रत्यक्ष कल्याण करनेका

अवसर मुझे मिला है । लाल इंडियनोंकी सेवाका भी सुयोग मुझे मिला है। बहुत थोड़े लोगोंको मेरा सा सुयोग प्राप्त होता होगा। सचमुच, मैंने अपने जीवनमें कोई बात नहीं छोड़ी। प्रत्येक कार्यमें मुझे उचित परामर्श मिलता रहा।

प्रार्थना—उपासना—भक्ति भी संसारमें एक अद्भुत वस्तु है। वह हमें ईश्वरके समीप ले जाती है। मेरी प्रार्थना बहुत ही निर्बल और चंचल हुआ करती थी; पर मैंने यदि कोई कार्य किया है तो, वह प्रार्थना ही की है। मैं इसे सनातन तत्त्व समझता हूँ। सनातन और अनन्त तत्त्वके अतिरिक्त और किस बातसे आनन्द मिल सकता है?

परलोक देखनेके लिए मैं बहुत ही उत्सुक हुआ हूँ। परलोक कैसा होगा? मेरे विचारसे, वह बहुत सुन्दर और स्वाभाविक होगा। मृत्युसे डरनेका कोई प्रयोजन नहीं; वह तो हमारा मित्र है!

मृत्युका विचार आने पर मुझे जो कुछ दुःख होता है, वह अपनी प्रिय पतिव्रता स्त्री और उसकी दीन सन्तानोंके लिए होता है! पर उन्हें भी धैर्यसे यह वियोग सहकर दृढ़ होना चाहिए। उन सबोंने मुझे बड़ा सुख दिया है।

हैम्पटन-विद्यालयकी किसी प्रकार अवनति न हो! इस देशके काले लाल बच्चोंके साथ सचाईका व्यवहार करनेवाले विद्यालयको नीचे न गिरने देना।

मेरे पुराने सिपाहियों और विद्यार्थियोंसे मुझे अकथनीय सुख मिला है।

अपनी अन्तः स्फूर्तिके अनुसार काम करने, निजको भूलकर देव और देशका विचार करने और देव और देशकी भक्ति करनेसे हमारा कल्याण होता है!

इसी समय अन्तकालकी घंटी बजी!

हैम्पटन, वर्जीनिया.
ता० १ जनवरी १८९० ई० } **एस. सी. आर्मस्ट्रांग।**

हिन्दीग्रन्थरत्नाकर-सीरीज़ ।

हिन्दी साहित्यको उत्तमोत्तम ग्रन्थरत्नोंसे भूषित करनेके लिए इस ग्रन्थमालाके निकालनेका प्रारंभ किया गया है। हिन्दीके नामी नामी विद्वानोंकी सम्मतिसे इसके लिए ग्रन्थ तैयार कराये जाते हैं। प्रत्येक ग्रन्थकी छपाई, सफाई, कागज, जिल्द आदि सभी बातें लासानी होती है । स्थायी ग्राहकोंको सब ग्रन्थ पौनी कीमतमें दिये जाते हैं । जो स्थायी ग्राहक होना चाहें, उन्हें पहले आठ आना जमा कराकर नाम दर्ज करा लेना चाहिए । अब तक इसमें जितने ग्रन्थ निकले है, उन सबहीकी प्रायः सब ही पत्रोंने एक स्वरसे प्रशंसा की है। नीचे लिखे ग्रन्थ प्रकाशित हो चुके हैः—

१–२. स्वाधीनता ।

यह हिन्दी साहित्यका अनमोल रत्न, राजनैतिक, सामाजिक और मानसिक स्वाधीनताका अचूक शिक्षक, उच्च स्वाधीन विचारोंका कोश, अकाट्य युक्तियोंका आकर और मनुष्यसमाजके ऐहिक सुखोंका पथप्रदर्शक ग्रन्थ है । इसे सरस्वतीके धुरन्धर सम्पादक पं० महावीरप्रसादजी द्विवेदीने अँगरेजीसे अनुवाद किया है। साथमें मूल लेखक जानस्टुअर्ट मिलका बड़ा ही शिक्षाप्रद जीवनचरित है। इसे जैनहितैषीके सम्पादक नाथूराम प्रेमीने लिखा है । मूल्य दो रु० ।

३. प्रतिभा ।

मानवचरितको उदार और उन्नत बनानेवाला, आदर्श धर्मवीर और कर्मवीर बनानेवाला हिन्दीमें अपने ढंगका यह पहला ही उपन्यास है । इसकी रचना बडी ही सुन्दर, प्राकृतिक और भावपूर्ण है। मूल्य १) रु०

४. आँखकी किरकिरी ।

जिन्हें अभी हाल ही सवालाख रुपयेका सबसे बड़ा पारितोषिक (नोबल प्राइज) मिला है, जो संसारके सबसे श्रेष्ठ महाकवि समझे गये है, उन बाबू रवीन्द्रनाथ ठाकुरके प्रसिद्ध बंगला उपन्यास 'चोखेरबाली'का यह हिन्दी अनुवाद है। इसमें मानसिक विचारोंके, उनके उत्थान, पतन और घात प्रतिघातोंके बड़े ही मनोहर चित्र खींचे गये है। भावसौन्दर्यमें इसकी जोड़का दूसरा कोई उपन्यास नहीं। इसकी कथा भी बहुत ही सरस और मनोहारिणी है। मूल्य १॥) रु०

५. फूलोंका गुच्छा ।

इसमें ११ खण्ड-उपन्यासों या गल्पोंका संग्रह है। इसके प्रत्येक पुष्पकी सुगन्धि, सौन्दर्य और माधुर्यसे आप मुग्ध हो जावेंगे। प्रत्येक कहानी जैसी सुन्दर और मनोरंजक है, वैसी ही शिक्षाप्रद भी है। मूल्य दश आने।

६. चौबेका चिट्ठा ।

बंगभाषाके प्रसिद्ध लेखक बाबू बंकिमचन्द्र चटर्जीके लिखे हुए 'कमलाकान्तेर दफ्तर'का हिन्दी अनुवाद। हँसी दिल्लगी और मनोरंजनके साथ इसमें ऊँचेसे ऊँचे दर्जेकी शिक्षा दी गई है। देशकी सामाजिक, धार्मिक और राजनैतिक बातोंकी इसमें बड़ी ही मर्मभेदी आलोचना है। मूल्य ग्यारह आने।

७. मितव्ययिता ।

यह यूरोपके प्रसिद्ध लेखक डा० सेमुएल स्माइल्स साहबकी अँगरेजी पुस्तक 'थ्रिफ्ट' का हिन्दी अनुवाद है। इस फिजूल खर्ची और विलासिताके जमानेमें यह पुस्तक प्रत्येक भारतवासी बालक, युवा, वृद्ध और स्त्रीके नित्य स्वाध्याय करने योग्य है। इसके पढ़नेसे आप चाहे जितने अपव्ययी हों, मितव्ययी संयमी और धर्मात्मा बन जावेंगे। बड़ी ही पाण्डित्यपूर्ण युक्तियोंसे यह पुस्तक भरी है। इसमें सामाजिक, नैतिक, धार्मिक और राष्ट्रीय आदि सभी दृष्टियोंसे धन और उसके सदुपयोगोंका विचार किया गया है। स्कूलके विद्यार्थियोंको इनाममें देनेके लिए यह बहुत ही अच्छी है। मूल्य चौदह आने।

८. स्वदेश ।

श्रीयुक्त डाक्टर रवीन्द्रनाथ ठाकुरकी एक निबन्धमालाका अनुवाद है। सब मिला कर आठ निबन्ध हैं। इन्हें पढ़कर आप भारतवर्षका और उसकी सभ्यता, समाजरचना और राजनीतिका असली स्वरूप देख सकेंगे। प्रत्येक स्वदेशाभिमानीके अध्ययन करने योग्य ग्रन्थ है। मूल्य दश आना।

९. चरित्रगठन और मनोबल ।

डाक्टर राल्फ वाल्डो ट्राइनके 'करेक्टर बिल्डिंग थाट पावर' का सरल हिन्दी अनुवाद। मूल्य तीन आना।

और कई अच्छे अच्छे ग्रन्थ तैयार हो रहे हैं।

मैनेजर, हिन्दी-ग्रन्थरत्नाकर कार्यालय,
हीराबाग पो० गिरगांव-बम्बई।